प्रकाशक
रूपायन संस्थान, बोरुन्दा

प्रमुख वितरक
राजस्थानी ग्रन्थागार
सोजती गेट के बाहर
जोधपुर

मूल्य : एक सौ रुपया मात्र

संस्करण : १९८७

सर्वाधिकार लेखक के अधीन

मुद्रक
अरविन्द प्रिन्टर्स
जोधपुर

विगत

रस कस दिवली वळै   १
वांडघौ वीर   १५
काळिंदर री सुगराई   २७
अेक नुगरौ सांप   ३६
फूलकंवर   ४६
पीळौ सांप   ७३
सीधौ हिसाव   ६२
लिख्या लेख टळै   ६४
जूंन्यौ सरप   १०८
नागरा थारौ वंस वधै   १२५
देवाळा री वापीती   १५८
दुविध्या   १७२
असमांन जोगी   २११
खांतीलौ चोर   २५०
जोग री वात   २८१
भूंडौ अर भलौ   २६३
करणी जैड़ी भरणी   ३०४
घर रै पाखती घर   ३१६
वेटौ सीभ्कै   ३२१
नीं रौ म्यांनौ हां   ३२२
वेटौ किणरौ ?   ३२३

लोक कथाओं को समझने का उपक्रम

कोमल कोठारी

पृष्ठभूमि

लोक-कथाओं की आंतरिक गठन-प्रक्रिया को कितने ही रूपों में खंड-विखंड करके देखने का प्रयास किया गया है। कथा-मानक की स्थापना के द्वारा पूर्ण कथानक की घटनात्मक समानताओं के जरिये, विश्व की लोक-कथाओं को एक सुनिश्चित आधार दिया गया। एक विशिष्ट क्रम एवं विशिष्ट घटनावली के संघटन से कथा-मानक के स्वरूप की कल्पना निर्मित की गई। स्थूल कथानकों की तात्विक तालिकाओं से अधिक गहराई में जाते हुए अभिप्राय अथवा कथानक की रूढ़-प्ररूढ़ियों पर दृष्टि पहुंची। अभिप्राय वस्तुतः एक घटना मात्र है जो निरंतर अनेक कथाओं में ज्यों की त्यों प्रयुक्त मिलती है। एक कथा में एक अभिप्राय से लेकर अनेक अभिप्रायों का गुंफन हो सकता है। कथा-मानक की संरचना पर एंटी आर्ने ने कार्य किया तो अभिप्रायों की विश्व-जनीन मान्यता पर सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण कार्य स्टिथ थॉमसन ने किया।

लोक-कथाओं की उत्पत्ति : कुछ मत

किन्तु इन दोनों प्रकार की अध्ययन प्रणालियों में कथानक अथवा कथानक को सृजित करने वाली घटनाओं को ही आधार बनाया गया। ये प्रयत्न शुद्ध लोक-कथा के गठनात्मक वस्तु-तथ्यों तक ही सीमित रहे। किन्तु एक अन्य प्रयोजन

की तुष्टि के लिए यह देखने का प्रयास आरंभ हुआ कि अंतत: लोक-कथा को कहने-सुनने वाले कौन हैं ? इन लोगों का सामाजिक और राष्ट्रीय समस्याओं से उद्भूत सांस्कृतिक जीवन क्या व कौनसा है ? एक समाज की सांस्कृतिक परंपराओं एवं अन्य संस्कृतियों के आदान-प्रदान से कौनसे प्रभाव उत्पन्न हुए ? यहां लोक-कथा का प्रयोग एक ऐसी सत्ता अथवा तत्व के रूप में होने लगा जो विश्व के विभिन्न समाजों की संस्कृतियों के विश्लेषण हेतु एक प्रमाणभूत आधार देने लगा। इस प्रकार के अध्ययन का आरंभ जर्मन विद्वान फ्रेडरिक मैक्समूलर ने किया। मैक्समूलर ने तुलनात्मक भाषाविज्ञान के आधार पर सौर-पुराकथा-सिद्धान्त का प्रतिपादन किया। मैक्समूलर की सैद्धान्तिक मान्यता के विषय में रिचार्ड डोरसन ने अपने 'सौर-पुराकथा का अंत' नामक निबन्ध में लिखा है:

'मैक्समूलर ने तर्क के द्वारा स्थापित करने का प्रयत्न किया कि यूनानी-देवी-देवताओं के समतुल्य संस्कृत नामों को एक साथ रखा जाय और उनके आधार पर वेदों को समझने का प्रयत्न किया जाय। वेद—जो आर्य जाति के सबसे प्राचीन साहित्यिक ग्रंथ हैं और जिनके द्वारा देवी-देवताओं के अलौकिक लक्षणों को समझा जा सकता है। संपूर्ण भारोपीय जन-समुदाय का सम्बन्ध आर्य-वंश से है और अपने मूल भारतीय निवास से विभिन्न यूरोपीय जन-समूहों की यात्रा प्रारंभ हुई थी। इस यात्रा के दौरान भाषा एवं पुराकथाएं अनेक शाखा-प्रशाखाओं में विभक्त हो गईं। एक समय आया जब वैदिक देवी-देवताओं के नाम विलुप्त हो गये और अनिश्चयात्मक अर्थ देने वाले पुराकथात्मक मुहावरे एवं कहावतें ही शेष रह गये। इन मुहावरों को पुन: समझाने की दृष्टि से कथाएं सृजित होने लगीं। इस प्रकार 'भाषा की बीमारी [डिज़ीज ऑफ लैंग्वेज] से पुराकथाओं का जन्म हुआ।'

भाषा की इस तुलनात्मक एवं उत्पत्तिमूलक धारणा के साथ मैक्समूलर ने रूपक की चर्चा भी की। उन्होंने बताया कि रूपक ने दो प्रकार से अपने अर्थ प्रदान किये। यथा: 'आलोकित करना' जैसी क्रिया के धातु से सूर्य का संज्ञात्मक बोध कराया गया अथवा उसे विचारों के आलोक के साथ भी अभिहित कर दिया गया। इस प्रकार निर्मित संज्ञाओं को काव्यत्व की कल्पनाशील शक्ति के द्वारा अन्य वस्तुओं को भी संकेतित किया जाने लगा। सूर्य की किरणों को अंगुलियां कहा गया तो बादलों को पर्वतों से उपमित किया गया। पानी से भरे बादल

गाय के दूध भरे स्तनों के समान व्यक्त किये गये तो कड़कती विजली को तीर एवं सर्प की साम्यता पर आधारित करने का प्रयास किया गया । शब्दों की इन भाषा वैज्ञानिक व्याख्याओं एवं यूनानी सभ्यता के देवी-देवताओं के नामों के तुलनात्मक विश्लेषण के द्वारा भारोपीय पुराकथा शास्त्र का निर्माण किया जाने लगा । मैक्समूलर एवं उनके साथियों ने स्थापित करने का प्रयास किया कि सूर्य एवं सौर-मंडल की अज्ञात एवं विस्मयपूर्ण स्थितियों की प्रतिक्रिया के स्वरूप ही पुराकथाओं ने अपना स्वरूप ग्रहण किया । इस विद्वत्-समूह ने व्युत्पत्ति-जनक शब्दों के द्वारा प्रत्येक पुराकथा को सूर्य अथवा सौर-मंडल की प्रक्रियाओं पर सप्रयत्न आरोपित करने का प्रयत्न किया । यह कहा गया कि वैदिक देवता 'द्यौस' एवं यूनानी देवता ज्यूअस् की तुलनात्मक पुराकथा के द्वारा इस संपूर्ण योजना को आत्मसात किया जा सकता है ।

लोक-कथा : कथ्य अवशेष

मैक्समूलर के अध्ययनों के समकालीन मानवशास्त्र के अन्य विद्वान एडवर्ड-बी. टेलर आदिवासी जनजीवन पर पृथक ही लिख रहे थे । एंड्रयू लांग ने टेलर की मानवशास्त्रीय मान्यताओं के आधार पर मैक्समूलर के सिद्धान्तों की मखौल बनाने का एक क्रम प्रारंभ किया । लांग ने सैद्धान्तिक रूप से विकासमान मानव-शास्त्र के सिद्धान्तों के जरिये मैक्समूलर के कथनों का खंडन प्रारंभ किया । लांग ने स्थापित करने का प्रयत्न किया कि संपूर्ण मानवसमाज एक समान गति से विकसित हुआ । विकास का यह क्रम 'सेवेजरी' से 'सिविलाइजेशन' तक चला । साथ ही साथ आदिम विश्वासों एवं रीतिरिवाजों के अवशेष ग्राम्य-कृषकों में अस्तित्व को बनायें रहे अथवा वर्तमान काल के आदिवासियों में ज्यों के त्यों जीवित रहे । लांग ने निर्णय निकाला है कि आधुनिक ग्राम्य समाज एवं आदिवासियों के जीवन-अध्ययन के आधार पर मानव जीवन की आदिम अवस्थाओं का सांगोपांग चित्रण प्रस्तुत किया जा सकता है । जीव-शास्त्र के अध्ययन में अस्थि-अवशेषों के सहारे जिस प्रकार प्राचीन मानव-वंश की स्थितियों को धीरे-धीरे निर्मित किया जा रहा है उसी प्रकार मानव मन में स्थित अवशेषों से मानसिक विकास की दशाओं का इतिहास निर्मित किया जा सकेगा ।

एंड्रयू लांग ने मैक्समूलर की सूर्य, चंद्र एवं तारों सम्बन्धी पुराकथाओं के विश्ले-षण को अपने पूर्ण रूप में नकारा तो नहीं किन्तु साथ ही साथ आस्ट्रेलिया, अफ्रीका,

उत्तरी व दक्षिणी अमेरिका एवं दक्षिणी प्रशान्त महासागर के द्वीपों से प्राप्त पुरा-कथाओं, परिकथाओं एवं लोक-कथाओं के आधार पर सौर-कथा चक्र पर बुनियादी आक्रमण किये। मैक्समूलर ने लांग के तर्कों का निरंतर जवाब दिया और स्पष्ट शब्दों में कहा कि लांग महोदय को प्राचीन भाषाओं का ज्ञान नहीं है और इसलिए वे शब्दों के तुलनात्मक एवं भाषा वैज्ञानिक अर्थों के गांभीर्य को समझ पाने में असमर्थ हैं। मैक्समूलर ने अनेक प्रश्न किये और पूछा कि मानव-समाज के विकास के दौर में पुरा-कथा युग के पूर्व मिथिकों का उद्भव क्यों नहीं हो पाया? शब्दों, अर्थों, मुहावरों व कहावतों के अर्थ क्यों भुला दिये गये और किस प्रकार नयी कथाओं के जरिये उनकी पुनर्स्थापना हुई?

भारतीय लोक-कथा — विश्वजनीन तथ्य

लांग एवं मैक्समूलर की पुराकथा सम्बन्धी बहस का परिणाम यह निकला कि धार्मिक विचारों के ऊहापोह में कथाओं का एक स्वतंत्र विवेचन होने लगा और अनेक विद्वान नये नये विचारों के साथ इस साहित्यिक विधा की ओर आकर्षित होने लगे। बीसवीं शताब्दी तक पहुंचते हुए आदिवासी जनसमूह के साथ साथ विकसित एवं अर्ध-विकसित देशों की संस्कृतियों के गंभीर एवं शोधपूर्ण प्रयास प्रारंभ हुए और लोक-कथाओं के प्रति चैतन्य विचार प्रक्रिया का शुभारंभ हो गया। भारत में पुराकथाओं का अध्ययन धार्मिक एवं दार्शनिक मान्यताओं की सीमाओं में ही चलता रहा — उसे मानवशास्त्रीय ज्ञान के आलोक में परखने का प्रयास लगभग नगण्य ही बना रहा। पश्चिमी देशों में लोक-कथाओं के विसरण [डिफ्यूजन] सिद्धान्त एवं ऐतिहासिक-भौगोलिक कथा-सिद्धान्त का विकास भी हुआ किन्तु उसकी गरिमा का प्रभाव भी हमारे देश पर नहीं पड़ पाया। हम आज भी अपने देश की लोक-कथाओं को एक प्रसंगहीन प्रक्रिया के रूप में ग्रहण किये हुए चल रहे हैं। विश्व की लोक-कथाओं के महान अध्येताओं ने जहां भारतीय लोक-कथाओं के साहित्यिक एवं मौखिक स्वरूपों की सामग्री के द्वारा स्थापित करने का प्रयत्न किया कि किस प्रकार इस देश की निधि का अनेक रूपों में प्रसार अथवा विसरण हुआ। संभवतया हमारे लिए यह प्रश्न भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है कि विश्व के अध्येताओं ने जिस सामग्री पर अपने निर्णय निकाले हैं, वे मुख्यतया लिखित साहित्यिक परम्परा के ही भाग हैं। वेद, उपनिषद, ब्राह्मण, आगम के ग्रंथों के अलावा कथा सरित्-सागर, कथा मंजरी और इन्हीं के विभिन्न एवं सीमित रूप हितोपदेश, पंचतंत्र,

सिंहासन बत्तीसी, बैंताल पच्चीसी आदि ग्रंथ ही वो आधार प्रदान कर सके जो भारतीय लोक-कथाओं के प्रकाशित रूप रहे हैं। किन्तु भारतीय लोकवार्ता के विद्वान भली भांति जानते हैं कि इस प्रकाशित सामग्री के अलावा लाखों कथाएं आज लोगों के कंठों पर ही हैं और उसके संकलन एवं वैज्ञानिक वर्गीकरण का क्रम अभी आरंभ ही नहीं हुआ है। कंठों के सहारे जीने वाली कथाओं का महत्त्व केवल ऐतिहासिक ही नहीं है अपितु वे वर्तमान समाज की सांस्कृतिक स्थितियों पर भी एक टिप्पणी प्रस्तुत करती हैं। आज के समाज की जीवंत कथाओं के उस प्रबल पक्ष पर विचार किया जाना अत्यंत आवश्यक है कि अंततः ये प्रतीक, उपमाएं, रूपक अथवा कथांश अब तक क्यों कथ्य-परंपरा में जीवित रह गये और उन में यह क्षमता क्यों बनी हुई है कि वे आने वाले भावी समाज की आत्माभिव्यक्ति को तुष्ट कर सकते हैं?

'फुलवाड़ी' का उद्देश्य

'बातां री फुलवाड़ी' के द्वारा यही प्रयत्न किया जा रहा है कि वर्तमान ग्राम्य-समाज से लोक-कथाओं को संग्रहीत किया जाय और उनके परिप्रेक्ष्य में वर्तमान सामाजिक मूल्यों एवं स्थितियों का मूल्यांकन किया जाय। जिन प्रतीकों एवं रूपकों ने युगों से मनुष्य के मन को रंजित किया। इन कथाओं ने कभी वस्तु-सत्य की कठोरता को प्रतीकों की गहराई में छिपाकर अभिव्यक्त किया तो कभी सामाजिक विषमता पर सीधे ही प्रहार किया। मन की संभवतया किसी भी दशा को लोक-कथाओं ने अछूता नहीं छोड़ा। मनुष्य और मनुष्य के बीच के संबंध, एक जाति के अन्य जाति से सम्बन्ध, मनुष्य की प्रकृति से सम्बन्ध और मनुष्य के दैनन्दिन अनुभवों के साथ जो सम्बन्ध निर्मित हुए, सभी वस्तु-स्थितियों ने लोक-मानस को उद्वेलित किया। कभी ऐतिहासिक घटना, कभी किसी चमत्कारिक वस्तु-स्थिति तो कभी मन के सहज विश्वास ने कथाओं के क्रमिक सृजन में अपना योगदान दिया। जो कथाएं समाज के यथार्थ के साथ चल सकती थीं — वे जीवित परंपरा के रूप में चलती रहीं और जिनका संदेश काल की गति में अपनी उपयोगिता खो चुका था — वे सहज ही विलुप्त हो गईं। उपयोगिता की यही धारणा भावी समाज की लोक-कथाओं की संरचना और उनके संघटन की प्रक्रिया के साथ जुड़ी रहेगी।

'बातां री फुलवाड़ी' में प्रकाशित होने वाली कथाओं का संग्रहस्थान एक ही है अर्थात् राजस्थान का बोरुंदा ग्राम। भौगोलिक कथा-क्षेत्र का यह ज्ञान इसलिए

आवश्यक है कि अंतत: किस क्षेत्र में कथा का विशिष्ट रूप प्रचलित है ? सांस्कृतिक क्षेत्र के परिवर्तन के साथ कथा के प्रतीक संभवतया अन्य संकेत देने लगते हैं। कथाओं को समझने का दूसरा क्रम उनके ऐतिहासिक रूप से सम्बन्धित है अर्थात् इतिहास के किस काल तक हम इन्हीं कथा-रूपों को प्राप्त कर पाते हैं। 'वातां री फुलवाड़ी' में प्रकाशित कथाओं का एक निश्चित रूप बन जाने के बाद ही हम यह प्रयत्न करेंगे कि उसे भारत के भौगोलिक क्षेत्रों एवं इतिहास के काल-मान के परिप्रेक्ष्य में पुन: परखें और उनसे निर्मित मूल्यों एवं निर्णयों का पृथक अध्ययन प्रस्तुत करें।

'वातां री फुलवाड़ी' का दसवां भाग तैयार होकर, पाठकों के हाथ में पहुंच रहा है। केवल इसी भाग में प्रकाशित कथाओं के बारे में कुछ विचार कर लेना आवश्यक होगा। इस भाग की प्रथम दस कथाओं का सम्बन्ध सर्प से है। यों तो 'वातां री फुलवाड़ी' के भागों को प्रकाशित करते हुए, यह क्रम नहीं रखा गया कि विशिष्ट वर्गीकरण के आधार पर ही कथा का चयन, लेखन एवं प्रकाशन हो किन्तु संग्रह क्रम में यदि समान समस्याओं की कथाएं आ गईं तो उनका प्रकाशन भी एक साथ हो गया। यह एक अनायास घटना ही समझनी चाहिए कि सर्प सम्बन्धी दस कथाएं इस भाग में एक साथ आ गई हैं। सर्प सम्बन्धी कुछ कथाएं पिछले नौ भागों में आ चुकी हैं और ये संभवतया भावी खंड में भी आयें। दसवें भाग की केवल इन्हीं दस कथाओं के आधार पर कुछ विचार करना संगत होगा।

सर्प-संबंधी कुछ मान्यताएं

प्राचीन पुराकथाओं में सर्प अथवा नाग को अनेक कथाओं में पात्रत्व मिला। भारतीय पुराकथाओं में शेष-नाग की कल्पना के साथ पृथ्वी को अपने सिर पर उठाये रखने का विवरण अनेक रूपों में आया। वैदिक समय में सर्प को भय मिश्रित सन्देह के साथ देखा जाता था। अहि अथवा वृत्र नामक असुर की प्रतीकात्मक कल्पना में उसे रात्रि के घनघोर अंधकार एवं वर्षा को उड़ा ले जाने वाला चित्रित किया गया। विलियम क्रुक ने सर्प-पूजा की स्थिति के विषय में संकेत दिया कि वैदिक काल के काफी समय बाद ही संभवतया सर्प पूजा की निश्चित परंपरा प्रारंभ हुई। सर्प-दंश अथवा विष के साथ जीवन के अंत का प्रश्न निश्चित ही आदिम मन में एक भयावह कल्पना को जाग्रत करता रहा होगा जो आज भी कम सशक्त नहीं है। भय की इसी धारणा के साथ पूजा के विधानों का संकलन-

आकलन होता गया और देश के विभिन्न भागों में विभिन्न सर्प-पूजा के 'कल्ट्स' भी उत्पन्न होने लगे। राजस्थान में गोगा के देवल का अवदान सर्प-दंश एवं उसके निदान के साथ जुड़ा हुआ है। बंगाल की मनसा देवी की पूजा का आधार भी सर्प सम्बन्धी मान्यताओं में निहित है। भारत के लगभग सभी क्षेत्रों में सर्प एवं उसके विषाक्त सर्प-वंश से सम्बन्धी छोटे-बड़े देवी-देवताओं की स्थापना की जा चुकी है। राजस्थान में गोगा के साथ खाखळ या खागळ देव नाम से भी सर्प-पूजा की प्रक्रिया चल रही है। बोरुंदा के इर्द-गिर्द सर्प-दंश का निदान केसरिया कुंवरजी के थान पर होता है। खाखळजी या खागळजी के नाम का प्रभाव-क्षेत्र ब्यावर एवं निकट के क्षेत्र में है। गोगा के थान भी उत्तरी पश्चिमी राजस्थान के सभी क्षेत्रों में हैं। इन देवताओं के थानों पर अधिकांश-तया पत्थर पर सर्पा-कृतियां बनी रहती हैं। उनके सामने धूप देने का दोवट रहता है जिस में राळ एवं अन्य सुगंधित पदार्थों का उपयोग किया जाता है। मंत्रोच्चार या भाव आने की विधा [पुजारी को छाया आना] के द्वारा सर्प के विष को उतारने का उपक्रम किया जाता है। गांव में थान या उसके पुजारी के न होने पर निकट के महात्म्य वाले थानों या देवालयों पर सर्प दंशित व्यक्ति को ले जाया जाता है। अनेक बार सर्प सम्बन्धी देवता के नाम से धागे की तांत भी बांध ली जाती है और माना जाता है कि उस तांत के प्रभाव से व्यक्ति विषमुक्त हो जायेगा। गांवों में ऐसे लोग भी होते हैं जो मंत्रोच्चार के जरिये सर्प-दंश का झाड़ा देते हैं। बोरुंदा गांव में एक झाड़ा देने वाले व्यक्ति से ज्ञात हुआ कि इक्कीस दिन तक पवित्र रहकर, एक ही मंत्र-विशेष का जाप कर लेने के कारण वह सहज ही सर्प के जहर को दूर कर सकता है। उसके मंत्र को सुनने से ज्ञात होता है कि वह आधुनिक राजस्थानी के साथ कुछ ध्वनियों के मिश्रण से चल रहा है। सर्प की विभिन्न जातियों के विषय में सामान्य ग्राम्य-जीवन काफी जानकारी रखता है। अनुभव से उसे यह भी ज्ञात है कि कौनसा सर्प विषमय है और कोनसा नहीं। यह सामान्य धारणा है कि सर्प को यदि छेड़ा नहीं जाय तो वह डसेगा नहीं। काले सर्प [कोबरा] को सर्वाधिक भय और श्रद्धा से देखा जाता है। प्रतिशोध लेने की शक्ति के विषय में अनेक विश्वास भी प्रचलित हैं। सर्प को मार देने के बाद उसकी मानवोचित अंत्येष्टि करने का रिवाज भी अनेक जगहों पर प्रचलित है। यह माना जाता है कि सर्प को मारने वाले का चित्र उसकी आंखों में

अंकित हो जाता है और जोड़े का दूसरा सर्प उसी आकृति के सहारे सर्प के हत्यारे से प्रतिशोध लेने के लिए पहुंचता है । लगभग प्रत्येक सर्प के थान या देवालय के विषय में किसी न किसी प्रकार का प्रवाद या कथा का निर्माण भी मिलता है।'

सर्प-दंश संबंधी एक अवदान

कर्नल टॉड ने पीपाड़ के एक तालाब एवं सर्प के थान का अवदान अपने ऐतिहासिक ग्रंथ में दिया है । पीपा नाम का एक ब्राह्मण था जो प्रतिदिन सांपों को दूध पिलाया करता था । पीपा का मकान एक तालाब के किनारे था । सांप उसकी सेवा से प्रसन्न होकर प्रतिदिन दो मोहरें प्रदान किया करते थे । एक बार वह यात्रा पर गया तो अपने पुत्र को कह गया कि सांप को रोज दूध जरूर पिला दिया करे । पिता के चले जाने के बाद पुत्र ने देखा कि सांप के खजाने को ही क्यों नहीं प्राप्त कर लिया जाय । उसने एक दिन दूध के बजाय लाठी से सांप पर प्रहार किया । सांप जीवित ही निकल गया । पीपा जब वापस लौटा तो उसे सांप पर प्रहार की घटना का पता चला । पीपा की पत्नी अधिक चिन्तित हुई । उसने पुत्र को सर्प के प्रतिशोध से बचाने लिए दूसरे दिन सवेरे ही दूर कहीं भेजने का तय किया । किन्तु दूसरे दिन सवेरे ही देखा कि पुत्र को सर्प ने डंस लिया है और वह मृत पड़ा है । पीपा ने प्रतिशोध के बजाय एक दिन खूब दूध सर्प की सेवा में रखा । सर्प ने प्रसन्न होकर अपना सारा खजाना उसे बता दिया और साथ ही कहा उसी तालाब पर सर्प का एक थान बनवा दे जो आने वाली पीढ़ियों को इस घटना की याद दिलाता रहे । इस प्रकार पीपा स्वयं सर्प की भक्ति के कारण एक छोटा देवता मान लिया गया और उस थान पर सर्प के विष को उतारने का क्रम चल निकला ।

इस प्रकार के अनेक अवदान राजस्थान के गांवों एवं छोटे कस्बों में सैकड़ों की संख्या में मिल जाते हैं और नये नये नाग देवता एवं भक्तों के नाम भी जुड़ते जाते हैं । टॉड द्वारा उल्लिखित उपरोक्त अवदान [लिजेंड] केवल पीपाड़ से ही सम्बन्धित या उस कस्बे तक ही सीमित हो, सो बात भी नहीं है । यही बात अनेक कथा-रूपों में भी चल रही है । फुलवाड़ी की दस सर्प संबंधी कथाओं में एक कथा 'सीधो हिसाब' शीर्षक से लिखी गई है । उस कथा का उद्देश्य केवल इतना कहना ही है कि जैसा करोगे वैसा भरोगे । पिता ने सर्प को प्रसन्न करके खजाना पाया और पुत्र ने प्रहार करके सर्प-दंश के कारण मृत्यु पाई । यह कथात्मक घटना

एक अभिप्राय है जो अनेक कथाओं में अनेक प्रकार की स्थितियों को व्यक्त करने के लिए आती है। कर्नल टॉड द्वारा उल्लिखित अवदान अथवा प्रवाद के साथ जोड़कर ऐसी कथाओं को देखने पर उनके उत्पत्ति-मूलक तथ्यों का आभास अवश्य मिलने लगता है।

सर्प-पालक जाति एवं एक त्योहार

राजस्थान में सर्प के साथ दो विशिष्ट तथ्यों को जानना संभवतया आवश्यक है। एक तो सर्प-पालक जाति ही घुमक्कड़ रूप में घूमती रहती है। यह जाति अपने आपको जोगी कहती है और सामान्य भाषा में उन्हें काळबेलिया कहा जाता है। यह जाति स्वयं को गोरखनाथ-मछंदरनाथ से संबंधित घोषित करती है। जोगियों की इस जाति के साथ मिलती-जुलती अन्य जातियां भी हैं जो रहन-सहन व वस्त्राभूषणों से समान दिखाई देती हैं। सांप-पालक जोगी एवं घट्टी-वाले जोगी से मध्य-राजस्थान के लोग काफी परिचित हैं किन्तु वांसड़े वाले और सारंगी वाले जोगी दो और शाखाएं हैं। इन जोगियों के जातिसमूह सिरोही-मेवाड़ क्षेत्र में घूमते हैं। इसी प्रकार निहालदे-सुल्तान एवं अन्य लोकगाथा-गायक जोगी अपने आपको भरतहरी जोगी कहते हैं और उनका निवास मेवात-क्षेत्र में है। इन सभी जोगी नाम से संबोधित की जाने वाली जातियों के पृथक पृथक कार्य हैं। सांप वाले जोगी जाति के लोग सांपों को एक मियाद के लिए पकड़ते हैं और उन्हें पुंगी या वांसुरी की धुन पर मोहित करते हैं। सांप के साथ नेवलों का युद्ध भी कराते हैं और अपने इन खेलों के द्वारा जीवन-निर्वाह का प्रयत्न करते हैं। काळबेलिया जाति के लोगों द्वारा सर्प दंश का इलाज भी किया जाता है और वे अनेक प्रकार की जड़ी-बूंटियों को अपने पास रखते हैं। इस जाति के विषय में सामाजिक जानकारी का संग्रह कार्य अभी नहीं हो पाया है। सर्प संबंधी दूसरा महत्त्वपूर्ण तथ्य नाग-पंचमी की कल्पना है जो एक त्योहार के रूप में मनाया जाता है। सर्प के प्रति जितना भय समाज के मानस में निहित है, उतनी ही गहन मात्रा में श्रद्धा का भाव भी मिलता है। नाग-पंचमी एवं नागों से संबंधी देवालयों एवं थानों से यह तथ्य स्पष्ट संकेतित है।

'फुलवाड़ी' के दसवें भाग में सर्प कथाएं

सर्प के विषय में इस सामान्य जानकारी के आधार पर फुलवाड़ी के दसवें

भाग की कथाओं को विश्लेषित करने का प्रयत्न किया जाय । प्रस्तुत संग्रह की इन कथाओं को चार विभागों में विभक्त किया जा सकता है । ये विभाग सर्प के उन कार्यों पर आधारित हैं जिनके द्वारा प्रतीकात्मक अथवा नैतिक मान्यताओं को अपना स्वरूप मिला है । इन्हीं कथाओं में प्रयुक्त अभिप्राय बार बार पुनरावर्तित भी हुए हैं किन्तु सर्प संबंधी मान्यताओं का आधार प्रस्तुत वर्गीकरण की सीमा में किया जा सकता है । विभाजन इस प्रकार किया गया है :

१. सामान्य पशुकथा [फेबल के रूप में] ।

२. खजाने का रक्षक अथवा निर्धन को संपत्ति आदि प्रदान करने वाला ।

३. पाप, लोभ या लालच में आसक्त बनाने वाला ।

४. त्रिया-चरित्र की प्रतीक व्यंजना में सर्प का उपयोग ।

सामान्य पशु-कथा : इस प्रकार की कथाओं में पशुओं पर मानवोचित व्यवहार का आरोपण किया जाता है । मानव के चारित्रिक गुणों एवं वाणी के व्यावहारिक प्रयोग के द्वारा अपनी बात को पशुओं के माध्यम से स्पष्ट कराने का प्रयत्न मिलता है । सामान्य पशु-कथा को दो उपविभागों में विभाजित किया गया है । एक प्रकार की वे पशु-कथाएं जो केवल पशु-पात्रों को मानव-पात्रों की जगह काम में लेते हैं और उनके माध्यम से किसी नैतिक-सिद्धान्त या नीति-वाक्य का प्रयोजन नहीं साधते । पशुओं के लक्षणों के सहारे और उनके प्रकृति-जन्य व्यवहार का ही कथात्मक प्रयोग होता है । ऐसी कथाओं में केवल पशु-पात्र ही होते हैं अथवा पशु व मनुष्य दोनों ही हो सकते हैं । दूसरी प्रकार की पशु-कथाओं में पशुओं का प्रतीकात्मक प्रयोग होता है और घटनात्मक स्थिति के माध्यम से किसी नैतिक मान्यता का प्रतिपादन किया जाता है । ऐसी कथाओं के अंत में उनका 'मोरल' या उद्देश्य भी स्पष्टतः संकेतित रहता है । इस प्रकार संदेश देने वाली कथाओं को 'फेबल्स' कहा गया है । फेबल का महत्त्वपूर्ण स्वरूप पंचतंत्र की कथाओं मे ग्रहण किया जा सकता है । 'फुलवाड़ी' के दसवें भाग में सर्प संबंधी कुछ कथाएं शुद्ध फेबल्स के रूप में ली जा सकती हैं । ये कथाएं हैं : नुगरो सांप एवं सीधो हिसाब ।

नुगरो सांप अर्थात् कृतघ्न सर्प का कथात्मक अभिप्राय संपूर्ण भारत में प्रचलित है । इस कथा में जहां सर्प है, वहां अनेक कथा-रूपों में सिंह भी मिलता है । सर्प को कुछ सपेरे अर्थात् काळबेलिये पकड़ने पहुंचते हैं, सर्प भागकर एक

ब्राह्मण से शरण मांगता है । वह उसे अपने कटोरदान में छिपा लेता है । खत
के टल जाने के बाद सर्प अपनी कुटिलता पर उतर आता है । वह ब्राह्मण व
डसना चाहता है । किन्तु यह कुटिलता न्याय के नाम पर करना चाहता है
यही कथा-रूप सिंह के साथ भी मिलता है और कहीं जेल, तो कहीं कांटे
चुभ जाने तो कहीं अन्य रूप में सिंह को फंसा हुआ बताया जाता है । ब्राह्म
ही उसे मूर्खतावश मुक्त करता है । काळबेलियों के भय से सर्प का भागना अप
क्षेत्रीयता के कारण महत्त्वपूर्ण है । इस कथा में भैंस व खेजड़ी वृक्ष को न्यायाधी
मान लिया जाता है किन्तु दोनों ही ब्राह्मण को बताते हैं कि स्वार्थी जगत
स्वार्थ को पूरने से बड़ा कोई धर्म नहीं है । दोनों अपने अनुभव के द्वारा बता
हैं कि समाज ने अपने स्वार्थ की पूर्ति के बाद उनकी बुरी हालत कर दी । अत
सर्प का डसना निरर्थक नहीं है, क्योंकि वही उसका स्वभाव एवं स्वार्थ है । कथ
में तीसरा न्यायाधीश चतुर सियार है [अनेक बार लोमड़ी भी होती है] जो भोलेप
से सर्प के कटोरदान में बंद होने की बात स्वीकार नहीं करता । सर्प उत्साह
उस कटोरदान में बंद होना मंजूर कर लेता है और उसे अपनी कुटिलता औ
कृतघ्नता का फल मिल जाता है ।

इस कथा में एक स्वतंत्र अभिप्राय का प्रयोग भी कर लिया गया है । य
उल्लेख अनेक सर्प संबंधी कथाओं में आता है कि सांप जिसे डसना चाहता है—
वह अपने ससुराल से लौटकर आने पर डसवाने का वादा करता है । तेजा
जैसी प्रसिद्ध लोकगाथा में इसी अभिप्राय का प्रयोग हुआ है । 'नुगरो सांप' व
इस कथा में भी ब्राह्मण अपने ससुराल जाने की बात कहता है । नायक द्वार
अपने वादे पर कायम रहने का यह चारित्रिक उदाहरण उसकी महत्ता को स्थापि
करता है । अभिप्रायों के इसी प्रयोग के कारण चतुर सियार के पूर्व भैंस
खेजड़ी के न्याय की बात जुड़ गई है । कथा का शुद्ध उद्देश्य यह बताना है कि
मूर्खतावश कुटिलवृत्ति के साथ किसी प्रकार का रहम नहीं किया जाना चाहिए ।

पशुकथा का दूसरा उदाहरण है—सीधो हिसाब । इस कथा का उल्ले
पहिले पीपा के अवदान में आ गया है । दूध पिलाने पर सर्प की मित्रता औ
पुत्र द्वारा उस पर हमला करने के कारण उसे डस जाना । कथा का अंत स
की इस उक्ति पर ही हो जाता है कि तुझे तेरे पुत्र की मौत पर दुःख है त
मुझे अपने सिर की चोट का दर्द है । जैसा करेगा—वैसा ही भरेगा, कथा क

नीति-शास्त्र है। पीपा वाले अवदान में कथा का प्रयोजन बिल्कुल बदल गया है। यहां सर्प की पुनः प्रसन्नता और सर्प के विष से बचने की प्रक्रिया प्रमुख बन जाती है। संभावना यही लगती है कि सीधी हिसाब जैसी सहज कथाओं को अवदान का रंग मिला करता है।

सर्प संबंधी फेबल्स की बात करते हुए, ईसप की समान-भावी कथाओं का स्मरण हो आता है। एक कथा है: एक सांप बर्फीली ठंड में निर्जीव ठिठुरा पड़ा था। एक आदमी को दया आई और उसने सर्प को अपनी छाती से चिपा कर गर्म किया। प्राण संचरित होते ही सर्प ने उस आदमी को डस लिया। मरते हुए आदमी ने कहा—'कुटिलवृत्ति के सर्प को बचाने के कारण मुझे मरना पड़ रहा है, यह अच्छा ही हुआ।' कृतघ्न के प्रति कितना ही स्नेह क्यों न दिखाओ, वह अपने कुटिल धर्म को नहीं छोड़ता। दूसरी कथा है: एक शिकारी चिड़ियों के शिकार हेतु निकला। चिड़ियों की तलाश में उसकी नजर आकाश की तरफ थी। अचानक उसका पांव एक खड्डे में बैठे सर्प पर पड़ गया। सर्प ने आव देखा न ताव, उसे डस लिया। मरते हुए शिकारी ने कहा—'कहां तो मैं किसी को मारने चला था और कहां मेरी ही मौत लिखी थी।' भाग्य की विडंबना के साथ ही बुरा विचारने वाले को बुरे परिणाम भुगतने संबंधी यह कथा शुद्ध पशुकथा ही है।

खजाने का रक्षक एवं निर्धन को धन-संपत्ति देना: यह सामान्य विश्वास है कि गड़े हुए खजाने का रक्षक सांप होता है। ऐसे प्रवादों एवं सत्य रूप में कही जाने वाली असंख्य घटनाएं गांवों में सहज ही सुनी जा सकती हैं। खजाने के रक्षक के रूप में सर्प को विश्वजनीन अभिप्राय का स्वरूप मिला है। भारत में यह सामान्य धारणा है कि धनी व्यक्ति अपनी मौत के बाद भी अपनी संपदा का मोह नहीं छोड़ पाता और वही सर्प-योनि में आकर गड़े हुए खजाने का रक्षक बन जाता है। अंत में यह धनी व्यक्ति सर्प रूप में अघा जाता है और तब अपने रिश्ते-दारों को स्वप्न में खजाने का रहस्य बता देता है। विलियम क्रुक ने खजाने के रक्षक सर्प की धारणा के विषय में लिखा 'एक सिद्धान्त के अनुसार सर्प का आदिम धातु-विज्ञान [लौह आदि] से संबंध रहा; दूसरे सिद्धान्त में कहा गया कि सर्प निश्चय ही जौहरियों का टोटेम रहा होगा; तीसरे सिद्धान्त में कहा गया कि सर्प की मूल्यवान मणि ही खजाने की धारणा के मूल में है। किन्तु अधिक संभा-

वना यही लगती है कि पुराने खंडहर, मन्दिर या ऐसी ही उजड़ी वस्ती ने सर्प के निवास के खजाने की धारणा को जन्म दिया होगा। सर्प को दैविक ऐश्वर्य का रक्षक भी माना गया है और उसी विश्वास का फल खजाने के रक्षक के रूप में हुआ हो।'

धन और संपत्ति की रक्षा करते हुए सर्प के विश्वास की बात तो यहीं समाप्त हो जाती है किन्तु लोक-कथाओं में उसके द्वारा रक्षित खजाने का क्या होता है — यह महत्त्वपूर्ण बात है। सर्प के पास संपदा और ऐश्वर्य है तो वह उसका प्रयोग किस रूप में कर रहा है। यहां सर्प के माध्यम से सामाजिक व्यवस्था के बीच धन संबंधी मूल्यों का ज्ञान होने लगता है। धन के अभाव में समाज की उपेक्षा, निर्धनता के कारण हीनता का भाव, सामान्य पारिवारिक कार्यों को इज्जत से निभा पाने की असमर्थता आदि ऐसे तथ्य हैं जो सर्प के खजाने के द्वारा वांछा-पूर्ति की मनोभावनाओं को सहलाता है। एक चमत्कारी संयोग से सर्प स्वयं अथवा उसका खजाना मनुष्य को राहत देने पहुंचता है। तब क्या यह सोचना गलत होगा कि सर्प और उसके लोक का ऐश्वर्य मनुष्य की सामान्य वांछा को पूरने वाला एक प्रतीकात्मक संयोग है? फुलवाड़ी के दसवें भाग की 'बांड्यौ वीर' एवं 'काळिंदर री सुगराई' नामक दो कथाओं में निर्धन बहू एवं निर्धन कन्या के कष्टों को सर्प अपने ऐश्वर्य और संपदा से दूर करते हैं। 'बांड्यौ वीर' सबसे छोटी बहू के दुःख और दारिद्रय को देखकर, उसका राखी-बंध भाई बनता है और दुःखों से छुट-कारा दिलाने के लिए नागलोक में ले जाता है। नाग-परिवार के साथ ही वह सुख से रहने लगती है। 'काळिंदर री सुगराई' में एक निर्धन परिवार की उस कठिनाई में सर्प द्वारा मदद करना जब गरीबी के कारण कन्या का विवाह असंभव बन जाता है। यहां सर्प की कृतज्ञता का कारण उसे प्रति दिन दूध पिलाया जाना है। इस कथा के सर्प में चमत्कारिक शक्ति के द्वारा हीरे-मोती को उत्पन्न करने का उल्लेख है। वस्तुतः सांप खजाने का मालिक नहीं अपितु हीरे-मोती का अलौकिक सृजनहार है। उसकी पूंछ कटाने पर खून की बूंदों से लाल मोती बनना अथवा अपनी बांबी पर सात बार फन मारने से सजे सजाये भवन का बन जाना स्पष्ट करना है कि उसमें धन की रक्षा के बजाय ऐश्वर्य उत्पन्न करने की क्षमता है।

यदि इन दोनों कथाओं से सर्प को निकाल दें तो समाज के परिवार के दो चित्र मिलते हैं। एक में परिवार के एक निर्धन भाई की बहू की प्रताड़ना का

भाव है तो दूसरी में एक गरीब परिवार की वह दुःखद कथा है जिसमें वह क्वांरी कुंवारी कन्या के हाथ पीले नहीं कर सकता। ये दोनों सत्य भारतीय परिवार पर एक मार्मिक और करुणाजनक परिस्थितियों के द्योतक हैं। इन दरिद्रता की परिस्थितियों को ज्यों ही सर्प की सहायता से पार पा लिया जाता है त्यों ही उन्हें समाज में पुनः सम्माननीय स्थान मिल जाता है। कथाओं में सर्प वस्तुतः वांछा-पूर्ति की भावना की जगह उपस्थित हो रहा है—जहां जीवन के मूल्यों के अनुरूप किसी में कार्य करने की क्षमता नहीं रहती है।

इन दोनों ही कथाओं में सर्प द्वारा वहू एवं कन्या को अपनी बहिन ही माना जाता है। 'बांड्यो वीर' में निर्धन भाई की वहू को नागिन के कोप को सहना पड़ता है क्योंकि उसने गर्म दूध पिला कर सर्प के बच्चों को क्लान्त कर दिया था। किन्तु इस वहू की सर्प परिवार के प्रति शुभ कामनाओं को सुन कर नागिन का कलेजा एकदम ठंडा हो जाता है और उधर निर्धन भाई को सम्पन्नता के कारण परिवार में सम्माननीय स्थान मिल जाता है। 'कालिंदर री गुगराई' में सर्प की सहायक भावना और पुरुष रूप में प्रकट होने के कारण पति को अपनी पत्नी पर सन्देह होता है किन्तु नाग-युवक द्वारा अपने सही रूप में प्रकट होने पर पति का सन्देह दूर हो जाता है। यहां सर्प एवं स्त्री के संसर्ग की एक संदेहात्मक झलक अवश्य मिलती है।

फुलवाड़ी के इस भाग में फूलकुंवर की कथा की समस्या कुछ दूसरी है। यह अभिप्राय सामान्यतया खूब प्रचलित है कि मां अपनी मृत्यु-शैया पर अपने पुत्र-पुत्रियों को संभलाते हुए पति से दूसरा विवाह न करने का वादा करवाती है। किन्तु पति दूसरा विवाह कर लेता है और सौतेली मां के आगमन से पहिले के पुत्र या पुत्री को कष्ट का जीवन बिताने के लिए बाध्य होना पड़ता है। जहां पुत्र है, वहां उसे देश निकाला मिलता है और जहां पुत्री है, वहां उसे दरिद्रतम व्यक्ति से विवाह करना पड़ता है। वस्तुतः यह व्यक्ति दरिद्र नहीं होता अपितु भाग्य की विडंबना के कारण दरिद्रावस्था में होता है। विवाह के बाद सौतेली मां को सौतेली पुत्री के सुख के बारे में ज्ञात होता है और वह पुनः धोखे से अपनी पुत्री को भेजने का प्रयत्न करती है।

इस सामान्य कथा के साथ फूलकुंवर में सर्प को पात्रत्व मिला है। एक सर्प की इच्छा है कि वह मानवपुत्री से विवाह करे। सौतेली मां अपनी सौतेली

पुत्री को राजी-खुशी उसे विवाह में दे देती है। दुःखी सौतेली पुत्री अपने भाग्य को स्वीकार करती है किन्तु ज्यों ही वह सर्प की पूंछ पकड़ कर बांबी में प्रवेश करती है तो नागलोक के ऐश्वर्य एवं दिव्यता से चकाचौंध हो जाती है। सर्प यहां पुरुष रूप में प्रकट होता है और जीवन की प्रक्रिया अपना सहज रूप ले लेती है। किन्तु जब फूलकुंवर पुनः अपने पीहर आती है तो सौतेली मां की डाह उभर जाती है। फूलकुंवर की जगह सिखा पढ़ाकर अपनी बदसूरत पुत्री को नागलोक में भिजवा देती है। सौतेली मां फूलकुंवर की हत्या कर देती है किन्तु एक तोते के रूप में फूलकुंवर अपने नाग-पति को स्थिति अवगत कराती है। इस कथा में हमारा ध्यान इसी तथ्य की ओर जाता है कि जहां समान मानव-कथा में कन्या का विवाह अभागे किसी व्यक्ति से होता है, यहां उसका स्थान सर्प ने ले लिया है। पति रूप में पशु की स्वीकृति के साथ यह विश्वास भी कार्य करता है कि सर्प अपना रूपावर्तन करके पुरुष बन सकता है।

'लिख्या लेख टळै' नामक कथा में चार सर्पों का वर्णन आता है। सर्व प्रथम तो बेमाता [विधाता] के लेख के कारण सामान्य सर्प के डसने का चित्रण है। जंगल में आग लग जाने पर एक सर्प राजा के पेट में शरण लेता है और फिर पेट से निकलना नहीं चाहता। यह दूसरा सर्प है। इस बीमारी के कारण राजा को अपने पद से च्युत कर दिया जाता है। भिखारी एवं दरिद्री राजा को एक 'आप करमी' पुत्री से विवाह करना पड़ता है। इसी जगह तीसरा सर्प आता है जो पेट में शरण लिए सर्प को अपनी कृतघ्नता के लिए प्रताड़ित करता है। इसी विवाद के कारण राजा को सर्प के खजाने के बारे में ज्ञात होता है और साथ ही साथ पेट के सर्प को मार डालने की तरकीब भी मिलती है। भिखारी के रूप में राजा उस विवाद का लाभ उठा कर सर्प का खजाना प्राप्त करता है और पेट के सर्प से मुक्ति भी पाता है। धन व संपदा का मालिक बनने के बाद राजा जब पुनः अपने राज्य की ओर आता है तो एक ऐसी सर्पिणी मिलती है जिसके पास अमृत की मंजूषा है। इसी मंजूषा की सहायता से राजा अपना वचन निभा पाता है। यहां कृतज्ञ और कृतघ्न दोनों प्रकार के सर्प हैं और साथ ही साथ उनकी चमत्कारिक शक्ति की भी अभिव्यक्ति हुई है। आदिम विश्वासों में यह विश्वास भी प्रमुख है कि जो प्राण ले सकता है, वह प्राण दे भी सकता है। सर्प के विष में मादक शक्ति है तो सर्पिणी के पास पुनर्जीवित करने वाली

व्यक्ति भी है। इस कथा में भी अनेक अभिप्रायों का संयोजन हुआ है और विधाता द्वारा लिखे गये लेख को मनुष्य के कार्यों द्वारा बदल सकने की शक्ति पर विश्वास प्रकट किया गया है। भारतीय समाज में जड़ भाग्यवादिता का जहां एक ओर प्रबल प्रभाव है, ठीक वहीं अनेक लोक-कथाएं चमत्कारिक और अलौकिक प्रतीकों या रूपकों के द्वारा इस धारणा को खंड-विखंड करती हुई मिलती हैं।

खजाने अथवा संपत्ति के तत्व को लेकर 'जून्यो सरप' कथा में एक निर्धन के घर सर्प नवलखे हार के रूप में प्रकट होता है। एक निर्धन ब्राह्मण अपनी पत्नी द्वारा प्रताड़ित होकर कमाने के लिए निकलता है। पुनः काळबेलियों द्वारा पकड़े जाने के भय से सर्प ब्राह्मण की थैली में शरण लेता है। यह कृतज्ञ सर्प है। ब्राह्मण के घर वह नवलखा हार बन जाता है और विक्रय के जरिये निर्धन को धन-वान बना देता है। यह कृतज्ञ सर्प जब निपुत्र सेठ के घर पहुंचता है तो वहां सद्यप्रसूत बालक का रूप धारण कर लेता है। मनो-वांछा का अभिव्यक्त रूप यहां सर्प है। जो जीवन की आवश्यकता है, उसी रूप में सर्प अपने आपको रूपावर्तित कर लेता है। सेठ के घर पुत्र के रूप में बड़ा होकर विवाह करता है और अपनी पत्नी द्वारा वर्जना भंग करने पर पुनः सर्प योनि को प्राप्त करता है। यह कथा भी बहु प्रचलित अभिप्रायों पर आधारित है। यहां सर्प को इन्द्र-लोक का पहरेदार बताया गया है। 'जून्यो सरप' अर्थात् प्राचीन सर्प के नाम द्वारा उसे अलौकिक संसार से संबद्धित कर दिया गया है। ब्राह्मण एवं सेठ के घर में मनो-वांछित फल देने वाला पुरुष-रूपाकृत सर्प अपनी पत्नी द्वारा वर्जना-भंग के कारण जब पुनः सर्प बन जाता है तब माधवानल कामकन्दला का वह प्रसिद्ध अभिप्राय प्रवेश करता है जिसमें स्वर्ग से कामकन्दला नामक परी को प्राप्त करने का प्रयत्न निहित है। अन्तर केवल इतना ही है कि यहां सर्प इन्द्रलोक का रक्षक है और उसकी पत्नी अपने नृत्य के द्वारा इन्द्र को प्रसन्न करके, अपने पति को मांगती है। माधवानल की कथा में नायक स्वयं एक मृदंगवादक के रूप में पहुंचता है—यहां नायक को यह कार्य नहीं करना पड़ा। इन्द्रलोक से नायक या नायिका को प्राप्त करने संबंधी यही अभिप्राय अनेक कथाओं के साथ जुड़ा हुआ है। किन्तु हम जिस विशिष्ट वर्गीकरण के साथ इस कथा के सर्प को देखना चाहते हैं, वह है उसका नवलखा हार बन कर निर्धनता को दूर करना अथवा मनोवांछित फल को प्रदान करने की क्षमता।

'नागण थारो वंस वधै' नामक कथा में भी मनोवांछा की परिपूर्ति का अभिप्राय आया है। यहां निपुत्र सेठ के दुःख को देख कर सेठानी झूठे ही घोषित करती है कि वह गर्भवती है। सोलह वर्ष तक पिता द्वारा पुत्र को नहीं देखने की घोषणा करके सेठानी अपने असत्य को छिपाये रखती है। सोलह वर्ष पूरे हो जाने पर विवाह की बात आती है। तब आटे की लोथ को रथ में रख कर, सेठानी निकल जाती है। एक बावड़ी के किनारे नाग-नागिन का वास था। नागिन को दया उपजती है और वह नाग को सोलह वर्ष का लड़का बन जाने की प्रार्थना करती है। सेठानी की मनोवांछा इस प्रकार पूर्ण होती है। इस कथा में भी विभिन्न अभिप्रायों का प्रयोग मिलता है। कथात्मक गठन का प्रारंभिक सौन्दर्य तो इस बात में है कि कथा के अंत से कथा का प्रारंभ होता है। एक युवक अपने गले में नागिन को लपेटे हुए घूमता है। यह क्यों हो रहा है? प्रथम प्रश्न है। इसी प्रश्न के उत्तर में कथा आरंभ होती है। यह कथा-प्रणाली राजस्थान में 'वीलिये नाई' की परंपरा में चलती है। इस कथा-चक्र में सभी कथाओं के पूर्व एक समस्या-प्रधान घटना है और उस घटना के विवरण में कथा का स्वरूप गठित होता है। नागिन ने पहिले तो नाग को युवक बनने के लिए विवश किया, बाद में उसे पुनः प्राप्त करने के लिए, सेठ के घर पहुंची किन्तु वहां के सुख और आनंद को भंग करने की इच्छा नहीं हुई। वह नाग-युवक का रहस्य खोल देती है किन्तु उसी घर में रहना स्वीकार कर लेती है। युवक अपनी दो पत्नियों के साथ [एक नागिन एवं दूसरी स्त्री] जीवन-यापन करता है। नागिन रात्रि को स्त्रीरूप और दिन को नागिन के रूप में रहती है। कथा की अलौकिकता एवं घटना के संघर्ष से सहज बचाव का तरीका अन्य क्या हो सकता था। महत्त्वपूर्ण तथ्य यह है कि सांप यहां भी मनोवांछा का पूरक बन कर आया है।

पाप, लोभ या लालच में आसक्त बनाने वाला: प्रस्तुत कथा संग्रह में एक कथा है—पीळो सांप। यह सर्प लोभ-लालच का मायावी प्रतीक बन कर आता है। अब तक की कथाओं में सर्प, अपने प्रकट रूप में घटनाओं का भाग बना रहा किन्तु 'पीळो सांप' तक पहुंचते हुए सर्प स्वयं 'एक स्वप्न' के रूप में प्रकट होता है। एक त्यागी मन और संसार से विरक्त प्राणी को वह संदेश देता है कि दुनिया के सुख, संसार के आनंद-भोग को प्राप्त कर। उसकी छलछद्मपूर्ण ललचाने की

शक्ति से आकर्षित होकर व्यक्ति सांसारिकता के पाशों में लिप्त हो जाता है। सर्प की यह कुटिल चतुराई लोक-कथाओं एवं पुराकथाओं में निरंतर बनी रही है। ईसाई धर्म के आदि ग्रंथ में आदम एवं ईव को यदि किसी ने वृक्ष के वर्जित फल को ललचाकर खाने हेतु प्रवृत्त किया तो वह सर्प ही था। संपूर्ण मानव जाति के जनन-प्रजनन और सांसारिक दुखों-सुखों का सृजन हुआ तो उसके मूल में कुटिल सर्प का फुसलाहट भरा व्यवहार ही है। पाप की भावना की ओर प्रवृत्त करना, पाप में सरोबार करना और फिर सारे जीवन को तहस-नहस कर डालना ही मानो उसका परम ध्येय है। स्वर्णिम सर्प जहां एक विरक्त व्यक्तित्व को सांसारिकता में धकेल देता है, ठीक वहीं उसे पुनः स्वप्न में कहता है कि तुमने खूब सुख भोग लिया। अब दुनियावी प्रपंचों से मुक्त हो जाओ। प्रवृत्त करना उसकी शक्ति में था, निवृत्त करना तो मन की क्षमता का प्रश्न था। अंततः सर्प की कुटिलता और मायावी व्यवहार के कारण राज-पुरोहित को अपने प्राण ही गंवाने पड़े। इस कथा में सर्प को मन की एक भावना के आन्तरिक संघर्ष अथवा उसके द्वंद्व के प्रतीक रूप में चित्रण मिला है।

त्रिया-चरित्र : *विश्व के लोक-कथा साहित्य में त्रिया चरित्र की रचनाओं का अंत ही नहीं है।* स्त्री के चारित्रिक वर्णन में उसकी कामुकता और कामुकता-जन्य चतुराई की बातों का अनंत खजाना मिलता है। शुक-बहोत्तरी का कथा-संघटन भी मुख्यतया त्रिया-चरित्र की कथाओं पर हुआ है। कामुक स्त्री के पर-पुरुष गमन के लिए किए जाने वाले छद्म और साहसिक कार्य वास्तव में विस्मयजनक हैं किंतु समाज की संरचना में यह व्यवहार सहजतम रूप से चलता ही रहा है। समाज और परिवार के मूल्यों में वैध पति-पत्नी के संबंधों को जो पावन स्वीकृति मिली हुई है, उसे नकारना बड़े हिम्मत का काम है। त्रिया-चरित्र की कथाएं समाज की इसी रूढ़ एवं पावन मान्यता पर एक व्यंग चित्र प्रस्तुत करता है। शुक-बहोत्तरी की कथाएं तो त्रिया-चरित्र की दुर्बलता पर चलती हैं किंतु उनका चक्र यही घोषित करता है कि पर पुरुष गमन से पाप का भागीदार किस प्रकार बनना पड़ता है।

त्रिया-चरित्र की कथाओं के क्रम में 'रस कस दिवलो वळै' एक महत्त्वपूर्ण कथा है। इस कथा में वस्तुतः पर-पुरुष का प्रतीक सर्प है। नव विवाहिता नायिका का पति अपनी नौकरी के कारण उसे अकेला छोड़कर चला जाता है और मार्ग में

सर्प को देखकर, उसे उलाहने के स्वर में कहता है कि उसका काला रंग, नायिका के काले केसों के सामने फीका है। उसकी लंबाई भी नायिका की वेणी से कम है। खलनायक सर्प को अपने गहरे काले रंग और लंबाई पर अभिमान था। वह वास्तविकता जानने के लिए नायिका के शयन-कक्ष में पहुंचता है किंतु काम-देव के बाणों से बिंधी हुई नायिका को जब सर्प ही एकान्त में मिल जाता है तो प्रेम का आवेग उसे सभी सामाजिक बंधनों से मुक्त कर देता है। सर्प अपने पुरुष रूप में उस नायिका के साथ रहने लगता है। अंततः पति को एक दिन लौटना ही था किंतु तब तक नायिका का हृदय सर्प में रम चुका था। त्रिया-चरित्र की दृढ़ता का आभास यहीं से मिलना प्रारंभ होता है। वह संपूर्ण सामाजिक संस्कारों को नकारती हुई चाहती है कि उसके वैध पति की मृत्यु हो जाये। प्रेम का बहाना करते हुए अपने पति से वह चंपा का फूल मांगती है और सर्प को कहा हुआ था कि वह चंपा के वृक्ष में छिपकर पति को डस ले। नायिका की इच्छा-पूर्ति नहीं होती है और खलनायक सर्प को वैध पति की तलवार से टुकड़े टुकड़े हो जाना पड़ता है। कथा का महत्त्वपूर्ण अंश यहीं विकसित होता है। पर-पुरुष के प्रेम में ठगी हुई नायिका पति को भूलने के लिए तैयार है किन्तु सर्प को नहीं भूल सकती। वह एक पहेली की आड़ में अपने पति को स्पर्श तक से दूर रखने का षड़यंत्र करती है। गर्व की मध्यकालीन सामाजिक मान्यता के अनुसार पति भी पत्नी की बात को मान लेता है। अंत में सर्प की वृद्धा नागिन मां से सत्यकथा ज्ञात होती है और संपूर्ण समाज का घनीभूत क्रोध इस नायिका की जीवनलीला को समाप्त कर देता है।

कथा से यह तो स्पष्ट है कि त्रिया की कामुकता पर प्रहार करने के लिए पर-पुरुष को एक सर्प रूप में संयोजित किया गया है किन्तु सर्प जैसे विषैले पशु के साथ आत्मसमर्पित अपार स्नेह के चित्रण के कारण कथा में अद्भुत रोमांचक भाव आ गया है। इस विस्मयपूर्ण प्रेम-प्रसंग में नायिका की एकान्तिक दृष्टि सर्प पर ही बनी रहती है। उसके लिए हर कष्ट मानों उसका अर्जित अभिमान है। यदि दूसरे शब्दों में इस कथा को भी समझने का उपक्रम करें तो एक नायिका की मनोवांछा का प्रतीक-रूप सर्प है। किन्तु यहां वांछा एक पौरुषपूर्ण पुरुष के समागम से संबंधित है।

सर्प संबंधी अभिप्राय : फुलवाड़ी के दसवें भाग में

लोक कथाओं में सर्प के पात्रत्व को लेकर फुलवाड़ी के दसवें भाग में जो रूप आये, उनको तुलनात्मक रूप से हमने देखा। किंतु कथाओं का पूर्ण विश्लेषण उपरोक्त चर्चा से प्राप्त नहीं हो सकता। अभी तक सर्प के सोद्देश्य कथात्मक प्रयोग पर ही हम विचार कर पाये हैं। इन्हीं दस कथाओं में सर्प संबंधी अभिप्रायों को देखना समीचीन होगा। इन अभिप्रायों को तुलनात्मक दृष्टि से देखने-समझने के लिए अलग से स्टिथ थॉमसन द्वारा वर्गीकृत सर्प संबंधी सभी अभिप्राय प्रकाशित किए जा रहे हैं। इन दस कथाओं की सर्प संबंधी अभिप्राय तालिका इस प्रकार बनती है :

क्रम	अभिप्राय	कथा
१.	सर्प द्वारा काम पीड़ित युवती से सहवास।	रस कस दिवलो बळै।
२.	सर्प [अथवा सर्पिणी] द्वारा दिन को सर्प एवं रात्रि को पुरुष या स्त्री रूप में रहना।	रस कस दिवलो बळै। नागण थारो वंस वधै।
३.	मारे गये सर्प के टुकड़ों से रस निकाला जाना एवं रस से दीपक का तेल बनाना।	रस कस दिवलो बळै।
४.	मारे गये सर्प के टुकड़ों एवं उससे निःसृत रस पर पहेली की रचना।	रस कस दिवलो बळै।
५.	सर्प [सर्पिणी] की मां, बहिन या पत्नी द्वारा पहेली बुझाना या रहस्य खोलना।	रस कस दिवलो बळै एवं नागण थारो वंस वधै।
६.	सर्प द्वा[illegible] अपने काले रंग और लंबाई की [illegible] की वेणी से तुलना करना।	रस कस दिवलो बळै।
७.	सर्प द्वारा निर्धन स्त्री को बहिन बनाना।	बांठयो वीर, काळिंदर री सुगराई।
८.	बांबी के मार्ग से सर्प द्वारा मानव को नागलोक में ले जाना। सर्प की पूंछ पकड़ कर और आंख बंद करके प्रवेश पाना।	बांठयो वीर, फूल कंवर।

९.	हीरे मोती और ऐश्वर्य से भरपूर सर्प-लोक।	बांढ्यौ वीर, फूल कंवर।
१०.	सर्प परिवार का मनुष्य के साथ रहना।	बांडयौ वीर, फूलकंवर।
११.	सर्प द्वारा दूध पीना और दूध पिलाने वाले के प्रति कृतज्ञता।	काळिंदर री सुगराई।
१२.	सर्प द्वारा मनुष्य के शरीर से विष चूस लेना।	काळिंदर री सुगराई।
१३.	सर्प द्वारा मानव वाणी में बोलना।	दसों कथाओं में।
१४.	सर्प की पूंछ को, उसके द्वारा बताई गई विधि से काटने पर खून से लाल व मोती मिलना।	काळिंदर री सुगराई।
१५.	शाम के शयन पर सर्प का मनुष्य रूप ग्रहण करना।	काळिंदर री सुगराई।
१६.	सर्प द्वारा विश्वास दिलाने के लिए पुरुष रूप से पुनः सर्प रूप में परिवर्तन।	काळिंदर री सुगराई।
१७.	अपनी बांबी पर फन को मार कर [सात बार] भवन व ऐश्वर्य का निर्माण।	काळिंदर री सुगराई।
१८.	कृतघ्न सर्प।	नुगरौ सांप।
१९.	सर्प द्वारा स्वयं को डसाने का वादा करने वाले व्यक्ति को ससुराल जाने के लिए मोहलत देना।	नुगरौ सांप।
२०.	कृतघ्न सर्प को न्याय देने हेतु भैंस, खेजड़ी [वृक्ष] एवं सियार के फैसले।	नुगरौ सांप।
२१.	कृतघ्न सर्प को चतुर सियार द्वारा पुनः फंसा देना।	नुगरौ सांप।
२२.	सर्प द्वारा सुन्दर स्त्री से विवाह की इच्छा।	फूल कंवर, नागण थारौ वंस वधै।
२३.	सर्प की बरात में बिच्छू, गोह, अजगर आदि।	फूल कंवर।

२४.	सांसारिक सुख भोगने के लिए सर्प द्वारा ललचाना।	पीळो सांप।
२५.	सांसारिक सुखों में लीन व्यक्ति को सर्प द्वारा दंडित किया जाना।	पीळो सांप।
२६.	सर्प द्वारा मनुष्य के पेट में निवास।	लिख्या लेख टळै।
२७.	सर्पों की परस्पर प्रतिस्पर्धा। खजाने का रक्षक सर्प एवं पेट में निवास करने वाले सर्प का विवाद।	लिख्या लेख टळै।
२८.	सर्प दंश से मृत व्यक्ति की लाश को [छः महीने] संभाल कर रखना।	लिख्या लेख टळै।
२९.	सर्पिणी द्वारा अपने मृत पति के शव की खोज, हत्यारे का पीछा।	लिख्या लेख टळै।
३०.	अमृत की डिबिया वाला सर्प [सर्पिणी]।	लिख्या लेख टळै।
३१.	इन्द्र लोक का पहरेदार सर्प।	जून्यो सरप।
३२.	सपेरों से बचने के लिए सर्प द्वारा थैली या कटोरदान में शरण।	जून्यो सरप, नुगरो सांप।
३३.	सर्प द्वारा निर्धन के घर नवलखाहार बन जाना।	जून्यो सरप।
३४.	सर्प द्वारा नवलखे हार से सद्यप्रसूत बालक बन जाना।	जून्यो सरप।
३५.	मनुष्य रूपी सर्प पति की दो शर्तें : घर में आग कभी न बुझे और पानी का परिंडा कभी खाली न रहे।	जून्यो सरप।
३६.	सर्प रूपी पति [या पत्नी] द्वारा निर्णीत वर्जनाओं को भंग करना।	जून्यो सरप।
३७.	पुरुष रूपी सर्प की जाति को जानने पर उसका पुनः सर्प रूप धारकर पानी में प्रविष्ट होना।	जून्यो सरप।
३८.	इन्द्रलोक के पहरेदार सर्प को इन्द्र से	जून्यो सरप।

वरदान रूप में प्राप्त करना।

३९.	आटे की लोथ में नाग का प्रवेश एवं युवक रूप ग्रहण करना।	नागण थारो वंस वधै।
४०.	विरहणी नागिन का नाग प्रेम।	नागण थारो वंस वधै।
४१.	सर्प की कुटिलता—स्थायी।	सीधो हिसाव, नुगरो सांप।

उपरोक्त अभिप्राय सर्प संबंधी दस कथाओं में आये हैं और यहां स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि ये अभिप्राय केवल सर्प विषयक ही हैं। इन्हीं कथाओं में आये हुए अन्य अभिप्रायों को यहां संकलित नहीं किया गया है। सर्प के कथात्मक कृत्यों एवं उनके अभिप्रायों को अपने ही संदर्भ एवं प्रसंग में देखने के [illegible] यह चयन अपने आप में महत्त्वपूर्ण है। यह निर्विवाद है कि राजस्थान की प्रत्येक सर्प संबंधी कथा को आधार बनायें तो सैंकड़ों अभिप्राय सहज ही मिल जायेंगे। यह आवश्यक है कि किसी भी विषय पर सांगोपांग विचार प्रकट करने के पूर्व हम कथाओं में प्रयुक्त रूपों को एक तरफ करलें। फिर उन्हें अन्य विषयों की तुलना में रखें और सामाजिक विश्वासों की कसौटी पर कसें। प्रस्तुत सर्प संबंधी विवेचन अपने आप में एक अंत नहीं है अपितु एक प्रारंभ मात्र है जो कथाओं के संग्रह के साथ विकसित होता जायेगा। यह प्रयास भी यहां नहीं किया गया है कि वस्तुस्थिति को कोई सैद्धान्तिक आवरण दिया जाय। केवल उसी स्थिति को आंकने का प्रयास किया गया है जिसमें सर्प, किसी न किसी रूप में, प्रकट हुआ है।

दसवें भाग की अन्य कथाएं :

सर्प संबंधी दस कथाओं के वाद ग्यारह कथाएं विभिन्न विषयों पर प्रकाशित की गई हैं। यदि इन्हीं ग्यारह कथाओं को अपने विषयानुसार विभक्त करने का प्रयत्न करें तो तीन सुनिश्चित-से हिस्से बनते हैं और कुछ कथाएं इन सीमाओं में नहीं आ पातीं। ये हिस्से बनते हैं—प्रथम : परी कथा—'असमांन जोगी'। द्वितीय : दो विरोधी भावनाओं अथवा दो विरोधी कर्मों अथवा दो विरोधी तत्त्वों के अन्त-संघर्ष पर निर्मित उपदेशात्मक कथाएं। इन कथाओं में 'जोग री वात' 'भूंडो और भलो' तथा 'करणी जैड़ी भरणी' कथाओं को लिया गया है। तृतीय : प्रहेलिकात्मक कथाएं — ये कथाएं प्रश्नोत्तर रूप में पहेलियों का आधार लेकर चलती हैं। इन कथाओं में 'घर रै पाखती घर' 'वेटो सीभै' 'नीं रो म्यांनो हां' और 'वेटो किणरो' लिया गया है। इस प्रकार दसवें भाग की आठ कथाएं तो अपने विषयानुकूल

अथवा गठनात्मक दृष्टि से एक एक विभाजन के रूप में देखी-समझी जा सकती हैं। किन्तु शेष तीन कथाओं के स्वरूप अपने आप में स्वतंत्र हैं अथवा दूसरे शब्दों में यह कह सकते हैं कि इन कथा के विषयों की केवल एक एक कथा दसवें भाग में प्रकाशित हुई है।

'देवाळा री बापोती' कथा को हम कृषक के आर्थिक-जीवन से संबंधी एक दुःखात्मक सत्य पर आधारित मानते हैं। कथा का प्रमुख लक्ष्य किसान द्वारा कुए से निरन्तर 'दिवाला' सींचते रहने पर कथा का रूप खड़ा हुआ है। समाज के आर्थिक क्रिया-कलापों के संघर्ष पर बनी हुई ऐसी अनेक कथाएं मिलती हैं। इस भाग में केवल एक ही कथा आई है। 'दुविधा' नामक कथा को यदि विषय की सहजता के साथ देखने का उपक्रम करें तो इसे एक भूत-संबंधी कथा कह सकते हैं। यहां भूत एक प्रेमी-नायक के रूप में आता है। यों उपदेशात्मक कथाओं में से 'भूंडो अर भलो' में भी दो भूतों का विवरण आया है किन्तु यहां भूत प्रासंगिक है, गौण है किन्तु 'दुविधा' में वह गौण नहीं, मुख्य कथा का संचालन करता है। खांतोलो चोर को हम पारंपरिक कथा रूप में देखते हुए चतुर चोर संबंधी कथाओं के वर्ग में रखना चाहेंगे। चोरों की चतुराई की अनेक कथाएं राजस्थान में प्रचलित हैं। खापरा चोर के कथा-चक्र पर अभी संकलन का कार्य होना शेष है।

जहां तक कथाओं के मोटे रूप से विभाजन का प्रश्न है, 'फुलवाड़ी' के दसवें भाग की कथाओं का उपरोक्त वर्गीकरण एक सुविधा के लिए कर लिया गया है। इस वर्गीकरण को संपूर्ण लोक कथा साहित्य के विस्तृत विभाजन की पूर्व-पीठिका के रूप में देखना ही उचित होगा।

परि कथा : असमांन जोगी को परी-कथा क्यों कहा जाय ? यह प्रश्न संभवतया महत्व-पूर्ण है। वस्तुतः 'फेयरी टेल्स' का हिन्दी अनुवाद 'परी-कथाओं' के रूप में हुआ। यों सामान्यतया परी-कथाएं उन्हें ही माना जाना चाहिए—जहां अप्सराओं या परियों का कार्य व्यापार मिलता हो। किन्तु लोक कथाओं के अध्ययन में अलौकिक तत्वों से संचालित कलाओं को 'फेयरी टेल्स' कहा गया। अंग्रेजी का शब्द फेयरी टेल्स भी वस्तुतः जर्मन शब्द 'मार्चेन' का अनुवाद है और कहा जाता है कि 'मार्चेन' शब्द में अलौकिकता का तत्व ही प्रधान रहा है। असमांन जोगी कथा की महत्त्वपूर्ण बात यह है कि सामान्यतया दैत्य, राक्षस अथवा दस्युता का प्रतीक-पात्र पाताल-लोक, घने बीहड़ जंगल, अगम्य पर्वतों अथवा कुए-बावड़ी में रहता है

किन्तु असमांन जोगी का निवास स्थान आकाश में है । अन्य दैत्यों की भांति यह 'जोगी' भी मानव-वंशी प्राणियों का हरण करता है । और समाज में वेदनापूर्ण स्थितियों को पैदा करता है किन्तु इसका निवास निम्नलोक में न होकर, उच्चलोक में है जहां सामान्यतया देवकुल का साम्राज्य रहता है । इस दैत्य का प्राण एक तोते में निवास करता है, उसके शरीर से बाहर । अन्य प्राणी में अपने प्राण की संयोजना से दैत्य लगभग मृत्युंजयी बन जाता है । कथा अपने सहज रूप में सात भाइयों को पत्थर की पुतलियां बना देती है, सातों भाइयों की पत्नियों को 'जोगी' के हरम में पहुंचा देती हैं, किन्तु साथ ही साथ सातों भाइयों की छोटी बहिन के रूप में एक विरोधी शक्ति भी 'जोगी' के आकाश महल में पहुंच जाती है । अपनी विरोधी शक्ति से ही असमांन जोगी आकर्षित होता है और यही विरोधात्मक द्वंद्व उसके अंत का कारण बनता है । इस छोटी बहिन के साथ सहायक शक्ति के रूप में मालिन का चरित्र आता है । मालिन वस्तुतः आकाश में उड़ाकर ले जाई गई स्त्रियों एवं भूमि पर अवस्थित परिवार के बीच में कड़ी है और उसका पुत्र असमांन जोगी की हत्या करके कथा को सुखान्त की ओर ले आता है । यह कथा अपने गठन में अनेक प्रकार की महत्त्वपूर्ण मनोवैज्ञानिक वस्तुस्थितियों को प्रकट करने में समर्थ दिखाई देती है ।

दो भावनाओं, दो कर्मों अथवा दो विरोधी तत्वों का संघर्ष : प्रकृति एवं समाज की अन्तर्रचना में अंतर्द्वंद्व का अपना महत्व है । वस्तुतः प्रत्येक कार्य के संयोजन में दो वस्तु-स्थितियों के संघर्षण से एक तृतीय सत्य की उत्पत्ति होती है । थीसिस और एंटी थीसिस के संघर्षण से सिंथेसिस की कल्पना को विश्व के दर्शन-शास्त्र में अपना स्थान मिला है । उसका वृहत्तर अथवा व्यापक रूप लोक कथाओं के गठन में अंतश्चेतना के रूप में निरंतर किया जा सकता है । कहीं कहीं ये विरोधात्मक तथ्य प्रतीकों के रूप में आये हैं तो कहीं पात्रों के क्रिया-कलापों में निहित रहे हैं । इन्हीं तथ्यों के साथ अनेक बार विश्वास के बल पर या स्थूल मनोस्थितियों को पात्रत्व देकर भी अन्तर्द्वंद्व को अभिव्यक्त करने का प्रयत्न हुआ है ।

'जोग री वात' नामक कथा में हमें विरोधी तत्वों के दो युग्म मिलते हैं । कथा के पात्र हैं दौलत और दरिद्र । दोनों के संघर्ष का संचालन करती हैं दो अलौकिक सत्ताएं — लक्ष्मी एवं भाग्य । दौलत और दरिद्र दो भाई हैं और नाम के अनुरूप ही उनका जीवन भी है । एक ओर धन, संपत्ति और सुख है और

दूसरी तरफ निर्धनता, मजूरी और आत्मतोष को जड़ता है। इन्हीं दो विरोधी स्थितियों के पात्रों को लेकर लक्ष्मी एवं भाग्य में एक दूसरे से बढ़ने का विवाद उत्पन्न होता है। लक्ष्मी, धन की देवी है और धन प्रदान करके वह समाज के किसी भी परिवार या व्यक्ति को सुखी बना सकती है। भाग्य वस्तुतः कुछ भी देने की स्थिति में नहीं है किन्तु जिसकी मेहरबानी के बिना लक्ष्मी की दातारी भी व्यर्थ हो सकती है। दरिद्र को वे अपनी होड़ का केन्द्र बनाते हैं। लक्ष्मी की असीम कृपा से उसके खेत में हीरे-मोती निपजते हैं किन्तु अभागे को उनकी पहिचान नहीं। बनजारे की खरीद से जब राजा को हीरे-मोती की खेती का पता लगता है तो भाग्यवशात् सारी स्थिति बदल जाती है। दोनों के सहयोग से अथवा उनके द्वैत के अंत से नई स्थिति जन्म लेती है।

भूंडो और भलो नामक कथा के दो पात्र हैं — एक का नाम है बुरा और दूसरे का नाम है भला। दोनों ही विलोम शब्द — एक दूसरे के विरोधी। मनुष्य के दोनों ही चारित्रिक तथ्य। 'बुरापन' अपनी कुटिलता और षड्यंत्र से बाज नहीं आता और 'भलापन' अपनी सहजता में ही विकसित होता जाता है। इन दोनों के संघर्ष एवं द्वंद्व में एक को पराजित एवं एक को विजय मिलती है।

इसी प्रकार तीसरी कथा में पाप एवं पुण्य की दो सामाजिक मूल्यों का द्वंद्व मिलता है। इस कथा में दो चारित्रिक तथ्यों पर दो पात्रों का सृजन नहीं किया गया अपितु दो मनःस्थितियों से उत्पन्न एक ही व्यक्ति के संघर्ष का आधार लिया गया है। राजा द्वारा ब्राह्मण को पुण्यार्थ दिये जाने वाले धन के बदले उसके लिए स्वर्ग में सोने का महल बन रहा है और कुंवारी कन्या पर बुरी नजर डालने से उसके लिए नरक में अग्निकुंड की तैयारी की जा रही है। पाप और पुण्य में जो द्वैतत्व है — ठीक वही नरक एवं स्वर्ग है और ठीक वही संबंध पुनः अग्निकुंड एवं सोने के महल में है। दो विरोधी चारित्रिक सत्व के अनुरूप सारी कथा में दो-दो विरोधी तथ्यों का सृजन हुआ है।

लोक कथाओं में भावनाओं, लक्षणों, चारित्रिक तथ्यों, प्राकृतिक वस्तु-स्थितिओं एव अलौकिकता जन्य परिस्थितियों के विलोमत्व की एक स्थायी परंपरा चलती रही है। ऐसी कथाओं को इसी द्वंद्व पर निर्मित परिस्थितियों में विश्लेषित करना उचित होगा। सामाजिक मूल्यों के विषय में ये कथाएं सर्वाधिक मुखर होकर, अपनी सकारात्मक स्थापनाओं को व्यक्त करतीं हैं।

प्रहेलिकात्मक कथाएं : लोक कथाओं में यह प्रवृत्ति निरंतर मिलती है कि नायक के समक्ष प्रश्न प्रस्तुत किये जायें अथवा कठिन कार्यों को करने के लिए कहा जाय ; विभिन्न शर्तों से संबंधी कथाओं में भी प्रहेलिकात्मक कथांश का आभास होता है । किन्तु ऐसी कथाओं में प्रश्न , शर्त अथवा कार्य बताये जाने और उन्हें नायक द्वारा पूर्ण किये जाने के बावजूद प्रहेलिकात्मक कथा कहना उचित नहीं होगा । यों पहेली वस्तुतः शाब्दिक , लाक्षणिक या व्यंग्य के द्वारा समान - धर्मिता के आधार पर एक भ्रमपूर्ण विवरण देने का प्रयास करती है । दो अर्थ - संकेत वाली वस्तुस्थिति और चित्रण की शैली में कही गई बात को ही हम पहेली - मान लेते हैं । अतः प्रहेलिकात्मक कथाओं के विभाजन में हम उन्हीं कथाओं को लेना उचित समझते हैं जिनकी प्रकृति ' शुद्ध पहेली ' की है और उसका सामाजिक तोष भी उसके गूढ़ार्थ से पूर्ण हो जाता है । फुलवाड़ी में प्रकाशित चारों प्रहेलिकात्मक कथाएं इस दृष्टि से शुद्ध पहेली का ही सृजन करती हैं । यहां पहेली पूछना ही प्रमुख है और कथा का सृजन भी पहेली के लिए ही हुआ है । यहां कथा के लिए पहेली की शैली का प्रयोग नहीं है । कथाओं को पढ़ने पर ज्ञात होगा कि शब्दों के दो अर्थ - संकेत से एक घटनात्मक स्थिति का वर्णन किया गया है ।

इन चार कथाओं में से ' घर रै पाखती घर ' का अनुष्ठानिक महत्त्व भी है । गांव में विवाह के अवसर पर इस प्रहेलिकात्मक कथा को नाटकीय रूप से अभिनीत भी किया जाता है । घर से निकट घर , हाथ में घर , मुंह में घर , घर के भीतर घर की चार पहेलियों का क्रमिक अर्थ है — इत्र , मेंहदी , चूड़ा और नारियल । इन्हीं चार वस्तुओं को एक एक थाली में रखकर वधू और उसकी तीन सहेलियां , एक ही वस्त्राभूषण में , दूल्हे के सामने आती हैं । दूल्हे को उन चारों के बीच से अपनी वधू को चुनना पड़ता है । मेंहदी , चूड़ा और नारियल विवाह के मांगलिक प्रतीक हैं और इत्र ही इनसे भिन्न और प्रेम का चिह्न है । जिस लड़की के हाथ में इत्र है , वही उसकी वधू है । यह पहेली एक कथा है , एक खेल है और साथ ही साथ एक अनुष्ठान का अंश भी है । यह तो सामान्यतया लोक - वार्ता के अध्येता भली प्रकार जानते हैं कि विवाह अवसर पर पहेलियों का पूछा जाना और उन्हें जानना एक परंपरानुकूल व्यवस्था है ।

देवाळा री वापौती : किसान को सदियों के अनुभव ने सिखाया है कि भूमि पर हल चला कर और उसे सिंचित करते हुए भी वह कभी सुखी नहीं हुआ और

न कभी हो पायेगा। संभवतया आज विश्व का कोई ऐसा देश नहीं है जहां सामाजिक रूप से सबसे पिछड़ा वर्ग किसान न हो। औद्योगिक क्रांति ने आकर तो इस सामाजिक विषमता के अन्तराल को बहुत ही विस्तृत कर दिया। सामन्ती समाज में भी जहां कृषक आर्थिक व्यवस्था ही सर्वोपरि होती है, किसानों को सुखी जीवन बिताने का अवसर नहीं मिला। इस सार्वजनिक अनुभव से लोक-कथा का बच रहना संभव नहीं है। 'देवाळा री वापोती' का अर्थ है 'दिवाले की वसीयत' जो हमेशा किसानों के भाग्य में बदा है। यह कथा स्पष्टतः यही संकेत करती है कि एक गरीब ब्राह्मण ने अपने दिवाले को सेठ के हाथों बेचा था, वही 'दिवाला' चोरों के हाथों में पड़कर, किसानों के कुओं में गिरा दिया गया। अब उन्हीं कुओं से पानी के बहाने किसान निरंतर दिवालियापन, गरीबी, दरिद्रता और कठोर मजूरी के परिणामहीन फल को निकालने जा रहे हैं। अपने कथा-रूप में दो उत्पत्तियों की ओर कथा का संकेत है। एक बावरी जाति के लोग, जिन्होंने दिवाले को सिर पर उठाया था, वे पीढ़ियों तक दिवाले को ढोयेंगे और दूसरे किसान, जिनके कुओं में दिवाला गिरा दिया गया, वे निरंतर दिवाला ही सींचते जायेंगे। यों उत्पत्तिमूलक में कथाएं पुरा-कथाओं की श्रेणी में जायेंगी किन्तु इस कथा में सामाजिक मूल्यों एवं आर्थिक रूप से कमाने की वस्तुस्थितियों के प्रमुख चित्रण को प्रभावशाली बनाने के लिए 'मिथिक' आधार दे दिया गया है। इसी कथा में बनिये की चतुराई और चोर को पकड़े जाने की एक हास्यात्मक स्थिति का चित्रण भी हुआ है। सेठानी अपने पति से बात करने के बहाने चोरों को भरमा देती है कि वस्तुतः किस जगह 'दिवाला' छुपाकर रखा गया है। यह कथा विस्मयजनक रूप से कह जाती है कि दिवाला, जिसने ब्राह्मण को सुख से नहीं जीने दिया, बावरियों की जाति को हमेशा के लिए चोर बना दिया और कृषकों को पीढ़ियों तक सुख-संपत्ति से वंचित कर दिया, वही दिवाला बनिये के घर में एक विरोध व्यवहार कर गया। उसके घर पहुंचे हुए दिवाले ने बनिये की चतुराई के कारण दूसरी ही जातियों को जकड़ लिया। बनिये के लिए दिवाला भी लाभदायी सिद्ध हो गया।

'दुविध्या' नामक कथा एक अर्थ में भूत के चमत्कारिक रूप-परिवर्तन पर आधारित है। एक सेठ का परिवार जो भरापूरा और संपन्न है और निरन्तर एकान्तिक धन-संग्रह की वृत्ति में डूबा हुआ है, वह पारिवारिक जीवन के रोमांस

और उसकी छोटी-छोटी खुशियों से वंचित है। सेठ के पुत्र के लिए विवाह
अधिक महत्त्व व्यापार का है, धन का है, कमाई का है। वह निर्लिप्त भाव
संभवतया ठीक भगवान बुद्ध की तरह अपनी नव-वधू को छोड़कर चल देता है
इसी मौके का लाभ उठाकर भूत उसकी जगह ले लेता है। घटनाओं के क्रमा
में यह संकट तीव्र हो जाता है कि अंततः सही पति कौन है। इसका निर्ण
अंततः एक गडरिया करता है। गडरिये द्वारा ली गई परीक्षाओं से स्पष्ट
कि वह सांसारिक एवं अलौकिक प्राणी के बीच में विभेद को स्पष्ट करना चाह
है। अंत में भूत को एक दीवड़ी [चमड़े का बना पानी का पात्र] में बंद हो
पड़ता है। कथा की यह दुविधा एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न को आलोकित कर दे
है कि अंततः उस नववधू के लिए सुख का निवास किस में था ? जहां
लोक मानस का प्रश्न है, वहां तो भूत का प्रतीकात्मक अर्थ उसी जगह सम
हो जाता है जब वह सेठ के पुत्र की निश्चितता को पूर देता है। सेठ के जी
और उसके निर्विकार धन कमाने की लिप्सा पर भूत एक व्यंग है। य
अन्तश्चेतना का गंभीरता से विश्लेषण करें तो अनेक मनोवैज्ञानिक एवं सामा
तथ्य भी उद्वेलित हो जाते हैं। भूत का नववधू के प्रति निष्कपट व्यवहा
उसका अतुलनीय प्रेम और सत्य-स्थिति से परिचित कराने की वृत्ति आदि
बातें है जो 'भूत' की दुःखपूर्ण लीलाओं से कुछ भिन्न है। यह भूत विना
नहीं, अपितु एक सृष्टा है। लोक कथाओं में आने वाले भूतों में हम मान
को कष्ट पहुंचाने वाले भूत भी पाते हैं और मन की इच्छाओं को पूरने
भूत भी पाते हैं। जरूरत इतनी ही होती है कि भूत को नियंत्रण में र
की शक्ति होनी चाहिए। यह शक्ति मंत्र-तंत्र से सिद्ध की जा सकती
लेकिन, लगता है कि 'दुविध्या' के भूत को वश में करने के लिए किसी
शक्ति की आवश्यकता नहीं है, उसकी सौन्दर्यमुखी प्रवृत्ति ही मानो पर्याप्त

खांतीलो चोर : उसे चोर कौन कह सकता है जो घर में चोरी के लिए अ
भी सीधे कहता है कि मैं चोर हूं। उसका रूप रंग, उसका सम्मानयोग्य चेह
मोहरा, उच्च समाज की जरूरतों के मुआफिक कपड़े-लत्ते और वही चाल-
जो संपत्ति के कारण अपने आप उत्पन्न हो जाती है — तब कोई कैसे पहिचाने
वह चोर हो सकता है। चोरी की इस सिद्ध-हस्तता को प्राप्त करके सफ
के किसी भी शिखर तक पहुंचा जा सकता है। 'खांतीलो चोर' का कथा न

भी अपनी चोरियों के जरिये समाज में आदर का स्थान प्राप्त कर लेता है किन्तु चोर के सच बोलने की प्रतिज्ञा के पीछे एक साधु का योगदान है। कथा के घटना क्रम में चोर को चार सौगंधें लेनी पड़तीं हैं। चारों सौगंधें इतनी ना-मुमकिन हैं एवं हास्यास्पद हैं कि उनको जीवनभर मान लेने में कभी कष्ट उत्पन्न नहीं हो सकता। किन्तु भाग्य की विडंबना चोर को ऐसी परिस्थितियों में ला पटकतीं हैं: जब उसके द्वारा त्यागे गये सभी अवसर सामने आ जाते हैं। सोने का थाल, हाथी पर सोने का हौदा, रानी का पलंग और राजा बनाये जाने का प्रस्ताव: एक एक करके सभी उपलब्ध हो जाते हैं। किन्तु चोर उन्हें स्वीकार नहीं करता। चोरों का कार्य कितना ही असामाजिक क्यों न हो, उसे भी मनुष्यतापूर्ण जीवन जीने के लिए कुछ नियमों का पालन तो करना ही पड़ता है। इतना ही क्यों, हर व्यक्ति अपने मन चाहे निर्णयों पर जिस अडिग आस्था से जड़वत हो जाता है तब चोर के जीवन में भी वही सत्य क्यों नहीं मुखर हो सकता ? राजस्थान की लोक-कथाओं में चोरों और ठगों की अनेक चतुराईपूर्ण कथाएं प्राप्त होती हैं। खापरा चोर के चोरी का सिद्धान्त और अपने निर्णयों पर दृढ़ रहते हुए भी सफलता प्राप्त करने के बाबत अनेक कथाएं हैं। चोर का धर्म चोरी करना है किन्तु चोरों संबंधी कथाओं में उनके गुणों पर भी मोहित होकर बहुत कुछ कहा-सुना गया। ठगी और चोरी की कथाओं को पढ़ने पर कभी कभी यह भी महसूस होता है कि संभव-तया जासूसी ऐय्यारी के किस्सों के ये लोकात्मक रूप हैं। इन में ससपेंस के साथ चातुरी को सर्वाधिक महत्त्व मिला है। वस्तुतः इसी प्रकार की कथाओं में 'आगे क्या हुआ' का भाव सन्निहित रहता है।

'फुलवाड़ी और लेखक: लोक-कथाओं के घटनाक्रम अथवा उसमें निहित संघटनात्मक तथ्यों को लेकर हम जो कुछ समझने का प्रयत्न करते हैं, उसका संबंध कथाओं के बाह्य रूप से है। कथाओं की समानता अथवा उनसे निःसृत सामाजिक मूल्यों संबंधी तथ्यान्वेषण के जरिये वस्तुतः हम कथा के अंतरंग को समझने के बजाय, कथा की संरचना को समझने का उपक्रम ही अधिक करते हैं। फिर इन्हीं कथाओं को समाज के संदर्भ में रखकर देखने का प्रयत्न करते हैं तो स्पष्ट हो जाता है कि हम कथा को कथा के लिए नहीं अपितु कथा के द्वारा सामाजिकता को समझने का प्रयास कर रहे हैं। लोक-कथाओं के विश्लेषण में हर समय, किसी न किसी प्रकार का एक दृष्टिकोण हम पर हावी रहता है। कभी हम कथ्यात्मक भाषा का

सौन्दर्य देखना चाहते हैं, तो कभी उनके कथन-सौन्दर्य पर भी मुग्ध होने लगते हैं, कभी उन्हें भूगोल के साथ जोड़ते हैं तो कभी इतिहास के विघटित काल के चक्र में पहिचानने का प्रयत्न करते हैं। कभी कभी हम लोक-मानस की सामूहिकता के तथ्यों को लोक-कथा में तलाशने के लिए आतुर हैं तो कभी उसके संरचनात्मक तथ्यों, सफल शल्य चिकित्सक की तरह, खंड-खंड करके देखना चाहते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि हर समय लोक-कथा को अपने सहज आनंद की स्थिति से हटाकर, उसे शोध एवं खोज की सतत् परिक्रमा में उलझा देते हैं। संभवतया यहीं लोक-कथा के वर्तमान उद्देश्य में दो पृथक खेमे खड़े हो चुके हैं। एक खेमा लोक-कथा को एक जड़वत सत्ता के रूप में सामाजिक अवशेषों का आगार मान रहा है और कथाओं के माध्यम से कुछ अन्य सिद्धान्तों की चर्चा करना चाहता है। दूसरा खेमा है जो कथा को सिर्फ कलापूर्ण कथा ही रखना चाहता है। वह कथा के अंतरंग में झांककर उस में सन्निहित सत्य के आलोक के कुछ आनंददायक अंगों तक पाठक को पहुंचाना चाहता है। इस खेमे के लिए यह महत्त्वपूर्ण नहीं है कि कथा की उत्पत्ति कहां से हुई, कथा ने कितने देशों में यात्रा की, इसके अभिप्राय क्या हैं, इसका वर्गीकरण किस प्रकार किया जा सकता है। इस दल के लिए तो सिर्फ कथा ही अपने आप में अंत है। यदि कथा के अंतर में कुछ मोती, कुछ हीरे और कुछ सौन्दर्य है तो वे किस प्रकार प्रकट हों? इनका मानना है कि लोक-कथा का लेखक एक जोहरी है जो कथा-रूपी जवाहरात को मूल्यांकित करने में सक्षम है।

'फुलवाड़ी' की कथाओं के लेखक हैं — विजयदान देथा। लेखक के पास सशक्त राजस्थानी शब्दावली है, कहावतों-मुहावरों का भंडार है, कल्पना की उर्वक क्षमता है और सबसे बड़ी बात यह कि उन्हें मालूम है कि कथा के माध्यम से उन्हें कहना क्या है। संभवतया फुलवाड़ी के दसों भाग में एक भी कथा ऐसी नहीं है जिसके माध्यम से किसी न किसी सापेक्ष सामाजिक मूल्य का मंडन न हुआ हो अथवा सड़ी-गली व्यवस्था का खंडन न हुआ हो। विजयदान देथा ने असामाजिक कृत्यों को क्षण भर के लिए भी क्षमा नहीं किया और न क्षण भर के लिए शोषित और दरिद्रों की टोली का साथ छोड़ा। किसी भी लोक कथा में सामाजिक विसंगति या विषमता का प्रसंग आया तो विजयदान की कलम कथ्यात्मकता से कुछ हठ गई और उसने एक प्रहारात्मक ढंग से कथा के आक्रमक

तत्व को आलोकित कर दिया ।

लोक कथा के साथ लेखक का यह संबंध 'फुलवाड़ी' की एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण घटना है । लेखक की दृष्टि में दो तथ्यों का आधार दिखाई देता है। एक है कथा का मूल-घटनाचक्र अथवा तथ्यात्मक या संग्रहीत कथा की अपनी क्रमिक घटनावली और दूसरा है इन के अंतरंग से उत्पन्न एक नियोजित सत्य । उदाहरण के तौर पर हम विजयदान द्वारा लिखित 'खांतीलो चोर' की कथा को लें । इस कथा में एक गुरु से चोर का शिष्यत्व ग्रहण करना, चार सौगंधें लेनी, पांचवी सौगंध के लिए गुरु का आदेश, चोर का सत्य बोलना, सत्य बोलकर चोरियों में सफलता प्राप्त करना, रानी द्वारा अपने एकान्त महल में चोर को बुलाया जाना, उसको सोने के थाल में भोजन खिलाना, उसे हाथी पर सोने के हौदे पर बिठाकर नगर में घुमाना, उसे राजा बनाने का प्रस्ताव करना एवं उसके साथ सहवास करने को कहना और अंत में चोर की हत्या करवा देने की क्रमिक घटनावली मिलती है । जहां से इस कथा को सुना गया, उसे प्रस्तुत करने की सचाई को घटनाक्रम में ज्यों का त्यों रखा गया । लेकिन वस्तु-सत्य यह है कि घटनाओं का यह क्रम एक निर्जीव कथा है । कथा के अंतरंग में एक छोटा-सा हृदय कंपित है, उस कंपित हृदय को यदि यूं ही छोड़ दिया जाय तो इस कथा की तिक्तता को कला के सौन्दर्य का सहारा नहीं मिलेगा और कथा एक जड़वत घटनाचक्र तक ही सीमित रह जायेगी । यदि इसी सत्य को हम लोक कथा की सहज कथन शैली में भी देखें तो उस में घटनाओं के माध्यम से मनुष्य के अन्तर्मन को झकझोरने की प्रवृत्ति मिलती है । यह सही है कि उसकी सहजता में कथा का कलात्मक नियोजित सत्य एकदम स्पष्ट रेखाओं में नहीं उभर पाता । विजयदान के लेखन और दृष्टि में एक ऐसी शक्ति है जो घटनाओं से परे एक अदृष्ट सत्य को आलोकित कर पाती है । यह लोक कथा की प्रथम घटना से लेकर अंत तक की घटना में व्याप्त रहता है और चरम की स्थिति में पहुंचकर कथा का नियोजित सत्य मात्र एक वाक्य रह जाता है और कथा का घटनाचक्र उस सत्य को उजागर करने वाला माध्यम मात्र बच रहता है ।

'खांतीलो चोर' की कथा के एक एक अंश को अपने सामने रखने पर स्पष्ट ज्ञात होता है कि गुरु पाखंड का प्रतीक है । चोर, चाहे सामाजिक नकार और

उसकी भावनात्मक प्रेषणीयता एवं उसके भावात्मक तथ्य स्वयंमेव उन्नत बन जाते हैं। इन कथाओं की सशक्त अभिव्यक्ति, परम्परा से प्राप्त पद्धति ,पर निर्भर रहती है।

कथाकारों की इसी पृष्टभूमि से प्रस्तुत संग्रह की कथाओं को प्राप्त किया गया है और उन्हें लिखित स्वरूप देने से संबंधी जितनी व्यवस्था की आवश्यकता है, उसे आत्मसात करने के उपरांत ही स्वीकार किया है। बार बार यह प्रश्न भी उठा करता है कि कथाओं के लेखन में लेखक को कितनी स्वतंत्रता बरत लेनी चाहिये। इस प्रश्न का उत्तर केवल यही हो सकता है कि लिखित साहित्य और मौखिक साहित्य के बीच जो विवेकपूर्ण संबंध बन सकता है, उसी संबंध की परिधि के बीच कथाओं को लिखने का प्रयत्न किया जाय। इन कथाओं के लेखन में न इस परिधि का अतिक्रम किया गया है और न लिखित स्वरूप को निष्प्राण एवं प्रयोगवादी ही बनने दिया गया है।

बातां री फुलवाड़ी

भाग १०

रस कस दिवलौ बळै

अेक हो ठाकर । तीन ब्याव कर्‌या तौ ई गादी रौ धणी नीं जलमियौ । अेक दिन रीस रै भेळमभेळ नसा रौ भभकौ ऊठ्यौ तौ वै तीनूं ई ठकरांणियां नै मरवाय दी । राजाजी सूं दवा-यती लेय चौथी वळा जांन चढ़्‌या । राजाजी री चाकरी सूं दोरी घणीं छुट्टी मिळी । फगत पांच दिनां री । छठै दिन दरबार में पाछौ हाजर व्हैणौ । डोढ़ दिन मारग रौ । आधी ढळियां ई घोड़ै नीं चढ़्‌या तौ हाजरी में चूंक व्है जावैला । दिन बधतां ई परणीजनै आया अर दिन ऊग्यां पैली झिलमा-झिल तारां जड़ी रात मेड़ी रै हेटै घोड़ौ हींसियौ । ठाकर चाकरी सिधावण सारू आखता व्हिया । गोडां रळंकती काळी भंवर आटी रौ फटकारौ देय ठकरांणी भचकै आडी फिरी । डावर नैणां में प्रीत रौ मद घोळती बोली — राज तौ चाकरी सिधावौ, पण आ बैरण रात म्हनै छिण छिण डसैला । नीं व्है तौ इणनै ई राज रै सागै ले पधारौ । राज रै सिधायां अै नवलख तारा म्हारा रूं रूं में भाला री अणियां ज्यूं खुवै । औ अंधारौ लाय लाय सिळगावै । नित री इण बळत बिचै तरवार सूं गळौ सूंत न्हाकौ तौ सावळ । पछै रावळी इंछा ।

पण राजाजी री चाकरी-आगै रावळी इंछा रौ कीं जोर

नीं हो । पागड़ं पग देय घोड़ा री वाग हाथ में झालणी ई पड़ी । वणी रै सिधावतां ई देह में झुपता दीवा सगळा ई अेकण सागै वडा व्हैगा । अर मेड़ी रा दीवा गावा घी री कस खांचता च्यारूं खुणां चांनणौ छितरावता हा । गिगन रा दीवा उणी भांत झवाझव खिवता हा । सियाळा री ठाडी हेम रातां अंतस रा खीरा उकराळती ही । आंमण-दूमणी आपौ बिस-रायोड़ी ठकरांणी पाछी हींगळू ढोल्या माथै सूयगी ।

अंधारा नै खूंदतौ ठाकर री घोड़ौ वड़गड़ां वड़गड़ां दौड़तौ हौ । दूजै दिन सिझ्या री वेळा दौड़तौ दौड़तौ घोड़ौ अणछक ढब्यौ, जांणै च्यारूं पगां नै कोई अपड़ लिया व्है । झटकौ लागतां ई ठाकर अठी-उठी जोयौ । अेक काळिंदर मारग रै विचाळै सळवळतौ सळवलतौ चालै । लांवौ । काळौ भंवर । ठाकर री आंख्यां सांम्ही ठकरांणी री आंटी फटकारौ देवती घूमी । मुळकनै बोल्या—थूं कांई गुमेज में आंटौ आंटौ चालै, म्हारी वींदणी री आटी थारा सूं वत्ती लांवी अर वत्ती चीकणी । थारौ सांवळौ रंग तौ उणरी आटी सांम्ही साव मगसौ लागै ।

सळवळता कालिंदर नै ठाकर री आ बात खारी लागी । देह रै मांय सळीकौ ऊठ्यौ । वौ तौ पछै टळ परौ नै ऊजड़ ढळग्यौ । ठाकर रौ घोड़ौ मारग मारग भरणाटै दौड़तौ रह्यौ ।

काळिंदर घोड़ा रै खोजां खोजां मेड़ी तांई आयौ उण वेळा रात आधी ढळगी ही । वौ तौ पछै मेड़ी में आय पाधरौ हींगळू ढोल्या माथै चढ़ग्यौ । सुध-बुध भूल्योड़ी ठकरांणी नींद में सूती ही । दीवौ आपरी लगन में बळतौ हौ ।

काळिंदर आटी सूं नप्यौ तौ साचांणी आटी लांवी निकळी ।

दीवा रै चांनणै वत्ती काळी अर वत्ती चीकणी दीसती । सांप रौ मूंडौ उतरग्यौ । अैड़ी बात तौ सपनै ई नीं जांणी ही । पूंछड़ी रौ तणकारौ देय हेटै उतरण घाळौ हौ के ठकरांणी री नींद खुलगी । झिझकनै वैठी व्ही । फुफकारौ सुणनै अठी-उठी जोयौ । खुद री इज साथळ हेटै काळौ नाग दब्योड़ौ । अंगै ई नीं डरी । निसंक होय आपरा मेंहदी राच्या हाथ सूं काळिंदर री पूंछ झाल ली ।

काळिंदर नीं फुण करचौ अर नीं फुफकारौ भरचौ । इच-रज करतौ पूछयौ—वाल्हा, थूं म्हारौ पूंछ क्यूं झाल्यौ ? म्हारै मारग जावण दे । लोग तौ म्हांरी लींगटी सूं ई डरपै अर थूं कंवळा कंवळा हाथ सूं अजांण में म्हारौ पूंछ अपड़ियौ ! के तौ थनै जाच कोनीं के म्हारौ डस्योड़ौ पांणी ई नीं मांगै अर के थूं जीवणा सूं धापगी ।

ठकरांणी तौ ई पूंछ नीं छोड्यौ । बोली—म्हैं अजांण में थारौ पूंछ नीं झाल्यौ । जीवण रौ आणंद लेवण सारू काळिं-दर सूं ई नीं डरपी । म्हारै साथै घरवास करै तौ पूंछ छोडूं, नींतर इण मेंहदी रच्या हाथ में इणी भांत पकड़ियोड़ी रैवैला ।

सांप कह्यौ—पण वाल्हा, थारौ म्हारौ घरवास कीकर व्है । म्हैं जात रौ नाग, देख्यां डरै, खाधां मरै । अर थूं जात री लुगाई । घरवास रौ कीं सरतन ई तौ नीं जुड़ै ।

आपरी काळी आटी सूं काळिंदर रै पळेटा देवती वा लुगाई कैवण लागी—म्हारा हिवड़ा में थारै जैड़ी ई नागण फुफ-कारा भरै । वा थनै दीसै कोनीं । थारा जीव अर म्हारा जीव रौ मन मिळग्यौ, पछै घरवास में कांई खांमी । मांनै

तौ थारी मरजी, नींतर म्हैं थनै जावण तौ नीं दूं। म्हारै हिवड़ा री नागण थारै विना तड़फै, विलखै।

ठकरांणी रा वाद आगै काळिंदर रौ ई कीं जोर नीं चाल्यौ। आटी रा पळेटां में उणरौ मन ई गूंथीजग्यौ। मुळकनै इमरत भरया सुर में बोल्यौ — पण लुगायां रै मन री कांई पतियारौ, म्हारै साथै प्रीत नीं तोड़ै तौ म्हैं कठै ई नीं जावू। थारै म्हारै घरवास।

काळिंदर रै होठां माथै वाल्ही देवती वा लुगाई वोली — औ लुगायां री इज मन व्है जकौ काळिंदर साथै ई प्रीत कर सकै। म्हारै आं होठां री ई थनै पतियारौ कोनीं! जद तौ इण दुनियां में पतियारा जैड़ी कीं दूजी वात ई नीं व्है सकै।

इण में इचरज जैड़ी कीं बात नीं के लुगाई रै होठां रौ परस पातां ई वौ काळिंदर अेक इदक सरूपवांन मोटयार वणग्यौ। रूप अर जंवांनी रौ अखूट पूतळौ।

पछै ठकरांणी रै हरख री कांई पार। हिवड़ा में फुफकारां भरती नागण रै मूंडा सूं फूल झड़ण लागा। इमरत वरसण लागौ। वा मस्त होय नाचण लागी।

सूरज ऊगतां ई वौ मोटयार पाछौ काळिंदर वण जातौ अर उणरै आथमतां ई पाछौ उणी भांत दीप दीप करतौ मोटयार वण जातौ।

ठकरांणी सारू ऊजळा दिन तौ काळौ अंधारी रातां ज्यूं वणग्या अर काळी रातां उणनै सूरज सूं सवाई ऊजळी लखावण लागी। उणरा जीवण में इमरत घुळग्यौ। काळिंदर विना उणनै अेक छिण ई नीं आवड़तौ। आखै दिन काळिंदर नै के तौ

आपरा खोळा में राखती के आटी रै भेळौ गूंथ्योड़ौ राखती। सोना रा कचोळा में केसर घोळ्योड़ौ दूध पावती। खुद उणरै अंठवाड़ौ बच्योड़ौ दूध पीवती। सिझ्या री अंधारौ व्हैतां ईं उण मोटचार रा हिवड़ा में समाय जाती।

इण भांत बदळीजियोड़ै दिन-रातां रौ गेड़ौ अकथ्य आणंद रै सागै घूमतौ हौ के अणछक अेक भंज आय पड़्यौ। राजाजी री दवायती लेय ठकरांणी सूं मिळण रा उमाया ठाकर मद में भूमता रावळै पधारया उण वेळा सूरज आपरै मथारै चढ़्यौ कण कण में उजास छितरावतौ हौ। डावड़ी रै मूंडै बधाई रा अै सुभ-समंचार सुणतां ईं ठकरांणी री आंख्यां साम्ही धूंवा रा गोट ऊठण लागा। देखतां देखतां आखी मेड़ी में धूंवौ ई धूंवौ पाथरग्यौ।

आटी सूं खुलनै काळिंदर मूंडागै फुण करतौ कैवण लागौ— चंवरी रा भरतार पधारया, अबै म्हारी कांईं पूछ। पण विछोव व्हैतां ईं म्हारा तौ प्रांण ई निकळ जावैला। अळगौ रैय जीवणा बिचै तौ मरणौ घणौ स्हिरै।

आंसू ढळकावती ठकरांणी कैवण लागी —वै अठै आयग्या सौ तौं म्हारै ई सारै री बात कोनीं। पण हीमत हारयां थांरी-म्हारी प्रीत नीं निभै। म्हनै कीं न कीं जुगत विचारणी ई पड़ैला। कोई मिस बणाय म्हैं ठाकरसा नै चंपा रा फूल तोड़ण सारू भेजूं। फूल तोड़ती वेळा थें वांनै डस न्हाकजौ। किणी नै कीं भणक नीं पड़ैला। अबै राज रै दांतां इमरत री पोटळियां रै बदळै पाछी विस री पोटळियां भरौ। देखौ, कैड़ीक सावचेती बरतौ। फूल में हाथ घाल्यां पैली पैली पाधरा देव-

लोक । उठै देवता वाट न्हाळै ।

कालिंदर रै ई आ जुगत दाय आई ! वौ सळवळतौ पिलंग सूं हेटै उतरयौ। वगीचा में जाय चंपा रै फूलां में गूंचळी मार चापळनै बैठग्यौ ।

ठकरांणी सूं मिळण रा उमाया ठाकर रंग-मैल में पधा-रया । ठकरांणी सोळै-सिणगार करयां, गैणा-गांठा में लड़ा-भूम व्हियोड़ी पिलंग रै पाखती ऊभी ही । मुळकनै ठाकर रै सांम्ही इण भांत मदछकी निजर सूं देख्यौ के वांनै बिना पीयां ई हजार बोतल री नसौ चढ़ग्यौ । पैली वार वांरै समझ में आई के राजाजी री चाकरी कित्ती आंहजी अर कित्ती मूंघी ।

ठाकर री मंसा रा जवाव में सगळौ रूप अर सगळी जवांनी आंख्यां में छळकावती ठकरांणी बोली — इण रंग-मैल में दूजी किणी वात री खांमी कोनीं, पण चंपा रै फूलां बिना सेज अडोळी लागै । राज इत्ता दिनां सूं पधारया, जे म्हनै देख्यां राज रै मन में आणंद रा फूल खिल्या व्है तौ ढोल्या माथै ई चंपा रै फूलां री मेहर करावौ ।

कैतां पांण ठाकर रा मन में आ वात जचगी । अजेज ऊभा ज्यूं ई वाग में गिया । हरियळ पांनां रै विचाळै फूल दीप दीप करता हा । सौरम सूं ठाकर री रग रग नाचण लागी । प्रीत रौ उमायौ ठाकर फूलां में हाथ घाल्यौ ई ही के सरप री फुफकार सुणीजी । तुरत हाथ खांच लियौ । देख्यौ—अेक कालिं-दर फुण करयां फूलां रै जोड़ै डसण री ताक में वैठौ । आज तौ वच्या ज्यूं ई वच्या । पाधरौ मूठ माथै हाथ गियौ । मपाक करती वाढ़ाळी वारै काढ़ी । अेक पावंडौ लारै सिरक

६ ०० रस कम दिवली वळै

घ्यांन सूं वार करचौ के गूंचळी मारचा काळिंदर रा चार टुकड़ा व्हैगा । ठाकर रै माथै आयोड़ी मौत टळगी । पछै दूणा कोड सूं नचीता होय फूल तोड़्या ।

पण खोळा में महकता फूल भरयां ठाकर रंग-मैल में पधारचा तौ ठकरांणी रौ मूंडौ उतरग्यौ । काळजौ धुक धुक करण लागौ । काळिंदर सूं भूल तौ नीं व्हैणी चाहीजती ही । आ बात कांई व्ही ।

ठाकर हींगळू ढोल्या माथै फूल राळता कैवण लागा—आज तौ थांरै भाग रौ बचियौ पण बचियौ । जोगमाया खैर करी के माथै आयोड़ी मौत टळगी । नींतर पांणी मांगण री ई जरूरत नीं ही ।

ठकरांणी उतावळी होय पूछ्यौ—अैड़ी कांई बात व्ही ?

अेक मूठी भरनै ठाकर ठकरांणी माथै फूल उछाळ्या । मुळकता थका कैवण लागा—थांरौ सुहाग आडौ आयौ । फूल तोड़ण सारू हाथ घाल्यौ ई ही के सरप री फुफकार सुणीजी । फूल सूं छूटोड़ौ हाथ पाधरौ तरवार री मूठ माथै गियौ ।

ठकरांणी रा काळजा में जांणै कोई भालौ आर-पार व्हियौ । सांस है जठै ई ठमग्यौ । अपूठी घिरनै पिलंग रै हाथ देय ऊभगी । ठाकर थकै कैवण लागा—काळ म्हनै डसै उण पैला ई म्हैं तरवार रा अेक ई झटका में उणरा चार टुकड़ा कर न्हाकिया ।

आ बात सुण्यां पैली ठकरांणी नै ई मौत क्यूं नीं आयगी । औ जीवणौ तौ मौत सूं ई वत्तौ दुखदाई । पण मौत तौ जांणै किण भौ रौ आंटौ साज़ियौ । ठकरांणी बेचेतै होय गुड़गी । ठाकर

नै मोद व्हियी के ठकरांणी कित्ती पतिव्रता अर सुलखणी। धणी रै जोखा री वात सुणतां ई सुध-बुध पांतरगी। जे साचांणी पवन लाग जातौ तौ सुणतां पांग मर जाती।

जतन करयां ठकरांणी नै चेतौ बावड़ियौ। ठाकर रै ई जीव में जीव आयौ। पछै डावड़ियां नै अणूंती भुळावण देय खुद रया सूं मिळण सारू कोट में पधारया।

ठकरांणी भरोसा री अेक खास डावड़ी नै भेज चंपा रा गोड हेटै वढ़योड़ा काळिंदर नै मंगवायौ। गमछौ खोलनै देख्यौ। चार तोड़ा व्हियोड़ा। कीड़ियां चेंटयोड़ी। ठकरांणी निरी ताळ छबरां छबरां रोई। मरयोड़ा काळिंदर नै छाती सूं चिपायौ। पण सेवट तौ माठ झेलणी इज ही। मारण वाळा धणी सूं वदळौ लियां विना काळजा री दाझ नीं ठरै। डावड़ी नै कैय काळिंदर रा तोड़ा मसळ रस कढ़वायौ। चांदी रा दीवा में रस उंधाय रेसम री वाट वटाई। मसळियोड़ा टुकड़ा ढोलिया रै हेटै धरवाय दिया।

सिंझ्या रा ठाकर रंगमैल में पधारया उण वगत वौ ई सांप रै रस वाळौ दीवौ झुप्योड़ौ हौ। ठकरांणी रै उणियारा री आब हाल तावै नीं आई। मूंडौ साव उतरयोड़ौ। आंख्यां सूं उदासी वरसै। ठाकर आटी नै हाथ में लेय कैवण लागा: इण नाकुछ वात री इत्तौ कांई सोच करयौ। अैड़ी ठा व्हैती तौ कैवतौ ई नीं।

ठकरांणी री आंख्यां वळै जळजळी व्हैगी। दीवा री वळती वाट रै सांम्ही देखती वोली — आपनै दीखै आ नाकुछ वात, म्हारौ जीव तौ हाल ठांणै नीं आयौ।

ठाकर कह्यौ—थांरौ अैड़ौ काचौ जीव तौ नीं जांण्यौ हौ। सेवट अेक दिन तौ सगळां नै मरणौ इज है, पण सिरदारां री मौत रौ तौ कौं पतियारौ इज नीं। रांम जांणै किण पलक उणरी मेहर व्है जावै।

ठकरांणी रा मन में तौ कौं दूजी वात घिरोळा खावती ही। थोड़ी ताळ पछै दुमना सुर में बोली—चा वात सुण्यां पछै म्हारौ तौ किणी वात में मन नीं लागै। मन बिलमावण सारू आपरी इंछा व्है तौ कीं आडियां पूछूं।

ठाकर आखता होय बोल्या—अवस पूछौ, इण में संका री किसी वात। म्हैं तौ खुद ई कीं अैड़ी वात कैवणौ चावतौ।

ठकरांणी मुळकण री चेस्टा करती थकी पूछ्यौ—जे आप सूं आडी रौ अरथ नीं बताईजियौ तौ!

ठकरांणी नै राजी करण सारू ठाकर मोटौ कोल करग्या। कह्यौ—अरथ नीं बतावूं जित्तै नीं अंजळ लूं अर नीं थांरी देह रै हाथ लगावूं।

ठकरांणी तौ आ इज चावती ही। ठाकर नै वत्ता खरावण सारू वळै पूछ्यौ—कौल दोरौ है, राज सूं निभैला नीं। पछै पलटणा बिचै अबारूं पाछौ विचार कर लिरावौ।

ठाकर आडियां रा अरथ बतावण में प्रवीण हा। वांनै पूरौ विस्वास हौ। अर जबांन सूं कौल व्हैगौ जकौ तौ व्हैगौ। वादळा सूं बरसियोड़ौ पांणी पाछौ चढ़ै तौ होठां बारै निकळियोड़ा बोल पाछा लिरीजै। गुमेज भरया सुर में बोल्या—मूंडौ है, घरटी रौ गाळौ कोनीं। निकळ्या बोल पाछा नीं उराइजै। म्हनै पूरौ विस्वास है के किणी आडी रौ अरथ

म्हारा सूं छांनी कोनीं । म्हनै ठा पड़गी के थांरी जीव तौ साव काचौ, तौ ई इण वात सारू अंगै ई सोच मत करौ । इण कौल री नौवत इज नीं आवैला ।

ठकरांणी कह्यौ — जद तौ डर जैड़ी कीं वात नीं । म्हैं जांणूं के आप मरचां ई कौल सूं नीं डिगौ । पछै ई डर नीं लागै तौ डर कांई कांम रौ ।

तठा उपरांत ठाकर आडी बूझण रौ आंचौ करचौ तौ ठकरांणी आडी बूझी । दीवा कांनी सूं मूंडौ फेर नीची धूण करनै वोली —

रस कस दिवली वळै, धड़ ढोल्या रै हेट,
सुगरा नै नुगरौ मारचौ राय चंपा रै हेट ।

आ आडी तौ साव नवी । पैला कदै सुणी ई नीं । ठाकर घणौ ई माथौ लड़ायौ पण कीं अरथ समझ में नीं आयौ । घोखतां घोखतां आडी तौ कंठां व्हैगी, पण अरथ रौ चांनणौ नीं व्हियौ । घणौ ई माथौ खुजायौ, घणी ई गावड़ खुजाई पण सै अकारथ । आडी रौ म्यांनौ समझ नीं पड़चौ सौ नीं पड़चौ ।

ठकरांणी मुळकनै वोली — आप हुकम फरमावौ तौ म्हैं अरथ वताय दूं ।

ठाकर नै जूंझळ तौ आयोड़ी ही, आ वात सुणतां ई झळकी आयगी । लुगाई रै मूंडागै पोचापौ कीकर वतावै । आखी ऊमर मोसा देवैला । ठाकर री आंट रै तवोड़ौ लागौ । वोल्या: थूं म्हनै इत्तौ हीणपुन्यौ जांणै है कांई । थनै अरथ बूझनै म्हारौ कौल निभावूं ! किणी भांत री सांनी ई करी तौ म्हारौ रगत पीवैला । के तौ अरथ वतावूंला के म्हारौ कौल पूरौ करूंला ।

ठाकर आपरै हाथां ई काठौ बंधग्यौ । खुलण रौ कोई मारग ई नीं । ठकरांणी धणी री रग पिछांणली । वा ज्यूं ज्यूं कौल तोड़ण रौ वाद करती, ठाकर त्यूं त्यूं कौल रा जाळ में वत्ता फंदीजता गिया । खांचतां खांचतां गांठ इत्ती घुळगी के किणी भांत खुलण री गुंजाइस नीं बची । मरणौ कबूल पण ठाकर आपरा कौल सूं नीं डिगैला । आडी रै अरथ री तिथ छोड ठाकर तौ कौल री झाटी अपड़ली । आखी परघै समझाय समझाय हार थाकी पण ठाकर अंजळ नीं लियौ । आंख्यां में सास आयग्यौ तौ ई हार नीं मांनी ।

पाखती रा ठिकांणा में ठाकर री वैन परणायोड़ी ही । उणनै भाई रै खण रा अै कावळ समंचार मिळिया तौ वा रथ जुताय अजेज उठा सूं वहीर व्ही । भाई नै मनाय छोडैला ।

मारग में काळिंदर रै माईतां री ढांणी आई । ठाकर री वैन पांणी पीवण सारू रथ ढावियौ । काळिंदर री मां रातवासै ढबण री मनवार करी पण वा नीं मांनी । कह्यौ के भाई रा अै समंचार सुणियां कीकर ढबणी आवै । चौनिजरियां अेक दूजा रौ उणियारौ देख ले तौ मोटी बात ।

वैन रा नेह अर दुख माथै दिवला री मां न दया आई । पछै वा उंण सूं कीं चोज नीं राख्यौ । आपरै बेटा सागै ठक-रांणी री प्रीत रौ सगळौ खातौ उघाड़नै सुणाय दियौ के कीकर चाकरी चढ़ता ठाकर सूं मुलाकात व्ही । वै कांई मोसौ दियौ । पछै वौ काळिंदर कीकर आपरी लम्बाई अर काळा रंग रौ तूमार लेवण सारू गियौ । कीकर ठकरांणी उंणरी पूंछ झाली अर पछै कीकर वां दोनां रै गाढ़ी प्रीत व्ही । ठाकर रै आयां दोनूं

उणनैं मारग री जुगत विचारी । पण होणी रा चाळा ई न्यारा ॥ ठाकर तौ जीवतौ वच्यौ अर सांप रा चार टुकड़ा व्हैगा ॥ पछै कीकर ठकरांणी वात सुणनैं वेचेतै व्ही । भोळौ ठाकर समझ्यौ के वणी रैं जोखा री वात री सुणनैं सुलखणी नार गुव-वुव पांतरगी । पण वा तौ काळिंदर री सुणावणी सूं वेचेतै व्ही । उणरी प्रीत रैं सातर ई आडी रौ ओळावौ लियौ । अर भोळौ धणी खण रा फंदा में भिलग्यौ । अरथ नीं वतायां वौ भूखी-तिरसौ ई मर जावैला ।

वैन उतावळी होय अरथ वूझियौ तौ दिवला री मां उणनैं सावळ समझाय पूरो अरथ वताय दियौ । पछै ठाकर रो वैन राजी राजी उठा सूं वहीर व्ही ।

वैन रैं आवण री वात सुणी तौ ठकरांणी दौड़ी दौड़ी उण सूं सांम्ही मिळण सारू गी । हाथ जोड़ वोली के कीकर ई वै भाई नै जीमण सारू मनावै । वांरो कैणो किणी भाव नीं लोपैं ।

नणद तौ भौजाई रा लखण पिछांणती ही । वात करण री मन नीं हौ तौ ई रूखा सुर में वोली — कौल करचौ है तौ तुड़ावणौ सावळ कोनीं । अरथ वतायनै ई अंजळ लेवैला । आपरी इंछा व्है तौ पैंला म्हैं अरथ वताय दूं ।

भौजाई हाथ जोड़ वोली — वाईसा, आप ई कैड़ी वातां करी । आप कुण अर वै कुण ? म्हैं तौ थाळ अरोगण री घणी ई मनवारां करी पण ठाकरसा तौ मांन्या ई नीं । आप अरथ नीं वतावौ तौ ई घणौ आछौ, कीकर ई करनैं अंजळ सारू राजी कर दो तौ सै वातां भरपाई । म्हैं अरथ व्हियौ

-जांण लेस्यूं ।

नणद डोढ़ में बोली—नीं नीं, अरथ नीं बताईजै तौ म्हैं खुद अंजळ नीं लेवण दूं । कौल निभायां बिना तौ अेक पलक ई नीं थकै ।

भौजाई मन ई मन राजी व्ही । नीं तौ अरथ बताईजै अर नीं अंजळ लिरीजै । अबै तौ दो तीन दिन में प्रांण निकळ जावैला ।

भाई बैन नै देखी तौ आंख्यां रा ऊंडा खाडा आंसुवां सूं भरीजग्या । बोलीजियौ कीं नीं । छेहला दरसण हा । थोड़ी ताळ तौ बैन ई भाई रै सागै रोई, पण पछै अरथ बतावण री बात करी । भाई नै पैला तौ विस्वास ई नीं व्हियौ ।

नणद भुप्योड़ौ दिवलौ हाथ में लेय आडी रौ अरथ बता-वण लागी उण वेळा ई भौजाई रौ माथौ ठणकियौ । वा उणरै मूंडा रै सांम्ही देख कैवण लागी—चंपा रै गोड हेटै मरयोड़ा उण काळिंदर रै कस रौ औ दिवलौ जगै । अर बच्योड़ा च्यारूं तोड़ा ढोल्या रै हेटै पड़्या ।

पछै नणद आपरा हाथ सूं काळिंदर रा च्यारूं तोड़ा बारै काढ़्या । कैवण लागी—औ काळिंदर तौ व्हियौ सुगरौ अर उणनै मारण वाळौ धणी व्हियौ नुगरौ । फूल तोड़तां डस जातौ तद भौजाई री मन चींती व्हती ।

तठा उपरांत बैन भाई नै सगळी बात बताई । बात सुणतां ई अध-मरया भाई री नस नस में सौरा चेतन व्हैगा । भचकै ऊभौ व्हियौ । उणीज तरवार सूं ठकरांणी रौ माथौ वाढ़ न्हाकियौ । पछै बैन रै साथै बैठ निरांत सूं थाळ जीम्यौ ।

अर उठी मरतां ई ठकरांणी री मुगति व्हैगी । उणरौ जलम सुधरग्यौ । जिण तरवार सूं प्रेमी रा टुकड़ा व्हिया, उणी तरवार सूं उणरौ गळौ वढ़्यौ । इण सूं वत्तौ वळै कांई हरख अर उछाव व्है । कदास आ वात सोचनै वा नागी तरवार देख अंगै ई नीं डरी । सांम्ही मुळकी ! अर माथौ वढ़्यां पछै ई उणरै होठां री मुळक मगसी नीं पड़ी ।

बांड्यौ वीर

एक हौ कुम्हार । तिणरै बेटा सात । परण्या - पांत्या । छवां रै सासरियां री जाडी - माती गवाड़ी ही । सै बातां रा थाट । अणूंती वित्त - मवेसी अर लांठा ई कडूंबा । सास - सुसरा अर साळा - साळियां । पण सबसूं छोटकिया बेटा रै सासरा रौ तौ खूंटौ ई उखलियोड़ौ हौ । नैड़ौ आगौ कोई कोनीं । तद बेटा री बहू वास्तै सासरौ अणूंतौ दुख दाई व्हैगौ । पीहर रौ पखौ नीं देख सास, सुसरा अर नणदां बात बात में खोड़ोलायां करता । मोसा देवती । माड़ा अर दोरा कांम सगळा उणनै भुळावता । खावण - पीवण में दुभांत वरतता । छोटकिया बेटा री बहू घूंघटा रै मांय अस्टपौर आंसूड़ा ढळकावती ।

सांवण री तीज अर राखी माथै छवूं बवां रै पीवर सूं भांत भांत री संभाळां आवती । ओढ़णा, खोपरा, नाळेर, मगद अर सातू इत्याद । पण छोटकी वींदणी रै कोई व्है तौ भेजै । परणीज्यां पछै पाछा पीवर रा रूंखड़ा ई नीं देख्या । वार - तिंवार नवै दिन सगळी वींदणियां नै आणौ आवतौ, पण छोटकी वींदणी सारू तौ सासरौ साचांणी कैद बणग्यौ । वा मन ई - मन सोचती के ठाला - भूला अै तिंवार नीं आवै तौ कैड़ौ आछौ । पण तिंवार तौ वगत माथै आयै बरस आवता । गिणती

रा सूरज ढळता अर भळभळातौ कोई न कोई तिवार आय धमकतौ । उण दिन छोटकी वहू रै दूणी दैण व्है जाती । दूणौ कांम, दूणौ हौड़ौ, दूणी तळतळावण अर दूणौ रोवणौ । उगीनी नणदां उणनै आंगळियां में पोय लेती ।

राखी रौ त्यूहार आयौ तौ छवू ववां री रिमझोळां रण-कारा उडावण लागी । किणी रौ भाई आवैला, किणी रौ काकौ तौ किणी रौ मोत्रौ भतीजौ । सगळां रै हीयै हरख रौ पार नीं हौ । पण छोटकी वहू री रोय रोय आंख्यां सूजगी । कांम रै आगै मेंहदी लगावण री ई वेळा नीं मिळी ।

अेक उगीनी नणद कह्यौ — बाकी भौजाइयां रै हाथां मेंहदी राच्योड़ी, आंगणौ नीपणा सूं रंग मगसौ पड़ जावै, थारा हाथ अडोळा, आज री आज सगळौ आंगणौ नीपनै मांडणा मांड-मूंड आखौ गोवर थेपणौ है । हाथ माथै हाथ धरयां कांम नीं निवड़ै ।

छोटी वहू रै काळजै सळीकी उठ्यौ । गारौ घालण मारू लांठौ माटी लेय रोवती रोवती नाडी कांनी वहीर व्हैगी । नाडी गांव सूं खासी आंतरै ही । पावंडै पावंडै हिवड़ा रौ सरवर खाली करती वा नाडी री पाळ माथै पूगी । वांवी रै पाखती लैरावता काळा नाग माथै निजर पड़्यां पछै ई वा टळी नीं । उणी भांत सांप रै सांम्ही चालती री । अैड़ा जीवणा विचै तौ मौत घणी सुखदाई । काळिंदर ई उणरै मन री बात समझ्यौ । वौ ई डरती वांबी रै मांय नीं वड़्यौ । डरण वाळी वा चाल ई नीं ही । पाखती आतां ई काळिंदर फुफकारयौ । छोटकी वींदणी तौ ई नीं डरी । खड़ां खड़ां निसंक काळिंदर

रै पाखती आय ऊभगी । पण काळिंदर तौ उणी भांत फुण करयां मस्ती में लैरावतौ रह्यौ । समझग्यौ के विखा री तायोड़ी आ अभ्यागत मौत रौ सरणौ झेलणौ चावै ।

छोटोड़ी बींदणी माटौ हेटै उतार नीचै लुळी । काळिंदर री आंख्यां सांम्ही आंगळी हिलाय हाथ रौ परस करयौ । काळिंदर मुळकनै बोल्यौ — बावळी, मौत आंधी नीं व्हिया करै !

लुगाई री जळजळी आंख्यां सांम्ही निजर व्हैतां ई काळिंदर री मुळक लोप व्हैगी । वौ कीं कैवण वाळौ हौ के वा माटा वाळी पिणियारी अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकती बोली — म्हारा सूं तौ मौत ई कांनाटाळौ करै ।

काळिंदर उणरी हथाळी माथै मूंडौ रगड़तौ कैवण लागौ : वाल्हा, मौत नीं तौ किणी नै वगसै अर नीं किणी सूं कांनाटाळौ करै । पण थूं मौत आयां पैली क्यूं मरणौ चावै, इणरौ म्यांनौ तौ बता ।

मिनखां रै मोसा अर दुख सूं खेरणौ व्हियोड़ौ काळजौ काळिंदर रै मूंडा री आ इमरत वांणी सुणनै नवी कूंपळां ज्यूं हरयौ-चकन व्हैगौ । उणरी आंख्यां सूं आणंद रा मोती वरसण लागा । वा काळिंदर नै फुण सूं पूंछड़ी तांई तीन चार वळा भाळयौ । है तौ साचांणी सांप ई । पूंछ थोड़ी वढ्योड़ी । औ बांडौ काळिंदर उणनै आछौ इज घणौ लागौ । ऊमर में पैली वार प्रेम अर थ्यावस री बोली उणरै कांनां सुणीजी ही । रोवती रोवती बोली — आज राखी रौ त्यूंहार । पीवर में म्हारै कोई आगौ-नैड़ौ कोनीं । म्हैं किणनै वीरौ कैय वतळावूं, म्हैं किणरै राखी बांधूं । घरै सगळी जणियां म्हनै मोसा

देवैं, म्हारा सूं सोहीलायां करैं ।

सांम्ही ऊभी अम्यागत लुगाई नैं रोवतां देख बांड्या सरप री आंख्यां ई जळजळी व्हैगी । गळगळा सुर में कैवण लागो: थूं म्हारी धरम री बैन अर म्हैं थारो भाई । म्हारैं राखड़ी री फूंदी दांव । सगळी जणियां पछै थारा सूं ईसकी नीं करै तो म्हनैं कैजे । बाई सबै तो माठ मेल, थनैं रोवतां देखूं तो म्हारो काळजो फाटै ।

बांड्या सरप रै कैतां ई छोटकी वहू रोवती ढबगी । पीहर अर सासरा री सगळी विगी सुणायी । सांप बोलो बोलो विगी सुणतो रह्यौ । बांड्या वीर सूं खासी ताळ तांई वतळ करनैं छोटकी वहू घर कांनी वहीर व्ही । आज वा अणूंती राजी ही । पण सासरियां नैं राजी होवण री म्यांनौ कीं समझ में नीं आयौ ।

धणी सूं दबावती लेय वा राखी रै मंगळ त्यूंहार वणाव-सिणगार करनैं अणूंती उमाई होय नाडी री सोय में वहीर व्ही । आज वा बांड्या वीर रै राखी बांधैला । बांड्यौ सरप उणनै बैन कैय वतळादैला । उणरै खोजां खोजां कूंकूं रा पगल्या मंडण लागा ।

बांड्यौ सरप बांबी रै पाखती बैठो बाई री वाट न्हाळतो हो । देख्यां डरैं अर खावां मरै उण बांड्या सरप रै वा धणै कोड सूं कूंकूं रो तिलक करयो । सुरंगी राखड़ी बांधी । नाळेर बधार चिटकां खवाड़ी ।

बांड्यो वीर गूंडा सूं इमरत वरसावतो वोल्यौ—बाई री [illegible] दिनां तांई [illegible] करूंला । डरण री जरूरत कोनीं

म्हारै लारै री लारै निसंक वांबी में वड़ जाजे।

बाई कह्यौ—वीरा, आ वांबी तौ थारा डील रै परवांणै, म्हैं कीकर मावूं।

तद वांड्यौ वीरौ मुळकनै बोल्यौ—हां, आ बात तौ म्हैं सोची ई नीं। थूं फगत म्हारी पूंछड़ी अपड़लै, दूजौ कीं सोच करण री जरूरत कोनीं।

पछै वौ वांड्यौ सरप तौ अेक छिण री ई ढील नीं करी। सळवळ सळवळ करतौ वांबी रै मांय वड़ण लागौ। फगत बांडकी पूंछ लारै वची जणा वौ ढब्यौ। वांबी रै मांय सूं ई बोल्यौ—बाई, म्हारी पूंछ अपड़नै आंख्यां मींचलै।

बाई तौ भाई कह्यौ ज्यूं ई कर्यौ। आंख्यां मींच्यां पछै उणनै लखायौ के वा सरर सरर ऊंडा पंयाळ में उतरै। थोड़ी ताळ रै उपरांत काठा आंगणा रौ परस व्हैतां ई भाई आंख्यां खोलण रौ कह्यौ। आंख्यां खोलतां ई उणरी अकल चूंधीजगी। सोना रूपा रा रूंख। हीरा-मोत्यां रा झूमका। आंगणै कांकरां रौ ठौड़ अमोलक सुरंगी लालां ई लालां रौ थर लाग्योड़ौ। भांत भांत रै फूलां री सौरम सूं उणरी रग रग नाचण लागी। आज पैली उणनै तौ सुख रौ कोई छोटौ मोटौ आळ-जंजाळ ई नीं आयौ हौ, सौ सांप्रत खुली आंख्यां औ नजारौ देख्यौ। अैड़ौ लखायौ जांणै उणरा मन में आणंद मावैला ई नीं।

आणंद रा घिरोळा में चकरी चढ्योड़ी उणरी सुध-बुध ठांणै आई जणा वांड्यौ वीर बाई नै समझावण लागौ के नागण रौ सुभाव खासौ आकरौ अर तेज है। वा कड़मड़ करै तौ कीं भूंडौ नीं मांनणौ। किताक दिन भेळौ रैवणौ।

भाई री सीख संपूर्ण नीं व्ही, उण पैला फुफकारा भरती नागण आई। उणरै लारै टळवळ टळवळ करता अठोत्तर विचिया अड़यड़ता आवता हा। असेंधी लुगाई नै देखतां ई नागण रै मूंडा सूं विस झरण लागौ। घणी लुगायां रै नित राड़ अर कचकचाटौ वण्यौ रैंवतौ। नाग केई वळा रीस में कैंवतौ के चंडाळ री नाक वाढ़नै दूजी लायां ई मुख-सांयत वापरैला। औ तौ आज दूजी लुगाई लेयनै आयग्यौ। पण हारनै नीची न्हाकियां कांम नीं सरै। वा फुण पटकतौ वोली — म्हारै मरचां पछै ई इण आंगणै दूजी लुगाई नीं लावण दूं, जकौ थूं म्हारै जीवतां सोक लेयनै आयौ।

वांड्यौ घणी रीस में दांत पीसतौ विचाळै ई धाकल करनै वोल्यौ — ठा नीं, ठिकांणौ नीं, यूं सोच्यां समझ्यां विना गच-ळका काढ़ै। आ तौ म्हारी धरम री वैन अर म्हैं इणरौ धरम भाई। औ कूंकूं रौ तिलक अर राखड़ी रौ औ लांठौ फूंदौ ई निगै नीं आयौ। कठै ई आंधी तौ नीं व्हैगी।

नागण मूंडौ मस्कोरनै कह्यौ — म्हैं तौ कठै ई आंधी कोनीं, म्हनै तौ तीन भौ री सूझै। धरम रै भाई वैनां रा अैड़ा गना म्हैं घणा दीठा, म्हनै कांई विलमावै। वैन वणायां विना सेजां रौ कांम नीं पटै। के तौ माजना सूं लायौ ज्यूं ई पाछी तगड़दै, नींतर म्हारै मूंडा रौ अेक डाचौ ई मोकळौ। धरम री वाई नै धरमराज रै रावळै पुगाय दूंला।

विचिया नागण रै दोळा होवण लागा तौ वा फटकारौ देय वांनै अळगा वगाय दिया।

वांड्यौ नाग घणी ई समझाइस करी, पण नागण नीं

मांनी । तद वौ मूंडौ लेय हमेसां रै वास्तै वारै जावण री वात करी तौ उणनै माडांणी माठ झेलणी पड़ी । कांयस अर नित री देण में हीरा-मोत्यां रौ उजास ई मगसौ पड़ जावै। होठां माथै हंसी नीं व्है तौ आ अणगिण माया कांई कांम री। मन रौ साचौ सुख फगत माया रै ई भरोसै कोनीं । थोड़ी ताळ ई में छोटकी वहू सुख-दुख रा इण मरम नै समझगी। पण सासरा रौ विखौ अर पीवर रौ तोटौ याद आतां ई उणरी आंख्यां सांम्ही हीरा-मोत्यां रौ थर पाछौ दमकण लागौ ।

वा भौजाई नै राजी करण सारू घणी ई लटापोरचां करी । हाथा-जोड़ी करी । घर रौ सगळौ काम-काज करण सारू ताखड़ा तोड़ण ढूकी । पण नागण तौ उणनै कांम भुळा-वणौ ई नीं चावती ही ।

नागण दोनूं टंक मोकळौ दूध ऊंनौ करनै विच्छियां नै पावती । घी, केसर अर खांड रळाय लांठी कड़ाई में दूध रड़ावती । पछै सोना री परातां में न्यारौ न्यारौ दूध ठारती । ठरचां टोकरियौ वजावती । रणकारा रै समचै ई सगळा विच्छिया दौड़्या आवता । लपौलप परातां मांयलौ दूध सबोड़ जाता । मन व्हैतौ जणां दूध रै मांय किलोळां करता ।

छोटकी वहू नै औ कांम अणूंतौ दाय आयौ । भौजाई री घणी आजीजी करी तौ वा दूध गावण रौ कांम उणनै सूंप दियौ । सिझ्या रा कड़ाई में दूध रड़ाय वा सुथराई सूं परातां में राळचौ । परात परात सूं बाफां रा न्यारा न्यारा गोट ऊठता । दूध ठरणा में हाल खासी जेज ही । टोक-रिया नै अेक आळा सूं उठाय दूजा आळा में धरण लागी के

टोकरिया री आवाज खणक उठी । आवाज रै समचै ई नागण रा विचिया कांनो कांनी सूं लटपट लटपट करता दौड़या । छोटकी वहू हळफळाई होय वांनै पालण री घणी ई चेस्टा करी, पण वै नीं मांन्या । वरजतां बरजतां मतै मतै परातां माथै हुल्सग्या । पण दूध तौ हाल अणूंतौ ऊंनौ हौ । बळ-बळता ताता दूध में किणी रौ मूंडौ बळग्यौ, किणी री जीभ बळगी, किणी रा होठ दाझग्या तौ किणी री पूंछड़ी बळगी । सगळा विचिया सूंसाड़ा करता मां रै पाखती जाय अरड़ां अरड़ां रोवण ढूका । नागण आपरै विचियां री आ रंगत देखी तौ उणरी खीझ रौ पार नीं रह्यौ । विस उगळती, फुफुकारा करती नणद नै डसण सारू न्हाटी । धरम वैन री भूल रौ पतौ पड़ता ई बांड्यौ नाग पैला ई दौड़नै उणरै पाखती पूगग्यौ हौ ।

छोटकी वहू डुस्किया भरती वोली — साचांणी, म्हैं जांण करनै औ अकरम नीं करचौ । अजांण भूल व्हैगी । जकौ डंड दिरावौ सौ राजी राजी कवूल करूं । म्हैं नीं चावूं के म्हनै माफ करौ । भौजाई सूं ई वत्तौ म्हारौ काळजौ वळै ।

नाग कह्यौ — विना कह्यां ई म्हैं आ वात जांणूं । पण नागण किणी भाव नीं मांनैला । उणनै तौ औ अणचींत्यौ मिस लाधग्यौ ।

के इत्ता में नागण फूंफा फूंफा करती आई । नाग आडौ नीं फिरतौ तौ वा छोटकी वहू नै डसियां विना भवै ई नीं मांनती । उणरै मूंडा सूं विस भरी तिणगां उछळती ही । वळ-घोड़ा विचिया ई भूवा री भूल समझग्या पण नागण तौ कोई वात समझणी ई नीं चावती ही, तद कीकर समझ में आवती ।

सेवट निरी ताळ तांई झोड़ करतां नागण इण बात सारू राजी व्ही के धरम री नणद रौ अठा सूं काळौ मूंडौ व्हियां वा अंजळ लेवैला । वा तौ बिचियां नै मारण री पूरी पूरी तेवड़ी ही, पण भाग सूं बचग्या । बिचियां नै मारचां पछै वा नागण रौ पापौ काटती । अर तठा उपरांत मजा में नाग रौ घर मांड मछरां करती ।

छोटकी बहू आपरी भूल सारू रोय रोय आंगणौ गीलौ कर न्हाकियौ तौ ई नागण उणनै माफी नीं बगसी । बांड्यौ वीर बाई रै सांम्ही देखनै बोल्यौ — बाई, आ ओदसा किणी भाव नीं मांनै । बिरथा राड़ वधावण में कीं सार नीं । दांणा-पांणी में थारौ इत्तौ ई सीर-संस्कार हौ । अबै थूं राजी-खुसी सासरै जा । जोग व्हैला तौ वळै मिळांला ।

सिधावती वेळा दोनूं भाई-बैनां री आंख्यां जळजळी व्हैगी । बांड्यौ वीर बाई नै घणा ई अमोलक हीरा-मोती अर अमोलक लालां सीख में दी । वा ना देवती गी तौ ई वौ लांठी पोट बांधनै उखणाय दी, कदास देस रा धणी गोडै ई इत्तौ खजांनौ नीं व्हैला ।

बांबी सूं बारै निकळतां ई वा बांड्या वीर रा माथा माथै हाथ फेरचौ । बांड्यौ वीर उणरी हथाळी माथै फुण रगड़ियौ । डुस्किया भर भरनै रोयौ । रोवतौ रोवतौ ई बोल्यौ—इण कर-कसा रै कारण थनै थोड़ौ घणौ ई दुख व्हियौ व्है तौ माफी चावूं । म्हारौ तौ थोड़ा दिनां तांई वळै राखण रौ मन हौ ।

बाई कह्यौ — वीरा, भूल तौ म्हारा सूं व्ही, थूं क्यूं झळपै । मिनखां रा कडूंबा में जकौ हेज नीं मिळचौ वौ थारै

अठै मिळ्यो । हीरा-मोत्यां बिचै ई आ म्हारै वास्तै घणा हरख री बात है । सेवट अेक दिन तो सिधावणो हो इज ।

बांड्यो वीर रोवतो बांबी रै मांय वड़ग्यौ अर वा रोवती रोवती आपरै सासरा कांनी वहीर व्ही । माया रो तौ परचौ ई न्यारो । अणगिण हीरा-मोती अर अमोलक लालां माथै निजर पड़तां ई सासरियां री आंख्यां अर हिवड़ा रो सै काट धुपग्यौ । सगळा ई छोटकी वहू रा चोटी-वढ़्या चाकर बणग्या । अेक पग रै पांण हाजरी साजण लागा । हाथ जोड़्यां तरजन तरजन करण लागा । छवूं जेठाणियां अर सास-सुसरा छोटकी वहू रा पग धोळनै पीवण सारू त्यार हा । नणदां मिसरी री डळियां सूं ई मीठी बोलती । सगळा जणा सांनी रै समचै कह्यौ करता । दुनियां में असली अर साचौ गनौ धन अर माया रौ, बाकी सै पंपाळ । छोटकी वहू रा दिनमांन फिरग्या पण फिरग्या । पण तो ई वा बांड्या वीर रा गुणां नै छिण वास्तै ई भूली नीं ही । अस्टपौर उणरा विचियां री मंगळ-कांमना करती । भूल रो पिछतावो करती । दीवो भुपावती वेळा बांड्या वीर रै कडूंवा नै आसीस देवती, वांरौ भलो चींतती । विचियां नै वाळण री भूल नीं व्हैती तौ उणनै किणी वात रौ दुख नीं हौ ।

अर उठी नागण घर में मार धमाल मचाय राखी ही । दाझ्योड़ा विचियां नै देखती अर विस उगळती । धरम री नणद नै नीं नीं व्है जैड़ी गाळियां काढ़ती । दुरासीस देवती । जीवती रही तौ वळै किणी दिन अणचींती आय वाजैला । विघन करावैला । इण वास्तै पांणी पैला पाळ बांधणी सावळ । नागण तावौ राख उणनै मनाग्यांना डसण रौ विचार कर्यो । धणी

सूं ईं इण छळ रौ चोज राख्यौ । पण धरम री नणद नै लेय नित कांयस करयां बिना नीं चूकती ।

छोटकी बहू बाकी सगळा कांम तौ फिटा करचा, पण अेकर छोटौ छुकलियौ लेय नाडी अवस जावती । बांड्यौ वीर बांबी रै पाखती वगत माथै बैठौ लाधतौ । दोनूं भाई-वैन थोड़ी ताळ तांईं वंतळ करता । मन हळकौ व्हेतौ । नागण रै कांनां इणरौ भणकारौ पड़चौ तौ वा रीस रै पांण पूंछड़ी माथै ऊभी होय फुफकारा भरण लागी । ओटाळ नै डस्यां बिना दूजौ कोई निस्तार नीं । सो अेक दिन धणी सूं छांनै वा पक्की तेवड़नै धरम री नणद रै घरै गी । हींगळू ढोलिया रै पथरणा हेटै लुकनै बैठगी । अबै नवौ सूरज तौ कांईं देख लै ! लखणां परवांण बिताय छोडैला ।

सिझ्या रा छोटकी बहू मेड़ी में गावा घो रौ दीवौ झुपा-वण सारू आई । दीवा रौ उजास व्हैतां ईं वा आंख्यां मींचली ; अंतस रौ चांनणौ जोवण सारू । आंख्यां मींच, दीवा रै सांम्ही मूंडौ करनै ठाडा काळजा सूं कैवण लागी —

दीवा रे आड़चां जाई, वाड़चां जाई,
बाड़चां रा वन फळ खाई,
सांझ पड़चां वेगी आई ।
जीवौ नाग अर जीवौ नागणी ।
जीवौ म्हारौ खांड्यौ-वांड्यौ वीर
ओढ़ावै दिखणी रौ चीर
चीर हीर फाटग्या
अर अमर होवै वीर ।

जीवै नागण रा छोटा मोटा वाळ
जुग जुग जीवै सगळा सरप - गोपाळ

सात वळा इण आसीस नै दुहराई । पछै आंख्यां खोली । दीवा रै चांनणै आळा में नागण झूमती दीसी । तुरत पिछांण कर ली । छोटकी वहू अगै ई नीं डरी । वा कीं कैवै उणसूं पैला नागण बोली — आई तौ थनै डसण सारू ही, पण आसीस सुणनै सगळौ भरम मिटग्यौ । म्हारी आंख्यां में ई साच रा दीवा झुपग्या । नणदल वाई म्हैं थांनै घणी अेजां-वेजां बोली, इण सारू माफी चावूं ।

नागण रै मूंडा सूं इमरत वरसण लागौ । छोटकी वहू रै मन रौ हरख दीवा रै चांनणा ज्यूं जगमगावण लागौ । आज उणनै साचौ सुख मिळयौ । भौजाई साथै चालण रौ निवतौ दियौ तौ वा भतीजां नै जोवण-संभाळण सारू अजेज वहीर व्हैगी । सासरा सूं ई सवाय उणनै नवा पीहर रौ कोड हौ ।

काळिंदर री सुगराई

अेक घरगोड़ियौ गरीब राजपूत हौ । दो तीन पीढ़्यां सूं गवाड़ी साव इज थाकल ही । वोहरां रौ खेरौ मिट्यौ इज नीं हौ । तद कीकर ऊपरलौ पांनौ आवतौ । संपत रा नांव माथै इण राजपूत रै फगत वीस-पचीसेक गायां, साठेक बीघा करसणी जमीं अर सौ-अेक बीघा कांकरियौ मगरौ हाथै लागौ । रांम जांणै कीकर मतै ई उणनै आ सुमत सूझी के बोहरा रौ खातौ वाळियां विना सपनां में ई सुख री झांकी नीं मिळैला । सो साठूं बीघा करसणी जमीं नै वोहरा री बही में वोळाय वौ सूंठी तणौ ऊंडौ निस्कारौ खांच्यौ । वौ निस्कारौ सुख रौ हौ के दुख रौ, खुद उणनै ई इण बात री जाच नीं व्ही । घरै आयां ठकरांणी ई कीं ओड़ौ नीं दियौ । सांम्हो कह्यौ — मरचां पछै राजावां रै ई राज साथै नीं चालै । सोच जैड़ी कीं बात नीं । हाल तौ अेक चीज ई बोहरा री बखड़ी में झिली, नींतर थोड़ा बरसां पछै गायां अर मगरौ ई वौ डकार जातौ । दुख रौ सोरकौ तौ मिट्यौ । लूखी वासी खाय सुख री नींद तौ सूवांला । अेकाअेक डीकरी है । मोटी व्हियां उणरा भाग व्हैला ज्यूं बर-तीज जावैला । नित अेक जैड़ा दिन थोड़ा ई ऊगै आथमै ।

करसणी जमीं वोळायां पछै गायां रै सिवाय दूजौ कीं

गुजरांण नीं वच्यौ । सो वी राजपूत कांकरिया मगरा नै रुखाळतौ, उठै ई ढांणी वांधली नै गायां चारतौ । उण मगरै काळिंदर री वंबी ही । रजपूतांणी दुवारी करती जणा वौ वंबी रै वारै आय वैठ जातौ । फुण ऊंचौ करनै लैरावतौ । विखा री तायोड़ी रजपूतांणी नै काळिंदर रै उणियार परतख मौत रौ दुख ई देखतां पांण समझ में आयग्यौ । माटी रा कूंडिया में सेडावू दूध घाल वा निसंक काळिंदर रै पाखती गी, कूंडियौ मूंडागै धर दियौ । काळिंदर जीभ रा लपरका भरतौ सगळौ दूध पीयग्यौ । रजपूतांणी वळै चरी मांय सूं दूध उंधायौ । काळिंदर धापनै तिरपत व्हैगौ । पछै थोड़ी ताळ फुण लहराय वंवी में वड़ग्यौ ।

उण दिन पछै रजपूतांणी रौ औ ई नितनेम वणग्यौ । सवसूं पैली छ्यालर गाय दूवती अर दो कूंडिया गळांटा भरनै पाय देती । नीं काळिंदर उणसूं डरतौ अर नीं रजपूतांणी नै उणरौ अंगै ई डर लागतौ । घर धणी के दूजा किणी नै वा इण वात रौ पतौ नीं पड़ण दियौ । क्यूंके ठा पड़ियां कीं न कीं रांफौ पड़ जातौ । रजपूतांणी सोच्यौ के कवूतरां नै तौ घणा ई जवार चुगावै, घणा ई लोग कीड़ी नगरां नै सींचै, गायां नै चारौ न्हाकै, गरीव-गुरवा के वांमणां नै जीमावै अर दूजा ई घणा धरम-पुन्न करै । पण सांप, वीछू, परड़, गोईड़ा, सिंघ, चीता अर स्याळ इत्याद अैड़ा जिनावरां री कुण ई परवरिस नीं करै । भूंडौ करण वाळां रौ भलौ कुण चींतै । वापड़ौ दूध री आस करै तौ मन में क्यूं राखां । दूजौ कीं भलौ करण जोग वांरी सरधा ई नीं ही । दूध री कांई, जांणै अेक

गाय पावसो ई नीं ।

उण गवाड़ी बाकी तौ सै तोटौ ई तोटौ, पण छत बारै मास धीणौ अखूट रैवतौ । आधी गायां विसूख जाती तौ आधी दूजती । रजपूतांणी धणी अर बेटी रै ज्यूं काळिंदर नै ई अणूंतै कोड दूध घालती । काळिंदर मौत रौ परतख अवतार अर विस रौ पूतळौ व्हैतां थकां ई गवाड़ी री धणियांणी रै मन री आ बात समझ्यौ हौ ।

नित दिन ऊगणा रै साथै उजास अर दिन आथमणा रै साथै अंधारा रा गेड़ा बदळतां बदळतां इग्यारै बरस ढळग्या । कालै जलमियोड़ी धीवड़ी सोळै बरसां री व्हैगी । उणरै डील री पसम अर रूप रौ चांनणौ देख देखनै मां री आंख्यां अंधारा रा गोट भंवण लागा । अेक दिन वा धणी नै कह्यौ — बेटी तौ धरती आभा में ई नीं मावै, यूं आंख्यां मींच्यां कीकर सरैला ?

धणी मण मण रा बोल काढ़तौ दुख रा सुर में बोल्यौ: अस्टपौर आंख्यां फाड़्योड़ी राखूं तौ ई कांई व्है । सगाई री बात सुणतां ई गनायत तौ लिलाड़ रै बूक मांडलै । अर अपां कनै तौ वांरै जोग लोटौ पांणी ई कोनीं । पछै वांरी तिसणा कीकर बुझै । थूं ई बता म्हैं कांई करूं । म्हारै मांस रा ई टका बटता व्है तौ बेटी सारू ना कोनीं ।

घरवाळी लगता ई दो तीन ऊंडा निसास खांचती बोली: आ बात तौ म्हैं जांणूं । पण कीं न कीं तौ न्हावा-दौड़ करणी ई पड़ैला । जे इण बरस बेटी रा पीळा हाथ नीं करचा तौ भईपा में काळौ मूंडौ व्है जावैला । हथणी व्है जैड़ी बेटी नै

आंगणै फिरती देखूं तौ म्हारी नस नस में खीरा चेतन व्है ।

'थूं कैवै तौ ऊभौ ज्यूं ई वहीर व्है जाऊं । न्हावा-दौड़ री कोई ना थोड़ी ई है ।'

अर साचांणी वौ तौ है ज्यूं ई ऊभौ ऊभौ वहीर व्हैगौ । घरवाळी ई कीं पालापूली नीं करी । हाथ माथै हाथ धरचां कीकर नेहचौ व्है । केई ठौड़ भंवणौ पड़ैला ।

इण दुख रै मांय ई रजपूतांणी काळिंदर नै दूध पावण रा नितनेम में कदै ई नागा नीं करी । नीं कदै ई मोड़ौ करची ।

सातवै दिन धणी आयौ । मूंडा माथै आधौ हरख अर आधौ दुख । घरवाळी सूनी आंख्यां धणी रै मूंडा सांम्हा टुग-टुग जोवती री । वौ मतै ई कैवण लागौ — अेक ठौड़ सग-मन तौ पक्कौ करनै आयौ......।

घरवाळी आखती होय बिचाळै ई पूछचौ — डावड़ौ कैड़ीक है ?

'डावड़ौ तौ जोड़ री मोट्यार काटी है । रूपाळौ । स्यांणौ । समझणौ ।'

'पछै कांई चाहीजै । दत्त-दायजौ घणौ मांग्यौ कांई ? थांरी मूंडौ क्यूं उतरचोड़ौ ।'

धणी अटकतौ अटकतौ कैवण लागौ — दत्त-दायजौ तौ घणौ कांई, कीं नीं मांग्यौ । कूंकूं-किन्या सारू ई राजी-वाजी । गनायत सखरा मिळचा । व्याई रै अंगै ई लोभ नीं । साव सीधौ अर निरापेखी । पण जांन में सौ जांनिया लावैला । इण वात सारू पूरा अड़ियोड़ा । किणी भाव नीं मांन्या ।

थोड़ै दिन जांन नै सीख दिरीजैला । अपां कनै तौ दो टंक रो ई सरतन कोनीं । थै गायां नीं व्है तौ भूखां मरां । नीं तौ इत्ता जांनियां री सरबरा व्है अर नीं औ सगपण वैठै । थै तौ घणौ ई सावौ भेजण रौ कह्यौ पण कीकर भेजां ।

घरवाळी थोड़ी ताळ सोच-विचारनै कह्यौ — सावौ तौ भेजणौ ई है । औ सनमन नीं छोड़ां । गायां, मगरौ वेचांला, वळै बोहरौ करांला, भाईपा सूं मदत मांगांला । बाई रा भाग माड़ा कोनीं । थें सोच मत करौ । सावौ कढ़ाय वेगौ भेजौ । बेटी रा करम व्हैला ज्यूं व्है जावैला ।

बाप कह्यौ — बेटी रा करम किसा न्यारा है ! परणीज्यां पछै उणरा करम उघड़ैला, जित्तै तौ अपांरा ई है जैड़ा करम आडा आवैला । थूं कैवै तौ सावौ भेज दूं, पण पछै थूं ई खांचजै नै ओढ़जै, म्हनै कीं ठा नीं ।

रांम जांणै किण आसा अर विस्वास रै भरोसै वा हांमळ भरली । पण थावस अेक नै ई नीं मिळ्यौ । क्यूंकै वै तौ आपरी हालत जांणता हा ।

दूजै दिन जोसी रै घरै मण दूध पुगाय सावौ कढ़ायौ । अर आंख्यां मींचनै नाई रै सागै सावौ भेज दियौ ।

काळिदर तौ नित-हमेस दूध पीय बम्बी में वड़ जातौ । पण सावौ भेज्यां रै दूजै दिन कूंडाळिया में दूध पीवतो वेळा उणरी निजर धणियांणी री जळजळी आंख्यां माथै पड़ी । अेकर दूध पीवतां ढब्यौ । दोवड़ी जीभां रा लपरका भरतौ उणरा मूंडा सांम्ही जोवतौ रह्यौ । जांणै कीं कैवणी चावै । पण कह्यौ नीं । नीचौ फुण करनै चुपचाप दूध पीवतौ रह्यौ । कूंडा-

ळियौ खाली कर्‌यां पछै सळवळती बम्बी रै मांय बड़ग्यौ ।

दोनूं लोग लुगाई बस्ती रै लोगां मूंडागै घणी ई हाथा-जोड़ी करी, पण किणी रै मूंडै हुंकारौ नीं भरीज्यौ । वांरौ कीं ठरकौ व्है तौ हुंकारौ ई भरै । कांकरिया मगरा अर गायां टाळ वांरै पाखती दूजी कीं चीज ई कांई ही

ब्याव रा फगत पांच ई दिन बाकी रह्या, पण वांरा सूं तौ कीं तोजी नीं बैठी । जीव सुरक सुरक करण लागौ । भगवांन मौत देदै तौ जमारौ सुधर जावै । भाई गनायतां नै कांई मूंडौ बतावैला । जांन नै जीमावण री बात तौ अळगी, सौ जांनियां रै पांणी पीवण रौ ई हाल वांरा सूं सरतन नीं जुड़्यौ । रजपूत नै रेकारा री गाळ ! भाई गनायत माजनौ गमणो में पांच नीं राखैला । आ बात सोचतां ई घर रा धणी रौ तौ रूं रूं रोवण लागौ । अबै करै तौ कांई करै ! लुगाई रै कैणै कैणै कैड़ौ कावळ कांम कर्‌यौ । आंरौ तौ कैणौ मांनै सौ ई मूढ़ ।

ब्याव रा घर में उच्छव री ठौड़ संताप बापरग्यौ । बेटी किणनै कांई कैवती । मांय री मांय गोटीजती । उणरै आ बात समझ में नीं आवती के जकी मां नौ महीना देह रौ रगत पाय उदर में पोसण कर्‌यौ, सोळै बरसां तांई घर में राखी, कांई बळै नीं राख सकै ! माईतां रा हीड़ा करैला । घर रौ सगळौ हलीलौ करैला ।

बाप नै तौ रांम-जांणै कांई सुमत सूझी जकौ जांनियां सूं तीन दिन पैला मौत नै निवत दी । संखियौ घोटनै पीयग्यौ । तड़कै मूंडा माथै माखियां भिणभिणावण लागी । राफां माथै

गोघीड़ ई गोघीड़ । झागूंड ई झागूंड । डील लीलौ - चम पड़ि-योड़ौ । लौकीक रौ डर उणनै मौत सूं ईं घणौ वत्तौ लागौ हौ । अणछक आ कांईं पटकी पड़ी । सूरज ऊगणा रै साथै ई काळी - बोळी अमावस री आ रात कीकर प्रगटी ! मां - बेटी री आंख्यां सूं आंसुवां री ठौड़ राद बरसण लागी । वांरै वास्तै तौ दिन ऊगतां ईं सूरज तूटनै खिरग्यौ हौ । पछाड़ां खाय खायनै रोवण लागी ।

घरवाळी रौ रोवणौ सुण गायां ईं तांबाड़ण ढूकी । आज वांरै चारा अर दुवारी रौ किणनै ध्यांन हौ । वै तौ आपरी ई सुध - बुध पांतरगी ही ।

हमेसां री गळाई काळिंदर ई वगत माथै वम्बी रै पाखती आयनै बैठग्यौ हौ । खासौ दिन चढ़ग्यौ तौ ई दूध री कूंडा-ळियौ नीं आयौ । अणछक उणरै कांनां भूंपा रै मांय किणी रौ अरड़ावणौ सुणीजियौ । वौ तौ पछै अजेज सळवळतौ भूंपा कांनी वहीर व्हियौ । मां - बेटी नैं रोवतां देख उणरी आंख्यां में ईं आंसू छळक आया । दोनां री निजर काळिंदर माथै पड़ी तौ ई वै नीं डरी अर नीं चिमकी । कांईं आस, आकरसण के हरख बाक़ी बच्यौ जकौ वै मौत सूं डरै । वांरा औड़ा सभाग कठै के मौत आ जावै । पण सांप सूं घकै सबूरी नीं व्ही । गळगळा सुर में बोल्यौ — आज बारै बरस व्हैगा म्हनै इण गवाड़ी दूध पीवतां नैं । इण भांत नित हमेस तौ कोई पांणी ई नीं पावै । नित बड़ी व्है । औ फरज़न तौ वदै ई नीं उतरै, पण पाछौ कांम आवण रौ अेक मौकौ तौ मिळग्यौ । थांनै किणी बात री चिंता करण री जरूरत कोनीं । गवाड़ी रा धणी नै अवारूं

जीवतौ करूं । संखिया री विस चूसतां म्हनें कीं जेज लागै नीं । अर सौ री ठौड़ लाख जांनियां आ जावै तौ ई आछी तरै थाट सूं सरवरा व्है जावैला । म्हारी भांणी नै राजकंवरी सूं कम दत्त-दायजौ नीं मिळै । थें रोवता ढवौ तौ म्हैं नेहचा सूं म्हारौ कांम करूं ।

पण आ वात कह्यां पछै वौ सांप तौ वांरै ढवण, नीं ढवण री कीं गिनरत करी नीं । अजेज मड़ा री देह में दांत गडाय विस चूसणौ चालू कर दियौ । डील तरतर गुलावी पड़तौ गियौ । जुड़ियोड़ी वत्तीसी खुलगी । कंपकंपी व्ही । सांप तौ सगळौ विस चूस अणछक आयौ ज्यूं ई पाछौ वारै गियौ परौ । उणरै वारै जावतां धणी री आंख्यां ई खुली । वौ आळस मौड़नै वैठौ व्हियौ । असेंवा मिनख री गळाई च्यारूंमेर अठी-उठी भाळचौ । औ वैकूंठ है के सुरग लोक ! हूवौहूव अपांरै झूंपां रै उनमांन ई ! पण साथै आ घरवाळी अर वेटी कीकर आयगी ? आ वात कांई व्ही ?

वेटी अर वहू रै वतळावतां ई गवाड़ी रा धणी नै चेतौ व्हियौ के वौ तौ हाल जीवतौ ई है । मरचौ ई नीं । मौत ई नटगी । जीवण रौ अैड़ौ दुख आज पैली दुनियां में किणी नै नीं व्हियौ व्हैला । दुखां रौ फंद कटण री आखरी आस-मौत ही जकौ ई निरफळ गी । वेटी कांनी सूं आंख्यां फेर घरवाळी सांम्ही देखतौ वोल्यौ—इत्तौ संखियौ पीयौ तौ ई कार नीं करचौ ।

रजपूतांणी रै गळा रा वोल आंसू वणनै निकळिया—पछै म्हांनै किणरै भरोसै छोडी ?

'आप मर्‌यां जुग परळै ! गनौ जीवां जित्तै । म्हनै तौ म्हारा दुख आगै कीं दूजी बात सूझी ई नीं ।'

'थें मरद होय इण भांत हीमत हारग्या तौ म्हैं लुगाई री जात कांई करती अर कांई नीं करती, अबै ई थांनै आ बात नीं सूझै ?'

गायां री तांबाड़ सुण वा बेटी कांनी देखनै कैवण लागी—दुवारी करनै इणी सायत पाछी आऊं, थूं अठै ई रैजै ।

छालर गाय नै दूय वा अणूंती उमाई बम्बी रै पाखती आई । काळिंदर दूध री उडीक में ईं लैरावतौ हौ ।

आज दूध पीयां पछै वौ बम्बी में नीं वड़्यौ । बोल्यौ—म्हारी बाई, थनै फगत अेक तकलीफ करणी पड़ैला, पछै किणी भांत री चिंता नीं । थारै केस री आंटी देय म्हारी पूंछ नै थोड़ी सी वाढ़ न्हाक । पांणी री परात में लोई रा टपका पड़तां ईं अमोलक लालां बण जावैला । अेक अेक लाल लाख लाख रिपियां री । पछै भांणी रौ गाजा-बाजां साथै थाट सूं ब्याव करज्यौ । औ म्हारी तरफ सूं नाकुछ मायरौ ।

काळिंदर रै कह्या री धीजौ व्हैतां थकां ईं वा दूध री चरी हाथ में लेय ऊभी री । कीं जवाब नीं दियौ । गुमधांम सोचती री । तद काळिंदर इमरत निजर सूं जोवतौ पूछ्यौ—कांई, भाई रौ मायरौ कबूल करतां जीव डिग्गूं-पिच्छूं करै ?

दूध रै झागां में निजर गडाय वा बोली—जिणनै बारै वरस हाथां दूध पायौ, उणरी पूंछ कीकर वाढ़णी आवै ।

कालिंदर दूध रै उनमांन धवल हंसी हंसतौ बोल्यौ—आ बात अंगै ई सोच करै जैड़ी नीं है । इण सूं म्हैं सराप मुगत

व्है जाऊंला ! बारै वरस विना नागा दूध पावण वाळी रै माथा रा केस सूं पूछ वढ़तां ई म्है पच्चीस वरस रौ मोटयार व्है जाऊला। थू आ लीला देख तौ खरी। बिरथा क्यूं मोड़ौ करै।

तठा उपरांत वा कांई सोचती। माथा रौ केस तोड़ कािळदर कह्यौ ज्यूं ई करयौ। परात में तर-गुलाबी अमोलक लालां पळपळाट करण लागी। अर सांम्ही ऊभा रूपाळा भाई रै होठां री मुळक ई वां लालां सूं कम नीं ही। इत्ता बरसां पछै साचांणो उण गवाड़ी सोना रौ सूरज ऊगियौ। जिणरा उजास सूं धरती रौ कण कण दीप दीप करण लागौ।

वा मेंहदी रच्या हाथ में लालां लेय घर रै मांय गी। बेटी गुमसुम नीची धूण करयां बाप रै पाखती बैठौ हो। धणी नै जगाय वा हथाळी मांयली लालां बताई। बोली रा आखर तौ उणरी मुळक रै समचै इमरत बरसावता हा। पण धणी री आंख्यां पळकती लालां री झबकी पड़तां इ मन में विस आव-टियौ। आखा डील में, लाय लाय ऊठण ढूकी। वौ भचकै ऊभौ व्हियौ। खूंटी टिरती तरवार सांम्ही ताचकियौ। दूजै ई छिण सपाक करती वाढ़ाळी बारै काढ़ी। किड़किड़यां चावतौ खीरां रै उनमांन वळता सुर में कैवण लागौ—छळगारी थूं इत्ता वरस म्हनै धोखा में राख्यौ। वता किण गोठिया सूं अै लालां लेयनै आई।

रजपूतांणी री मुळक माथै काळस तौ अवस पुतग्यौ, पण वा डरी अंगै ई नीं। हाथ झाल भाई नै लावण सारू वा बांवी कांनी न्हाटी। धणी ई लारै री लारै दौड़यौ। जांणै काळ री इज परतख रूप व्है।

रूपाळा मोटचार माथै निजर पड़तां ई उणरौ वेम पुख्ता व्हैगौ। धूतरगारी नै गोठिया रै साथै बोटी बोटी छून्यां ई उणरी काया ठरैला ।

बंबी रै पाखती पूगतां ई वौ मोटचार उगरौ हाथ झाल बोल्यौ—जीजौसा, थांरै माथै औ कांई काळ सवार व्हियौ । आ तौ म्हारी बाई है । म्हैं इण बांबी रौ काळिंदर हूं । आ म्हनै बारै बरसां तांई दूध पायौ । थांनै विस्वास नीं व्है तौ सांप्रत निजरां देखलौ ।

आ बात कैतां ई वौ मोटचार अजेज पाछौ काळिंदर रौ रूप धार लियौ । पूंछड़ी उणी भांत बांडी ही । वौ फुण ऊंचौ करनै मुळकतौ बोल्यौ—अबै तौ पतियारौ व्हियौ !

धणी रौ वेम मिटतां ई नागी तरवार उणरा हाथ सूं छूटगी । दोनां सूं हाथ जोड़ माफी मांगी ।

काळिंदर सात वळा बम्बी रै माथै फुण मारचा अर देखतां देखतां सपना रै उनमांन नौखंडियौ मैल चुणीजग्यौ । भांत भांत रै फळ-फूलां रौ सुरंगौ वगीचौ आंख्यां सांम्ही लहरावण लागौ । बरतन-बासण, गाभा-लत्ता अर सिरख-पथरणां रौ ढिग लाग-ग्यौ । सोना-रूपा रौ दोवड़ौ दत्त-दायजौ अेकठ व्हैगौ । किणी राजा रै राजमैलां किणी बात री कमी के खांमी व्है सकै, पण उण गवाड़ी किणी भांत री खांमी नीं री । पीलखांनै हाथी, पायगां घोड़ा अर ठांणां टाळकी गायां-भैंस्यां ।

राजकंवरी सूं ई बेटी रौ इदक व्याव व्हियौ । जांनी दीठ अेक अेक अमोलक लाल सीख में दी । आखा चौखळा में उण गवाड़ी री जस बधियौ । मांमौ अैड़ौ मायेरौ भरचौ

के जिणरी वखांण ई नीं व्है सकै । बरसां तांई दोनूं लोग-लुगाई उण नौखंडिया मैल में सुख सूं रह्या । वेटा, पोता-पोती अर दोहीता-दोहीती कदै ई अेक छिण वास्तै ई काळि-दर रौ गुण नीं भूल्या । कैड़ौ ई सरप उण गवाड़ी दूध पीयां विना भूखौ नीं गियौ ।

अेक नुगरौ सांप

अेक मोटयार भुकलावै जावतौ । हाथ में डांग, खांधै गाभा अर गोळ पोत्या माथै पीतळ रौ कटोरदांन । आपरै गांव अर सासरा रै आधेटै पूगौ के उणरै सांम्ही अेक गोरियावर सरप भरणाटै दौड़तौ निगै आयौ । वौ मारग सूं टळ परौ नै न्हाटौ । पण सांप उणनै हांकरतां न्हावड़ लियौ । हांफतौ हांफतौ बोल्यौ—दौड़ मत, म्हैं थनै डसूंला नीं । म्हारै माथै विखौ पड़्यौ, म्हारी रिछया कर ।

मोट्यार जांण्यौ के गोरियावर रै धकै दौड़नै तौ कठै जावूंला ! कैणौ नीं मांन्यौ तौ अवस डसैला । धूजतौ धूजतौ ढबग्यौ । हळफळायौ सांप हांफतौ हांफतौ पूछ्यौ—थारै इण कटोरदांन में कांई है ?

वौ आदमी डरतौ डरतौ जबाब दियौ के कटोरदांन में पञ्जूदी अर साकळियां है । सासरै संभाळ लै जावै । तद सांप आखतौ होय बोल्यौ—आ संभाळ खेसला रै पल्लै बांधलै । म्हनै कटोरदांन रै मांय लुकाय माथै धरलै । लारै काळबेलिया न्हाटा आवै । कांई ठा म्हनै मारैला के अपड़ैला के विस रा दांत तोड़ैला । जीऊं जित्तै थारौ गुण मांनूंला । धन रौ अेक चरू इनांम में देऊंला ।

मोट्यार नै सांप रै कह्या री कित्तौ विस्वास व्हियौ अर कित्तौ विस्वास नीं व्हियौ, सौ वौ ई जांणै। पण डसणा रै डर सूं उणनै सांप ज्यूं कह्यौ त्यूं करणौ पड़्यौ। वौ अजेज पड्‌दी अर साकळियां खेसला रै पल्लै बांध खाली कटोरदांन सांप रै मूंडागै धर दियौ। सांप तौ लप अराई रै उनमांन गोळ गोळ आंटा खावतौ कटोरदांन में गूंचळी मारनै बैठग्यौ। माथै ढकणौ ई नीठ आयौ। सांप कटोरदांन रै मांय बैठौ बैठौ ई बोल्यौ—हां, अबै मारग मारग बेवतौ रै।

मारग कांनी टळतां ई उणनै काळबेलिया सांम्ही न्हाटता थका निगै आया। पाखती आवतां ई पूछ्यौ—अेक गोरियावर नै दौड़तौ देख्यौ कांई?

वौ मोट्यार तौ पाधरौ नटतौ इज निगै आयौ। तद वै अठी-उठी तपास करी। सांप री लींगटी अठै आयनै थाकगी। तद गियौ कठै! मोट्यार नै पूछ्यौ तौ वौ कह्यौ के अठी-उठी किणी बिल में लुकग्यौ व्हैला। अैड़ौ गैलौ कुण जकौ सांप री सोय राखै।

'गैला री इण में कांई बात, म्हांरै तौ धंधौ औ इज है। सरपां रै पांण ई गुजारौ करां।'

मोट्यार आपरै मारग ढळियौ अर काळबेलिया उण सरप री भाळ में अठी-उठी हेरता रह्या।

खासी भांय लंघायां सांप पूछ्यौ—क्यूं रे बेली, वै काळबेलिया तौ अबै घणा आंतरै रैग्या व्हैला।

'हां, वै तौ अबै दो ढाई कोस लारै व्हैला।'

सांप बोल्यौ—तद क्यूं बिरथा म्हारौ भार उखणियां फिरै।

म्हनै पाछौ बारै काढ़ दै । मांय जीव अमूंझै ।

ढ़कणौ उघाड़तां ईं गोरियावर सळळ सळळ करतौ बारैं निकळियौ । परसेवौ सूख्यां हवा में जीव कीं ठांणै आयौ तौ मोट्यार रै सांम्ही देख बोल्यौ—म्हैं अबै थनै खावस्यूं । मिनख री देह में दांत गडायां नै केई दिन व्हैगा । म्हनै भंवळ आवै । आ तौ दुनियां ईं आपाधापी री । आप मरतां बाप किणनै याद आवै । कैयनै खावै सौ डाको नीं बाजै । हीमत राख, यूं धूजै कांईं । अेक न अेक दिन तौ मरणौ है इज ।

मोट्यार सोच्यौ के औ नुगरौ हाथा-जोड़ी करयां के गिड़-गिड़ायां मांनैला तौ भवै ई नीं । तद बिरथा पोचापौ दिखायां कांईं सार । ठीमर सुर में बोल्यौ—तौ थूं किसौ अमर रैवैला ? काळबेलियां सूं बचण वास्तै म्हारौ सरणौ क्यूं झेलियौ ? आपरौ जीव सगळां नै ई अंड़ौ री अंड़ौ वाल्हौ व्है । थारा प्रांण बचाया, धन रौ चरू देवणौ तौ अळगौ रह्यौ, सांम्ही म्हनै ई डसण री बात करै ।

सांप बोल्यौ—स्वारथ ई सगळा जीवां रौ सिरै धरम है । गरुजी माराज दुनियां कित्ती लांठी ?—के चेला, खुद रै जीव जित्ती । क्यूं आळिया-टोळिया करै । डसियां बिना छोडूं नीं । म्हारौ गुण मांन के डसण सारू म्हैं थनै पूछ्यौ ।

सासरै री उमायौ घर सूं वहीर व्हियौ अर मारग में ईं मौत सूं भेटका व्हैगा । बेजा व्ही । तौ ई हीमत करनै बोल्यौ—कौल करनै नटै तौ थारी मरजी । टाबर थकां व्याव व्हियौ । हाल लुगाई रौ मूंडौ ई नीं देख्यौ । अेकर सासरै जावण दै । मुकलावौ लेय पाछौ वळती वेळा थूं बतावै उणी ठायै हजार व्है

जावूंला । मरियां ई कौल नीं तोड़ूं, म्हारै माथै विस्वास कर।

सांप कह्यौ — थां मिनखां री जात विस्वास जोगी तौ नीं है। औ मळीचपणौ अर नुगरापणौ म्हैं थां लोगां कना सूं ई सीख्यौ। ध्यांन राख थूं मौत सूं बच सकै तौ अबै म्हारा सूं बच सकै। सासरै के घरै कठै ई नीं छोडूंला। उण खेजड़ा रा गोड तळै थनै उडीकूं, चौथै दिन आयौ रैजै। नीं आयौ तौ आखा कडूंवा रौ नांवगौ गमाय दूंला। म्हारा खेरा सूं तौ मौत ई डरपै।

मन रै मांय सोच करतौ, कळपतौ वौ मोट्यार सोरौ दोरौ सासरै पूगौ। सासरिया जावतां पांण अेक पग रै पांण हाजरी में ऊभग्या। घणी ई सरवरा अर घणा ई लाड-कोड करचा पण जंवाई रै मूंडै आब नीं पळकी। रोटी खावण रौ ई मन नीं व्हियौ। मौत विचै ई मौत रौ आगू समचौ घणौ विकट अर घणौ भयंकर व्है।

वींदणी लड़ाभूम करती मेड़ी रै मांय आई। दीवा रा उजास सूं कम उणरै रूप रौ चांनणौ नीं हौ। पण धणी नै तौ सांप रा डर आगै नीं दीवा रौ उजास निगै आयौ अर नीं वींदणी रै रूप रौ चांनणौ। उणनै तौ मौत रै उणियार गोरिया-वर सरप टाळ दूजौ कीं दीखतौ ई नीं हौ।

वींदणी घणौ हठ झेल्यौ तौ वौ सगळी बात मांडनै बताई। बात तौ मौत री सुणावणा सूं कम नीं ही। पण सोच करचां ई कांई सांवौ लागै। वींदणी कह्यौ — दुस्टां री भलाई रा अैड़ा इज फळ व्है। मौत रा आंक लिख्या है तौ टळै नीं अर इण वेळा नीं लिख्या है तौ सांप रौ ई जोर नीं

चालै । थांरै पैला वौ म्हनै डसैला । सोच करयां सोच मिटतौ व्है तौ दोनूं भेळा बैठ, चावां जित्तौ सोच करलां । पण सोच करयां तौ सोच वत्तौ बधै । मरयां पैली जीवण रौ आणंद भोगां सौ आपणौ । अंधारा में झबाझब खिवण वाळा तारां रौ थोड़ौ घणौ सुख अर आणंद तौ लौ । साव लियां ई ठा पड़ैला के अेक अेक तारा रौ उजास सूरज सूं सवायौ है ।

वींदणी री वात धणी रै ई हीयै ढूकी । वौ मौत रै कासिद सांप कांनी सूं आंख्यां मींचली अर वौ विकट अंधारा में आखी रात चिमकण वाळा समरत्थ तारां रै चांनणा में डूबग्यौ, लीन व्हैगौ । साचांणी आणंद रै इण चांनणा री तौ हजार सूरज ई होड नीं कर सकै !

पण औ आणंद तौ काल काल रौ । पिरसूं तौ कौल पर-वांण उण खेजड़ा रै ठायै पूगणौ ई पड़ैला, जठै मौत उणरी बाट जोवै ।

वगत परवांण उण आणंद रौ थाग आयौ अर मोट्यार नै सासरा सूं सीख लेय वींदणी रै साथै सिधावणौ ई पड़यौ । भोग्योड़ा आणंद नै याद करयां मौत रौ भय हजार गुणा बंधग्यौ । वींदणी घणौ ई थावस बंधायौ तौ ई उणरौ सोरकौ नीं मिटयौ ।

वौ डरतौ, धूजतौ अधमरया री गळाई खेजड़ा रै पाखती पूगौ तौ साचांणी वौ गोरियावर सरप डसण सारू ऊंचौ फुण करयां जांणै उणरी इज बाट जोवतौ व्है ।

वींदणी सांप री आंख्यां में मीट गडाय बोली—आज ठा पड़ी के दांतां बिचै ई सांपां रै मन में वत्तौ विस व्है । काळ-बेलियां सूं प्रांण बचाया, जिणरै बदळै ई थूं आंरा प्रांण लेवणी

चावै । पण क्यूं, इणरौ म्यांनौ तौ वता ।

तद सांप कह्यौ—वावळी, इण रौ म्यांनौ थूं कांई वूझै! मन करै जका नै ई पूछ्यां पडूत्तर मिळ जावैला । वौ भेंस्यां रौ टोळौ चरै । सगळां सूं लारै चरण वाळा उण ढोवा रै पाखती जाय इण रौ म्यांनौ पूछ । वा न्याव करै सौ म्हनै कवूल । पछै कीं उजर मत करज्ये ।

वींदणी भेंस्या रा उण टोळा कांनी वहीर व्ही । उण वूढ़ी भेंस रै गोडै जाय उणनै सांप रै नुगरापणा री सगळी वात वताई । पूछ्यौ के आ कित्ता अन्याव री वात के प्रांण वचाया जिणरा ई वौ प्रांण लेवण री वात करै । थूं ई वता, औ न्याव थारै माथै ई छूट्यौ ।

भेंस चारौ चरती ई वोली—वाई इण में तौ कीं अन्याव री वात कोनीं । सै संसार ई स्वारथ रौ । दूजा रै प्रांण रौ ध्यांन राखै सौ मूंरख । म्हारो वात ई लै । मोट्यार पणै जद म्हैं चरियां रै मूंडै दूध देवती तौ धणी म्हनै अपटाऊ वांटौ-चाटौ वरावती—खोपरां री गिर, कपासिया, गुळ, वाजरी अर पराळू चीपटौ । आज वूढ़ी व्हैगी अर व्हाड़ा में दूध सूखग्यौ तौ म्हैं वच्योड़ा ओगाळा सूं ई सूंघी व्हैगी । म्हारै जायोड़ी पोत्यां अर दोहीत्यां ई म्हारी पूछ नीं करै । वांरै व्हाड़ा में दूध भरयौ तौ मूंडा साम्ही वांटा री कीं खांमी नीं । वांटा री हर आवै जद म्हैं जायोड़ी पोत्यां कनै जाऊं तौ वै भेट्यां मारै, माथौ धूणै, नैड़ी ई नीं अड़ण दे । अर म्हैं ई खड़ खावां तौ म्हारै पेट सारू, धणी नै दूध देवण सारू नीं । तद वाई इण में अन्याव री कांई वात । प्रांण वचाया जिणनै नीं डसैल तौ

पछै किण नै डसैला ! इण स्वारथी संसार रौ औ ई सिरै न्याव ।

भेंस रै मूंडै न्याव री आ बात सुणतां ई वींदणी रौ मूंडौ उतरग्यौ। पाछी आई जद सांप पूछ्यौ के भेंस कांई कह्यौ। तद वींदणी बोली — थारी बात सारू भेंस कीकर न्याव कर सकै । उणनै कांई ठां के थारा प्रांण कित्ता दोरा बचाया । आ तौ थारै सोचण री बात है के थारा प्रांण बचावणिया रौ भलौ नीं सज आवै तौ भूंडौ क्यूं करै ।

सांप कह्यौ — स्वारथ सूं ऊंचौ कीं दूजौ धरम नीं । इण धरम नै निभावण सारू जकी ई बात बरतीजै, वा सब न्याव इज व्है । पतियारौ नीं व्है तौ पूछलै इण भुरंगी अडोळी खेजड़ी नै । आ जकौ ई न्याव निवेड़ै वौ म्हनै कबूल ।

वींदणी वळै उण सूखी खेजड़ी रै पाखती गी । उणनै सांप रै नुगरापणा री सगळी बात बताय कह्यौ — देख तौ, सांप रा हीया फूटा जकौ उण विध प्रांण बचाया जिणरै डसण री हठ झेल्यौ ! थूं ई बता आ हळाहळ अन्याव री बात है के नीं ।

भुरंगी खेजड़ी अजेज बोली — बावळी इण में राव-रत्ती ई अन्याव री बात नीं । डसण सारू भलौ करणिया सूं वत्तौ नांढ़ अर काळौ कुण मिळै । उण में थोड़ी घणी ई सोजी व्हैती तौ वौ अैड़ा दुस्टी रौ भलौ नीं करतौ । काळबेलिया मतै ई निवड़ लेता । वौ आगै होय औ कावळ कांम करयौ ई क्यूं ! अै तौ आप आपरा दाव अर बख है । म्हैं घेर-घुमेर लीली-चैर ही जद लोग बळबळतै तावड़ै म्हारी छीयां तळै बिसाई खावता । दीवड़ियां में पांणी व्हैतौ तौ म्हारा गोड में कूढ़ता । पंखेरू माळा घालता । ईंडा देवता । अस्टपौर चैचाट करता ।

पण अवं सूत्यां पछै कोई नेड़ौ ई नीं फरूकै । मन करै जकौ ई कवाड़ियौ वावै, मतै मतै वाढ़ै, वासदी में वाळै। वाल्हा, आ तौ आखी दुनियां इज मतलब री! मतलब सूं मोटौ नीं तौ कोई न्याव है अर नीं कोई धरम । सांप री इंछा व्हैला तौ वौ थारा धणी नै डसैला, इण में अन्याव री कांई बात ! थांरौ दुख थें भुगतौ, किणी दूजा नै उण सूं कांई वास्तौ ।

वींदणी कांई जबाव देवती। लचकांणी पड़नै पाछी आई। सांप नै हाथ जोड़ घणी ई लटापोरियां करी। कह्यौ के रांडी-रांड रौ जमारौ अणूंतौ खोटौ । उणरै सुहाग माथै थोड़ी मया विचारै । पण सांप नीं मांन्यौ । के अणछक इत्ता में भंवतौ भंवतौ अेक स्याळियौ उठै आयग्यौ । सांप उणनै देखतां पांण कह्यौ—औ स्याळ-मांमौ न्याव करै सौ कबूल ।

दरजै लाचार होय वींदणी रोवती रोवती स्याळ नै सगळी वात वताई। वात सुण्यां पछै वौ ठीमर सुर में कैवण लागौ— थां मिनखां नै रोवणा-धोवणा अर गरज पड़्यां लटापोरियां करण रा ढपला अर धूतर तौ घणा ई आवै । थांरै झूठ नै तौ थें इज पूगौ । थें नीं बोलौ जकौ साच अर बोलौ जकौ ई कूड़ ।

पछै सांप रै सांम्ही देखनै पूछ्यौ—क्यूं, औ वताई जकी वात झूठ है के साच ? सांप फुण हिलावतां बोल्यौ—वात है तौ सोळै आंना साच । पण फगत साची व्हियां कांई व्है । म्हैं तौ म्हारौ स्वारथ सरतौ व्है ज्यूं ई करूंला । म्हारी इंछा इण सूं ई मोटौ साच है ।

स्याळियौ पंच री गळाई हांमळ भरतौ कैवण लागौ—हां,

आ बात तौ है इज । पण म्हारौ जीव नीं मांनै के थांरौ इत्तौ लांबौ-लड़ाक अर लांठौ अंग इण छोटा-सा कटोरदांन में मायौ कीकर ? म्हैं तौ निजरां नीं देखूं जित्तै किणी रै कह्या रौ पतियारौ नीं करूं ।

सांप कह्यौ — पण आ बात कूड़ी व्हैती तौ म्हैं हुंकारौ क्यूं भरतौ ! तौ ई थारै जचगी है तौ सांप्रत निजरां जोय पतियारौ करलै । हाल तौ कटोरदांन अर म्हैं दोनूं ई साबत हां । खोल रे थारौ कटोरदांन ।

सांप रै कैतां ई मोट्यार कटोरदांन खोलनै सांप रै मूंडागै धर दियौ । अर सांप अजेज सळळ सळळ करतौ मांय वड़ण लागौ । फुण वड़्यां रै पछै पुरस डोढ़ेक अंग लारै रह्यौ जणा स्याळ बोल्यौ — म्हैं तौ पैला ई कै दियौ हौ के इण में इत्तौ लांठौ अंग नीं मावै । देखौ कित्तौ अंग कटोरदांन सूं बारै टिरै ।

सांप मांय वड़तौ थकौ बोल्यौ — थोड़ो जेज करौ । अराई ज्यूं गूंचली मार्‌यां पछै अेक आंगळ जित्तौ ई बारै नीं रैवूं ।

सांप पूरौ मांय वड़नै बैठग्यौ तद स्याळ माथौ धूणतौ बोल्यौ — कोरा-मोरा मांय वड़णा सूं कांई व्है । माथै ढकणौ तौ किणी भाव नीं आवै । थोडी पींचीजनै चिगदियौ नीं व्है जावैला !

सांप वेंतेक फुण ऊंचौ करनै कह्यौ — ढेरा री गळाई बाकौ फाड़्यां कांई ऊभौ । स्याळ-मांमा नै ढकणौ देय तौ वता ।

वींदणी धणी रा हाथ सूं ढकणौ खोस लप माथै बीड़ दियौ ! स्याळ मोट्यार रै सांम्ही देख कैवण लागौ — अबै

किणरी वाट जोवै । मणेक रौ भाटौ लायनै धर । किट-कलियां अर वगदौ फटाफट भेळौ कर । सिळगायनै भाटा समेत कटोरदांन सुथराई सूं मायं धर दै । अैड़ा नुगरा रा न्याव तौ यूं इज व्हिया करै । अवै सपनै ई दुस्ट री भलाई मत करजै । नींतर म्हैं ठौड़ ठौड़ न्याव करण नै कठै आऊंला ।

इत्ती वात वणियां पछै कांई ढील । मोट्यार तौ हां करतां किटकलियां, छांणा अर वगदौ भेळौ कर भाटा समेत कटोरदांन मांय जमाय दियौ ।

सांप मांय वैठौ ई वोल्यौ—स्याळ-मांमा पतियारौ व्हैगौ व्है तौ ढकणौ उघड़ा, म्हारौ जीव अमूंझै ।

स्याळ पाखती आय वोल्यौ—अवै न्याव निवड़णा में थोड़ी-सोक जेज है ।

वासदी अर झाळां रौ तप लागतां ई सांप अरड़ायौ—वळूं रे वळूं । अेकर वारै काढ़ दै, थनै हीरा-मोत्यां रा सात चरू देवूंला । स्याळ री फाकी में मत आ ।

अबकी वींदणी जोर सूं वोली—म्हांरै पाखती हीरा-मोत्यां रै जाब्ता परवांण तिजोरी कोनीं । पैला तिजोरी वपरा-वण दे, पछै थारै गोडै आवांला ।

पछै सांप सूं तौ कीं नीं वोलीजियौ । कदास वळता कटोरदांन में कीं गिरणायौ व्है तौ ई वारै सुणीजियौ नीं ।

स्याळ रौ अणूंतौ गुण मांन दोनूं धणी लुगाई हरख मना-वता आपरै गांव कांनी वहीर व्हिया । मौत सूं छुटकारौ मिळ्यां, जीवण रौ आणंद हजार गुणा वधग्यौ ।

फूलकंवर

अेक हौ बांमण । तिणरै बेटी अेक । नांव जिणरौ फूलकंवर । जैड़ौ नांव वैड़ी ई काया, वैड़ा ई गुण । देखतां ई लोगां रा काळजा में फूल ई फूल खिल जाता ! दूखती आंख्यां सावळ व्है जाती । उणरी देह सूं साख्यात गुलाब रै फूल री सौरम आवती । कदैई कदैई रातरांणी रै सौरम री उणरा रूं रूं सूं भभरोळा छूटती । अळगी भांय सूं ई उण सौरम रै कारण लोगां रै हिवड़ा में ठाडोळाई वापर जाती । फूल रै कंवळास अर उणरा रंग नै ई मात करै जैड़ी उणरै डील री पसम । पळकता काळा केस, जांणै भंवरां री पांतां लूमी । केसां में किस्तूरी री सौरम । दांत जांणै मोती खैराद उतरचा । मोरायां जांणै गुलाब री इज वळियां । सांस में उणरै केसर री सौरम । आंख्यां री ठौड़ जांणै दो तारा पळकै । वेमाता जांणै किणी सूं होड़ करनै वा पूतळी रैची ।

कादा में कंवळ विगसै, खाद माटी में फूल खिलै, खारा समंदर रै अथाग तळै अमोलक मोती निपजै, रात रै अंधारै में तारा टिमटिमावै, चंदरमा हुळसै उणी भांत बांमणी री उण थाकल गवाड़ी में फूलकंवर जलमी, मोटी व्ही अर मछरां करती । अर माईत उणरा देख देखनै ई सगळौ विखौ पांतर जाता,

अखूट हरख मनावता । नित री भूख अर गरीबी री तौ वांनै जांणै कीं चेती ई नीं ही । वेटी नै हथाळी रै छाला ज्यूं राखता । खावण-पीवण री तोटी वै मीठी वांणी में वतळाय पूर लेता । फूलकंवर नै थैड़ी लखावती जांणै वा चंदरमा रै पालणै हींडै ।

वीजळी रै भबूकां परवांण दिन ढळता गिया । सुरग री सुख ई वांमण री उण गवाड़ी सूं ईसकौ करतौ । पण होणी रा अणगिण अर अदीठ हाथ । खुदोखुद वेमाता ई उणरै हाथां नै वरज नीं सकै !

अेक दिन अगछक वांमणी रा पेट में हौल री उठाव व्हियौ जकौ वा कवूड़ी लुटै ज्यूं [illegible] लागी । वांमणी नै ठा पड़गी के अै मौत रा थावा है. [illegible] दूभर ! वा तौ फगत फूल-कंवर रै मूंडा सांम्ही टुग टुग जोवण लागी सो जोवती ई रीं । वांमण मांग-तांगनै सेंधा लूण अर अजमा री फाकी लायौ । वांमणी घांटी हिलाय वोली — मौत रै मूंडै तौ इमरत ई विरथा व्है, तद वापड़ी इण फाकी सूं कांई सांधौ लागैला । म्हारौ दिन आयग्यौ, अवे घड़ी पलकां री जेज है । थें दूजा सगळा कळाप छोड़ फगत अेक कौल करौ तौ मरचां ई सुगातर पाऊं । सांस तौ अवै निकळै, अवै निकळै, पण वाचा रा आखर सुण्यां म्हारौ सांस सोरौ निकळैला ।

पछै वा फूलकंवर रै मूंडा माथै मीट गडाय गळगळा सुर में वोली — ऊमर तौ हाल थांरी घणी कोनीं, पण तौ ई म्हारै कैणा सूं थें दूजी व्याव मत करज्यौ, म्हारी फूलां में फोड़ा पड़ैला । म्हारी आ इज छेहली मुळावण ।

बांमण घरवाळी री हाथ झाल बोल्यौ—बावळी, इण में कौल करै जैड़ी कांई बात ? म्हैं मरचां ई दूजौ ब्याव नीं करूंला । पण थूं म्हारै लारै आई, आगै क्यूं जावै । म्हनै इणरौ स्यांनौ बता ।

बांमणी पीड़ रै सळावा री सिसकारियां भरती अटपटी वांणी में बोली—सुख अर जीवण में लारै अर दुख अर मरण में आगै, औ ई लुगायां री सिरै धरम । धणी अर बेटी रै हाथां में जावूं, इण सूं वत्तौ सुख वळै म्हारै वास्तै कांई व्है ।

अणछक अेक बळबळती चिराळी करनै बांमणी घणक री गळाई दुलेवड़ी व्हैगी, जांणै पेट री आंतां में करारी मठोठी लागी । दूजै ई छिण बांमणी हाथ-पग न्हाक दिया । देह करड़ी पड़गी । बत्तीसी जुड़गी । आंख्यां पाथरगी । काया री पींजरौ छोड़ हंसलौ आपरै ठांणै उडग्यौ !

फूलकंवर तड़ाछ खायनै मां री माटी माथै हुलसी । डाढ़ां मार मारनै रोई । रोवणौ जांणती ई नीं ही, पण इण वेळा मतै ई उणरी आंख्यां सूं आंसू टमगण लागा । बाप पाखती ई भाटा री पूतळी ज्यूं अवचळ ऊभौ हौ ।

थोड़ी ताळ पछै चेतौ वावड़ियां बौ बेटी नै अळगी करी ! तठा उपरांत हथळेवौ जोड़ जिणनै घरै लायौ उणनै हाथां दाग दियौ । काया जळनै भसम व्ही, जणा उणरै हीयै दाझ लागी । अपूठौ फुरनै, आंख्यां आडौ गमछौ देय घणौ ई रोयौ ।

पाछौ वळतां, अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै बौ ऊंचौ आभा सांम्ही भाळयौ—मथारै सूरज झाळां वरसावतौ हौ । उणनै लखायौ जांणै हाल बांमणी री रथी सिळगै ।

रात रा तेरस रा चांद में उणनै बांमणी री रथी सिळ-गती निगै आई । तारा जांणै रथी सूं उछळियोड़ी अणगिण तिणगां । अंधारी जांणै रथी री गोटीजियोड़ौ धूंवौ । पण तौ ई वौ आपरा दुख रै खांम लगाय, रोवती फूलां नै घड़ी घड़ी धावस बंधावतौ ।

मिनख रै निपट अबूझपणा री अेक अनोखी बात के नित री ऊगणौ अर आथमणौ नित आपरी निजर सूं देखणा रै उप-रांत ई सूरज री उगाळी वौ जांणै कै औ उजास अबै कदैई नीं आथमैला । पण सूरज तौ वगत परवांण तपियां पछै आथूण रै कांठै आथमै । उजास रौ समंदर छिण-पलक में विणसै । देखतां देखतां काळौ-बोळौ अंधारौ प्रगटै । तद मिनख जांणै के काळी रात अबै कदै ई नीं ढळैला । पण रात रै अंधारा रौ समंदर वगत परवांण छिण-पलक में लोप व्है जावै । इणी भांत वगत परवांण मिटतां मिटतां बांमण रा हिवड़ा सूं घरवाळी री दाझ अंगै ई मिटगी । फूलकंवर रौ ई पाछौ घर में मन लागण लागौ । मुळकण री बात माथै मुळकती अर हंसण री बात माथै हंसती । राजी होवण री बात माथै राजी होवती । पिणियारयां रा झूलरा साथै खाली बेवड़ौ लेय सरवर जाती अर भरयोड़ौ बेवड़ौ उंचाय साथणियां रै साथै पाछी वळती । हिबोळा मारता सरवर नै देख्यां उणरै हिवड़ा रौ सरवर ई हिबोळा मारतौ ।

अर उठी वगत परवांण बांमण नै चांद सूरज घरवाळी री सिळगती रथी रै वदलै पाछा चांद सूरज ज्यूं दीखण लागा । उणरा हिवड़ा में ई पाछी चांदणी छितरावण लागी, टिम

टिम करता तारा खिंवण लागा । पैला लुगाई री विजोग उणरै हीयै साल्हतौ, अबै उणरी कमी खटकण लागी । बांमण नै लाखायौ के रोटी, पांणी, नींद अर हवा रै टाळ किणी अेक चीज री मोटी खांमी अस्टपौर तड़फा तोड़ै । रात रा नींद आंख्यां रौ ठायौ छोड़ तारां रै बिचाळै चापळ जावै । निरी ताल तांई लूखा पसवाड़ा पलटतौ । इण नवा जंजाळ में मरती घरवाळी रौ कौल भलीभांत याद व्हैतां थकां ई वौ इणरी घणी कीं गिनरत करी नीं । फूलकंवर रै कांनां भणक पाड़्यां बिना ई वौ अठी-उठी भाई-गनायतां सूं ठसियौ भिड़ाय अेक अध-बूढ़ बांमणी सूं नातौ कर लियौ । नातायत बांमणी रै साथै फूलकंवर रै साईनी अेक लाड़वाड़ छोरी आई । लाड़वाड़ री अक आंख में छिम अर दूजोड़ी में फूलौ । बांवळिया री छाल रै उनमांन मगसौ अर खुरदरौ डील ! डीगी तौ फूलकंवर रै लगै-टगै । पण विडरूप उणियारै । देख्यां जी मिचळै । दांत अेक दूजा माथै चढ़चोड़ा । मुरायां काळी । मगसा नख ! ओछी गाबड़ । भंवियोड़ौ लिलाड़ । लुगथुगा केस । मन री मळीच । खोड़ीली । उगीनी । लखणां में जामण जाई रै ई माथै बांधै जैड़ी । पण मां उणरी अलबत फूठरी ही । डोकरां रा ई मन मोहै जैड़ी । जीव रा बोदापणा में तौ दोनूं मां-बेटियां अेक दूजी सूं डंयाळ ही ! मां रै हिवड़ा री विस बोबा चूंघ चूंघ वा आपरै हीयै टिप्पा-टोळ भर लियौ हौ ।

गांव रा अेक रुळियार थोरी रै साथै खावण-पीवण री ठा पड़्यां उणरौ धणी बरसां पैली उणनै छिटकाय दी ही । वस्ती रा लोग माहौमाह सुरपुर करता के आ लाड़वाड़ उण

थोरी रा अंस री है। पण फूलकंवर रा बाप नै तौ लुगाई री भूल ही जकौ नातायत रै लुगाईपणा में कीं खांमी नीं ही। अर उण बांमणी नै ई धणी री पूठ चाहनती जकौ मिळगी। दोनां रै ई मनजांणी व्ही।

नाकुछ तिणका री ओट भाखर ओप व्है जावै, पछै तीन हाथ री सांप्रत केसर वरणी कांमणी नै देख्यां बांमण पैलकी लुगाई रौ रूप, रंग, स्वाद उणरी ओळूं अर उणरा कौल पांतर जावै तौ इणमें किसी अजोगती बात! मरयोड़ी लुगाई नै भूल्यौ जकौ तौ भूल्यौ ई, पण सागै लखणां-बायरी नातायत रै घोदावणा सूं जायोड़ी बेटी फूलकंवर ई आंख्यां रै पाटा ज्यूं लखावती! सेजां री तेवड़ लुगाई रै कारण उणरी बेटी सूं ई मन फाटग्यौ। जद बाप ई आंख्यां फेरली तौ पछै फूलकंवर किण आगै मुरझायोड़ै हिवड़ा रौ संताप प्रगट करै।

मुई मां री तळतळावण, कांयस अर नित री दे'ण रै उपरांत फूलकंवर रौ उफणतौ जोबन वळै आंटौ साज्यौ। भाई-गनायत अर बस्ती में सगळै चकचक होवण लागी के मांचै नीं मावै उसी लांठी डीकरी बाप रै घरै घोड़ी व्है ज्यूं घूमै—बाप री आंख्यां के तौ फूटोड़ी के गुद्दी लारै है।

नित री चकचक सूं आंतौ आय, अेक दिन बांमण घरवाळी नै डरतां डरतां कह्यौ—अबै तौ फूलां रा पीळा हाथ करदां तौ आछौ। म्हैं तौ ....

बांमणी विचाळै ई तड़कनै बोली—इण लखणां-बायरी रा वळै पीळा हाथ! मरया वडेरां री नांवगी नीं करै तौ म्हारी जात माथै जूती। बापड़ा किणी बांमण री क्यूं करम फोड़ौ।

औ डींगरौ गिणियां दिनां में नीं ऊघळै तौ म्हनै कैजौ ! अघबेरडी रौ काळौ मूंडौ अर लीला पग करनै तगड़दौ, इणरा ज्यूं भाग व्हैला त्यूं व्हे जावैला ! थांनै आ कांई ऊंधी सूझी के म्हारी सालस, स्यांणी अर समझणी बेटी रै सगपण री बात नीं करनै इण ओदसा रै सनमन री बात करी ।

बांमण कह्यौ—बात तौ थारी साव साची, पण बेटी नै फेरा नीं खवाड़्यां, औ जलम तौ बिगड़्यौ जकौ बिगड़्यौ ई, घकलौ जलम ई बिगड़ जावैला । बेटी नै पराई ग्वाड़ी पुगायां ई बाप रौ फरजन उतरै ।

बांमणी मूंडौ मस्कोरनै कैवण लागी—किणी अेक घर खटै, उण रात तौ इण सतवंती रौ जलम ई नीं व्हियौ । आ तौ आपरै मतै ई बाप रौ घर छोड़ कई घर कर लेला, इणरौ क्यूं सोच करौ । जे फेरां रौ ई फरजन उतारणौ है तौ इणनै काळा नाग साथै परणाय दौ । म्हनै काच में दीखै ज्यूं सुभट दीखै के अेक खूंटै बंध्योड़ी चरण वाळी आ गाय कोनीं । ठौड़ ठौड़ मूंडौ मारती भंवैला । क्यूं किणी गरीब बांमण री बिरथा दुरासीस लौ ।

बांमण रौ कीं पसवाड़ौ नीं फिर्‌यौ । मन मांडै माठ झेली । पण उण दिन पछै बांमणी आपरै दरसायोड़ी बात रौ अैड़ौ हठ झाल्यौ के बात छोड़ौ । घड़ी घड़ी कैवती—थांरी इण लाडल बेटी फूलां नै नाग रै साथै परणाय तूमार तौ जोवौ । म्हैं कैवूं के इणनै काळौ नाग ई नीं डसैला । सांप नै भर-मावण जैड़ी आ छळगारी गिनख नै कद धारैला ! कैणौ मांनौ अर थांरी सपूती नै सांप रै लारै करदौ । नीं टीकौ, नीं दायजौ नै नीं जीमण-झूठण । किणी भांत री गिरै बिना

वेटी रै फेरां रौ फंद कट जासी । अर नीं म्हारी वेटी नै देवण सूं वत्तौ दायजौ ई अपां गोडै है । पछै थाप खाय मूंडौ रातौ राखण में कांई सार !

घरवाळी री वात मांनण रै सिवाय धणी रौ दूजौ कीं वस नीं हौ । ऊपरला मन सूं ई उणनै हांमळ भरणी पड़ी । पछै वांमणी कद चूकणवाळी । नित घोदाय घोदाय धणी नै काठौ कायौ कर दियौ के वौ किणी वंबी सूं के किणी काळ-वेल्या सूं कैड़ौ ई नाग पकड़नै क्यूं नीं लावै ? जे सांप रै साथै सूयां ई आ नीं मरै तौ पछै म्हारै कह्योड़ी कोई वात मत मांनज्यौ । अर डस्यां मरगी तौ जिद छूटी । वेटी री वदनांमी तौ कांनां नीं सुणणी पड़ैला । म्हैं तौ वदनांमी नै मौत सूं ई इदक गिणूं ।

तठा उपरांत वांमणी आटी पाटी लेय चार दिन धणी सूं न्यारी आंगणै सूती तौ पांचवै दिन विना सिरावण कर्‌यां वांमण नै नीठ घर सूं वहीर व्हैणौ पड़्यौ । जावता धणी नै वळै वा इज अेक भुळावण दी के उणरी लाडल-वेटी सारू कैड़ौ सिरै डावड़ौ छांटै । अणूंतौ रूपाळौ । अणूंती धनवंती नै अणूंती समझवांन । जे अै दोनूं ई वातां मनजांणी नीं व्ही तौ वा जीवै जित्तै मूंडै ई नीं वोलैला ।

आळोच करतौ वांमण डांडी डांडी टुळकतौ हौ के उणनै किणी रा मीठा वोल सुणीज्या — पिंडतजी पा लागूं । वांमण झिझकनै अठी-उठी जोयौ, अळगौ-नैड़ौ कोई मांनखौ निगै नीं आयौ । फगत डावै पसवाड़ै अेक लांठी वांवी रै वारणै काळिंदर लैरावै । मुळकनै वोल्यौ — डरौ मती, म्हैं इज थांनै

बतळाया ।

परतख मौत रौ समचौ सुणनै ई बांमण डरयौ कोनीं । बोलौ बोलौ ऊभौ रह्यौ । औ कांई चाळौ ?

काळिंदर धकै कैवण लागौ—थांरी गुणवंती रूपाळी डीकरी कांकड़ में आरणिया छांणा चुगण आवै । उणरौ रूप देखनै कुण अैड़ौ जीव जकौ बावळौ नीं व्है । ठेट पंयाळ में सौरम रै समचै म्हनै उणरै आवण री सोय व्है जावै । पछै म्हारा सूं मांय ढबीजै ई नीं । बांबी सूं थोडी बारै काढ़ उणरी सौरम रौ आणंद लेवूं । म्हनै देख धैलीज नीं जावै, इण वास्तै उणरै पाखती जावण री हीमत नीं करूं । म्हारै भाग रा आज थें नांमी मिळग्या । म्हारै हिवड़ा री दाभ रौ थांनै थोड़ौ घणौ ई कूंतौ व्है तौ फूलकंवर साथै म्हारौ ब्याव करदौ, नींतर म्हैं अबारूं फुण पछाड़ पछाड़ नै प्रांण दे दूंला ।

बांमण तौ आ इज चावतौ हौ । लप हांमळ भरदी । कह्यौ—दोनूं बेट्यां रौ ब्याव सागै ई करूंला । दूजोड़ी रौ सगपण नक्की व्हैतां पांण थांरै साथै भेज दूंला । पछै थांरै दाय पड़ै ज्यूं करज्यौ ।

संजोग री बात के तीजै दिन चौखळा रा अेक गांव में कांणी-नोजा रौ सनमन ई नक्की व्हैगौ । फूलकंवर री सोभा तौ सुण्योड़ी ही । गनायत कैतां पांण मांनग्या । बांमण ई सगळी बात आंम-गोम में राखी । जांण्यौ अेकर फेरा खायां पाछा उघड़णा सूं रह्या !

बांमण राजी राजी घरै आयौ । बांमणी नै सगळी बात बताई ! बांमणी अणूंती राजी व्ही । धणी सूं टीपणौ बंचाय

वकली तीज री सावौ भिजवाय दियौ । कांणी-नोजां रै सासरै खवास भेज्यौ अर काळिंदर रै पाखती वौ खुद गियौ । दोनूं जानां आवै जित्तै वौ घरवाळी रै सिवाय किणी नै भेद परगट नीं करणौ चावतौ ।

पण जांन आयां आखा गांव में ठा पड़गी । जणौ जणौ वांमण रौ माजनौ पाड़्यौ पण वौ तौ कीं गिनरत नीं करी । कांणी-नोजा रै मिनखां री जांन अर फूलकंवर री जांन में सांप, विच्छू, कनसळाप, गोईड़ा अर अजगर ।

कोई दूजौ फोड़ा घालै तौ बेटी बाप रै पाखती आय कूकै, आपरौ दुख दरसावै, पण जद बाप आगै होय बेटी रौ काळिंदर साथै सनमन करै तौ पछै वा किण गोडै विणती करै ? मौत आयां विना मरीजै नीं, इण कारण फूलकंवर तौ अंगै ई माठ झेलली । बोली नीं कोई चाली । ज्यूं नाप कह्यौ त्यूं कर्‌यौ । मरणा सूं धकै तौ काळी भींत । अैड़ा जीवणा में ई कांई सुख जकौ उण वास्तै झुरै । अबै तो मरयां ई सै दुखां रौ फंद कटैला । आ सोच वा तौ मन में अंगै ई नीं डरी । बोली बोली सांप रै साथै फेरा खाय लिया । निसंक काळिंदर री पूंछ हाथ में लेय हथळेवौ जोड़्यौ । उणनै मुई-मां रौ डर सांप सूं ई वत्तौ लागतौ हौ । काळिंदर रा परस सूं जांणै उणनै थावस मिळ्यौ ! रगां में कंपकंपी री ठौड़ जांणै ठिठ्ठता व्यापरी ।

कांणी-नोजा रै विडरूप उणियारा रौ धणी नै झवकौ नीं पड़ जावै इण वास्तै मेड़ी में काळौ-बोळौ अंधारौ हौ । अर भोळौ अजांण धणी उण असूझता अंधारा में फूलकंवर रा

सुण्या रूप रै थथोपै सुरग रै पालणै भूलती ही ।

अर उठी मुई मां रै कह्या सूं फूलकंवर री मेड़ी में डावड़ियां सात दीवा भुपाया । हब्बाहोळ चांनणौ लुळलुळ मुजरा लेवतौ हौ । सुभट देख्यां बिना काळिंदर रौ डर लागै इज कीकर ! अर बिना देख्यां काळिंदर फूलकंवर नै पाधरौ डसै कीकर ? आ सोच खोड़ीली बांमणी कोड सूं औ खरचौ ओढ़्यौ । ब्याव रा नांव माथै फगत औ इज दत्त-दायजौ फूलकंवर रै हाथ लागौ ।

आडौ बीड़तां ई मेड़ी में दीवां रौ उजास जाणै निड़ण लागौ । काळिंदर री चीकणी काळस पळक पळक करती ही । लाखीणी सेज रै आगै डुखलिया माथै फाटोड़ौ तापड़ियौ विछ्योड़ौ हौ । काळिंदर रै फुण रौ परस व्हैतां ई डुखलिया री ठौड़ हीरा-मोती जड़्यौ सोना रौ पिलंग सळावा भरण ढूकौ । कसूंवल मुखमल रा सिरख-पथरणा अर ओसीसौ पळापळ त्रिम-कण लागौ । फूलकंवर री मीट में कंवळास अर चांनणौ पाथरग्यौ ।

ओसीसा माथै फुण धरनै वौ तौ लाखीणी सेज माथै लांबौ होय नेगम सूयग्यौ । फूलकंवर पिलंग रै अड़ौअड़ गुमघांम ऊभी ही । काळिंदर फुंण ऊंचौ करनै बोल्यौ—कांई माईतां सूं ई वत्तौ म्हारा सूं डर लागै ?

फूलकंवर कीं पडूत्तर नीं दियौ । टुग-टुग काळिंदर रा फुण सांम्ही जोवण लागी ! काळिंदर री निजर में जकी आब रौ भबकौ उणनै निगै आयौ, उण सूं पैली वार उणनै औ अेलम व्हियौ के मिनख सांपां सूं इत्ता क्यूं डरपै ? इत्ता डरण री जरू-रत तौ कोनीं । सगळा सांप किसा सारीसा व्है ?

फूलां नै अबोली देख सांप मुळकियौ ! उणरी इमरत हंसी दीवां रै चन्नाणा में घुळगी । घकै कैवण लागौ — पण थांरै माईतां री गुण म्हैं जीवूं जित्तै नीं बिसरूंला । जे थांरा माईत थांरै सागै औ आंटौ नीं साजता तौ म्हारी जूंण कीकर सुक्या-रथ व्हैती । केई बरसां सूं म्हारी प्रीत थांरै उणियारा रौ इम-रत पीवै, जिणसूं किणी मड़ा नै ई डसूं तौ वौ पाछौ जीवतौ व्है जावै । औ थांरी-म्हारी प्रीत रौ परताप । विस्वास नीं व्है तौ म्हारी आंख्यां में जोवौ — थांरौ हूबौहूब चित्रांम मंड्योड़ौ !

आ बात कैय काळिंदर पूंछ रै पांण ऊभौ व्हियौ ! फूल-कंवर रै अड़ौल्गड आपरौ फुण करनै दूध री हंसी हंसण लागौ । फूलकंवर अंगै ई नीं डरी । उणरी आंख्यां में मीट गडाय जोवण लागी — साचांणी काळिंदर री दोनूं आंख्यां में उणरा ई साख्यात चित्रांम ! अणूंता सरूप, अणूंता मादक ! कांई वा इत्ती रूपाळी है ? वा आपरा रूप में ई डूबगी । इंदरापुरी री अपछरावां रा ई भोळा भांगै जड़ा अबोट अर अखूट रूप अर लाखीणी सेज माथै काळिंदर रौ जोग ! होणी री माया अर होणी रा चाळां नै सपना ई नीं पूगै !

तठा उपरांत काळिंदर फूलकंवर नै धुरापेड सूं प्रीत री रामायण सुणाई । दीवां सूं वत्तौ चन्नाणौ फूलकंवर रा मन में सांचरग्यौ । रग रग में रगत री ठौड़ इमरत घुळग्यौ । वा काळिंदर नै आपरी छाती सूं चिपाय लियौ । सुरग रा सुख री जांणै पांण उतरगी । दोनां रा होठ अेक दूजा रै इमरत रौ स्वाद चाख्यौ । भेद भूल्यां नेह री छेहलौ सुख सांचरै । इण सुख री आव निरख्यां दीवां री जोत सारथक व्ही । रेसा रेसा में

जांणै अमोलक नग जड़ग्या ! अनूठी प्रीत में गैळिज्योड़ी फूलां बिसरगी के वा विसहर काळिंदर सूं प्रीत करै, अर काळिंदर बिसरग्यौ के वौ किणी लुगाई री कूंकूंवरणी देह सूं लूंमै। दीवां रै उण अखूट चांनणै दोनां री प्रीत असूझती व्हैगी ! नेह रौ औ असूझतौ अंधियारौ ई सूरज रै मिस जगमगै अर भेद वाळौ सुभट उजास रात रै आगै अंधारा रौ रूप धारण करै !

तड़कै धड़ाधड़ आडौ भचेड़्यां दोनां री सुधबुध वापरी। दीवां रौ उजास बाटां में सिंवटग्यौ हौ। फूलां हळफळाई होय आडौ खोलै जित्तै जित्तै माईत खथावळ करता चूळियौ उतार मेड़ी रै मांय वड़ता इज निगै आया। फूलां मुड़नै अपूठी ऊभगी। गळा में आंटा खायोड़ौ काळिंदर काळे केसां रै माथै फुण करयां लैरावतौ हौ।

भिमरियोड़ा अंजस रा सुर में मुई-मां गळा री विस उलाकण लागी — देख लिया, थांरी जायोड़ी रै लखणां रा परवाड़ा सांप्रत देख लिया ! म्हारौ जीव तौ पैला ई जागतौ हौ। आ कुलखणी, लखणा-बायरी धीवड़ी तौ काळिंदर नै ई मोय लियौ ! इणरौ तौ मूंडौ देख्यां ई पाप लागै।

सावकी मां रा बोल सुणणा तौ लाचारी ही, पण पाछौ बोलणौ उणरी लाचारी नीं ही। पण काळिंदर रै हीयै मिनखां रा अै बोल झरया कोनीं। जीभ नै फरफरावतौ बोल्यौ — अैड़ौ विस तौ सांपां री पोटळियां में ई नीं व्है, जे व्है तौ सब सूं पैली वै खुद ई मर जावै। पण इचरज री बात के इण भांत रै हळाहळ थकां ई थें जीवौ अर जीवण रौ गुमेज़ करौ। फूलां रै उणियारा रा दरसण थांरै सारू पड़्या कठै !

फूलां मांय री मांय कीं सांनी करी के काळिदर धकै कीं नीं बोल्यौ । फूलां तौ अबोली रैवण सारू पैला ई माठ झाल राखी ही । पण अबै औ मोसा अर औ मेहणियां सुणणा में ई कीं सार नीं ही । फूलां ईं माईतां रै सरणै अणूंती आंती आयोड़ी ही, पण मौत आयां पैली घर छोडण रौ कोई दूजौ मारग ई नीं हौ । रातै काळिदर रौ इमरत वांणी सूं उणरौ उगटियोड़ौ मन कमोद रै उनमांन निरमळ व्हैगौ हौ । अबै वा किणनै धारै ! बोली बोली घर सूं मतै ई वहीर व्हैगी ! पछै घरवाळा किण माथै रीस पोखै । परूठ ई उणरौ नांम लेय अेजां-वेजां बकण लागा । गळा में काळिदर पळेटिजियोड़ौ अर उरवांणै पगां ! वा तौ लारै मुड़नै ई नीं जोयौ । माईतां वड़-वड़ाटा करता गिया अर लाड़वाड़ रै दत्त-दायजा अर सीख-समटावणी में रुंवग्या । भाई गनायतां में सुरपुर व्ही तौ फूलां रा माईत बध-बधनै उणरै लखणां रा परवाड़ा वांचण में कीं पाछ राखी नीं ।

काळिदर रै कह्यां कह्यां वा उणरी वंबी री सोय में वहीर व्ही । वंबी रै पाखती पूगतां ई काळिदर सळवळतौ हेटै उतरयौ । बोल्यौ — म्हैं वंबी रै मांय बड़ूं, था जांण थांनै अंगे ई डरण री जरूरत कोनीं । पूंछड़ी थोड़ी वारै रैवै जद जीवणा हाथ सूं झाल लेजौ । पछै मांय वड़यां थांरी आंख्यां आपै ई चांनणौ व्है जावैला ।

फूलकंवर काळिदर कह्यौ ज्यूं ईं करयौ । बिल में वड़तां ई जांणै अेकण सागै हजार सपना झवाझव पळकण लागा । चांदी-सोना रा किंवाड़ । हीरा-मोत्यां जड़्या । सोना रा

हुस । रूपा रा पांन । लालां रा भूमका । सोना री तणियां ! सोना रा हींडा । अेक अेक सूं इदक सरूपवांन नागकिन्यावां मस्ताई में न्यारी न्यारी हींडै । आंगणै हीरा-मोत्यां रा थर पाथरचोड़ा । फूलकंवर री अकल कह्यौ नीं करचौ । चकन-चकन व्हैगी । नींद रौ सपनौ तौ जाग्यां तूट जावै, पण जागती आंख्यां रौ सपनौ कीकर तूटै ! आ कैड़ी माया ?

काळिंदर मुळकनै बोल्यौ—इण विध घड़ी घड़ी आंख्यां मींचनै कांईं उघाड़ौ, विस्वास नीं व्है कांईं ?

फूलकंवर कह्यौ—माया तौ विस्वास नीं करै जैड़ी इज हैं, पण थें साथै हौ तौ विस्वास करणौ इज पड़ै, अभरोसौ कीकर करूं ?

काळिंदर रै गुमेज री पार नीं रह्यौ । कैवण लागौ—हाल तौ अभरोसौ करै जैड़ी एक लांठी बात वळै बाकी है ।

आ बात कैय सांप मुळकण लागौ जकौ मुळकतौ ई गियौ । फूलकंवर अैड़ी इमरत हंसी कदै ई नीं दीठी ।

औ कांईं ? काळिंदर तौ मुळकतौ मुळकतौ इदक सरूपवांन मोट्यार बणग्यौ । जांणै सेडावू दूध रौ इज पूतळौ । गुलाब रै फूलां ढळचौ । बीजळियां रै ओदर लुट्योड़ौ । केसर री क्यारियां में ऊग्योड़ौ । मूंडा में दांतां री ठौड़ जांणै तारा खिवै । रूप अर आब माथै निजर टिकै ई नीं । चारूं कूट जांणै प्रांण सांचरग्या ! हीरा-मोत्यां री आब सवाई व्हैगी ।

दुख रै संताप अर सुख रै हरख री कोई माठ नीं व्है ! तौ ई फूलकंवर नै अैड़ौ लखायौ के इण सूं आगै हरख री माठ वळै कांईं व्है ! सुख री आ छेहली सींव । हरख री आ

छेह्लो माठ !

पलक झपै ज्यूं सुख रा दिन सिरकण लागा । वै दोनूं तौ जांणै वगत री सुध-बुध ई पांतरग्या व्है । दुख अर विखा री तौ पाछौ सपनौ ई नीं आयौ । थोड़ा दिनां में ईं फूल-कंवर नै सुख रौ जांणै अपचौ होवण लागौ । दुख री हर आवण लागी । दुख रै आणंद अर मोद रौ तौ ठरकौ ई न्यारौ । पण उण पंयाळ नगरी में दुख रौ कांईं वास्तौ ! आगौ-नैड़ौ कठै ई नीं फरूकै ।

पण म्रितलोक में तौ ठौड़ ठौड़ दुख उवरतौ पड़्यौ । नीं दुख री छेहड़ौ आवै अर नीं भोगणिया खूटै ! अेक दिन म्रितलोक सूं दुख रौ रेसौ उठै ई बावड़्यौ ।

खुद री बेटी अर फूलकंवर रै ब्याव नै पांच महीना संपूरण व्हिया तौ बांमणी रै होयै ठीम पाक्यौ । बेटी विचै ई फूलकंवर री ओळूं घणी साल्ही । किणी माथै खीझ अर रीस री आफरो झाड़्यां बिना उणनै चैन नीं पड़तौ । भूख अर तिरस विचै ई औ सुभाव पोखणौ जरूरी हौ । बांमणी रै हीयै वळत उठी तौ वा उठी । नीं सूतां सांयत अर नीं जागतां चैन । वा धणी नै कह्यौ के दोनूं बेटियां नै आंणै जावै । उण रात फूलकंवर सांप रै परस सूं जीवती रैगी तौ हाल तांईं कांईं मरी व्हैला । वा कुलखणी तौ काळ नै ई मोह लियौ ।

घणौ धोदायौ तौ गांजरा धणी नै लुगाई री कैणौ मांनणौ पड़्यौ । काळिंदर री वंबी तौ कांकड़ में इज ही । पैला बांमण उठै गियौ । वंबी रै पाखती ऊभौ होय फूलां रौ नांव लेय दो तीन हेला मार्‍या । काळिंदर हेला रै समचै वारै

आयौ । पिंडतजी सूं पगेलागणा करनै आवण रौ कारण पूछ्यौ। पिंडतजी कह्यौ के बेटी नै तेड़ण सारू बाप आवै, इणमें पूछण जैड़ी कांई बात । काळिंदर पूछणी चावतौ के आंणा रै ओळावै कोई नवौ छळ-छंद तौ नीं है । पण फूलकंवर रौ ध्यांन करनै वौ अेक आखर ई बेजा नीं काढ़्यौ । अणूंता आव-आदर रै सागै मांय चालण रा नोहरा कर्‌या । पण सांकड़ा बिल में बड़णी कीकर आवै ? वै आळोच करता ऊभा हा के काळिंदर वांरै मन री बात लखग्यौ । बोल्यौ—म्हैं सोच-विचार नै ई मनवार करी ही, बिरथा सोच मत करौ ! मांय बडूं जद पूंछ झालण री तकलीफ तौ अवस करणी पड़ैला ।

पिंडतजी रै हीयै तकलीफ करण री आ घल माई कोनीं। बाबौजी संसार कैड़ौ के बेटा आपरै मन जैड़ौ ! आज तौ हाथां करनै मौत निवती । डस्यां पांगो मांगण री ई जरूरत कोनीं । काळिंदर बदळौ लेवैला । थर थर धूजण लागौ । धूजता सुर में अटकतौ अटकतौ नीठ बोल्यौ—देख्यां डरूं अर साथां मरूं, पछै पूंछ झालण री हीमत कीकर व्है ? मां रौ जीव नीं धाप्यौ तौ आवणौ पड़्यौ । कुसळ-खेम रा समंचार सुणाय दूंला ।

सांप हंसियौ । हंसतौ हंसतौ ई कैवण लागौ —म्हैं डसणी चावूं तौ म्हनै कुण बरजै । थें आंख्यां मींच फगत म्हारी पूंछ अपड़लौ । बेटी सूं मिळ्यां बिना पाछा तौ भवै ई नीं जावण दूं।

बांमण ई मनाग्यांना विचार कर लियौ के काळिंदर नै खिझायां वत्ती हांण है । वै तौ पछै कीं विवाद नीं कर्‌यौ । धूजतै हाथां पूंछ झाल ली ।

पछै आंख्यां उघाड़्यां जकौ नजारौ दीठौ — उण सूं वं तौ चितवंगिया व्हैगा । आंख्यां तौ फाटी री फाटी रैगी । औ कांई तोतक, आ कांई माया ! मूठी मोती चोरयां ई सात पीढ़ी रौ दाळिदर अळगौ व्है जावै । सपनै ई हाथ नीं लागै वैड़ी माया पगां में रड़वड़ै ।

तठा उपरांत जंवाई रौ मानवी - रूप निरख्यौ तौ मन में अचरज तौ व्हियौ जकौ व्हियौ इज, पण सागै हरख रै बदळै डबकौ वैठग्यौ । काळिदर तौ किणी बात री घात नीं करी, पण औ नाग - राजकंवर मारयां विना नीं छोडैला । बाप होय वेटी नै दुख देवण में पाछ नीं राखी । अैड़ी ठा व्हैती तौ अछन - अछन नीं करतौ ! करकसा रै कह्यै कह्यै सुगणी घीवड़ी नै कित्ती ताही ! अबै कांई व्है ! अैड़ी बातां रौ मंडांण तौ टीपणां मेंं ई नीं व्है ।

पिंडतजी तौ पछै भली सोची नीं कोई भूंडी — लप वेटी रा पग भाल अरड़ां - अरड़ां रोवण ढूका । 'म्हनै माफ कर वेटी, म्हनै माफ कर वेटी', इण अेक ई कड़ी री भड़ी बांध दी ।

जंवाई अर वेटी रै घड़ी घड़ी समभायां, थावस दियां, नीठ पिंडतजी नै नेहचौ व्हियौ । वेटी रै हाथ रा नीं नीं व्है जैड़ा तेवड़ जीम्या ।

थोड़ा दिनां तांई पिंडतजी खावण - पीवण रौ वट काढ़्यौ पण काढ़्यौ । तौ ई नित नवा भांत भांत रा तेवड़ वांरै पूरा गुण नीं आया । वेटी रौ सुख वाप नै ईवियौ कोनीं । वांरी गवाड़ी तौ ऊंदरा थड़ियां करै अर अठै हीरा - मोती कांकरां री ठौड़ विखरयोड़ा । सोना, चांदी, हीरा - मोत्यां री पळक देख

देखनै वांरौ मन कभळाइजतौ गियौ । पंयाळ नगरी रै इण अथाग सुख रै बिचाळै ई वै आपरै सारू दुख री सोय करली ।

सेवट अेक दिन पिंडतजी घरवाळी रै डर सूं घरै जावण रौ मतौ करचौ ! अठै बैठां ईं वांरै बांमणी रौ सोरकौ मावतौ नीं हौ । बेटी-जंवाई ढबण सारू घणा ई थोरा करचा, पण पिंडतजी किणी भाव हांमळ नीं भरी । घणा दिन अठै वळै रैग्या तौ पीढ़चां रै उण तोटा में दिन काढ़णा अंगै ई दूभर व्है जावैला । सेवट जूंण तौ उण विखा में इज पूरी करणी है ।

फूलां नै साथै भेजण सारू नाग-राजकंवर घणौ दोरौ मांन्यौ । पांचवै दिन पाछी पुगावण रौ कौल करचां नीठ राजी व्हियौ । बिछड़ती वेळा दोनां री आंख्यां जळजळी व्हैगी ।

धन नै तौ धन री मां ईं जायौ । ठेट काळजा में ऊंडी जड़ व्है इणरी । चांम ब्रिचै दांम वत्ता प्यारा व्है । फूलकंवर रै साथै हीरा-मोती भरचौ कटोरदांन अर मिठाई, मेवा मिस्ठान रा भरचा सात चांदी रा चरू । निजर पड़तां ईं सावकी मां री निजर बदळगी । वा तौ सगी मां सूं ईं वत्तौ हेज दरसावण लागी । मूंडा रौ मिठास तौ अवस बदळचौ, पण मन में तौ हौ ज्यूं इज ही । इण उपरांत मन रा रिसता घाव माथै लूण तौ तद भुरकीजियौ जद पिंडत कांणी नोजा नै सासरा सूं लायौ । उणरी हालत माड़ी घणी इज व्हैगी ही । गाभा भीर भीर व्हियोड़ा । गैणा रा नांव माथै तीब ई नीं । सुहाग रा नांव माथै फगत लाख री चूड़ियां ही । रंग वत्तौ काळूंटौ व्हैगौ हौ । उङुक-धुङुक दांतां माथै मेल रौ दळ जम्योड़ौ हौ ।

बांमणी किणी रौ भलौ तौ सपना में ईं नीं कर सकती

ही, पण घात अर भूंडौ करणा में तौ उणनै कीं सोचणौ ईं नीं पड़तौ । आपै ई उपज जाती । रात रा बाड़ा में जाय वा आपरी बेटी नै सै पाठ पढ़ाय दियौ । दिनूंगां दोनूं बैनां दुघड़िया उंचाय पांणी सांचरी तौ कांणी नोजा सुर में मिठास भरनै फूलकंवर सूं बोली—म्हनै तौ इण जूंण में थांरै जैड़ा बणाव-सिंगार री छींया ई नीं भेंटीजै । अेकर थोड़ी ताळ वास्तै पैरलूं तौ मरचां ईं मुगातर पावूं । म्हारा गाभा पैरियां थांनै म्हारै बिखा री साचौ कूंतौ व्हैला ।

अैड़ी बात सुण्यां फूलकंवर रै जेज कठै । तुरत सगळा गैणा-गाभा कांणी नोजा नै संभळाय दिया अर खुद उणरौ सूगलौ बासतौ फाटोड़ौ बेस राजी राजी पैर लियौ । रूप अर गुणां री अदळा-बदळी नीं व्ही सौ उणरै ई हाथ री बात नीं ही । अर जे हाथ री बात व्हैती तौ फूलकंवर री कोई ना नीं ही ।

पीचकौ बेरौ गांव सूं दो खेतवा आंतरै हौ । तीस पुरस ऊंडौ । फूलकंवर सींचणियौ उरावती ही के कांणी नोजा आवेस जोर सूं धक्कौ दियौ के वा तौ पाधरी बेरा में । धम्म करती री धर्विदौ बोल्यौ । पछै उठै ढबै इत्ती बावळी वा दुथणी री जाई नीं ही । रीतौ दुघड़ियौ लियां ईं पाछी री पाछी घरै आई । इण्याकारी बेटी कैतां पांण हुकम बजायौ तौ मां अणूंती राजी व्ही ।

सिझ्या रा ई पिंडत नै पाटी पढ़ाय वा कांणी नोजा नै फूलकंवर रै बदळै पंयाळ नगरी पुगावण सारू बहीर कर दियौ । बणाव-सिंगार तौ सागै इज हौ । उमर रै परवांण डील अर

कद ई सरीसौ हौ। फगत खांमी ही तौ रूप अर गुणां री। अंधारा में सावळ पिछांण नीं व्है इण वास्तै संवी सिझ्या बेटी नै सीख दीवी।

नागकंवर तौ उडीकतौ इज हौ। हेला रै समचै बारै आयौ। बहू घूंघटौ उघाड़्यां ऊभी। काळिंदर नै सुणाय बाप बेटी नै सीख री भुळावण देवण लागौ के वा छः महिनां तांई घूंघटौ नीं उघाड़ै। नींतर धणी माथै भार व्हैला। धणी रै जतनां में लुगाई रा जतन भेळा व्है।

काळिंदर रै इत्तौ खटाव कठै हौ। वौ तौ बात पूरी सुणी ई कोनीं के सळवळ सळवळ बिल में बड़ण लागौ। पूंछड़ी थोड़ी सीक बाकी रही के वौ ढबग्यौ। फूलकंवर पूंछ नीं झाली तद बोल्यौ—पूंछ झालण वास्तै घड़ी घड़ी कैवण रीं कांई जरूरत। म्रितलोक में जातां ईं इत्तौ चेतौ उतरग्यौ कांई। बाप मांडै हाथ झाल पूंछ अपड़ाई। हाथ री धूजणी देख काळिंदर कैवण लागौ—म्हारै माथै वैगौ अभरोसौ व्हियौ। डसतौ तौ म्हनै पैला बरजणियौ कुण हौ। अवै तौ नीं डसणा री बात करतां ईं म्हनै लाज आवै।

पंयाळ नगरी में आय कांणी-नोजा जकौ अनूठौ नजारौ आपरी आंख्यां देख्यौ उणरै हिवड़ै बस्या छळछंद नै ई अेकर चकरीज़णौ पड़्यौ।

काळिंदर मोट्यार रौ रूप धार्‌यौ तौ ई बीनणी घूंघटौ अळगौ नीं लियौ। जतनां वाळी बात वौ सुभट सुणी ही। मुळकनै कह्‌यौ—बहू रौ उणियारौ देखणा सूं वत्ता जतन फेर कांई व्है। पण थांरै म्रितलोक वाळा लफड़ा अठै नीं व्है।

नाग राजकंवर घणी ई समझाइस करी पण बीनणी नीं मांनी । जतनां रौ तौ फगत ओळावौ ई हौ, पछै घूंघटौ कीकर उघाड़ती ।

नाग राजकंवर आपरी बैन नै सांनी करी तौ वा लप उणरौ घूंघटौ उघाड़ दियौ ! चांद री ठौड़ हांडी रौ औ काळौ पींदौ कठा सू आयौ । आ बात कांई व्ही ! सगळां रा ई मूंडा काळा पड़ग्या । हीरा-मोत्यां री आव मगसी पड़गी । राजकंवर रौ तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ । उणियारा माथै निजर पड़तां ई वौ बेचेतै व्हैगौ ।

पंयाळ नगरी में दुख रौ पगफेरौ औ पैलीं बार इज व्हियौ हौ । सगळां रा हाथ-पग फूलग्या । हाव-गाव व्हैगा । थोड़ी ताळ उपरांत राजकंवर आंख्यां खोली तौ सगळां रै जीव में जीव आयौ । राजकंवर बैन रै सांम्ही जोवतौ कैवण लागौ—पूछ तौ औ कांई व्हियौ ।

नणद भारी गळा सूं पूछ्यौ के रंग इण विध सांवळौ कीकर पड़्यौ ? मूंडा रै अैड़ा भण तौ पैला नीं हा ।

कांणी-नोजा रै सगळा पडूत्तर घोख्योड़ा हा । तुरत जवाब दियौ — ताव अर सेडळ-माता री झाट सागै वुही सौ सगळा रंग-रूप री मठ मार दियौ । म्हैं तौ आवणी ई नीं चावती ही । जीसा माडै तगड़नै ले आया ।

नणद पूछ्यौ के आंख री डोळी बारै कीकर आयौ । पैला तौ मिरग नै ई लाजां मारै जैड़ी आंख्यां ही ।

कांणी नोजा कैवण लागी — रोटी जीमतां चील टूंच री मैली सौ डोळा री अैड़ी गत बिगड़ी । म्हैं तौ लाज री मारी

आवती ई नीं ही, पण ....

राजकंवर नै बहू रा अै बोल घणा आहंजा लागा । नीठ बोल्यौ — इण में लाज जैड़ी कांई वात । रूप बिगड़णा सूं म्हारौ मन थोड़ौ ई बदळैला । नातौ थोड़ौ ई खोळौ पड़ैला । आ वात सुण्यां तौ थें म्हनै पैला सूं ई वत्ता सांतरा लागौ । म्हैं जांण्यौ के कीं धोखौ व्हैगौ ।

कांणी नोंजा दुख रौ नकल करती बोली — थांनै धोखा रौ थोड़ौ घणौ ई वेम व्है तौ म्हैं अबारू पाछी जावूं परी । थांरै वेम उपजियां म्हारै जीवणा में कांई सार !

इत्ती ताळ सगळां नै विडरूपता रै आगै बोली रौ फरक सुणतां थकां ई समझ में नीं आयौ । रूप रौ खुलासौ व्हियौ तौ उणरी हाड-बोली कांनां में खटकी । नणद पूछ्यौ के आ बोली इत्ती कीकर पलटीजी ?

'परसेवा में ठाडौ पांणी पी लियौ जिण सूं, साद बैंटग्यौ ।' बोली रौ तौ जांगै मठ इज भरग्यौ ।

राजकंवर रौ वेम मिटग्यौ तौ वौ वहू नै राजी करण सारू हींडा में जोड़ै बैठ हींडण लागौ ।

हींडतां हींडतां ई थोड़ी ताळ पछै अेक लीलौ सूवटौ आयौ । हींडा रै चारूंमेर चकारा देवण लागौ । पछै हेटै उतर उतर कांणी-नोंजा रै माथा में घूम-चकरी खावतौ टूंचा देवण लागौ । राज-कंवर री खीझ रौ पार नीं रह्यौ । हाथ में आ जावै तौ घांटी मरोड़ न्हाकै । अबकी टूंच मारनै उड़तां इज हौ के राजकंवर ताखौ राखनै झांप लियौ । घांटी मरोड़ण सारू मठोठी देवण रौ मतौ करचौ ई हौ के हरियल सूवटौ बोल्यौ — घांटी मत

मरोड़ौ, म्हैं थांरी फूलकंवर हूं ।

आ कैवतां ईं लड़ाभूम करती फूलकंवर परगट व्हैगी— जांणै वादळां रौ ठायौ छोड वीजळी उत्तरी । आभा रौ वासौ छोड जांणै चांद हेटै उतरयौ ।

नाग राजकंवर तौ जांणै मरनै पाछौ जीवतौ व्हियौ । उणरै हरख रौ पार नीं हौ ।

फूलकंवर मांडनै सगळी बात बताई । सुणतां ईं सगळा रीस में वाभराभूत व्हैगा । अेकण सागै बोल्या— मारौ, मारौ इण कांणची नै मारौ ।

पण राजकंवर रै हीयै मारण री वात नीं जची । सगळां नै समझवतां कैवण लागौ— इणनै आपरै कपट-जाळ रौ पूजतौ डंड मिळै, आ वात म्हैं ईं मांनूं । पण मारयां तौ इणरै दुख-संताप रौ अंत व्है जावैला । जीवतां दुख भोगै, आ इणरी लांठी सजा है । अठा री माया रौ नजारौ देख्यां पछै तौ आ घणी दुख पावैला । दूजोड़ो आंख फोड़नै वारै तगड़ दौ । मूंडौ देख्यां ई पाप लागै ।

कंवर रौ इत्तौ कैणौ व्हियौ अर हाजरिया उणरो दूजोड़ी आंख फोड़ न्हाकी ।

वंवी रै मूंडा तांईं तौ उणनै पुगाय दी ही । पण धकै कठीनै जावै, उणनै कीं सोय नीं व्ही । अरड़ां अरड़ां रोवण ढूकी ।

अर उठी नाग राजकंवर फूलकंवर रै जोड़ै हींडा में वैठ हींडण लागौ ई हौ के सगळा रूंख हरया व्हैगा । ठौड़ ठौड़ भांत भांत रा सुरंगा फूल खिलग्या । फूलकंवर नै लखायौ के सुख री माठ वळै धकै वधगी, घणी धकै वधगी ।

पीळौ सांप

अेक हौ करसौ । जिणरै बेटा पांच अर बेटियां तीन । सबसूं छोटकियौ बेटौ बरस इग्यारै रौ । अणूंतौ सालस अर समझ-वांन । किणी बात नै निपट आंधौ होय नीं झेलतौ । आपरै बस पूगतां विचार करतौ, माथौ लड़ावतौ । गांव रा लोग कैवता के वौ लारलै भौ कोई सिरै ग्यांनी हौ ।

दूजी तीजी केई बातां रै बिचाळै छोटकियौ बेटौ आपरै घर अर गांव में अेक खास बात देखी के संसार में गनौ, नातौ, मोह, परीत, आव - आदर थै सगळा कमाई रै लारै । दूजां री वात तौ अळगी कमाई रै मापै जनम देवण वाळा माईत ई उण मुजब ममता करै । कमाई मुजब ई लुगाई नै धणी आछौ लागै । निकमौ कुण रैवणी चावै, पण कमाई री तोजी बैठणी किसी सारै री बात ! कमाई रौ जुगाड़ सरीसौ नीं व्है तौ कमाई करणी कीकर सरीखी व्है सकै ! वौ जठै जावतौ घणकरौ इण बात रौ ई ध्यांन राखतौ । अेक ई ओदर में लुटण वाळी बेटी सूं बेटौ इणी वास्तै वाल्हौ लागै के बेटा सूं कमाई रौ आसरौ जुड़ै अर बेटी कमाई करण जोग व्हैतां ई परायै घर सिधाय जावै ।

आ बात इत्ती लांठी होय उणरा मन में पैसी के मांय

समावणी दूभर व्हैगी । छोटी उमर में ई उणरी दुनियां रै आळ-पंपाळां सूं जीव फाटग्यो । मन लगावण सारू घणो ई खपतो पण वात पितळती इज गी । जद जांमणजाई मां री आंख्यां में अेक ई कूख पळचा आठूं टाबरां अर पांचूं भाइयां सारू कमाई रै परवांण ममता री भेद निगै आवती तो उणरो मन मांय रो मांय बुझती जावतो । मां सूं वत्तो तो दुनियां में कोई गनो नीं व्है । आपरी देह री रगत पाय जीव रो पोसण करै । पांखां वारै आयां हांचळां री दूध पाय तिल तिल वधावै । मळ-मूत धोवै । खुद गीला में सोय जाया नै सूखा में सुवाणै । अर टावर लांठा होय आपो संभाळ ले तद कमाई रै परवांण कम-वेसी ममता करै । पछै अैड़ी कमाई में कांई सार ? जीवण री कांई म्यांनो ! मिनखा-जूंण री कांई सिद्धि !

वो मिळतो जका ई साधू-मातमा नै अैड़ा ई सवाल वूझतो । घणकरा संत तो टाबर जांण उणरी गिनरत नीं करता । पण समाजोग री वात के अेकर किणी रमता जोगी नै उणरी वातां में साच निगै आयो । टावर री चंचळ आंख्यां में अेक अखूट जोत निगै आई । कह्यौ — वेटा, थूं अेक भ्रस्ट-जोगी री खोळियो भुगतै । गिरस्ती रा कादा में क्यूं कळै, भगवांन रै गंगाजळ में डुबकियां लगा । माया रै अंधारा में भटकै, परमात्मा रै अखंड उजास में अलंव उडांणा भर । थारी आतमा रै सागै थूं दुनियां री कल्याण करैला ।

सीप रै सांचै उतरचां खारी पांणी मोती वण जावै, उणी भांत रमता-जोगी रा वै वोल उणरा हिवड़ा में पेठ्यां अमोलक नग वणग्या । रात रा अथाह अंधारा नै मिटावण

साऊ सूरज रो अेक झीणी किरण री उजास उबरतौ पड़्यौ रैवै, पछै जोगी रै आं आखरां सूं छोटकिया बेटा रौ अंधारौ क्यूं नीं मिटतौ ! आंख्यां में आ नवी किरण फूटतां ईं उणरी तौ निजर ई बदळगी । वौ तौ मां-बाप अर भाई-बैनां नै पूछण री ई जरूरत नीं समझी । ऊभौ उणी ठौड़ सूं जोगी रै साथै धकै बधग्यौ । वऋतौ ई गियौ । लारै मुड़नै ई नीं जोयौ के उणरा माईत, उणरी ग्वाड़ी अर उणरौ कुटम-कबीलौ कित्तौ आंतरै छूटग्यौ ! भांय अर निजर रै पेटै छूटचौ जकौ तौ छूटचौ ई, पण मन सूं ई अलेखूं कोस लारै छूटग्यौ । अैड़ा भ्रस्ट-जोगी तौ साख्यात भगवांन रा इज अवतार व्है । फगत आपरी लीला बताय, खोळिया रौ नवौ रूप बदळै । उण रमता-जोगी रौ आखा मुलक में अैड़ौ परचौ के वौ आपरी छींयां सूं ओळखीजतौ । अलेखूं भगत उणरै चरणां में माथौ निंवावता । राजा धुराधुर डंडौत करता, चरणां मुगट धरता । रांणियां हाथ जोड़ ऊभी अस्टपौर टीवती के जोगी वांनै आसीस देवै । उणरी इंछा रै समचै माया पगां में लुटती, पण वौ तौ सपना में ई माया रो चावना नीं करी । फगत भगवौ वागौ, हाथ में कमंडल अर अेक टंक दो लूखा टुकड़ा । माया तौ अळगी उणनै लोभ तौ साख्यात भगवांन रौ ई नीं हौ ।

अैड़ा गरू रौ चेलौ पछै क्यूं कम उतरै । गरू री ठोकरां खाय वो तौ उण सूं ईं ऊंचौ पूगग्यौ । लाठियौ गुळ अर मिसरी दोनूं ईं मीठा व्है, पण मिसरी मिसरी इज व्है । वौ ज्यूं ज्यूं गरू रौ नांव बधावण साऊ खपतौ, दुनियां रा लोग-बाग उणनै वैगा ई भूलता गिया अर चेलौ तौ सूरज चांद रै जोड़ै जग-

मगावण लागी ! उणनै तौ लोग परतख अवतार री ई रूप मांनण लागग्या । भगवांन नै भगत री आ कीरत सुण्यां मोद व्हियौ के ईसकौ, उणरौ भेद तौ भगवांन ई जांणै पण धन-संपद री देवी माया रै काळजै चेला री औ ठागौ भरचौ कोनीं। विना स्वाद चाख्यां, अर विना देख्यां कोई कीकर किणी चीज सारू डुळै। गिडक घेवर सारू कद आड़ौ लेवै। गडूरड़ा जळेबी री सोच में कद आखता व्हिया! वै तौ चाख्या मैला सारू ई दड़बड़ रांचता रैवै! खावणौ पीवणौ, देखणौ, सुणणौ अर सूंघणौ अै इज तौ भोग रा न्यारा न्यारा रूप। फगत सुणणा सूं ई आखी दुनियां, आतमा अर परमात्मा सारू तड़फा तोड़ै। जकौ माया रौ नांव नीं सुण्यौ वौ कीकर माया री चावना कर सकै। अदीठ कांमणी किण माथै कांमण करचौ। मीट री कार में नीं आवै जित्तै ई भीसम रौ खण निभै।

उण चेला रौ नांव बदळ नै रांम नीं राख्यौ जित्तै दुनियां नै नेहचौ नीं व्हियौ। वौ ज्यूं ज्यूं दुनियां सूं आंतरै दौड़ण री चेस्टा करतौ त्यूं त्यूं दुनियां वत्ती उणरै लारै दौड़ण लागी। अेक ठौड़ विना ढब्यां वौ नित नवा खळकता भरणा रौ पांणी पीवतौ। हवा रै उनमांन विना थम्यां चालतौ रैवतौ। कंद-मूळ भखतौ अर सगळै अलख जगावतौ। यूं लुकतां-छिपतां वौ आखी दुनियां में चावौ व्हैगौ। मसखरी दुनियां में अेक भांत री इज नीं व्है। उणरा अलेखूं रूप अर अणगिण भेद।

ज्यूं ज्यूं रांम री नांव सरव व्यापी व्हैतौ गियौ त्यूं त्यूं माया रै हीयै दाभ कळकळावण लागी। वा रांम री

ठागौ चौड़ै करयां ईं मांनैला । माया विचै ई वत्तौ माया रौ ठागौ कीकर व्हैगौ । उणनैं हरावणी अंगै ई मोटी बात नीं, पण आज तौ आ छोटी वात ई सब सूं लांठी होय थोथौ गुमांन करै । गुमांन रा अै कूड़ा साळीपन्ना उघाड़यां ईं माया नैं थोड़ी-घणी सांयत मिळैला ।

अेक दिन रांम नैं सपना में सवा पुरस लांबौ सोना रौ सांप निगै आयौ । सूरज री किरण ज्यूं पळकतौ । बीजळी ज्यूं सळावा भरतौ । जीभ सूं लपरका करतौ उण वगत आगिया ज्यूं भब भब खिवतौ । छिण छिण सळावा भरतौ सांप चारूं-मेर घरणाटी खावण लागौ । नींद रै मांय सूतौ ई रांम चिम-क्यौ । काळजौ धुक धुक करण लागौ । सांप बोल्यौ — आखी दुनियां तौ म्हारै लारै दौड़ै अर थें डरौ ! हाल म्हारा सूं भेटका ई तौ नीं व्हिया । जित्तै तौ डरौला ई !

आ बात कैय सांप थोड़ौ नैड़ौ आयौ । रांम वत्तौ डरण लागौ । डरतां डरतां पूछ्यौ — पण थूं है कुण ? सावळ पिछांण्यौ कोनीं । दुनियां सांप रै लारै दौड़ै तौ उणनै मारण सारू ई, कोई कोड सूं नीं ।

सांप कह्यौ — वा रे दावळा, म्हनै ई नीं ओळखियौ ! म्हारी पिछांण बिना भगवांन री ई पिछांण नीं व्है सकै ! दुनियां तौ म्हनै जलमियां पैला ई ओळखै । थूं इज अैड़ौ भोळौ निकळियौ जकौ म्हारौ कुरब-कायदौ नीं राख्यौ, म्हारी चावना नीं करी । इणी खातर म्हनै परगट व्हैणौ पड़्यौ ।

आ कैय सांप तौ रांम रै साव नैड़ौ आयग्यौ । रांम रा रूंगता ऊभा व्हैगा । थर थर धूजण लागौ । बरड़ायौ — खावै

रे खावै !

सांप मुळकियो । मुळक अर सोना री पळपळाट सूं खासी भली उजास व्हेगी । पीळी मुळक छितरावतौ सांप कैवण लागौ— म्हारै डस्यां नीं मुड़दौ ई जीवतौ व्है जावै । थां सूं मिळण री उमायौ तौ म्हैं सैंदरूप आयौ अर थूं म्हारा सूं ई चिमकै । म्हारा सूं कांनी लियां नै घणा बरस व्हैगा, अबै क्यूं कोरी रैवै । थोड़ो म्हारो परताप तौ देख !

हाल तक रांम रै अै आड़ियां समझ में नीं आई । डरतै डरतै नीं पूछ्यौ—म्हनै तौ जाच नीं पड़ी के थूं है कुण ?

सांप कह्यौ—पचास बरस म्हारा सूं मूंडौ लुकावतौ फिरयौ, अरे अबै ई पूछै के म्हैं कुण हूं । फगत थारा सूं मिळण वास्तै म्हैं अै फोगट भुगतिया । म्हैं धन अर माया री रूप हूं । आखी दुनियां म्हारै वास्तै अस्टपौर कळाप करै, कूड़-साच करै, थुड़ै, आफळै, मरै, खपै । थूं पचास बरसां तांई म्हारा सूं लुकतौ रह्यौ, पण अबै नीं लुक सकै । म्हनै वापरनै तूमार तौ देख । पछै भगवांन री सपना में ई हर करलै तौ म्हारा नांव माथै जूती । बिना भोग्यां थूं म्हारा सूं घिन करी, मूंडौ लुकायौ । अेकर म्हनै बरत तौ खरी । वापड़ा भगवांन री कांई जिनात के म्हारी होड कर सकै । पचास बरस जिणनै पावण री तपस्या करी, माळा फेरी, धूंई तापी, अलख जगायौ, नीं नीं व्है जैड़ा दुख उठाया, तौ ई फुनरका जित्ती गरज सरी नीं । म्रग-तिसणा रै लारै भटकियौ, पण पांणी री छांट ई हाथै लागी नीं । अेकर म्हनै अंगेज तौ खरी । पछै म्हारै अर भगवांन रै भेद री पिछांण व्हैला । थारी तौ कां नीं, पण म्हारी कुरब घटै । इण वास्तै

थूं म्हारा सूं लुकतौ रह्यौ तौ ई म्हनै आवणौ पड़्यौ । नींद रौ ओळावौ मत ले, जाग, जाग अर म्हनै अंगेज ! म्हैं धन अर माया रौ रूप हूं, म्हारा सूं कांनौ लेय, इत्ता बरस अैळा गमाया। मूढ़, निरमति !

रांम री रगां रै मठोठी लागी । झिझकनै बैठौ व्हियौ। सोना रै सांप री मुळक हाल उणरी आंख्यां सूं मिटी नीं ही। जाग्यौ जित्तै कळपतौ रह्यौ । सूयां वळै वौ ई सपनौ । वौ ई सोनौ, वा ई पळपळाट अर वा ई सीख। सूवणौ हरांम व्हैगौ ! सपना री याद में जागणौ हरांम व्हैगौ। इत्ता बरस जिण भगवांन नै पावण री साधना करी, कस्ट भोग्या, भगवांन रा अेक अदीठ सुख री खातर दुनियां रा सै दीखता सुख छोड्या। अेक टंक खावणौ अर वौ ई कंद-मूळ। नांव रै सिवाय किणी दूजी बात रौ ध्यांन नीं राख्यौ । इण तपस्या माथै पांणी फिरयां तौ जीवण-मरण दोनूं अक्यारथ व्है जावैला । सोना री सांप तौ भूंडी पजाई । म्हैं कांनौ लेय लुकूं तौ कांई व्है, वौ तौ खेरौ ई नीं छोडै । बीती पण बीती । नांव री माळा फेरै पण ध्यांन लागै ई नीं ।

घणा ई आसण बदळ्या पण सपनौ आपरौ रूप नीं बदळ्यौ । काठौ आंती आयग्यौ । सेवट सोचतां सोचतां रांम अेक जुगत विचारी । इण राज में तौ उणनै जणौ जणौ ओळखै । राजाजी धुराधुर कायदौ राखै । कैड़ौ ई जुलम करयां डंड नीं मिळैला। नवा राज में कुण ओळखै । जैड़ौ जुलम करैला वैड़ौ डंड भुगतणौ पड़ैला । जेळ में औ ई दुख अर औ ई कस्ट । जे जेळ सूं बारै रैग्यौ तौ भगती अर तपस्या रा दूध में काळस

अर काचरा रा बीज पड़ जावैला ।

आ वात सोचतां ई वो तो हाथ में कमंडळ लेय उरवांणै पगां ई न्हाटो । न्हाटतो ई गियो । रमतो जोगी हो । पाखती रै रजवाड़ां री सींवां जांणतो । नवो राज नीं आयो जित्तै वो तो ढब्यो ई नीं ।

सोना रो सांप उणनै दौड़तां दौड़तां ई घड़ी घड़ी देठाळो दियो । घड़ी घड़ी अेक वात ई खरावतो — म्हारा सूं न्हाटनै कठै जावैला ! मौत रै सिवाय दुनियां में कोई अैड़ो जीव कोनीं के जको म्हारी गिनरत नीं करै । जठै जावैला उठै ई म्हारी हाजरी साजणी पड़ैला । न्हाट मत, न्हाट मत ।

त्यूं त्यूं रांम सवाये वेग न्हाटतो । मन में पक्को निस्चै कर लियो के मिनख मारण रो पाप नीं, पण माया अर धन री छींयां तो नीं भेंटणी । माखण में कादो कीकर मिळावणो आवै ! नवा राज में वड़तां ई माया सूं लुकण वास्तै मिनख री हित्या रो पाप ई राजी-राजी ओढ़ैला, पण माया सारू विटळैला तो भवै नीं ।

सोना रो सांप उणनै घड़ी घड़ी सीख देवतो — कालाई मत कर, नीं सरै । म्हैं सरव व्यापी हूं ! पछै ठाया री ठोड़ क्यूं छोडै अर क्यूं कठैई जावै ? जठै जावैला, म्हैं थकै लावूंला । म्हनै अेकर वरतनै छोड । जलम री आंधो पूनम री चांदणी सूं घिन करै तो उणरी मूढ़ता है !

रमतो जोगी दौड़तो जावतो अर वड़वड़ाटा करतो जावतो : थनै हाथ जोड़ूं, म्हारो खेरो मत कर ! मौत सूं नीं डरै, पण माया सूं जोगियां नै ई डरणो पड़ै । पच्चास वरसां री

भगती री पोखाळौ व्है, म्हारौ लारौ छोड । इत्ता बरसां री तावणौ ठाडौ पड़ जावैला ।

सोना रौ सांप उण रमता जोगी री बातां माथै मुळकतौ गियौ अर वौ धकै दौड़तौ गियौ । सेवट दौड़तां दौड़तां नवा राज री सींव रै सलबै आयग्यौ । रात दो अेक घड़ी नीठ बाकी ही । गुळी-वरणौ आभौ । चारूं कूंट अंधारौ । उण अथाह अंधारा में अलेखूं तारा खिवता हा । सांप वळै कह्यौ: अै भब भब खिवता तारा नीं किणी रै हाथै आया अर नीं कदै ई आवैला; पछै हाथ-बसू माया रै उजास सूं आंख्यां मूंद आं तारां री बिरथा चावना मत कर ।

तौ ई वौ रमतौ जोगी रांम सांप रै कह्या री कीं गिनरत करी नीं । उणरी रग रग में काळ उफणण लागौ, आंख्यां में रगत उतरग्यौ । वौ अवस किणी मिनख री हित्या करैला । इण सिवाय कीं दूजौ चारौ नीं । कमंडळ सूं माथा री किरची किरची बिखेर देवैला । पछै खुदोखुद राजाजी रै सांम्ही हाजर होय हित्या री बात कबूल करैला । साचा साधू रै वास्तै तौ आखी दुनियां ई जेळ सस्तै जेळ है ।

समाजोग री बात के नवा नगर रै मांय वड़तां ई दसेक आदमियां री निजर रांम माथै पड़ी अर रांम री निजर वां माथै पड़ी । अेक दूजा रै सांम्ही देख्यौ के भिड़तां ई अेक जणां नै तौ ढाय लूंला । पाखती आतां ई वौ कमंडळ नै ऊंचौ तांण कनपट्टी माथै वार करण रौ मतौ करयौ ई हौ के उणनै लारला लपौलप बाथां में पकड़ लियौ । रांम घणा ई तनपट करया, पण हाजरिया उणनै नीं छोड्यौ । कमंडळ खोस लियौ । पछै

राजाजी कनै माडांणी लेयग्या । रांम सोच्यौ के आ वात ई जवरी भरै पड़ी । राजाजी सांम्ही मन री वात कबूल करयां ई खासौ-भलौ डंड मिळ जावैला । अेकर जेळ व्हियां कीं न कीं कुळाप़ात करयां, राजाजी नै अैजां-वेजां बोल्यां मतै ई सजा वधती जावैला ! रांम रै उनमांन पूग्योड़ा रमता जोगी सारू कांई तौ जेळ अर कांई संसार ।

राजाजी सिंघासण माथै विराज्या हा । हाजरियां रै झाल्योड़ो जोगी देख्यौ तौ वै सिंघासण छोडनै न्हाटा । जोगी रै पगां में माथौ निंवायौ । आव-आदर सूं पाखती जोड़ै विठायौ ।

रमतौ जोगी हित्या करण री वात परगट करी तौ राजाजी अणूंता राजी व्हिया । रमतौ जोगी पछै राजाजी नै गाळयां काढ़ी तौ वै वळै राजी व्हिया । पगां रै हाथ लगाय, धोक दी। राजा रा ई भाग व्है जणा अैड़ा राजगरू मिळै ।

तठा उपरांत दीवांणजी हाथ जोड़ निरांत सूं सगळी वात वताई कै पैलका राजगरू रौ आज वारवौ दिन है । उण राज री धारी के परकोटा रै मांय घड़ी रात थकां जकौ ई मिनख अणचींत्यौ वड़ै उणनै राजगरू वणाय देणौ । अैड़ा खरा अर साच वोलणिया मिनख सूरज हेरै तौ ई नीं लाधै । वात सुणतां ई रमता जोगी री सगळी खीझ वुझगी । वौ ठळाक ठळाक रोवण लागौ । राजाजी रा पग झाल गळगळा कंठ सूं कैवण लागौ—म्हनै राजगरू रा इण पद सूं वगसौ । म्हैं कांई सोचनै अठै आयौ अर म्हामें कांई वीती । सूळी चाढ़ौ तौ आपरौ मरयां पछै ई गुण मांनूंला, पण म्हारी पचास वरसां री तपस्या नै काळस में मत रगदोळौ । थांनै हाथ जोड़ूं, थांरा

पग झालूं ।

रमतौ जोगी ज्यूं रोयौ, कळपियौ त्यूं राजाजी रै हरख अर मोद रौ पार नीं रह्यौ । पीढ़्यां सूं अैड़ा राजगरू रौ संजोग सज्यौ । राज छोडण नै त्यार पण औ राजगरू नीं छोडूं ।

रमतौ जोगी रोवतौ गियौ अर मन माडांणी उणरौ राज-गरू सारू तिलक व्हैगौ । खुदौखुद राजाजी तिलक कर्‌यौ । सात तोपां दागी । निसांण-नगारा घुरया । निछरावळां व्ही । आखा दरबार में उच्छव ई उच्छव ।

रमतौ जोगी चितबंगियौ व्है ज्यूं इचरज भरी मीट गडाय चारूं कांनीं भाळतौ रह्यौ । मतै ई उणरा आंसू थमग्या । मिनखां रौ अैड़ौ मेळौ तौ वौ सपना में ई नीं देख्यौ हौ । पछै मेळा रै सागै दूजा तापड़धिन्न ! उणरी तौ अकल ई कह्यौ नीं कर्‌यौ । इंदरापुरी बाजै जकौ आ इज तौ नीं है ।

जद अेक अेक सूं इदक रूपाळी डावड़ियां रौ झूलरौ रमता जोगी री आरती उतारण लागी तौ वांरी बच्योड़ी अकल ई साव पींदै बैठगी । इणरौ मूंडौ जोयनै उणरौ मूंडौ जोवै, उणरौ मूंडौ जोयनै इणरौ मूंडौ जोवै । इत्ता बरस फगत लुगायां रौ नांव ई नांव सुण्यौ । वै अैड़ी व्हिया करै कांई ! इत्ता पाखती सूं देखण रौ कांम ई कद पड़्यौ ! कैड़ी रूपाळी आंख्यां, कैड़ा फूठरा होठ अर कैड़ी सुघड़ बत्तीसी ! कैड़ौ गुलाबी रंग अर कैड़ा सुहाणा उणियारा । रमता जोगी रै रूं रूं में जांणै कांमण घुळग्यौ । रगत री ठौड़ रगां में जांणै दारू बहण लागौ । नीं तौ लुगायां रौ रूप आंख्यां में समायौ अर नीं वांरौ रंग । कैड़ा सुरंगा वेस अर कैड़ौ मतवाळौ सिणगार !

थोड़ी ताळ में ई इण भांत री नसौ उफणियौ के रमती जोगी तड़ात्र करती री वेचेतै होयनै गुड़ग्यौ । डावड़ियां बिना कह्यां ई मतै ई वांरी भगती री मरम समझगी । आरती रा थाळ अळगा धरनै वांरा पग चांपण लागी । कोई माथौ दबा-वण लागी । कोई बाव ढोळण लागी । वेचेतै व्हैतां थकां ई वांरै परस री आणंद रमता जोगी सूं अछांनौ नीं रह्यौ । नवौ अनुभव व्हैतां थकां ई जांणै वौ जुगां सूं इणरा साव नै ओळखै। मीट रा नसा में परस री नसौ घुळतां ई मस्ती री रूप बद-ळग्यौ । दुनियां में आपरी जात री औ अेक ई अैड़ौ आणंद के वेचेतै व्हियां ई इणरा अनुभव में किणी भांत री खांमी नीं रैवै ।

राजाजी रै आदेस सूं डावड़ियां ई राजगरू नै उंचाय मैलां में लेगी । केसर, केवड़ाजळ सूं संपाड़ौ करायौ । अंतर-फुलेल री सौरम सूं राजगरू होस में आया । पलकां उघाड़ी तौ सांम्ही वां उणियारां रा झांवळा दीखण लागा । कैड़ा सुहांणा अर कैड़ा मतवाळा ।

चेतौ वावड़तां ई सगळी डावड़ियां आप आपरी मुळक नै दबावती उठा सूं वहीर व्हैगी । अदीठ व्हियां ई राजगरू री आंख्यां सांम्ही वै ई उणियारा भंवण लागा । भगवांन है तौ खरी । बरसां रै तप री हाथौहाथ फळ सूंप्यौ ! अैड़ी तपस्या री अैड़ौ फळ तौ आज पैली किणी रिसी-मुनि नै ई नीं मिळचौ व्हैला ! अर अैड़ा फळ सारू अैड़ी तापणौ ई जरूरी हौ ।

थोड़ी ताळ में हाजरिया खीनखाव अर रेसम रा वेस लेयनै आया । राजगरू तौ पैरतां ई जांणै फूल रै उनमांन हळका

व्हैगा । मन रै मांय हरख री फूंदियां नाचण लागी । वेस रौ कांम संपूरण व्हैतां ई अजल-मजल करती चार डावड़ियां आवती दीसी । अेक रा हाथ में सोना रौ थाळ । अेक रा हाथ में सोना री झारी अर गिलास । अेक रा हाथ में रूपा रौ बाजोट । अेक रा हाथ में सुरंगौ बीजणौ । राजगरू तौ बोलै नीं कोई चालै, फगत टुग-टुग जोवै ई जोवै । डावड़ियां जीमण सारू अरज करी तौ बोला बोला जीमण बैठग्या । चारूं डावड़ियां मीट रै मारग वांरा हिवड़ा में पैसगी ।

लाज रौ दिखावौ करती डावड़ियां नीची धूण करयां उठै ई बैठी री । राजाजी अर राजगरू तौ अैड़ा ई व्हिया करै ? डावड़ियां ई वांरा साचैला रूप नै पिछांणै । मोटा मिनखां री सगळी हाजरियां साजण सारू वांरौ जलम व्हियौ जकौ नटण रौ कोई मारग ई नीं । मोटा मिनखां री मंसा परवांण चालणौ छोटां रौ फरज ! इणी बात में दोनां रौ जमारौ सुफळ व्है ।

राजगरू नै राजी राखणौ दीवांण रौ फरज । सौ दीवांण आपरौ फरज निभावण सारू नीं तौ कीं खांमी राखी अर नीं किणी भांत री कोताई बरती । अर उठी राजगरू ई नीं किणी भांत रौ संकौ राख्यौ अर नीं किणी भांत रौ आंकस मांन्यौ !

अबै जावतां राजगरू नै आपरी खरी अर विकट तपस्या रौ पतियारौ व्हियौ । जे अैड़ी तपस्या नीं करतौ तौ अै फळ कद हाथ लागता ।

आणंद रै वां अलेखूं फूलां रै बिचाळै दुख रौ कांटौ फगत अेक इज हौ । उण राज रौ अेक धारौ वळै हौ के अमावस री रात सवा मण गावौ घी होम नै राजगरू राजाजी रै रंग मैल

पधारता । राजाजी आखौ दिन लुगायां रौ मूंडौ नीं देखता । राजगरू सीख अर नीति री वातां वताय उठै ई सूय जाता । तड़कै राजाजी राजगरू रौ मूंडौ देखता अर तठा उपरांत नित-नेम सूं निव्रत होय राज-दरवार में पधारता । राज थपियां पछै औ इज धारौ ही । राजगरुवां रै जीवतां थकां कदै ई इण नेम में नागा नीं व्ही । अै नवा राजगरू घणी ई अटकळां विचारी पण पार नीं पड़ी । राजाजी नै तौ नींद आय जाती, पण राजगरू री नींद तारां रै विचाळै चापळ जाती जकौ हेटै उतरती ई नीं । राजगरू री आंख्यां तारा ई दीखणा वन्द व्है जाता । अैड़ौ लखावतौ के जांणै वै अेकला हाथां धकाय धकाय उण अथाह अंधारा नै सिरकावै ।

आं नवा राजगरू रा कीं खास नेम वळै हा । अेकर जीम्योड़ौ भोजन पाछौ नीं जीमता, अेकर पैरयोड़ा गाभा पाछा नीं पैरता अर अेकर सेजां चढ़योड़ी डावड़ी दूजी वळा वांरी सेज नीं चढ़ती । भगवांन री विसेस मया के छ महीनां तांई भगत री नेम नीं तूटी । आखौ परघै नवा राजगरू सूं काठी आंती आयगी ही । पण इण निजोरी वात माथै किणी रौ ई कीं जोर नीं चाल्यौ ।

राजगरू रा अनोखा थाट देख देखनै सोना रौ वौ मायावी सांप अदीठ में नित मुळकतौ । पण छ महीनां में अेकर ई सपना रै मिस परगट नीं व्हियौ ।

छठौ महीनौ संपूरण व्हेतां ई अमावस री रात वौ ई सोना रौ पीळौ सांप अणचक राजगरू री जागती आंख्यां परगट व्हियौ । सूरज री किरण ज्यूं पळकतौ । वीजळी ज्यूं सळावा भरती ।

जीभ सूं लपरका करतौ उण वेळा आगिया ज्यूं झबाझब खिवता । सोना रा पिलग माथै राजाजी सूता घोर खांचता हा । अर राजगरू री आंख्यां सांम्ही अेक अेक तारौ अंधारा में लोप व्हैगौ हौ । कठै ई किणी भांत रौ उजास नीं हौ । राजगरू कालै रात वाळी अबोट डावड़ी री रळी रै आणंद में गोता खावता हा के वांनै अणछक उजास री अेक तीखी लींगटी निगै आई । औ कांई तोतक ! विना बादळां रै आ वीजळी कीकर सळावा भरै ! अळगा सूं सुभट ओळख नीं व्ही तौ सळावा भरती बीजळी तर तर नैड़ी आई । जीभ रा लपरका देखतां ई राजगरू नै अजेज उण पीळा सांप री पिछांण व्हैगी । राजगरू अमोलक हंसी रै मिस मुळकियौ । बोल्यौ—म्हारी जमारौ सुधार इत्ता दिनां रै उपरांत दरसण दिया, पछै गुण मांनूं तौ ई किण आगै ? म्हैं कित्तौ बावळौ हौ जकौ थांरी सीख सारू ओड़ौ दियौ । आज म्हारी उण नासमझी माथै पिछतावौ ई करूं तौ कांई सांधौ लागै ! खुणियां सूधा हाथ जोड़ माफी चावूं । चांद री किरणां रै पालणै झूलणियौ, थांरै थाट री होड़ नीं कर सकै ।

राजगरू साचांणी खुणिया-सूधा हाथ जोड़नै माफी मांगती हौ के सोना रौ वौ सांप मूंडौ उतारनै कैवण लागौ — आज म्हैं ई उण दिन री सीख सारू माफी मांगणनै आयौ हूं । सात जलमां तांई उण वास्तै पिछतावौ करूं तौ कीं गरज सरै नीं । थांरा तप नै विटळाय म्हैं कैड़ौ ऊंधौ कांम करयौ ! थें मोटा तपसी हौ, माफी बगसावौ ! थांरी भगती रा माखण नै म्हैं हकनाक कादा में रगदोळियौ । थें जांणजौ के बिचाळै औ आळ-

जंजाळ ई आयौ। आपनै तप अर भगती रै उण आसण विठायां विना अवै म्हनै अेक छिण वास्तै ई चैन नीं पड़ै। अवै थें जांणौ अर थांरौ भगवांन जांणै।

वात सुणतां ई राजगरू तौ परसेवा में तरवम व्हैगौ। रूं रूं हेटै जांणै खीरा दाभ्रण लागा। नींद में ई गरळायौ— अवै इण भगवांन सूं म्हनै कीं तल्लौ-मल्लौ नीं, सात घोवा धूड़ उण लारै। म्हैं तौ इण वात रौ पिछतावौ करूं के वै पचास वरस अैळा क्यूं गमाया? नीठ औ फळ हाथै लागौ। म्हैं तौ इण हाल में घणौ मस्त!

सांप मुळकनै वोल्यौ—पण म्हैं मस्त कोनीं। म्हनै तौ म्हारै अकरम रौ पिरास्चित करणौ पड़ैला। तड़कै ई थांनै राजगरू री पदवी छोडणी पड़ैला......

राजगरू भिभकनै वैठौ व्हियौ। रोवता सुर में वोल्यौ— नीं, नीं इण विचै तौ मरणौ आछौ।

सांप हंसनै जवाव दियौ—मौत आयां पैली कुण ई नीं मर सकै।

आ वात कैय सोना रौ वौ सांप तौ अलोप व्हैगौ।

राजगरू जळजळी आंख्यां ऊंचौ भाळयौ—तारा तारा में लाय लाग्योड़ी ही। ऊभौ होय अठी-उठी चकारा देवण लागौ। अैड़ौ लखायौ के जांणै माथा रौ अेकठ ठायौ छोडनै अकल उणरा रूं रूं में विखरगी। रूं रूं माथौ वणनै सोचण लागौ तौ ई कीं जुगत वणी नीं! सांप रा वचन तौ साचा उतरैला ई! पण विना कसूर राजाजी कीकर आ पदवी खोसैला। अर पदवी नीं खोसै जित्तै तौ थै ई थाट घुरैला।

राजगरू री आंख्यां सांम्ही सोना रा अणगिण थाळ तिरण लागा । मांय किणी रतन-कचोळा में रूपाळी लुगायां रा होठ परूस्योड़ा, किणी में गुलाबी होठ, किणी में रंग, किणी में रूप तौ किणी में......

राजगरू री गत बिगड़ी पण बिगड़ी ! हे भगवांन, पचास बरसां तांई म्हैं थारै नांव रौ अलख जगायौ, म्हारी लाज अबै थारै हाथै है !

अर घट घट री वासी भगवांन अजेज आपरा दुखी भगत री वांणी सुणी । राजगरू घोर खांचता राजाजी रै सांम्ही देख्यौ तौ उणनै वांरै मूंडा सूं सांप निकळतौ निगै आयौ ! मोटा मिनखां री अकल दुख में अंगै ई चळ-विचळ नीं व्है, वत्तौ कांम सारै ! राजगरू तुरत अटकळ विचारली । कड़ियां वंध्योड़ी सोना री म्यांन सूं सप्प करती कटार काढ़ी ! सांप नै मारयां राजाजी कित्ता राजी व्हैला ! आ तौ परतख मौत टाळणी । सुण्यां रांणी रै हरख रौ ई पार नीं रैवैला । राजाजी मरयां ई गुण नीं बिसरैला ? पछै किणरी मजाल के म्हारी आ पदवी खोसै । राजाजी तौ राजी होय आधौ राज वांमैला । भगवांन है तौ खरी !

राजगरू रा मन में हरख रा हजारूं कंवळ खिलग्या । कंवळ कंवळ में रूपाळी डावड़ी री सोनल उणियारौ । राजगरू हाथ में कटार लेय राजाजी रै सिरांतियै तक्योड़ौ ऊभग्यौ । सांप डरनै मांय वड़ग्यौ । कटार नै पूठ लारै लुकाई तौ पाछौ बारै निकळियौ । लीलौ-चम । डस्यां पांणी मांगण री ई वास्तौ कोनीं । थोडी वढ़तां ई आंगणै पड़्यौ लटपट लटपट करैला ।

पण कटार री झबकी पड़तां ई सांप तौ पाछौ मांय वड़ग्यौ। फगत लीली जीभ निगै आवती ! अबै उपाव करै तो कांई करै ! अबकी तौ वारै निकळतां ई दो टूक । राजगरू तौ जांणै अतूठ समाध में डूबग्यौ । अैड़ौ लीन तौ वौ कदै ई भगती में ई नीं व्हियौ ।

पण वौ अचपळौ सांप तौ राजगरू नै कीं वार लेवण दियौ नीं ! अर उठी हाथ में नागी तरवार लियां पौरायती औ रासौ देख्यौ तौ उणरा धै छिलग्या । राजगरू नै आ कांई ऊंधी सूझी । वौ रांणीजी नै जगाय लायौ । रांणीजी खुद आपरी निजरां राजगरू नै नागी कटार लियां सिरांतियै ऊभौ देख्यौ । अबै अेक छिण री जेज करचां ई गजब व्है जावैला । दुस्ट रा अैड़ा लखण तौ नीं जांण्या हा । रांणीजी री सांनी मिळतां ई पौरायती लपकनै राजगरू नै आवेस थड्डौ देय अळगौ पटक दियौ ! छाती माथै पग देय वोल्यौ — ऊठण री हीमत करी तौ माथा रा डोचरा कर न्हाकूंला । लूण हरांमी, धणी साथै घात करतां थनै थोड़ी घणी ई लाज नीं आई ।

रांणीजी रै जंभेड़चां राजाजी हळफळाया होय वैठा व्हिया । रांणीजी तौ पूछचां पैली पैली वात वताय दी । राजगरू पग झाल झाल घणौ ई डाढ़चौ । मूंडा सूं सांप निकळण री वात घड़ी घड़ी वताई, पण इण ओळावा माथै कुण भरोसौ करतौ ! साच री अैड़ौ अभरोसौ तौ कदै ई कुण ई नीं करचौ व्हैला । परघै तौ सगळौ राजगरू माथै खार खायोड़ौ हौ । मतै ई आपरा लखणां सूं वखड़ी में भिळग्यौ तौ कुण छोडै । घणा दिन व्हिया मौज मांणता नै । राजगरू तौ राजाजी सूं ई डंयाळ निकळियौ ।

अबै नित नवी चीजां भोगण रै सुख री सावळ जांच व्हैला।

दीवांण अर रांणी तौ सूळी चाढ़ण रौ वाद कर्यौ, पण राजाजी नीं मांन्या। वै कठण ऊमर-कैद रौ आदेस कर्यौ। टाट रौ वेस, पगां उरबांणै, तावड़ा में कांम करणौ, अेक टंक लूखा अर वासी टुकड़ा अर नित री पांच कांमड़ियां! राजगरू रौ तौ कूक कूक नै साद बैठग्यौ पण कीं सुणवाई नीं व्ही। हथमार तगतगायनै जवा, चींचड़ां री काळकोठड़ी में पटक आडौ जड़ दियौ। पैला पचास बरस तौ आपरी मंसा परवांण तापियौ, पण अबै मन माडै राजाजी रै आदेस सूं नीं नीं व्है जैड़ा दुख भुगतणा पड़ैला। राजगरू रा हाथ में रोवणा रै सिवाय कीं दूजी बात नीं ही, सौ वौ तौ पछै रोवतौ ढब्यौ ई नीं। जीवियौ जित्तै रोयौ तौ ई उणरा आंसू नीं खूट्या।

सीधौ हिसाब

अेक ही करसौ । उणरै गायां री लांठी छांग । टाळकी नसलां री टाळकी गायां । राठी, सांचौरी, धाटी, थारपार कर, रेंडी अर नागौरी । घेछाळां दूध । अपटावू धीणी धापी । ग्वाड़ी आस करनै आयौ जिणनै हाथ सूं ई उत्तर दियौ, मूंडा सूं नीं ।

गायां री गोहर में काळिंदर री बंबी ही । काळिंदर कदै ई किणी जिनावर नै हांण नीं पुगाई । करसा रै हीयै ई दया-माया ही । बम्बी रै पाखती अेक थांमौ धर दियौ । उणमें भागां चढ़्यौ सेड़ावू दूध राळ देतौ । काळिंदर दूध री सौरम मिळतां ई बारै आय जातौ । जीभ रा लपरका भरतौ सरड़ सरड़ दूध चूंप जातौ ।

काळिंदर सूं करसा रौ खासौ-भलौ मेळ व्हैगौ । सूरज रा ऊगण में नागा के अबेळौ व्है तौ करसा रै दूध पावण रा कांम में कदै ई नागा व्है । कदै ई वेळा-कुवेळा नीं व्ही । दोनां रै हेत व्हिया पण व्हिया ।

अेक दिन अैड़ी ई बात पजगी के वौ करसौ बेटी रा सनमन सारू गांवतरै गियौ । मोवी बेटा नै काळिंदर रै दूध री पूरी भुळावण देय वहीर व्हियौ । बाप रै आगै बेटा नै माडै हांमळ तौ भरणी पड़ी, पण बेटा नै बाप री आ अणूंती दया

पैला ई आछी नीं लागती । बाप री भुळावण रौ कुरब राखण सारू वौ दो टंक तौ काळिंदर नै धीजायं पाखती ऊभ दूध पायौ । तीजी वळा पूठ लारै तीखौतच क्वाड़ियौ लुकाय धांमौ गळांठौ भर दियौ । काळिंदर नेगम निसंक हमेसां री गळाई दूध चूंपण लागौ । मोबी बेटौ ताखौ राखनै पाधरी काळिंदर रा फुण माथै जरकाई । काळिंदर रै रोस रौ पार नीं रह्यौ। बंबी रै मांय बड़्यां पैली पैली वौ उणनै डस न्हाकियौ । चोटी में बटोड़ ऊठ्यौ । तड़ाच खायनै हेटै गुड़ग्यौ । मूंडै झाग आयग्या। डोल लीलौचम पड़ग्यौ । मरण वाळा नै मरण री चेतौ ई नीं रह्यौ ।

करसा नै बेटा रै मरणा री दुख तौ व्हियौ जकौ व्हियौ ई, पण उणनै काळिंदर रै विस्वासघात माथै अणूंती रीस आई। घर रा टाबरां नै इण विध दूध नीं पायौ, जकौ इण काळिंदर सागै नेम साज्यौ ! दुस्ट कुटिल रै साथै प्रीत निभावण रा औ इज तौ फळ मिळैला ।

करसौ बंबी रै पाखती ऊभ काळिंदर नै दूध पीवण सारू घणा ई हेला मारया, पण काळिंदर बारै नीं आयौ । घणी मनवारां करी तौ सेवट बम्बी रै सलवै आय बोल्यौ :

मन फाट्यौ दिल ओछट्यां
दूधां लाव न साव;
थारै साल्है मोबी डीकरौ
म्हारै साल्है माथा रौ घाव ।

लिख्या लेख टळै

अेक हो राजा । सिकार रमण रौ अणूंतौ चाव । जीव हित्यावां करचां बिना उणरौ मन राजी ई नीं रैवतौ । सूअर, हिरण, खिरगोस, तीतर, तिलोर, वट्टा, बाटवड़ — आंरी तौ खज ई व्हैती, पण अखज जिनावरां नै मारणा री मोद ई कम नीं ही । सिंघ, चीता, वघेरा, जरख अर स्याळ आंरै वास्तै तौ राजा सांप्रत काळ रौ ई अवतार हो । निजर चढ़ची उणनै तौ मरणौ पड़तौ । जैड़ौ सिकार वैड़ौ ई सराजांम सज जातौ । राजा रौ घणकरौ वगत सिकार रमणा में ई कटतौ । केई वळा रातवासौ ई वारै करणौ पड़तौ ।

अेकर समाजोग री वात अैड़ी वणी के अेक डाढ़ाळौ निजर आयां पछै ई मरचौ कोनीं । सगळा असवार लारै रैगा । पण राजा अेकलौ ई दड़बड़ां दड़बड़ां सूअर रै लारै घोड़ौ दावतौ गियौ । अमावस री काळी-बोळी रात ही । अंधारौ पड़तां ई सूअर अदीठ व्है गौ । उणरा खोज दीखणा अंगै ई वंद व्है गा । लारौ करै तौ ई किणरौ करै ।

ढवण रौ मतौ करतां ई राजा नै अणूंती तिरस लखाई । गळा में सूळां-सी खुवण लागी । कंठ सूखग्यौ । भंवळ आवण लागी । घोड़ा सूं अवै हेटै थरकीज्यौ, अवै हेटै थरकीज्यौ । के

इत्ता में सांम्ही दीवा रौ चांनणौ निगै आयौ। सोना रौ भाखर मिळ्यां इत्तौ हरख नीं व्हैतौ, जकौ मगसौ उजास देखनै व्हियौ।

राजा नीठ उठा तांई मरतौ-जीवतौ पूगौ। झूंपा रै बारणै घोड़ौ हींसियौ तौ घरवाळी बारै आई। पूछ्यौ — कुण व्है ई रे म्हारा वीरा ? कुबेळा क्यूं कांकड़ रा रूंख जगावतौ भंवै !

राजा नीठ गरळावतौ बोल्यौ — इण राज रौ धणी होय पांणी बिना मर जावूंला। वैगौ पांणी पावै जकी बात कर।

वा अेक करसा री ढांणी ही। घरवाळी रै पछै धणी ई बारै आयौ। राजा रै मूंडै आ बात सुणी तौ दोनूं ई हाव-गाब होय न्हाटा। घोड़ा सूं हेटै उतारचौ। उंचाय झूंपा रै मांय लाया। घूंट घूंट ठाडौ पांणी पायौ। राजा डकळ डकळ पीवण सारू घणौ ई खपियौ, पण पावण वाळा राजी नीं व्हिया। थोड़ी ताळ पछै पूरी तिरस बुझ्यां राजा दुख अर हरख रै भेळ रौ अेक ऊंडौ निसांस न्हाकतौ बोल्यौ — पांणी पीयां पैली तौ अैड़ौ लखावतौ जांणै आखौ रौ आखौ सरवर गिट जावूंला। राजा बण्यां पछै ई जीवण रौ अैड़ौ आणंद नीं आयौ। लागै के बरसां पछै आज साचैला प्रांण मिळ्या। थांरौ औसांण कद उतारूंला।

पछै घर री धिणियांणी रै सांम्ही देख कैवण लागौ — थूं म्हनै वीरा रा नांव सूं बतळायौ। म्हारै कोई आगी-नैड़ी बैन कोनीं। आज सूं ई थूं म्हारी बाई अर म्हैं थारौ भाई।

खाटी घाट दूध रौ करवौ, राजा बाटकौ भरनै पीयौ। चटणी सूं चोथाड़ौ सोगरौ खायौ। भूख मीठी अर स्वादिस्ट

व्है । राजा ऊमर में ई अैड़ी नीं रंजियौ । ब्यालू करयां रै उपरांत राजा चळू करयौ अर भांणी नै गळा रौ नवलखौ हार खोलनै दे दियौ ।

ड़ेंचा माथै सूवतां ई नींद आयगी । आधो ढळियां झूंपा रै कूंटौ खड़खड़ीज्यौ । राजा री आंख खुलगी । कोई चोर उकरास सोधै दीसै । तरवार री मूठ झाल राजा भचकै ऊभौ व्हियौ । वोल्यौ—कुण व्है ई ? मांय वड़ण री हीमत करी तौ माथौ वाढ़ न्हाकूंला । म्हारा राज में अर म्हारै थकां ई चोरी !

राजा नै लुगाई री हंसी सुणीजी । पछै हंसी रै सागै वोली सुणीजी—म्हारै सांम्ही अैड़ौ वड़-वोलणियौ थूं कुण रे वीरा ?

'म्हैं राजा हूं, इण देस रौ धणी, वोली सुण्यां थनै जाच नीं पड़ी ।'

लुगाई हंसती हंसती ई जवाव दियौ—पण म्हैं थारी रया कोनीं । । म्हारै माथै ठौर मत जता । थूं राजा है तौ म्हैं वेमाता हूं । म्हैं लेख लिख्या जद ई थूं राजा वण्यौ । आडौ खोल, म्हारै अवेळौ व्है । छठी री रात म्हैं छोरा रा लेख लिखण नै आई ।

राजा हठ झेल्यौ के लेख वतावै तौ आडौ खोलै । सेवट वेमाता कौल करयौ तद वो आडौ खोल्यौ । खंखर डोकरी । धवळ केस । वोखौ मूंडौ । सळां री झीणी जाळी तण्यौ उणि-यारौ । हाथां में हाथीदांत रा चार चार चिलिया । डोकरी खंखरपणा में ई अेक आव ही ।

कौंल परवांण वेमाता हंसती हंसती राजा नै लेख बतावण लागी के छोरौ परणीजनै गांव रै गोरवै पाछौ आवैला जद इणनै पवन लागैला । अर उणी ठौड़ मर जावैला ।

वा धकै ई कीं कैवती ही, पण राजा नै भळकी आयगी । रोस में बोल्यौ—वेमाता व्ही तौ कांई, मरणा री बात कैवतां हंसणौ फबै कोनीं ।

वेमाता हंसती हंसती ई बोली—म्हारै वास्तै जलम-मरण सै अेक सरीसा व्है । म्हैं तौ हंसती हंसती ई सगळा लेख लिखूं अर हंसती हंसती ई बोलूं ।

अर आ बात कैय वेमाता तौ हंसती हंसती ई उठा सूं वहीर व्हैगी । राजा आळोच में पड़ग्यौ । लेख नीं पूछतौ तौ सावळ हौ ! धरम-बैन सूं चोज राखै तौ वेजा वात अर बतावै तौ बेजा बात । अबै कांई करै ! सोचतां सोचतां सेवट राजा रै हीयै आ बात ढूकी के नीं वतावणौ ई सावळ है । भांण्या रा ब्याव रैं टांणै वौ अवस आवैला अर पूरौ जाव्तौ करैला ।

वौ बैन नै खराय खराय ब्याव रौ समचौ देवण री भुळावण दी ! उण दिन पछै केई वळा राजा सिकार चढ़ चौ । बैन री ढांणी आयौ । केई वळा रातवासौ लियौ । भांणजा नै रमावतौ अर जावती वेळा हाथ में मोहर दिगां विना नीं मांनतौ । भांणजा रौ मूंडौ देखतौ अर उणनै वेमाता वाळी बात याद आवती ।

देखतां देखतां छोरौ मोटौ व्हैगौ । हड़ोव अर रूपाळौ । अेक दिन अणछक राजदरबार में बैन री बत्तीसी आई । ऊपरला मन सूं मोहरां री निछरावळ करी, पण उणरौ जीव तौ जागतौ

हो । परणीजतां ई बेटा रो सुणावणो आवैला तद बैन रै दुख रौ कांई पार व्हैला !

तौ ई राजा गाजां-वाजां अर अणूंतै कोड सूं हाथियां रै हौदै मायेरौ लेग्यौ । आखी जांन हाथियां माथै ई गी अर हाथियां माथै ई पाछी वळी । राजा छिण छिण भांणजा री ध्यांन राखतौ । हाथ में नागी तरवार लियां छीयां री गळाई भांणजा रै साथै रैवतौ । पण वेमाता रा लेख यूं टळता व्है तौ मां आपरा बेटा नै अर लुगाई आपरा धणी नै कद मरण दै । पछै औ राजा तौ हजार वरसां तांई मरण री नांव नीं लै । पण लाख जतन कर्‌यां वेमाता रा लिख्या लेख नीं टळै । राजा घणौ ई भांणजा नै अस्टपौर हाथियां रै हौदै राख्यौ । धरती माथै पग ई नीं धरण दियौ, पण काळ सूं पैला तौ उणनै मौत ई कद मारती !

गांव रै गोरवै आवतां ई भांणजा रौ पेट दूखण मंडियौ सौ वौ मंडियौ । कवूड़ी लुटै ज्यूं लुटण लागौ । सगळी जान में हाय-त्राय मचगी । आफरौ चढ़ग्यौ । हाजत व्हियां कांकड़ में जावणौ पड़्यौ । तौ ई राजा पूरी सावचेती बरती । घासिया सूं घासियौ जोड़ दियौ । अर खुद भांणजा रै साथै नागी तरवार लियां वहीर व्हियौ । पण राजा रै सिंघासण सूं ई जिणरौ ऊंचौ आसण वौ कद किणरी परवा करै ! वगत माथै तेवड़ियोड़ी रांमत तौ पूरण व्है इज । लिख्योड़ौ छिण आवतां ई धरती धूजी । भांणजौ हेटै गुड़ग्यौ । अर गुड़तां ई कूंडळी मार्‌यां वैठौ सरप उणनै डस न्हाकियौ । राजा रौ कीं वार लागौ नीं । खुद रा गाभा झाटक लप भांणजा रै पाखती

पूगौ तौ वौ मरचोड़ौ सूतौ । घणौ ई जंझेड़ियौ पण कीं सांधौ लागौ नीं । तरवार लेय ताचकियौ जित्तै जित्तै सांप वंबी रै मांय बड़ग्यौ ।

जांन में मार कूकारोळौ मचग्यौ । बाप तौ धै धै छाती-माथा कूटण लागौ । पण रोयां मौत अर भाटौ कद पसीजै । तौ ई राजा रै हीयै वेमाता री क्रूरता भरी कोनीं । अनै भेटका व्है जावै तौ बोटी बोटी छूंन न्हाकै । वौ वींद रा बाप नै समझावतां कह्यौ — रोयां पाछौ आवतौ व्है तौ म्हैं ई पाछ नीं राखूं ! आखी ऊमर नीं ढबूं ।

जांनिया रथी सिळगावण सारू त्यार व्हिया जद राजा कह्यौ के वौ भांणजा नै दाग नीं देवण दे । छ महीनां तांई खेजड़ी रै डाळै छींका में टेरचोड़ौ राखै । नित संपाड़ौ करावै । डील लीलौ नीं पड़ण दै । जीवता सूं वत्तौ इणरौ जाब्तौ करणौ । छ महीना संपूरण व्हैतां ई इणी ठौड़ पाछौ आवैला ।

जांन रोवती रोवती गांव गी । वाप उठै ई ठमग्यौ । अर राजा हाथ में तरवार लेय है ज्यूं रौ ज्यूं पाछौ वळग्यौ । छ महीना पछै ई आपरै राज सांम्ही मूंडौ करैला ।

धकलै गांव पूगौ तौ आखौ गांव लाय रै पाटै उतरचोड़ौ । बाड़ां, डूंगरियां, करायां अर पचावा वादीवाद सिळगता हा ! धूधूकार मचग्यौ । अगन देवता लाय रा वतूळिया रै मिस जांणै नाचण मांडियौ ।

राजा चकन-बकन होय लाय री आ रांमत देखतौ हौ के अेक सांप तीर रै वेग दौड़तौ उणरै पाखती आयौ । रोवतौ ई बोल्यौ — आ लाय म्हनै भसम कर देवैला । म्हैं मरण

रा डर नूं घैलिजग्यौ । थारै सरणै आयौ । म्हारी रिछ्या कर । थारी जोवूंला जित्तै गुण मांनूंला ।

राजा कह्यौ — पण थूं तौ खुद मौत रौ ई रूप है । आखी दुनियां देख्यां डरै अर खाधां मरै । तद थारी पति-यारी कुण करै ।

हाव-गाव व्हियोड़ौ सांप बोल्यौ — दूजा ओळावा मत ले । म्हनै बचावै जकी बात कर । आ लाय तौ म्हारी खेरी इज कर लियौ । थूं मूंडौ फाड़ म्हैं मांय वड़ जावूं । थनै किणी भांत री हांण नीं पुगावूंला । जे अबै ई नीं मांन्यौ तौ थनै तौ डसनै ई मरूंला ।

राजा डरग्यौ । सांप कह्यौ ज्यूं ई करचौ । सांप पेट में वड़तां ई राजी व्हियौ । औ तौ बंत्री सूं ई नांमी ठायौ । बोल्यौ — दूध में कड़कड़ खांड रळाय पीजै नींतर आंतरड़ा वाढ़ न्हाकूंला ।

राजा सूतौ-बैठौ सांप री बखड़ी में कावळ पज्यौ । सांप तौ आपरा लखणां मुजब ई करी । राजा घणी ई हाथा-जोड़ी करी पण वौ बारै नीं निकळचौ । दूध-खांड रौ अैड़ौ साव बंत्री में थोड़ौ ई हौ । मीठौ दूध चूंप चूंप वौ तौ नित वधण लागौ । वधतां वधतां वौ तौ अजगर ज्यूं माचग्यौ पण राजा रौ डील ढोळै बैठग्यौ । हाथ-पग तकतूळियां ज्यूं व्हैगा । अर पेट कोठी ज्यूं वधग्यौ । हालणौ दूभर व्हैगौ । हांफणो चढ़गी । खायौ-पीयौ अंग लागै नीं । अस्टपौर जी मितळावतौ । नींद में गैळीज्योड़ौ व्है ज्यूं रैंवतौ । ऊंघ ई ऊंघ !

आपरा राज मे गियौ तौ बेटा दुरकार दियौ। थड्डा दिराय राज री सींव सूं बारै तगड़ दियौ। उण माथै कोई दया नीं विचारी। चांमड़ी खोळी पड़नै टिरगी। डोळा ऊंडा बैठग्या। गाल धंसग्या। रंग सांवळौ पड़ग्यौ। देखतां देखतां कीकर राजा सूं रंक बणग्यौ, कीं जांच पड़ी नीं। भीख मांगतौ अर बेळियौ भरतौ। अजगर दस मिनखां जित्तौ वाखर खावतौ। भूखौ रह्यां आंतां वाढ़ण री धमकी देतौ।

दूजां राज में भीख मांगतां मांगतां भूलग्यौ के वौ किणी देस रौ राजा हौ। भीख मांगण में अैड़ौ पारंगत व्हियौ जांणै पीढ़ियां सूं औ ई धंधौ करै।

होणी री रांमत रा तौ खटका ई न्यारा। उण देस रा राजा रै दो राजकंवरियां हीं। अेक दिन राजा रै कांई धत भिली के वौ राणी रै सांम्ही दोनां नै पूछ्यौ के वै आप करमो के बाप करमी।

मोटोड़ी कह्यौ के वा तौ बाप करमी, पण छोटोड़ी वद वदन कह्यौ के वा आप करमी। औ पड़ूत्तर सुण्यां राजा नै बेटी माथै ई रीस आई। खराय खराय पांच-सात वळा पूछ्यौ तौ ई वा उणी बात माथै ढिड़ री के वा आप करमी। खुद रै करमां रा जोर सूं ई बेटी नै बाप रौ घर हाथै लागै।

राजा नै अणूंती रीस आई। आप करमी रै करमां रौ पतियारौ लेयनै ई रैवैला। तुरत दीवाण नै बुलाय आदेस कर्‌यौ के पैदला मगता रै साथै इणरौ व्याव करदौ, तद इण वादीली छोरी री आंख्यां आपरै करमां रौ चांनणौ व्हैला।

छोटकी राजकंवरी कीं हील-हुज्जत नीं करी। पैदला

मंगता रै साथै फेरा खवाड़्या तौ वा तुरत खाय लिया। कीं आंनाकांनी नीं करी। दत्त-दायजा रा नांव माथै कांणी-कौड़ी ई नीं दी, तौ ई वा कीं उजर नीं करयौ।

राजकंवरी किणी वात रौ हठ नीं करयौ तौ राजा री रीस वत्ती कळकळै चढ़गी। रांणी घणा ई कळफळ करया पण राजा साथै संभाळ ई नीं घालण दी। अर उठी पैदलौ मंगतौ ई व्याव नीं करण सारू घणौ ई नटियौ पण राजा नीं मांन्यौ जकौ नीं इज मांन्यौ। मंगतौ कह्यौ के इण बिचै तौ बेटी नै काळा ओढ़ाय नाहर-वघेरां रै भेळी छोडदौ। रंडापौ तौ नीं भुगतणौ पडैला। ऊंनाळा री जांफळी वाजतां ई वौ तौ मर जावैला। पण राजा नै तौ बेटी रै करमां री पिछांण करणी ही। आपरा राज में राख वेटी रौ थोथौ गुमांन भांगणी चावतौ। नगर रै वारै अेक धरमसाळ ही। उठै जंवाई रा डेरा दिराय दिया। आखा राज में डूंडी पिटाय दी के जकौ ई आं दोनां री सहाय करैला उणनै डंड मिळैला। पछै कुण नैड़ौ फरूकतौ! वाप करमी री वात कवूल करतां ई राजा वेटी सारू किणी वात री खांमी नीं रैवण देला, पण जित्तै वा दुख पावै उत्ती ई सखरी वात।

धरमसाळ रै आंगणै ई अेक लांठौ दरड़ौ हौ। उठै ई अेक जंगी कालिंदर रौ वासौ हौ। राजा रा पेट मागला सांप माथै उण कालिंदर नै अणूंती रीस आई। विल में वैठौ ई वोल्यौ—दुस्ट, थूं राजा साथै ई घात करयौ। मूंडा में वाड़ पेट में सरण दी उणरी आ दुरगत करी। थारा सूं तौ वात करण रौ ई पाप लागै।

राजा रै पेट मांयलौ सांप बोल्यौ—तद म्हारा सूं बात करै ई क्यूं, कुण थनै पीळा चावळ दिया । पण दूजां नै भांड्यां पैली खुद रा लखण तौ देख । फूंक मार मार सात मिनखां नै मार न्हाकिया । थारा डर सूं तौ बटाऊ धरमसाळ में ई आवणौ छोड दियौ । म्हैं तौ थनै बतळायौ ई नीं अर म्हारा सूं चिपतां ई भोरड्यां पड़गी ।

काळिंदर कह्यौ—थूं राजा नै इण भांत दुख दियौ, थारौ पापौ काटनै ई छोडूंला । घणा दिन व्हिया थनै मीठौ दूध सबोरड़तां नै । जे राजा खाटी छाछ में बांटचोड़ी काचरियां रळाय पी जावै तौ अेक उछांट में ई थारा सै तोड़ा बारै आय पड़ै ।

पेट मांयलौ सांप बोल्यौ—म्हैं तौ घणा ई मजा कर्‌या, अबै मर जावूं तौ ई सोच कोनीं । पण थूं खुद रै मरण रौ ध्यांन राख । मरग्यौ तौ अणगिण हीरा-मोत्यां रै खजाना रौ कांई हाल व्हैला । सवा मण कळकळतौ तेल बिल में खळकायां थूं कैड़ौ दोरौ मरैला ।

दोनूं सांपां रा विवाद सुण्या तौ दोनां रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । राजकंवरी तौ पछै अेक छिण ई उठै नीं ढबी । राजा नै भुळावण देय न्हाटी न्हाटी जाटां रै वास में गी । खाटी छाछ अर काचरियां मांगनै लाई । मंई बांट, छाछ में रळाय सगळौ करबौ उणनै पाय दियौ । साचांणी उणरौ तौ गजब ई असर व्हियौ । पीतां ई पेट में खळवळ माची । जीव दोरौ व्हियौ । पछै राजा नै उछांटां माथै उछांटां व्ही । तोड़ा रा तोड़ा बारै आय पड़्या । अेकदम सांयत वापरी ।

जीव में जीव आयौ । पीपळ रा पांन ज्यूं पतळौ पेट व्हैगौ । ओझी रै मूंडै जंगी सांप विखरयोड़ौ पड़यौ हौ । राजकंवरी रै कांई जची जकौ चार पांच तोड़ा धोय अेक हांडी में घाल दिया ।

काळिंदर वाळी बात तौ नक्की व्ही ! जद तौ खजाना वाळी बात में ई कीं मीनमेख नीं । राजा री तरवार वेच राजकंवरी सवा मण तेल लाई । पछै कळकळतौ तेल बंबी में उंधाय दियौ । काळिंदर तौ बळनै भूंगड़ौ व्हियोड़ौ बारै आय-ग्यौ ! तठा उपरांत दोनूं जणा ढूका जकौ बिल नै ऊंडी ई ऊंडौ खोद न्हांकियौ । हीरा-मोत्यां रा चरू नीं आया जित्तै खोदता ई गिया । साचांणी अेक सौ अेक चरू अमोलक नगां सूं भरया हा ।

आप करमी वेटी रा करम खुल्या पण खुल्या । थोड़ा दिनां में उणरौ धणी अेकदम फूठरौ-फररौ व्हैगौ । देख्यां निजर लागै जैड़ौ । अेक दिन वौ राजा रै पाखती गियौ । हाथ जोड़ अरज करी के वौ राजमैल जोड़ै झूंपड़ी बंधावणी चावै । राजाजी नटण रै ओळावै कह्यौ के वै अेक हजार मोती लेवैला । वौ हजार मोत्यां री हांमळ भर दी । सिझ्या रा हजार मोती लायनै हाजर कर दिया ।

दूजै दिन ई हजार मांनखौ मैल वणावण सारू कमठा में जुतग्यौ । हलीलौ चाल्यौ पण चाल्यौ । हवेली तौ सपना रै उनमांन देखतां देखतां संपूरण व्हैगी । तीअठै आयां आखा नगर नै जीमायौ । खुदोखुद राजाजी जीमणनै आया । जद राज-कंवरी सोना रौ थाळ लेय आई तौ उणरौ उणियारौ देख राजाजी

री आंख्यां जळजळी व्हैगी । थाळ सांम्ही फगत देखें ई देखें पण अरोगै नीं । वा म्यांनी पूछ्यौ तौ अेक ऊंडौ निस्कारौ न्हाकनै राजा कह्यौ — हूबौहूब थारै उणियारै म्हारै ई अेक राजकंवरी ही । बाप होय म्हैं उण साथै रांम जांणै किण भौ रौ आंटौ साज्यौ ।

पछै सगळी बात बताई जित्तै आंख्यां सूं आंसू नीं थम्या । कह्यौ — रांम जांणै वा कठै व्हैला अर उणरा कैडा भूंडा हवाल व्हिया व्हैला ।

तद राजकंवरी हाथ जोड़ कह्यौ — आप अंगै ई चिंता मत करौ, उणरै सै बातां रा थाट है । म्हैं इज हूं राज री वा आप करमी बेटी ।

राजा नै अेकाअेक भरोसौ नीं व्हियौ । उणरी आंख्यां सूं हरख रा आंसू बहण लागा । पछै कमेड सूं थाळ अरोग्यौ ।

राजाजी रै दो रांणियां ही । दोनां रै ई अेक अेक राजकंवरी अर अेक अेक राजकंवर व्हियौ हौ । जद आप करमी रा वाद माथै उणनै पेदला मंगता सूं परणाय वहीर करी तद औ आदेस करयौ हौ के जकौ ई राजकंवरी रा भूंडा हवाल देख रोवैला उणनै देस निकाळौ देवैला । उणरौ भाई अंधारा में ऊभ छांनै रोयौ तौ ई राजा रै कांनां भणक पडगी । तुरत देस निकाळा रौ आदेस व्हैगौ । रांणी घणी ई रोई पण राजा नीं मान्यौ ।

आज राजकंवरी रै कैतां ई राजा मांनग्यौ । बुलावण सारू कांनी कांनी अठ घोड़ा दौड़ाया । तीजै दिन राजकंवर आयग्यौ । आप करमी बेटी आपरा भाई नै वा हवेली सूंप

दी । राजा घणा ई लालरिया लिया पण बेटी दत्त-दायजा रा नांव मायं अेक तुस ई लेवण सारू राजी नीं व्ही । सांम्ही भाई नै हीरा-मोत्यां रा सात चरू सूंप्या ।

पछै धणी नै साथै लेय आपरै राज नै संभाळण सारू वहीर व्ही । इक्कीस रथ जोत्या । धणी हिसाब लगायौ तौ जाच व्ही के भांणजा रा व्याव नै तीजै दिन पूरा छ महीना संपूरण व्हैला । मरचोड़ौ भांणजौ हाल तांई छींकै टिरतौ व्हैला। वौ राजकंवरी नै निरांत सूं सगळी वात वताई । पछै दोनूं उण दिस सांम्ही वहीर व्हिया ।

लाय री सागै ठौड़ आतां ई अेक संपणी आडी फिरी । फुफकारा भरती वोली — थारौ धणी म्हारा सांप नै लेग्यौ । उगनै पाछौ सूंप नींतर म्हैं थां दोनां नै डसूंला । राजकंवरी तौ पैला ई तल्लै-मल्लै सावचेत ही । वा तौ उण दिन ई हांडी में सांप रा चार तोड़ा घालनै जाब्तौ कर दियौ हौ । संपणी रै कैतां ई उणनै हांडी सूंप दी । संपणी रै पाखती इमी री कूंपौ हौ । छांटौ न्हाकतां ई सांप जीवतौ व्हैगौ । फूं फूं करनै फुफकारा भरण लागौ ।

दोनूं सांप-संपणी वंवी में वड़ग्या । इमी री कूंपौ लारै रैग्यौ । राजा इमी रौ कूंपौ लेय पाछौ रथ में वैठग्यौ ।

उठा सूं धरम वैन री ढांणी घणी आंतरै नीं ही । राजा सैंजोड़ै उठै पूगौ तौ धरम-वैन काग-मोर उडावती ही । भांणजा री माटी छींका में टिरचोड़ी ही । दिन में तीन वळा संगाड़ौ करावती । ल्हाम नै अंगै ई लीली नीं पड़णं दी ।

राजा इमी रै कूंपला री छांटौ दियौ तौ भांणजौ आळस

मरोड़नै ऊभौ व्हैगौ । बोल्यौ — आज तौ जबरी नींद आई ।

पछै गाजां - बाजां भांणजा नै साथै रथ में बैठांण ढांणी लेग्यौ । बींदणी राजकंवरी रै पगां लागी तौ उणनै मोत्यां रा सात चरू पगां - लगाई में दिया । ढांणी रा कण कण में उच्छव हिलोरां मारण लागौ । आभा रौ सूरज ई दो घड़ी ढबनै उणरा कोड नै टुग - टुग निरख्यौ ।

~~~~~~~~
~~~~~~~~

जूंन्यौ सरप

अेक हौ बामण । निपूता री दुख तौ हौ जकौ हौ इज, पण बांमणी कळै री इज कूंची । बिना बात झगड़ौ करणा में अणूंती प्रवीण ही । घर में अस्टपौर दांता-कसी । बांमण रै तौ खायौ-पीयौ अंग नीं लागतौ । अैड़ा झगड़ा में लिछमी कद वसै । अर इ ई मांगण सिवाय बामण रै दूजौ कोई हलीलौ ई नीं हौ । मांग्यां दांणां री काई सिरू व्हैती । अेक अजोगती बात वळै ही के बांमण अेक गाव मांगतौ तौ ई सेर वेकरड़ी अर दस गांव मांगतौ तौ ई सेर वेकरड़ी । वौ घणी ई साच बोलतौ, पण बांमणी कद विस्वास करती । नीं नीं व्है जैड़ी मेह्णियां अर नित नवा मोसा सुणाय सुणाय बांमण नै काठौ तवै कर दियौ ।

खड़िया में अळिया दांणां आवता तौ बांमणी झोरड़चां पड़ जाती । बांमण कैवतौ — भली आदमण, इणमें म्हारी कांई चूक ! लोग जैड़ा दांणा घालै, म्हैं तौ खड़ियौ मांड दूं । म्हैं तौ पछै कोई भेळ करणा सूं रह्यौ ।

बांमणी तड़कनै कैवती — आंख्यां गुद्दी लारै तौ है कोनीं, मूंडौ खोल मुभट कैहीजै कोनीं के अैड़ा दांणा क्यूं घालौ । अैड़ौ अळियौ धांन तौ कबूड़ां नै ई नीं उछाळै । लखण तौ

खुद में इज कोनीं अर दूजां में चूक काढ़ै । मूंडौ भाड़ै तौ नीं लाणौ, देखौ जैड़ी कहीजै कोनीं । मोल्या रा सुहाग बिचै तौ रंडापौ वत्तौ । भगवांन किणी वोदी वाड़ री कांटी कर देतौ, पण अैड़ा निपोच्या रै लारै तौ नीं करणो हो ।

बांमण होळै-सीक कैवतौ — थारै आगै होय अैड़ौ सुख तौ म्हैं ई नीं पायौ । अैड़ा परण्या बिचै तौ वांडौ घणौ वत्तौ हौ । दोनां रा ई भेळा करम फूटणा हा जकौ फूटग्या, अबै क्यूं कड़मड़ करै, कीं आंणी-जांणी नीं ।

पण बांमणी नैं तौ दांत बजायां विना लूखौ-सूखौ ई हजम नीं व्हैतौ ।

मांग्यां के चींत्यां मौत कद आवती सौ दोनां री जूंण नित रा आथमणा साथै दिनौदिन कम व्हैती इज ही ।

अेक दिन बांमणी घणी देण करी तौ बांमण भखावटै भखावटै ई खड़ियौ टेर घर सूं बारै निकळग्यौ । दुमनौ दुमनौ, मूंडौ ढेरचोड़ौ ।

टुळक टुळक मारग वैवतौ हौ के अणछक किणी री आवाज सुणीजी — पगां लागूं माराज !

पिंडत भिभकनै चारूं कांनी भाळ्यौ । आगौ-नैड़ौ कोई मिनख निगै नीं आयौ । मारग रै बीचौबीच तीनेक पावंडा आंतरै अेक काळिंदर कूंडळी मारयां बैठौ । हाथेक ऊंचौ फुण करयां लैरावतौ हौ । मुळकनै बोल्यौ — अठी-उठी कांई जोवौ, म्हैं ई पगां लाग्यौ हौ, डरपौ मती, म्हैं थांनै हांण नीं पुगा-वूंला । तड़कै तड़कै आसीरवचन तौ दौ ।

बांमण निसंक भाव सूं आसी कह्या । पछै तौ वौ

काळिंदर रै गोडै आय भरड़ करतौ रौ हेटै वैठग्यौ । उणरै मूंडा सांम्ही हाथ वधावतौ वोल्यौ — भाईड़ा, थूं म्हनै डशलै तौ जीवूं जित्तै थारौ गुण नीं भूळूं ।

फुण लैरावतौ काळिंदर जोर सूं हंसियौ । हंसतौ हंसतौ ई वोल्यौ — पिंडतजी, अेक भोळा में तौ थारै ई घाटौ नीं है । म्हारै डस्यां तौ थकलै ई छिण मर जावौला, पछै म्हारौ गुण कीकर मांनौला ।

वांमण नै ई हंसी आयगी । वोल्यौ — हां, वात तौ थारी साव साची, पण थूं डसण री मया करतौ व्है तौ मरयां पछै ई गुण नीं भूलूं ।

काळिंदर फुण हिलावतौ वोल्यौ — ऊं, हूं, म्हनै अैड़ौ गुण नीं मनावणौ । मारनै गुण मनावूं, अैड़ौ मळीच म्हैं कोनीं । हजार वरस व्हिया कांकड़ री इण वंवी में वास करता नै । आज दिन तांई किणी जीव साथै घात नीं करयौ । आखा नाग-लोक में जूंन्या सरप रा नांव सूं ओळखीजूं । पांच सौ वरसां सूं इंदरापुरी री पोहरौ दूं — कदेई ओळवा जैड़ौ कांम नीं करयौ । पछै थारै म्हारै कांई वैर सौ मारग वैवतां घात करूं ।

वांमण अेक ऊंडौ निसास खांचतौ कैवण लागौ — आपघात व्है नीं अर मांग्यां मौत मिळै नीं, इण वास्तै थनै अरज करी ही । मर जावूं तौ जलम सुधर जावै, जीवणा सूं काठौ कायौ व्हैगौ ।

वांमण री आंख्यां सूं ठळाक ठळाक आंसू वहण लागा । काळिंदर री ई आंख्यां जळजळी व्हैगी । वोल्यौ — मरणौ तौ म्हे ई नीं चावां अर थें मिनख-जमारौ पाय मरण री वात करौ । जीवण

सारू ई तौ थांरै पगां लाग्यौ । आज सात दिन व्हिया चौखळा रा काळवेलिया म्हारौ खेरौ ई झाल राख्यौ । म्हारै माथा री अमोलक मिण सारू वै राजाजी सूं कौल करनै आया । रात दिन इण कांकड़ में चकारा देवै, जांणू के अवकी बंचणौ दूभर है । आ, काळबेलियां री वास आवै । खड़िया में घाल म्हनै घरै लेय जावौ । थांरौ औसांण कदै ई नीं भूलूंला । जल्दी करौ, वै अठीनै ई आवै ।

बांमण खड़ियौ मांड दियौ अर कालिंदर सळवळतौ मांय वड़ग्यौ । पींडी जित्तौ जाडौ अर तीन पुरस लाम्बौ । पांच छ घड़ी रौ भार खळखळौ । खांधै खड़ियौ टेर बांमण तौ उठा सूं पाछौ मुड़ग्यौ ।

बांमण रा मन में कुबद सूझी । सोचण लागौ के अैड़ौ काळ हाथै आयां चूकग्यौ तौ वळै मौकौ हाथ नीं आवैला । हित्या रौ पाप ई माथै नीं बंधै अर बांमणी रौ पापौ कट जावैला । वौ मन में आछी तरै सगळी जुगत विचारली ।

बौलौ बोलौ घरै गियौ । बांमणी बाड़ै गियोड़ी ही । कोठलिया रौ किवाड़ खोल अेक खुणा में खड़ियौ धर दियौ । बांमणी तौ आवतां ई दोसा-मोसा करचा । तड़कनै मोसा रा सुर मैं बोली — म्हारा घण कमाऊ धणी, पाछा इत्ता वैगा कीकर पधारचा । खड़चौ कठै, कठै ई वोळायनै तौ नीं आयग्या । यूं मूंडौ ढेरचां कांई ऊभा !

बांमण नीचै मूंडौ करचां ई होळै-सीक बोल्यौ — खड़ियौ कोठलिया में धर दियौ ।

वांमणी बिचाळै ई गडका सूं बोली — पैला अैड़ी सोजी

राखता तो अै फोड़ा क्यूं भुगतता ?

आ कैय वा तो मतै ई कोठलिया सांम्ही वहीर व्हैगी। करनाळो खोलतां बोली—थांरा सै लखण जांणूं। आज अळियो घणो लाया, जिण सूं कोठलिया में धरण री डोढ़ हुंस्यारी करी, पण म्हैं ई थांरै माथै बांधै जैड़ी हूं।

बांमण अपूठो ऊभो घरवाळी रै बोबाड़ा री बाट जोवण लागौ। मन ई मन भांडण लागौ के अबारूं तौ इत्ता वड़का-तड़का करै पण कुणकिया रै डसतां ई पांणी नीं मांगीजै ला।

बांमणी खड़्यौ खोल्यौ तौ मांय अळिया दांणा री ठौड़ अेक नवलखौ हार। बारै काढ़्यौ तौ पळापळ करै। चिळको पड़ण लागौ। अचंभा सूं बांमणी री आंख्यां ऊंची लिलाड़ में चढ़गी। हजार मनां जित्ती आपरा अकेला मन सूं राजी तौ अवस व्ही, पण कळै री सुभाव यूं अेक छिण में थोड़ो वद-ळतौ। धणो रै सांम्ही ऊभ, नवलखौ हार भुलावती बोली—वड़भागी, अै चोरचां रा लखण कद सीख्या। म्हारा सूं ई चोज।

पण बांमण तौ चमगूंगौ व्हियोड़ो पळकता हार सांम्ही देखतौ रह्यौ। औ कांई खिलको व्हियौ। बांमणी रा दुख आगै उणनै नवलखा हार री अंगै ई हरख नीं व्हियौ।

बांमणी धणी नै भिभेड़ती बोली—कठा सूं चोर नै लाया, वतावौ तौ सरी।

बांमण लुगाई रै गळा सांम्ही हाथ करतौ बोल्यौ—थारै गळै हाथ, म्हनैं तौ औ मारग में पड़्यौ लाधौ। चोरी तौ ... सपना में ई नीं करूं, थूं जांणै ई है।

बांमणी गळा में हार पैरती बोली— पण थें म्हारा सूं चोज क्यूं राख्यौ । आ खुस-खबरी तौ घर में आतां ईं सुणा-वणी ही । रांम जांणै थांनै कद सोजी आवैला ।

पछै पळकता हार माथै आंगळियां फेरती बोली — कमाई नीं करता जित्तै थें बोला बोला म्हारा बड़का-तड़का सुणता, पण अबै थोड़ा ई सुणौला, म्हैं थांरा लखण जांणूं ।

बांमण कह्यौ — लिछमी, कमाई नीं करी जित्तै तौ थारौ लड़णौ ई बेजा नीं हौ, पण अबै क्यूं लड़ैला ? कित्तौक जीवणौ है, अबै तौ राजी-राजी बोल !

बांमणी धणी नै भिड़कती बोली — थूकौ थांरा मूंडा सूं, हाल अपांरी ऊमर ई कांईं व्ही ! थें पैला ई अैड़ी कमाई करनै लावता तौ लड़ण री आ कुबांण म्हारै क्यूं गळै बंधती ! थें ईं बतावौ बरसां री आदत अेक दिन में कीकर छूटै ?

भोळौ बांमण मौका माथै अेक अणूंती समझ री बात करग्यौ । बोल्यौ — जद बरसां रै अैदीपणा री कुबांण छोड़ म्हैं अेक दिन में अैड़ी अणचींती कमाई करनै लायौ, तौ कांईं थूं अेक दिन में लड़णा री आदत नीं छोड सकै ?

बांमणी बोली — क्यूं नीं छोड सकूं ? म्हैं थांरा सूं कद माड़ी ?

पछै पळकता हार सांम्ही देखती देखती थोड़ी ताळ उप-रांत कैवण लागी — किणी रौ ई चूक कोनीं, अेक दूजा माथै दोसण मंढ़णा में कीं सार नीं । चूक है तौ सगळौ तोटा रौ । तोटा में नीं मिनख री अकल कांम करै अर नीं उणरा गुण । धन आवतां ईं अपां में अकल आयगी, चोखा चोखा गुण

आयग्या । थें म्हनें आछा लागौ अर म्हैं थांनैं आछी लागूं । अेक दूजा नै देख्यां जीव हरचौ व्है ।

भोळा बांमण रै होयै मतै ई आ समझ वापरगी के साची बात बतायां वळै राड़ वधैला, इण वास्तै घरवाळी सूं चोज राखणौ ई सावळ ।

सपना रौ रूंख अेक छिण में वधै ज्यूं बांमणी री अकल वधण लागी । बोली — कोरौ हार गळा में फूठरौ नीं लागै, पक्की हवेली, धीणा-धापा अर सै ठाट रै विचाळै औ नवलखौ हार फबै । थें सेठजी कनै जावौ अर इणरै मोल रौ धन लेयनै आवौ ।

बांमण घरवाळी न वत्ती राजी करण सारू कह्यौ — म्हैं भोळौ हूं, सेठजी ठग लेवैला, थूं जावैला जद ई पूरौ मोल हाथ लागैला ।

बांमणी मांनगी । सेठजी सूं पूरी इक्कीस हजार मोहरां लेयनै आई । पछै लिछमी रै आयां घर में सगळी बातां रा थाट व्हैणा व्है जकौ सगळा व्हिया इज । किणी बात री कोई खामी नीं री ।

अर उठी नगर-सेठ रा घर में सपना सूं इदक अेक अजोगती बात व्हैगी । दूजै दिन नगर-सेठ मेहतांणा नै कह्यौ के तिजोरी मांय सूं वौ नवलखौ हार लायनै देवै । राजाजी रै निजर कर्‌यां वै अणूंना राजी व्हैला । माडै अणां दोनी उणसूं चौगणी मोहरां देवैला । अैड़ा अमोलक हार राज रा खजाना में ई नीं व्हैला ।

मेठांणी तिजोरी खोली तौ नवलखा हार री ठौड़ खण

में अेक नैन्हौ बाळ पळाय पळाय रोवै । हांचळां सूं दूध री बत्तीस धारावां छूटी । वा तौ हरख अर इचरज में बावळी व्हैगी । इण विध बांझड़ी कूख उघड़ैला, अैड़ौ भरोसौ तौ भगवांन माथै ई नीं हौ । आ तौ भगवांन रै बस परबारी बात व्हैगी ।

सेठांणी हाब-गाब व्हियोड़ी वरसाळो में आई । इचरज अर हरख रा सुर में बकाई खावती बोली — चालौ देखौ तौ खरी, अपांरै गीगलौ व्हियौ ।

सेठांणी रौ बरताव देखनै सेठां रै समझ में नीं आई के वा मोसा देवै के साचांणी काली व्हैगी । माडै हाथ पकड़नै लैगी, तौ साचांणी साच सूं ई बात वत्ती साची निकळी । निपूता सेठ री हवेली माया रौ तौ कीं लेखौ ई नीं हौ, पण लारै माया रौ भोगणियौ के रुखाळौ नीं जलमियौ, इणरौ दुख ई कीं कम नीं हौ । सगळी माया धूळ सस्तै लखावती । थोथौ दुख करयां ई कांई सांधौ लागतौ, माडै सबूरी झेली । माळा में मन रमायौ । सेवट सांवरियौ वीणती सुणी ।

टाबर रूपाळौ अैड़ौ के जांणै गुलाब रै फूलां रौ रंग, कस, सौरम अर चांद री किरणां ई सांचै ढळी । माईतां री मंसा परवांण वगत परबारौ बधण लागौ । वौ तौ देखतां देखतां मोट्यार-काटी व्हैगौ । सगपण जोग व्हैतां ई सेठ अेक गरीब बांणिया री समझवांन बेटी सूं उणरौ ब्याव कर दियौ । आखा नगर नै जीमायौ । हजारूं रिपियां री निछरावळ कीवी । राज-कंवर रौ ई अैड़ा थाट सूं ब्याव नीं व्हियौ ।

सुहाग री लाखीणी रात वींद वींदणी नै सीख री बात बताई के वा पर-घर नीं तौ कदैई बासदी लावण सारू जावै

अर नीं कदेई परींडौ रीतौ राखै । आं दोनूं बातां में खांमी रैगी तौ सुहाग में हांण पड़ जावैला ।

बींदणी उण दिन सूं ई धणी री बात पल्लै बांधली । अस्टपौर चूल्हा में बासदी ओछ्योड़ौ राखती । घड़ी घड़ी परींडौ संभाळती । पांणी लावण सारू नीं तावड़ौ गिणती अर नीं अंधारौ । मटकियां थोड़ो ई खाली व्हैतो तौ माथै दुवड़ियौ अर खांधै सींच-णियौ टेर पांणी सारू वहीर व्है जाती ।

सूरज रै उजास री कोई माठ व्है तौ सेठां री उण हवेली सुख अर हरख री कोई माठ व्है । कमाऊ अर सालस बेटौ, इग्याकारी, गुणवंती अर रूपाळी बींदणी, अथाग माया ! परि-वार रै सगळा प्रांणियां री जमारौ सुफळ व्हियौ ।

बींद-बींदणी रा रंगमैल में अेक नवी ई आभौ हुलसग्यौ हौ । नवा ई तारा अर नवौ ई चांद । कुदरत रा जुगां जूंना आभा सूं ओ आभौ इदक सुहावणौ हौ ।

पळक पळक दिन गुड़कता गिया । पण अेक दिन समा-जोग री अैड़ी बात बणी के सेठ री बेटौ अेक लांठा विणज सारू चौखळा रा अेक गांव में गियौ । सिंझ्या रा ई पाछौ आवण री बात ही । पण सींदी नीं पड़्यौ तौ वौ तीन दिन लगतौ ई उठै ठग्गयौ । आखी हवेली कळमळ मचगी । माईतां सारू तो दिनूंगा जांणै सूरज ई नीं ऊग्यौ । अेक अेक छिण बरस जितौ लांठौ व्हैगौ । रंगमैल में भाटा री पूतळी ज्यूं अव-चळ ऊभोड़ी बींदणी सारू तौ जांणै किणी बात री कीं सरूप ई नीं हौ । नीं परस री, नीं रूप-रंग री, नीं गंध री अर नीं सुर री । वा देह में जीव थकां ई मरगी ही ।

तीजै दिन मथारै दिन चढ़्यौ जणा बेटौ घरै आयौ । बेटा रै घरै आवतां ई सुख रौ उजास सांचरग्यौ । वींदणी रा प्रांण बावड़ग्या ।

बेटौ पांणी पीवण सारू गियौ तौ परिंडौ रीतौ । रसोई में गियौ तौ चूल्हा में वासदी री तिणग ई नीं । उणरौ माथौ ठणकियौ । वींदणी री सुध-बुध बावड़तां ई उणनै धणी री सीख याद आई । पांणी रौ छूकलियौ अर वासदी लावणं सारू पाड़ौ-सण रै घरै गी । पाड़ौसण पांणी अर वासदी रै सागै वींदणी रै हयै अेक अैड़ौ चम चाळ्यौ के सेठां रै सुख री हवेली ई जांणै ऊंधी व्हैगी । मथारै चढ़्यौ सूरज तवा रै उनमांन काळौ व्हैगौ ।

रंगमैल में आवतां ई वींदणी कोरै आंगणै ई आटी-पाटी लेय सूयगी । इत्ता दिन धणी उण सूं चोज कीकर राख्यौ ? अबै ई जात नीं बतावै जित्तै रूसणौ नीं छोडै ।

लुगाई री बात सुणतां ई धणी रै माथै जांणै वांण व्हैगौ । जिण बात रौ डर हौ, सेवट वा ई पगां आई । गळगळा सुर में बोल्यौ — म्हारी जात पूछण रौ वाद मत कर, देख, पछै घणी पिछतावैला ।

वा ई लुगाई री जात ही, अेकर करयौ वाद कीकर छोडती । धणी ई समझाई तौ ई नीं मांनी । सेवट सेठ रै बेटा नै कैणौ पड़्यौ — जे आखी ऊमर पिछतावण रौ अैड़ौ ई कोड है तौ पछै म्हारै साथै सरवर चाल, उठै म्हारी जात बतावूंला ।

वा तौ सरवर चालण सारू झट त्यार व्हैगी । मारग

में आवेटै आयां धणी फेर कह्यौ—वड़भागण अबै ई मांनजा, देख पिछतावैला ।

'छौ पिछतावती ।'

सरवर री पाळ चढ़तां वो फेर कह्यौ पण वा तौ मांनी ई नीं । पांणी में पग धरतां कह्यौ तौ ई नीं मांनी । कड़ियां तणी पांणी आयौ जद वौ वळै कह्यौ, पण उणरै तौ फगत अेक ई धत भिल्योड़ी ही । समभावतां समभावतां सेवट वौ घांटी तणा पांणी में डूवग्यौ । छेहला सुर में समभावतां जोर सूं बोल्यौ: म्हारौ कह्यौ मांन, अबै ई मांनजा, म्हारी जात मत बूभ, देख, आखी ऊमर पिछतावैला । मांनजा ।

वा ई पाछा उत्ता जोर सूं पडूत्तर दियौ—म्हनै तौ थांरी जात बतावौ जकी वात करौ, जे जात पूछणा में ई पिछ-ताणौ पड़ै तौ छौ पिछतावती ।

'तौ सावळ देख, म्हारी जात आ है ।'

आ वात सुणतां ई बींदणी नै धणी रै उणिगारा री ठौड़ काळिंदर रौ फुण निगै आयौ, अर वौ देखतां देखतां पांणी में चिमकी मारग्यौ ।

बींदणी सरवर रा तीर माथै ऊभी घणी ई रोई कळपी, पण सै अकारथ । काळिंदर ई पाछा दरसण नीं दिया । सेवट हाथ भाटक आंसू रळावती रळावती घरै आई । सास-सुसरां नै रोवतां रोवतां सगळी वात बताई । सेठ-सेठांणी रौ तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ ।

दूजै दिन बींदणी सास-सुसरां नै कह्यौ—भूल तौ म्हारी व्हैगी जकौ व्हैगी । पण म्हारी भूल नै पाछी म्हैं ई सुधारूंला ।

आप नेह्चौ राखौ । पण व्हो जकी बात म्हनै ठेट सूं साची बतावौ ।

सेठ कैतां पांण सगळी बात बताय दी । वींदणी गुमघांम व्हियोड़ी ध्यांन सूं सगळी बात सुणी । सुण्यां रै उपरांत वा तौ सीधी उण बांमण री हवेली गी । बांमण नै जाय पूछ्यौ, तौ वो ई ही जकी बात बताय दी । साथै जाय कांकड़ में काळिंदर वाळी बंबी बताय दी । वींदणी बम्बी रै पाखती बैठगी । नीं अन्न, नीं पांणी अर नीं नींद । तीन दिनां तांई उणी भांत काठ री मूरत रै उनमांन बैठी री । तीजै दिन काळिंदर परगट व्हियौ । वींदणी उणनै छाती सूं चिपाय छबरां छबरां रोई । जूंन्या सरप री आंख्यां सूं ई आंसू ढळक पड़्या । वो गळगळा कण्ठ सूं बोल्यौ — म्हैं बरजणा में पाछ नीं राखी अर थूं हठ करणा में पाछ नीं राखी । अबै पिछतायां कीं कारी लागै नीं । म्हैं ई मांय रौ मांय रोवूं, पण करूं तौ कांई करूं ।

वींदणी कह्यौ — के तौ कोई जुगत बतावौ, नींतर म्हैं इण बंबी माथै माथौ पिछांट पिछांट प्रांण छोड देवूंला ।

जूंन्यौ सरप बोल्यौ — वाद आगै तौ लुगायां नै निमौ है । थें जांणौ के म्हारै हीयै कीं दाभ है ई कोनीं । उण दिन रा विजोग पछै कीं खायौ-पीयौ नीं । आंख्यां में नींद रौ कस ई नीं आयौ । आंख्यां में थांरै उणियारा रौ चित्रांम मंड्योड़ौ, उणनै काच में देखूं अर जीवण रौ थोड़ौ घणौ आधार जुटावूं । थांरै साथै जीवण रौ जकौ आणंद आयौ, म्हांरा लोक वास्तै उणरौ सपनौ ई दूभर है । पण अबै जकी बात हाथ सूं निकळगी, उणरौ सोच करणा में कांई सार !

वींदणी आंसू राळती वोली — तौ अवै म्हारा जीवणा में ई कीं सार नीं । मरयां कीं सार निगै आवै तौ ध्यांन राखजौ ।

थोड़ी ताळ सोच-विचारनै काळिंदर कैवण लागौ — थांरा वाद आगै म्हनै निवणौ ई पड़ै । म्हांरा लोक थपिया जद सूं जकौ भेद परगट नीं करयौ वौ थांनै वतावूं ।

पछै जूंन्यौ-सरप वींदणी नै तजवीज वताई के पाछौ वां दोनां री कीकर घरवास व्है सकै । वींदणी चुपचाप आखी वात सुणी । सुणतां ई उणरी आंख्यां में दुख रै आंसुवां री ठौड़ हरख रा आंसू दमकण लागा । वोली — जे थांनै विछोव री थोड़ी घणी ई दुख व्हैतौ तौ आ वात पैला ई वताय देणी ही ।

जून्यौ-सरप कह्यौ — म्हारै दुख री लेखौ तौ म्हैं जांणूं । पण विना थांरै वाद करयां खुद वतावतौ तौ वात सुफळ व्हैती ई नीं । लुगायां रै दुख जित्तौ मोट्यारां रै दुख में जोर न व्हिया करै ।

जोग री वात उणी दिन अमावस ही । दिन आथमियौ जित्तै दोनूं वम्बी रै पाखती वैठा वातां-विगतां करता रह्या । पछै जून्यौ सरप तौ वंबी में वड़ग्यौ अर वींदणी, वतायौ उण वड़ला रै ठायै वहीर व्हैगी । पैला तौ गाय रा सेडावू दूध में केसर रळाय संपाड़ौ करयौ, पछै सरवर रा पांणी में सात वळा संखोळी खाई । अवोट लीला गाभा पैरया । दूध सूं सात वार कुरळा करया । पछै वड़ला रो खोखाल में वड़नै वैठगी ।

आधी ढळियां सणण सणण करतौ विमांण उतरयौ । परियां री भूलरौ वड़ला री जड़ां माथै गाभा खोल नाडी में

न्हावण सारू वहीर व्हियौ । मिण के आगिया चिमकै ज्यूं उण काळा-बोळा अंधारा में ईं परियां रौ उघाड़ौ डील पळपळाट करतौ हौ । वांरी आब अर रूप निरखनै वींदणी री आंख्यां में ईं नसौ चढ़ग्यौ ! संसार थपियां पछै ई कदास किणी लुगाई नै लुगाई रौ रूप अैड़ौ मोयौ नीं व्हैला । नाडो में जांणै न्यारा न्यारा चंदरमा भीलै ।

भील्यां रै उपरांत परियां पाछा भीणा गाभा पैरनै विमांण में बैठी तद वींदणी री सुध-बुध वापरी । बोली बोली खोखाल सूं बारै आई । उडता विमांण रौ पायौ भाल हेटै टिरगी । परियां नै आज विमांण अणूंतौ भारी लखायौ । बात कांईं व्ही ? किणी परी रौ मन तौ म्रितलोक में नीं अटकग्यौ । किणनै बूझै ? इंदरापुरी पूगणा में दूणौ मोड़ौ व्है जावैला । नाच री वेळा टळचां इंदर भगवांन अणूंतौ कोप करैला । पैला ई नीठ गा गा । अबै तौ म्रितलोक सांम्ही झांकण ई नीं देवैला । भूंडी कळा पजी ।

परियां अेक दूजी रौ मूंडौ जोवै, पण बात कीं समझ में नीं आई । दो तीन जणियां घांटी काढ़ बारै अठी-उठी जोयौ । लुळनै हेटै देख्यौ तौ अेक लुगाई टिरती निगै आई । पूछ्यौ—वाल्हा थूं कुण ? अेकर म्हांनै पूछ तौ लेणौ हौ ।

वींदणी कह्यौ—पूछ्यां थें कद म्हनै मांय बैठण री मया देती । विखा री तायोड़ी औ जोखौ झेल्यौ हूं । थें कैवौ तौ हाथ छोड दूं । म्हारी खातर थांनै दुख उपजतौ व्है तौ वैड़ौ कांम म्हैं नीं करूं । अबै आपरी ज्यूं इंछ्या व्है त्यूं फरमावौ । म्हैं इत्ती ऊंवी आय तौ गी ।

परियां कांई जबाव देवती । वांरै हीयै दया-माया ही । इंदर भगवांन कोप करैला तौ छौ करता । कीं न कीं ओळावौ लेय बात परोटैला । सेवट उणरौ हाथ झाल मांय बैठांणणी पड़ी । पछै तौ विमांण चौगणै वेग उडियौ । हवा रै रेसां में वळत ऊठगी । वगत सूं पैला विमांण पूगग्यौ ।

इंदर-भगवांन परियां री नाच जोवण सारू हीरा-मोती जड़्या सिंघासण माथै विराज्या हा । नसा में धताधत । आंख्यां राती-चोळ । असवाड़ै-पसवाड़ै दो परियां चंवर डुलावती ही । नाच री आदेस व्हियौ । परियां रै भेली बींदणी ई नाचण लागी । तारां रै विचाळै चांद न्यारौ पळकै ज्यूं वा न्यारी ई पळकती ही । उणरै उनमांन नाचणवाळी तौ इंदर-लोक में आज पैली कोई अपछरा व्ही ई कोनीं । सगळी परियां थाक्यां माठ भेरी । पण वा तौ ज्यूं नाचती त्यूं आसूदी व्हैती गी । डील तर तर हळकौ पड़तौ गियौ । अर उठी इंदर रौ सिंघासण डगमग हिलण लागौ । नाच रै नसा री भळकी आवतां ई दारू री नसी फूंमदा ज्यूं उडग्यौ । बीजळियां रै सळावां ज्यूं उणरौ डील लुळतौ हौ । इंदर-भगवांन री रूं-रूं आंख वणर उणरी नाच देखण लागौ । घूंघरा रा अैड़ा रणकारा सुणण सारू हजार कांन व्है तौ ही थोड़ा । अेक अेक ततकार माथै इंदरापुरी री राज वारै तौ ई थोड़ौ ।

इंदर-भगवांन सिंघासण सूं ऊभा व्हैगा । आखौ दरबार पगां माथै ऊभग्यौ । इंदर-भगवांन मुगट हाथ में लेय उणरा पगां में फेंक्यौ । बोल्या — मांग, मांग, इंदरापुरी रा राज सूं इदक म्हारै कनै कीं नीं है ।

वींदणी तौ नाचती ई री । जांणै इंदर रा बोल सुण्या ई नीं व्है । इंदर-भगवांन आखता होय वळै बोल्या — घणौ बोझ मत बधा, औ राज है सौ थारै पगां हाजर कर दियौ।

वींदणी नाचती नाचती ई बोली — म्हनै नीं राज चाहिजै अर नीं धन चाहीजै ।

इंदर-भगवांन कह्यौ — राज देवण सूं नीची वात ई करूं तौ म्हारौ कुरब घटै । आज तौ जमारौ सुफळ व्हैगौ । मांग, मांग, इंछया व्है सौ मांग ! अबै घणौ बोझ मत बधा, म्हारौ ठरकौ कोनीं ।

वींदणी नै लखायौ के आभा रौ चांद उतरनै उणरै पगां हेटै आयग्यौ । उणरौ रूं-रूं तारा बणनै चिमकण लागौ । वर मांगण सारू तौ वा इत्ता कळाप ई करचा हा । नाचती नाचती ई बोली — देवण रौ अैड़ौ ई गुमेज है तौ म्हनै जूंन्यौ-सरप बगसावौ ! उणरै सांम्ही आपरौ इंदर लोक ई म्हनै फुतरका जित्तौ लागै । बगसावौ, म्हनै जूंन्यौ सरप बगसावौ ।

इंदर भगवांन अणूंता राजी व्हिया । जूंन्या सरप में ई जिद छूटी ! आज तौ आ नाचणवाळी इंदर-लोक रौ राज नीं मांग्यौ जिण सूं ई औ राज पाछौ बाल रैग्यौ । जावणा में कीं खांमी नीं ही । तौ ई छोटी सी वात मांगणा सूं वांरै देवण रौ गुमेज पोखीजियौ कोनीं । सगळां रै सांम्ही कीं लांठौ वरदांन देवता तौ देवण रौ आणंद ई आवतौ । मुळकनै बोल्या — सेवट मांगनै ई आ कांई नाकुछ चीज मांगी, म्हनै देवतां ई संकौ आवै । वळै मांग । कीं वळै मांग ।

जूंन्यौ-सरप आपरै पौरा माथै अड़ीजंत ऊभौ हौ । वींदणी

उणरै सांम्ही देख मुळकतो थको बोलो — इण सूं वत्ती म्हनै कीं नीं चाहीजै। म्हैं मंगती कोनीं, तीनूं लोक मिळता व्है तौ ई हाथ नीं पसारूं।

नाच रौ नसौ उतरतां ई इंदर-भगवांन सोच्यौ के इत्ता में ई लार छूटी। अजेज जूंन्यौ-सरप संभळाय बींदणी री मांग पूरी। आखा इंदरलोक में उण वेळा किणी में ई आ बात समभण री बूती नीं ही के आ मांग पूरचां दोनां रै हीयै कित्तौ आणंद हुळसियौ। अर म्रितलोक में पाछा वळियां जद बूढ़ा माईत बींदणी रै सागै बेटा नै सेंजोड़ै पगां धोक देवतां देख्यौ तौ च्यारां नै किण सूं कित्तौ कम-वेसी आणंद व्हियौ — अैड़ौ लेखौ जांणणियौ चतर-मुनीम आज दिन तांई बापड़ी बेमाता नीं तौ घड़चौ अर नीं सपना में ई कदै घड़ सकै !

नागरा थारौ बंस बधै

मिनखां री इण दुनियां में धनवंती माया लारै पूजवांण, राव-उमरावां री पाट-गादी रै कूंतै कांण-कुरब, बेढ़ीला-सूरमा रीठ रै आपै बाजिंदा, डकरेल धाड़वी हीमत अर देह रै आपांण जोरावर, कवि-कळावंतां रौ झीणा हुनर परवांण नामूंन पण वोलियौ खवास आपरी अकल रै उजास मुलकां चावौ। जांणै रूं रूं सूं परसेवा री ठौड़ अकल ई चवती व्है। मोटौ माथौ, तीखौ नाक। जाडा भोपणा, दोनूं मिळचोड़ा। काळी-स्याह गलमूंछा। आंटा खावती रूंवाळी। लांबी भुजावां। धौळी सुघड़ बत्तीसी, जाणं पळकता मोती ई खराद उतरचा। सरस सुहांणी बोली, जांणं गळा सूं बोलां रै बदळै फूल नीसर-नीसरनै विगसै। पूछै उणी वात रौ तुरंत म्यांनौ दै। उणनै जणौ-जणौ आंणै-टांणै तांणै। जांनां रा आगूंच निवता। साथै ले जावण सारू सगळा ई अछन-अछन करै। गाढ़ौ हेत-इकळास राखै। औगण-कुवांण री जात नीं। काछदढ़ौ। मुल-खणौ। इतबारो। जूंनी वातां-विगतां रौ परतख अवतारी।

वौ सिंझ्यां रा सदिये-सदिये व्याळू करनै डेंचा माथै सूनौ-सूतौ होकौ गुड़गुड़ावतौ हौ के घरवाळी पगांतिये ऊभी कैवण लागी—पूरी इक्कीस रातां उपरांत कालै ई तौ पाछा बावड़िया

अर झांझरकै ई चौधरी-बाबा रै बेटा री जांन में जावण रौ हूंकारौ भर लियौ । अपांरी गवाड़ी आया-गिया पांवणा ई थांरै बिचै तौ वत्ता ढवै । तीनूं टावर अस्टपौर जीसा-जीसा वेलै अर थें कीं यारै ई नीं करौ । लिहाज-लचका री कीं तौ माठ व्है । आवै जिणनै ई हुंकारौ भर दो ।

बीलियौ खवास मुळकतौ थकौ घरवाळी रै उणियारा मांम्ही टगटग जोवतौ बोल्यौ—बावळी, म्हैं तौ मौत नै ई नीं नटूंला । उणरौ निवतौ ई इणौ भांत मुळकतौ अंगेजूंला । नटण री आखड़ी थूं सोरै-सास थोड़ो ई निभै !

धणी रै मूंडा री बात लप बिचाळै ई झांपती थकी बोली : घर री धणियांणी अर जायोड़ा टाबरां नै तौ फगत नटण शिवाय दूजी की बात जांणी ई नीं । वळै आखड़ो निभावण री गुमांन करौ !

घरवाळी री हाथ झाल उणनै पाखती बैसांणी । होका री नेह नै आगो धरतौ कैंवण लागौ—अेक कालापणा में तौ थांरै ई घाटी नीं । म्हैं थांनै अर टावरां नै न्यारा थोड़ा ई जांणूं । अपां तौ सगळा इक-जीवै हां । देह रा ठांव-ठोकरा न्यारा खड़बड़ै तौ कांई व्है ! बावळी, नटणौ तौ खलकां नै व्है । बना, म्हैं खुदौखुद म्हनै ई कीकर नटूं । कांई, काळजौ चीरनै बतायां विना म्हारा जीव री थनै कदै ई ठा नीं पड़ैला ।

...नै तौ सै ठा है, म्हारा सूं तौ थांरा मन री कीं वात छांनी कोनीं, पण थांनै म्हांरा जीव री अंग ई जाच व्है तौ म्हनै! बताओ । बारै दिसावरां म्हांरी थांनै कदै ई ओळूं आवटै ? '

बहू री कळाई नै पंपोळतौ वीलियौ कैवण लागौ — म्हैं थांनै अळगा जांणूं ई नीं तौ पछै ओळूं किणरी आवै, क्यूं आवै ?

होठां आयोड़ी मुळक माथै वा माडांणी खांप देवती बोली : थें बातां में तौ वेमाता नै ई नीं धारौ, पछै म्हारी कांई जिनात। पण घर में धणी रै उणियारै ई चांनणौ पळकै। आभै सूरज नीं ऊगै तौ धरती माथै सैचन्नण कद व्है ? कोरी बातां छमक्यां सूरज री गरज नीं सरै।

अंजसनैं घरवाळी रा मोर थापलिया। बोल्यौ — आ बात तौ वीलिया खवास री जोड़ायत रै जोग ई करी। थूं साची, अेकर तौ वेमाता ई आय भिड़ै तौ लवै ई नीं लागण दूं। आखी दुनियां म्हारी बातां सुणनैं माथौ धूणै, रींझै। जणौ जणौ म्हारौ विरध बखांणै। सुण-सुणनै कायौ व्हैगौ। नामूंन सूं ओक्या बैठगी। पण अबै जावतां बातां रा सिरै मरम नै सावळ समझ्यौ। बातां तौ फगत जीभ रौ बणाव। होठां रौ सिणगार। लालो री भिकाळ। पण मन रौ तौ भेद ई अगम। अगोचर। मन अर वांणी में कीं नातौ नीं। मन रौ छेहलौ मरम तौ फगत मूंन। पण वस्ती में भेळा गूंथिजियोड़ा हां, तिण सूं बोल्यां-चाल्यां बिना नीं सरै। पछै बरसां सूं बात-पोसी री बांण पड़गी। होकौ छूटै तौ भिकाळ री आ भाटी छूटै। म्हनै तौ लखावै के मरयां पछै ई म्हनै किणी बात रौ म्यांनौ पूछ्यौ तौ बोलणौ ई पड़ैला। साचांणी अबै म्हनै नांम-जादी रौ घणौ मोह कोनीं। पण थूं ई बता लोग-बागां नै मनाऊं तौ वै मांनै ? बातां-बातां में कठै ई थोड़ा पजै के

पावरा म्हारै कनै । जणौ जणौ म्हारै मूंडा सांम्ही जोवै, उण वेळा टाळाटोळी करयां छाजै भलां ! जायै जीव नै सेवट अेक दिन जांणौ है । घणी तौ गुड़काय दी अबै तौ गिणिया दिन पोतै । नाकोरौ देय किणनै कळपाऊं ?

मुळक रै सागै थोड़ौ - घणी आंमनौ दरसावती थकी घर-वाळी बोली — कळपावण सारू तौ म्हे घरवाळा ई उबरता पड़या, दूजां नै बारी ई नीं आवण दां, थें इण वात री सोच करौ ई मती ।

'साच मांनै, थारै थकां म्हनै किणी वात री सोच कोनीं ।'

घकलौ वातां नै लिखणा सूं वांरौ महातम घटै । अंधारा री चांदणी उघाड़ मांय झांकयां आंख्यां रौ ई कुरब दटै ।

झांझरकै वीलियौ गांव - चौधरी रै वेटा री जांन में सिधावण सारू गवाड़ी सूं वहीर व्हियौ तद खवासण फळसा तांई पुगावण आई । मुधरौ वायरौ । अंधारा रौ अैड़ौ सुहांणौ सरूप तौ कदै ई देखण में नीं आयौ । उणरा परस सूं दोनां रै अंतस में अथाह चांनणी सांचरगी । दोनां री आंख्यां तारा तारा री उजास सवायौ वधग्यौ । फळसा रै मांय ऊभी घर री लिछमी नै निरखण सारू वीलियौ तीन - चार वळा लारै मुड़ मुड़नै जोयौ । अळगा अंधारा रै पार ई उणनै खवा-सण री उणियारौ चांद ज्यूं सुभट पळकतौ निगै आयौ ।

गांव - चौधरी री गवाड़ी सगळा जांनी वीलिया खवास नै उडीकता इम हा के वौ वगत माथै आय पूगौ । जवारड़ा करतां ई चौधरी कह्यौ— वीलिया', थारी ऊमर तौ लांठी ।

चितारणा रै समचै ई होकौ लियां परगट व्हैगौ, जांणै अठै ई लुक्योड़ौ ऊभौ हौ ।

वीलिया रा एक हाथ में होकौ । खाक में चांदी रै तारां सूं गूंथ्योड़ी गेडी । अेक खांधै गमछौ अर बीजोड़ै खांधै सुरंगी रखो ।

इक्कीस रेखळा जुतियोड़ा ऊभा हा । वीलिया रै पूगतां ई थोड़ी ताळ में सगळा ई आप आपरी ठौड़ जमग्या । रासां रै फणकारां वेलिया माथा धूण, पूंछां पाधरी करनै धकै हालिया । घूघरमाळां रै झणकारां वायरा रौ रेसो रेसौ रणक उठ्यौ ।

धर मजलां धर कूचां वेलिया ढांणौढांण भांय वाढ़ता जावै हा । हालतां हालतां बारै नै बारै चोईस कोस रै उपरांत नाडी रै पाखती जांन ढबी । वेलियां नै पांणी पाय घेर-घुमेर बड़ला री ठाडी छीयां बिसाई खावण बैठा । चौधरी कह्यौ— रोटी जीमियां धकै वहीर व्हांला । आटौ, घी, दाळ, मसाला लेय म्हैं अवार पाछौ आऊं ।

पसवाड़ै ई लांठौ गांव हौ । दाळ-बाटियां रै सराजांम सारू चौधरी खांधै खेसलौ राळ गांव कांनी वहीर व्हियौ ।

बांणिया री अेक हाट में सोदौ-सूत वपरावतौ हौ के चौधरी अेक अजोगती बात देखी तौ देखतौ ई रैग्यौ— वांणियां रै घर रौ डावड़ौ । हदभांत रूपाळौ । गळा में आंटा दियोड़ी जीवती नागण । काळी भंवर । दो पुरस लांबी । पण डावड़ा रै डर री जात नीं अर नीं कोई दूजौ ई डरै-भिचकै । तिरस लाग्यां उणनै सोना रा कचोळा में केसर रळायोड़ौ दूध

पावै । गुलाब, चंपा, केवड़ा रा फूल सुंघावै ।

चौधरी मन में सोच्यौ के आज वीलिया री वातां ! वौ सीदौ वपराय खायौ खायौ वहीर व्हियौ । डेरै आयां अेक दूजा नाई नै रसोई री सगळौ सामांन संभळाय, पाधरौ वीलिया रै जोड़ै आय बैठग्यौ । वंडी अनोखी बात देख्यां किणनै खटाव व्है । चिपतां ई खळकाई—खवासजी आज थांरा माळीपन्ना उतर जावणा है । इण वात रौ म्यांनौ नीं बतायां माठियां अर सांकळियां पाछी धराय लूंला । जे म्यांनौ वताय दियौ तौ निगोट सोना रा इण डोरा साथै पांच मोहरां री फूल घड़-वायनै देवूला ।

पछै वौ वीलिया नै वांणिया रै डावड़ा वाळी पूरी बात मांडनै वताई । वीलियौ कीं जवाब नीं दियौ तौ चौधरी मुळकतौ बोल्यौ—होका रा धूवां में अळूझियां लारौ नीं छूटै, आज तौ हाथ, कांन अडोळा करयां ई मांनूंला ।

वीलियौ कह्यौ—माठियां सांकळियां सारू जीव डुळग्यौ व्हे तौ म्हारौ अंगै ई ना कोनी । पण आ वात अणूंती ठावकी है । सगळा जांनी भेळा होय सुणै तौ वात रौ आणंद ई आवै । चौधरी बाबा, आ कोई उबासी कोनीं जकौ अेकला ई खायलौ ।

सगळा जांनी भेळा अेकठ होय बैठग्या । अर वीलियौ बात रौ म्यांनौ बतावण लागौ : सोना रा कचोळा में केसर न्हाखियोड़ौ दूध आपरै हाथां नागण नै पावण वाळौ औ डावड़ौ इणी इज गांव रै किरोड़ीधज सेठां रौ अेकाअेक डीकरौ । सेठ-सेठांणी री ऊमर आज तौ साठां ढळगी । पण जलम सूं ई

तौ अै साठां बारै नीं हा । गुडाळयां हालनै पगां ऊभा व्हिया जद बाळपणौ आयौ । टाबरपणौ ढळतां ढळतां जवांनी सूं साम्हेळौ व्हैतां ईं दोनां रौ व्याव व्हैगौ । वींद री ऊमर उण वगत ही पंद्रै बरस अर वींदणी री इग्यारै । तीन बरसां उपरांत मुकलावौ ई व्हैगौ । अेक बरस ढळियौ । पांच बरस ढळिया । अर यूं ढळतां ढळतां पूरा पच्चीस बरस ढळग्या, तौ ई सेठांणी री कूख नीं उघड़ी । सेठां रै माथा-दाढ़ी में ठौड़-ठौड़ धौळा झांकण लागग्या हा, पण बेटा री आस नीं फळी । माया रौ तौ वांरी हवेली कीं मापौ ई नीं हौ । राज रै खजांनै तुठार आवतौ जद अै सेठ ई लाज राखता । राजाजी आपरै जोड़ै सिंघासन माथै बिठावता ! अनाप-अकूंती माया अर राज में पायौ । पण अऊतिया री मेहणी सूं काळजिये करौत नीसरती । लुगाई री जात होय सेठांणी रै हीयै तौ अलबत गाढ़ हौ, पण सेठां री तळतळावण तौ अेक छिण वास्तै ई नीं मिटती । वै मांय रा मांय धुकता । वांनै इण भांत सासता आंमण-दूमणा देखती तौ सेठांणी रै मन में ई दुख उपजतौ । समझावती के बस परबारी बात रौ सोच करयां ईं कांई सांधो लागै । पछै बिरथा क्यूं छीजौ ? मरयां नीं बेटा साथै चालै, नीं पोता अर नीं बहुवां ।

सेठ ऊंडौ निसास भरनै जबाब देवता — म्हारै हिवड़ा री दाझ म्हैं इज जांणूं । थनै इणरौ बेरौ नीं । राजा रै जोड़ै सिंघासण माथै बैठणिया सेठ रौ लोग तड़कै मूंडौ ई नीं देखै । लोग अपूठा मुड़नै थूकै जद अैड़ौ लखावै के बेरौ-बावड़ी कर लूं । अपांरै लारै गवाड़ी रौ नांवगौ ई ऊठ जावैला । माया

री रुखाळी नीं जलमियां इण माया री कांई कांण ? जठै दांणां री ई सरतन कोनीं उठै टावर अड़थड़ै । अठै आवतां तौ भग-वांन री अकल रौ पींदौ ई उघड़ जावै । माडै विणज-हलीलो करूं, पण म्हनै कांई आछौ नीं लागै ।

लोगां रै कह्यां-कह्यां सेठ घणा ई टूणा-टोटका करया, पूंजी रै घणौ ई धूंवौ लगायौ, पण हींग री गरज ई सरी नीं । हीरा-मोत्यां रै पळका सूं सेठांणी री कूख रौ अंधारौ नीं मिट्यौ ।

अेक दिन वळै इदकी व्ही । आखातीज रै हळोतिये सूंण मनावण सारू अेक जाट आपरै खेतां जावतौ हौ के सेठ सांम्हा धकग्या । जाट तौ धकै पावंडौ ई नीं भरयौ । तीन वळा थूकनै लप पाछौ मुड़ग्यौ । नीं सेठां री कुरब-कायदौ राख्यौ अर नीं वांरी अणगिण माया रौ । सेठां रा पग तौ हा जठै ई चिपग्या । आंख्यां अंधारौ पाथरग्यौ । माथौ अपड़नै उणी ठौड़ नीचै बैठग्या । अैड़ा जीवणा में धूळ । अैड़ी सूनी माया में धूळ । सेवट औ ई दिन देखणौ हौ ! मरयां वांरी माया री कांई दीन व्हैला ? डोलर-हींडा ज्यूं धरती गणण-गणण घूमण लागी । सेठ भंवळ खायनै गुड़ग्या ।

तड़कै हाट-बजारां आवौ-जाव व्हियौ तौ मायापत सेठ धूळ-आंगणै गुड़चोड़ा लाधा । लोगां बायरौ कीनौ । आंख्यां ठाडै पांणी रा छावका दीना । तद सेठां री आंख्यां नीठ आधी-दूधी उघड़ी । उंचाय हवेली लाया । बाव ढोळती सेठांणी नै अटकतां अटकतां नीठ मन री बात बताई । वांरी आखर आखर सेठांणी रै काळजिये खीरा ज्यूं दाझ्यौ । बळता बळता आंसू ढुळकावण

लागा । उण दिन सेठांणी रौ धीजौ ई खळडिखळ व्हैगौ । धणी री आ दाभ कीकर सहै ! कूख नै छळणी तौ हाथै री बात नीं, पण धणी नै भरमावण सारू कीं न कीं छळ करणौ ई पड़ैला । किणी सूं कीं सला-सूत करयां बिना ई वा आपै आपरा मन में अेक जुगत विचारली ।

थोड़ो ताळ पछै सेठां रौ माथौ दबावती वा बोली — थें कळपौ मती । म्हैं अेक मंतर सारूंला । नवमै महीनै इण हवेली थाळ नीं बाजै तौ म्हारै कह्या रौ कदै ई पतियारौ मत करज्यौ । अबै छोज्यां कळपियां तौ मंतर नै जोखौ व्हैला । कौल-वाचा करौ के थें अबै कदै ई आंमण-दूमणा नीं रैवौला ।

सेठ मुळकण री चेस्टा करता थका कैवण लागा — थारी आ बात साची व्है जावै तौ म्हैं अस्टपौर मुळकतौ रैवूं ।

सेठांणी कह्यौ — थारै होठां री पळक सूं ई म्हारी कूख में चांनणौ व्हैला ।

तठा उपरांत सेठ मुळकण लागा सौ वात-बेबात मुळकता ई रैता ।

फगत भरोसा री अेक खास नायण नै सेठांणी आपरा मन रौ भेद दरसायौ । सगळी बात बताय अेक सौ मोहरां री थैली अपड़ावती उणनै भुळावण दी — देख, अपां दो रै सिवाय वेमाता नै ई इण बात री ठा नीं पड़णी चाहीजै ।

नायण भली ही । मोहरां री थैली पाछी झिलावती कह्यौ — औ म्हारौ घर है । फोड़ा पड़्यां मतै ई मांग लूंला । म्हारी अै मोहरां आपरै पाखती अमांनती राखौ । अबै तौ आ बात साच व्हियां ई अै मोहरां लेवूंला । मां रा हिड़दा में

साच व्है तौ कूख रै वारै ई टाबर रौ जलम व्है सकै । कूख रा जाया विचै ई सवायौ ।

सेठांणी नायण री ठोडी रै हाथ लगावती बोली — थारी जीभ नै गुळ । मां रै हिवड़ा रै इण साच री परख करण मारू ई म्हैं अेक नवी कूख सिरजूंला । औ साच बेमाता री कूख रै भरोसै नीं जलमै । इणरी तौ कूख ई दूजी । म्हैं इणी कूख री भाळ करूंला ।

सेठां री मुळकणी तौ उणी भांत चालू ही । सातेक दिनां रै उपरांत अेक दिन नायण दौड़ती दौड़ती सेठां रै पाखती गी । बोली — बधाई में तिमणिया टाळ दूजी बात ई नीं करूंला । सेठांणी रै आसा मंडी । इण हवेली में नवमै महीनै बाळसाद सुण लीजौ ।

अथाग हरख रै कारण सेठां सूं कीं बोलीजियौ कोनीं । बाकी फाटोड़ा नायण रै मूंडा साम्हो इण भांत देखण लागा जांणै गीगलौ वांरै खोळा में इज व्है । पछै बकाई खावता बोल्या — नवसर हार देऊं तौ ई थोड़ौ ।

नायण मुळकती थकी बोली — म्हां गरीबां रै अऊक पड़ै जद मेट, कोयला, चेपौ, मुरड़ सूं हर पाललां । पण सेठांणी रै भांवण पड़्यां आं चीजां सूं नीं धकेला । पेमली बोर मंगावौ, खारकां अर दाखां मंगावौ । गळवांणी, सीरौ, मालपूवा, नींबू री आचार अर अमचूरां री मुकळाई तौ घर में घणी — आपनै सोच करण री जरूरत कोनीं ।

सेठ आखता होय बोल्या — आं हां, अमचूरां-फमचूरां नीं । कठै ई कुथाळ पड़गी तौ गजब व्है जावैला ।

नायण घूंघटा रै मांय मुळकती कैवण लागी — थें मोट्यार आं बातां में नीं समझौ । लुगाई रौ जमारौ घणौ दोरौ पार पड़ै । धन-माया रौ कूटळौ अठै घणौ कांम नीं आवै । खाटी छाछ में अणूंती मिरचां रळायनै ई खावणी पड़ै । मेट री हर आवै जद पिस्ता-बिदामां कांकरां री ई गरज नीं सारै । मुरड़ अर चेपौ मेवा सूं ई इदक मीठौ लागौ ।

'तौ पछै म्हनै पूछण री कांई जरूरत ? थांरै दाय पड़ै ज्यूं करौ । म्हनै कैवौला वै चीजां भंवारां रै मूंडै लाय पटकूंला ।'

नायण अपूठी घिरनै वहीर व्हैगी । पछै सेठजी रै इत्तौ खटाव कठै । धम-धम नाळ चढ़ता पाधरा सेठांणी रै पाखती आया । आंख्यां में नीं वांरै हरख रौ पार हौ अर नीं उछाव रौ । कैवण लागा — म्हारै आणंद रौ आज भगवांन ई कूंतौ नीं कर सकै । सगळी माया साटै ई सौदौ व्हैतौ तौ म्हारी ना नीं ही । इण दुनियां में माया सूं ई घणी वत्ती चीजां व्है; इणरी म्हनै आज ई सावळ जाच पड़ी । बधाई में नव-सर हार देवूंला, नवसर हार ।

थोड़ी ताळ ढबनै वळै कैवण लागा — देखौ घणी भुळा-वण कांई देवूं । सेवट तौ थांरै चेतौ राख्यां ई जमारौ सारथक व्हैला । म्हैं कित्तौ ई चेतौ राखूं तौ कांई व्है ? आं गिवारां री फाकी में आय कोई अेजा-बेजां चीज मत खाय लीजौ । आंरै तौ भाटा ई खटै, पण अपांरी बात न्यारी है । खाटी-छाछ में मिरचां रळाय खायां गीगला रै बळत ऊठ जावैला । थोड़ी डिढ़ता राखजौ । थें म्हारा सूं क्यूं चोज राख्यौ ? सब सूं पैला थांनै ई आ बधाई देवणी ही । देखौ, अबै कैड़ीक

जाब्तो राखो ।

सेठांणी कांई जवाब देवती । अबोली ऊभी री । सेठां री वांणी रै तौ आज जांणै पांखां लागगी व्है । निसंक पूछ्यौ– मेलै माथै व्हियां नै किताक दिन चढ़्या ? सावळ जाच तौ व्हैगी नीं ? म्हैं तौ होवरड़ा नीं सुण्या ! अैड़ी नीं व्है के... ।

सेठांणी बोली— नीं जांणण वाळी बातां सारू क्यूं बिरथा माथौ पचावौ । दूजां 'रै मूंडागै अैड़ी विलळी बातां करज्यौ मती । थांरो तौ कीं कोनीं, लोग म्हारी अकल बखांणैला ।

क्यूं, इण में अकल बखांणै जैड़ी कांई बात ? आखी दुनियां जिण जिणनै थाकगी, अपां तौ किणी री अकल नीं बखांणी ।'

उण दिन पछै सेठ सगळा ई हिसाब फिटा करया । बही में वार, तिथ अटकायनै रोजीना रौ हिसाब राखण लागा । अेक घड़ी बीती, दोय घड़ियां बीती । आ सिंझ्या व्ही । अबै आधी रात ढळी । औ भांभरकौ व्हियौ । औ वळै सोना रौ नवौ सूरज ऊगियौ । माठौ सूरज होळै होळै घणौ चढ़ै । नीठ ढुळकतौ ढुळकतौ मथारै चढ़्यौ । मथारै आय कठै ई रुप तौ नीं गियौ । सिरकै ई नीं । कित्ती मोड़ी सिंझ्या व्ही । आ काळी - बोळी रात ढळला के नीं । अैड़ी नीं व्है के दोय पखवाड़ां तांई सूरज ऊगै ई नीं ' कोई सूंक लेय दिन छोटा करतौ व्है तौ सगळी माया संभळाय दूं । कठै ई भगवांन रूठ तौ नीं गियौ । अेक अेक दिन बरस जित्तौ लांठौ व्हैगौ ! रांम जांणै औ नौ महीना कद पूरा व्हैला । गरीबां रै ई नौ महीना अर धनवंतियां रै ई नौ महीना ! औ कैड़ो अन्याव ? औ भगवांन ई साव ऊंधा

माथा रौ । लखणां बायरौ ।

नित ऊगतै सूरज सेठांणी रै पेट कांनी ध्यांन सूं जोवती । कठै... कठै... आज पेट बधियौ तौ नीं । निरभागियां रै ढोल व्है ज्यूं उफसियोड़ा रैवै ।

केई जुगां रै उपरांत सात्त महीना संपूरण व्हिया । सेठां नै अबै कीं पेट बधियोड़ौ लखायौ । पण अं दो महीना कीकर खीतैला । हाल तौ कुदरत में कीं चूक नीं व्ही । वकै री कुण जिम्मेवारी ओढ़ै ? सेठांणी नै घड़ी घड़ी पूछतौ के थांनै तक-लीफ तौ कोनीं । दिन में दस वळा थावस देवतौ के अबै दिन ई कित्ता रह्या ? थोड़ाक सेंठा रौ... थोड़ाक वळै सेंठां ।

आखा राज में हाकौ फूटग्यौ के सेठांणी रै आधांन रह्यौ । नवमौ महीनौ लागण वाळौ ई है । लाखां रिपियां री निछ-रावळां व्हैला । भिखरां रै मूंडै गुळ बेंटोजैला । कांई ठा हाट-बाजारां उत्ती खारकां के पतासा मिळैला के नीं । पण सेठां रै कांई कमी ! दिसावरां रै मारग गाड़ियां री तीण बांध देवैला । कांनी कांनी जाचक अर कमीण-कारू उण संगळीक दिन रौ हिसाब राखण लागा ।

जगौ-जगौ सेठां रा सुगन लेवण सारू तांखड़ा तोड़तौ । दोय घड़ी रात थकां हवेली रै मूंडागै मिनखां रौ मेळौ ई मच जातौ । सेठ डीसा फाट माथै ऊभा होय सगळां नै ई दरसण देवता । लोग-बाग सेठां री उणियारौ देख्यां सूरज कांनी मूंडौ करता । सिंझ्या रा दीया-बत्ती री वेळा वळै वौ रौ वौ मेळौ । सेठ तौ दरसण देवण रा कोडाया वगत माथै रोटी ई नीं जीमता । आखातीज रै हळौतिया वाळी वात हाल वांरै काळजै

आल्हती ही ।

नवमें महीनै सेठांणी कनातां ताणनै सूयगी । बांमण-पिंडत मुद सेठां वास्तै ई मिळण रौ निखेद करयौ । सेठ मांन्या तौ दोरा, पण सेवट सेठांणी रै घणा थोरा करयां मांन्या । कनातां रै वारै ऊभ घड़ी घड़ी नायण नै समंचार पूछता ।

बांमण-पिंडत वळै टीपणा बांचनै कह्यौ के कालै नवमौ महीनौ उतरण वाळौ है, सेठजी नाळ माथै ई चढ़या तौ जच्चा रै जीव नै जोखौ । जच्चा री टसकणी अर बाळसाद री भणक किणी रै कांनां पड़गी तौ टाबर माथै अणूंतौ भार । सेठांणी रै कह्यां मुजब नायण सेठां नै समझाया तौ वांनै मांनणी ई पड़यौ ।

चांदणी चवदस री दो घड़ी रात थकां टणण-टणण थाळ री रणकारौ उठयौ । हवेली रा चाकर तौ इणी उडीक में आखता ऊभा हा । थाळां माथै थाळां रा रणकारा उड़ण लागा । यारै अड़थड़तौ मांनखौ कांसी री थाळियां घमकावण ढूकौ जकौ अणगिण थाळियां फोड़ न्हाकी । हवा तौ जांणै अधर ई उंचगी । आभौ नवलख तारां समेत खासौ नीचै हुलसग्यौ ।

झालां रै मूंडै निछरावळां व्ही । रिपियां री, खारकां री, पतासां री अर मिसरी-मेवा री । सात दिनां तांई आ री आ घमचक । अै रा अै धूपटा । पण सेठां री माया री तौ कीं छेह ई नीं आयौ ।

टीपणां रा पांना फिरोळीजण लागा । सब सूं पैली राज-ज्यास जका नखतर बांच्या वां में कीं मीनमेख नीं ! सगळा जोसी फगत आ अेक ई वात वताई के टाबर सूरज रै उनमांन

तपैला, पण बारै बरसां तांई अणूंता करड़ा नखतर । कोई भूल सूं ई मूंडौ देख लियौ तौ उणरा जीव नै जोखम ।

अैड़ो जोखम कुण झेलै ? नौ महीना ई बीतग्या — अै बारै बरस उड़तां कांई जेज लागैला । अऊतिया री मेहणी मिटणा रै सागै ई सात्यूं सुख भरपाया । चिमट्यां रै समचै बरस बीतैला ।

कोठ्यां रै मूंडै ई सुवावड़ सांधीजी । पैलड़ा सात दिनां तांई अेक टंक अजमौ अर टंक सोरौ । पछै सूंठ, लोद अर गूंद रा लाडू । बिदांमां रा लाडू । सेठांणी रै सागै हजारूं जच्चावां सारू कोठार खुलग्या । छाबां रै मूंडै सांध्योड़ी सुवावड़ हवेली सूं आठपौर बारै जावण लागी । धनवंतियां रै घरै गोगलौ जलमियां अै थाट व्है । जलम दुखियारी जच्चावां रै जापै खाटी राबड़ी ई पीवण सारू हाथ नीं आवै । उण नरक-वाड़ा बिचै तौ बांझपणौ घणौ सिरै । गरीब क्यूं तौ ब्याव करै अर क्यूं कोकळ जिणै । वां बिचै तौ गडूरड़ी रा जाया घणा सोरा । अबै ठा पड़ी के घर में नवा-मांनखा रै जलम रा कांई थाट व्है ।

उठी आखा राज में खुसियां री घमरोळ मच्योड़ी ही अर अठी कनातां रै मांय ऊंची मेड़ी में सूती जच्चा-रांणी अनोखी गताघम में अळूझियोड़ी ही । उण दिन आखा-तीज रै हळोतियै अऊतिया रै अपसूंण रा डर सूं जाट थूकनै तुरंत पाछौ वळग्यौ तौ सेठां री सुध-बुध माथै जांणै वांण ई वैगौ हौ । माथौ झालनै झरड़ करती रा हेटै बैठग्या हा । पछै भंवळ खाय धूळ-आंगणै ई गुड़ग्या । किरोड़ां री माया आपरै ठायै-

ठिकाणै मंवारा में जाव्ता सूं पड़ी ही अर अमूंझणी आंखोड़ा सेठ आपरै ठायै मारग में गूंचळी व्हियोड़ा पड़या हा । बत्तीसी जुड़ियोड़ी । आंख्यां फाटोड़ी । मूंडा माथै माखियां ओळा-दोळा भंवती मायापत सेठां रौ गसको देखती ही । तड़कै आवौ-जाव व्हियां लोग वांनै उखणनै लाया । आ कांई सिग्या व्ही ! आ कांई गत विगड़ी ! अणगिण माया सूं कांई सांधी नीं लागी । अढार माया रौ थावस अर जौ कीं कांम नीं आयौ । सेठां रै गळगळै कंठां सगळी बात सुण्यां सेठांणी रौ रूं रूं रोवण लाग-ग्यौ हौ । उण दुख री वेळा बापड़ी दो आंख्यां रोयनै कित्तीक रोवती ! वांरी जिनात ई कांई ही ! सेठांणी मनाग्यांना सोचण लागी के धणी रै हींया रौ औ दरद कीकर मेटणी आवै । के तो उणरी कूख फळै के धणी साथै छळ करै ! उणनै भर-भायोड़ी राखै । उण वेळा उण छळ सूं सिरै अर पवीत बात दूजी कीं नीं ही । पण उण दिन री छळ अठै आयनै छूटैला आ बात सपना में ई नीं जांणी ही । अर हाल व्हियी ई कांई ? अबै इण छळ नै कीकर केवटै ? कीकर सेवै ? कित्ताक दिन छांनै राखै । धणी नै विलमावण री औ चाळौ सेवट कदै ई न कदै ई तौ चौड़ै व्हैला इज ! जद सेठजी री कांई दुरगत व्हैला ? अंड़ा दुख सांम्ही बावड़ी मौत री दुख तौ कीं दुख ई कोनीं । पण सेठांणी आगै उण दिन तौ दूजी कीं उपाव ई नीं हौ । वा कांई करती ? वौ जीवणा में जीवणी थोड़ी ई हौ । पण ईछ्ना करयां मौत ई कद आवै ? इण छळ रै टाळ जीवण री दूजी मुदार ई कांई चुणती ! पण औ मुदार कठै जाय छूटैला — कीं बेरो नीं । इण छळ रै खोळै जीवण रौ घोड़ो

घणौ तौ आणंद आयौ । पण औ आणंद सेवट निभैला कित्ताक दिन । जच्चा रै भरम रा इण अखूट आणंद नै बापड़ी साचैला जच्चावां हजार वार छूटापौ व्है तौ ई जांण नीं सकै ।

उण दिन तौ साचा मन सूं सेठां रै सुख री खातर औ ठागौ रचियौ हौ । पण इण ठागा सूं इदक सुख तौ सेठांणी सारू ई दूजौ कीं नीं व्है सकै ! जीवै जित्तै कीकर ई ठागौ निभ जावै तौ जीवण रा लाख-लाख सुख भरपाया । साचैली मां बणणा बिचै मां बणण रा मंसोबां में जित्तौ सुख अर आणंद है—उत्तौ सुख अर आणंद तौ दुनियां री किणी चीज में कोनीं । नीं चकवा राज में, नीं अकूंती माया में अर नीं लांठा कुटम-कबीला में । औ भरम ई दुनियां में सबसूं सिरै । अमा-वस री काळी-बोळी रात रा अथाग अंधारा में इण बात री आस के तड़कै सूरज ऊगैला अर उणरै ऊग्यां औ अछेही अंधि-यारौ अेक छिण में विणसैला—जित्तौ इण आस में सुख है—उत्तौ साचैला सूरज रा तपता गोळा में कठै !

परण्या-पांत्या मोट्यार-काटी जीवता बेटा रौ धांमलौ ई माईत छाती-माथा कूटता सहै । सेवट आपरै हाथां ई वै आपरा आंसू पूंछै । जाया बेटा नै हाथां दाग देय मसांण सूं पगां हाल जद बाप जीवतौ पाछौ घरै पूग जावै तौ पछै रोवणा-रींकणा रा ढपलां में कीं आंणी-जांणी नीं । औ तौ सै स्वारथ रौ कूका-रोळौ । बारै दिनां रै उपरांत होळै-होळै मतै ई सै बातां रेजलै पड़ जावै । खावणौ-पीवणौ, हंसणौ-मुळकणौ, कमावणौ-थुड़णौ अर सोवणौ-जागणौ । पाछौ वौ रौ वौ हलीलौ अर वौ रौ वौ अड़खंजौ । पण औ भरम रौ डावड़ौ मरयां

तौ माईतां री धांमळौ कदै ई नीं मिटै । माईतां रै मरयां ई वांरा आंसू नीं खूटै । इण डीकरा रै मरयां तौ माईतां री वळयां पछै ई फंद नीं कटै । गंगाजी में घाल्यां ई वांरा फूल बरसां लग रोवै । मसांणां में जुगां-जुगां वांरी भसमी दाझै ।

अबै तौ आपरै बस पूगतां औ भरम निभावणौ ई पड़ैला । पण औ भरम अबै भरम कठै रह्यौ, औ तौ जीवण रौ साचैलौ मरम ! भरम व्हैतौ तौ बिना कूख फळयां सेठांणी रै हांचळां पांनौ कद आवतौ ! सेठ आपरा साच में मगन अर सेठांणी आपरा भरम में मगन ही । सूरज आपरा ऊगणा-आथमणा में मगन हौ । रितुवां आप-आपरै गेड़ा में मगन ही । बादळा आपरी गाज, आपरी बीजळियां अर आपरै बरसणा में मगन हा । हरियाळी आपरी लील में, चांद आपरी चांदणी अर आपरी छीजत-वधत में मगन हौ । अर दुनियां री मांनखौ आप-आपरा छातोकूटा में मगन हौ ।

अेड़ा मायपत सेठां रै डावड़ा सूं कुण आपरी बेटी रौ सगपण नीं करणौ चावतौ । कांनी-कांनी सूं सनमन रा समचार आवण ढूका । बावळौ सेठ तौ आवतौ जका नै ई हुंकारौ भर देतौ । नायण रै मारफत सेठांणी वांनै नीठ समझावती के वै यूं कांई कालायां करै । डावड़ौ तौ अेक अर वै किणी नै ना नीं दियौ । वारै बरसां अै करड़ा नखतर तौ टाळणा ई पड़ैला । पछै तौ सेठ किणी नै हुंकारौ नीं भरचौ ।

सेठांणी केई वळा रात रा आधी ढळियां छात माथै घूमती । चांद नै देख्यां उणनै लखावतौ के औ इज तौ उणरी बेटी है । आभै चढ़ियौ चांदणी बरसावै । कदै ई झिरोखा सूं ऊगता आथ-

मता सूरज नै देखती तौ लखावतौ के उणरौ बेटौ तौ इण भांत ऊगै अर आथमै । भलां इणरी होड़ कुण कर सकै !

यूं करतां करतां सुख रा वै बारै बरस तौ हांकरतां हत्था-ताळी देय अेक छिण में बीतग्या । वळै सनमन सारू समाचार माथै समाचार आवण लागा । सेठांणी नै वळै अेक बात उपजी । नायण रै साथै कैवाड़ियौ के जिण घर अेक ई बेटी व्है, ब्याव व्हियां रै उपरांत सौळै बरसां लग धणी रौ मूंडौ नीं देखै । चांद-सूरज नै आपरौ धणी मांनै । उणरै सागै ई सावौ कबूल व्हैला ।

समझणां नै समझणौ अर काल्हां नै काला मिळ ई जावै । सेवट अेक तोटायला बांणिया रै घरै अेक अैड़ी डावड़ी मिळ ई गी । दायजौ गिणौ तौ वा कूंकूं किन्या अर वींदणी गिणौ तौ वा ई कूंकूं किन्या । सूरज हथाळी में लेय सोध्यां ई आखा संसार में उण जोड़ री दूजी गुणवंती अर रूपाळी डावड़ी मिळ जावै तौ घरवाळा सगळा सेठां रा चोटी-वढ्या हाळी बण जावै । घर रौ दूजौ ठरकौ कोनीं जकौ वींटी-दायजौ कठा सूं देवै !

बारै बरस यूं घड़ी-पलकां में बीतग्या तौ पछै चार वळै बीततां कित्तीक जेज लागती । गाजां-बाजां, ढोल-ढमंकां रै डाकै सेठां रै बेटा री जांन चढ़ी । रथ, रेखळा, वेलां अर बांसिया तांगा । बळदां माथै सुरंगो झूलां । पचरंगा झळेवड़ा । कसूं-बल नाथां । गळां घूघरमाळ ।

अेक सोना रौ रथ हवेलो रै सिरै मोड़ै आय ढब्यौ । उण वेळा ई सेठांणी किणी चिड़ी रा जाया नै वींद रौ उणियारौ तौ अळगी बात उणरी छींया तक नीं भेंटण दी । सेठांणी

अर नायण दोनूं मिळनै आटा री अेक लांठी लोथ बणाई। भरपूर डीगा मोट्यार रै विरोवर। हाथां ईं उण लोथ रौ आदमी ठायौ। रेसमी जामौ पैरायौ। नारंगिया पाग। पगां वींदो-लियां। गळै नवलखौ हार। कांनां मोत्यां जड़ी सांकळियां। अमोलक नग जड़ो वींठियां। माठियां।

सेठांणी लोथ रा इण वींद नै खोळा में लेय रथ चढ़ी। नायण नै पाखती बैठांणी। जांन वहीर व्ही जणा इण विध खंख रा गोट ऊठिया जांणै धरती फाड़ बादळा ई बादळा बारै नीसरिया व्है।

सेठांणी पाळगोटी मारयां रथ में बैठी ही। मुखमल री वेल रै मांय तावड़ा रौ रेसौ ई आवण री ठौड़ नीं ही। खोळा में आटा री लोथ रौ डावड़ौ। वींद वणियोड़ौ। जांन तर-तर धकै वधै। पण सेठांणी नै धकला अेक छिण री ई सुध-बुध नीं ही। परतख छिण में ईं उण वास्तै तीनूं काळ घुळियोड़ा हा। अर वा खुद आपरा भरम में डूब्योड़ी ही। हांचळां पांनौ आयोड़ौ हौ। सगळी कांचळी दूध सूं भरीजगी तौ ई उणनै कीं चेतौ नीं रह्यौ।

दूजै दिन सूरज री उगाळी जांन अेक वावड़ी माथै ढवी। पसवाड़ै ई अेक लांठौ वड़लौ। कमोद व्है जैड़ौ पांणी। जाडी छींया। दांतण-कुल्ला, सिनान-संपाड़ा अर रसोई वणावण सारू इण सूं सांतरी रमणीक ठौड़ वळै कांईं व्है। रोट्यां जीम-जूठ थोड़ी ताळ विसाई खायनै धकै वहीर व्हियां सदियै-सदियै ठायै पूग जावैला।

वींद वाळा सोनल रथ रै टाळ सगळा जांनियां हेटै उत-

रया । जणी-जणौ आप-आपरा नित-नेम में अळूझग्यौ । सेठ अळगा ऊभ जोर सूं हेलौ मार्यौ तौ नायण नीचै उतरी । सेठांणी नै तौ आपरै भरम री समाध इज लाग्योड़ी ही । आप सूं बारै वाळी दुनियां रौ उणनै कीं ग्यांन इज नीं हौ ।

उण बावड़ी में नाग-नागण रौ वासौ । बावड़ी रै पाखती हाका-हाक, घूघरमाळां री रणकारां माथै रणकारां, वेलियां रौ धड़ूकणौ सुणनै बारै आया । अैड़ौ नजारौ तौ आज पैली कदै ई नीं देख्यौ । किरणां रै परस सूं कसूंवल झूलां पळका पाड़ती ही । सोना रौ रथ तौ जांणै खुद ई छोटौ-मोटौ सूरज व्है, इण भांत पळापळ करतौ हौ । आंख्यां ई माथै नीं टिकती । बावड़ी सूं थोड़ी अळगी मांय रथ छूटौ हौ । नागण कैवण लागी—जांन व्है तौ अैड़ी व्है । अैड़ी जांन रौ वींद रांम जांणै कैड़ौ व्हैला ! म्हारौ तौ देख्यां बिना मन नीं मांनै ।

नाग कह्यौ—थामें आ इज तौ लांठी खोड़ । जकी बात देखै उणी सारू मन डुळायलै । मिनख अर सांपां रौ नातौ जांणती थकां क्यूं अजांण बणै । लोडा पटक पटक विगदियौ कर न्हाकियौ तौ थूं तौ जीव सूं जासी अर म्हारौ घर भाग जासी । क्यूं कालायां करै । जांन अळगा सूं ई देखली जकी सखरी बात ।

नागण तौ फुण धूणती बोली—आं हां, अेकर वींद नै देख्यां बिना म्हनै तौ रंगत नीं व्है ।

'थूं जांणै अर थारी रंगत जांणै । अबै समझायां थूं मांनैला थोड़ी ई । देख, सावळ चेतौ राखनै जाजै । म्हैं अठै ई उडीकूं । थारै आयां ई मांय चालांला ।'

नागण तौ पछै अेक छिण ई उठै नीं ढबी । सळवळती पाघरी वींद वाळा रथ में गी । मां रौ हेज अैड़ौ व्है ! इत्ता लांठा लड़दा नै खोळै लियां बैठी । पण वींद री आंख्यां इण भांत पायरचोड़ी क्यूं ? अर मां इण भांत समाध में क्यूं बैठी ? नागण आकरी मीट गडाय सावळ ध्यांन सूं जोयौ । अरे ! आ तौ आटा री लोथ । औ कांई तोतक ! कीकर तोरण बांधी-जैला ! कीकर फेरा व्हैला ! वापड़ी वींदणी रा अभाग ।

नागण रै काळजै बळत ऊठी । मतै ई उणरी आंख्यां जळजळी व्हैगी । डाढ़ां में विस री ठौड़ इमरत सांचरग्यौ । इण विध घात करण री कांई जरूरत ! नाग रै पाखती आय गळगळा कंठ सूं वोली — जांन तौ जैड़ी रूड़ी-भली है, वींद वैड़ौ ई माड़ौ । साचांणी उण में तौ जीव ई कोनीं । आटा री लोथ सूं ठायोड़ौ । म्हारो तौ अकल ई कांम नीं करै के औ, कांई खिलकौ !

नाग कह्यौ — इण दुनिया में घणी ई नवादी वातां व्है, थूं कि, किण रौ सोच करैला । अै जांनिया जांणै अर आंरौ कांम-धांम जांणै । भगवांन री लीला रौ कीं पार व्है तौ इण खटपटिया मिनख री लीला कोई पार व्है ।

'पण म्हारौ तौ उण वींदणो सारू पेट वळै । वापड़ी कांई आस लगायां उडीकती व्हैला अर कांई पटकी पड़ैला । थें अपरवळी हौ, कीं न कीं जुगत करौ । म्हारै उनमांन थांरौ मन पावरौ व्है तौ आ वात कीं भार कोनीं । थें कदै ई म्हारौ कह्यौ नीं टाळ्यौ, आ वात ई भरै पटकौ । वळै कदै ई आड़ौ नीं लेवूं । कीकर ई करनै वींद में जीव घालौ । नींतर जीवूं

जित्तै म्हारी दाझ नीं मिटैला ।

नाग दो तीन फुफकारा देय कैवण लागौ — अबै थारी घाल्यां कांई करूं अर कांई नीं करूं । जचै जद ई आड़ौ ले लै । नीं मांनू तौ भख पड़ै नीं अर मांनू तौ पछै कित्तीक बातां मांनूं । कीं माठ ई तौ व्हे !

पछै थोड़ी ताळ सोचनै फेर बोल्यौ — उपाव फगत अेक इज है । म्हारौ जीव इण में घालूं तौ आ लोथ जीवती व्हे । पछै कजिया करचा तौ सावळ सोच लीजै । अैड़ौ रूपाळौ वींद तौ कोई देख्यौ-सुण्यौ ई नीं व्हैला । वींदणी सोचैला के जोड़ी रौ कोई रूपाळौ वर तौ मिळियौ ।

आ बात सुणतां ई नागण तौ अणूंती राजी व्ही । आगौ-लारौ सोच्यां बिना ई नाग नै आपरी दवायती देदी । बोली: तौ पछै बाट किणरी जोवौ ? इण पछै कदै ई आड़ौ लेवूं तौ म्हनै कै दीजौ ।

नाग अेकर वळै खरायौ — देख पछै कांयस करी तौ थारी थूं जांणै । म्हनै भूंड मत दीजै । अेकर निरांत मन वळै सावळ सोचलै ।

'अबै घड़ी घड़ी कांई सोचणौ । म्हनै तौ अेकर सोचणौ हौ जकौ सोच लियौ !'

इण जवाब रै उपरांत नाग रै सोचण सारू ई कीं बात बची नीं । सळवळतौ सोना रा रथ सांम्ही हालियौ । सगळां री निजर बचाय रथ रै मांय बड़ग्यौ । साचांणी नागण री परख तौ कूड़ी नीं ।

पछै तौ अजीब ई रासौ व्हियौ । नाग रै अलोप व्हैतां

ई लोक में जीव नांचरियौ । उणरै मूंडा सूं पैलौ ई बोल खण-कियौ — मां, मां !

मां री समाध तूटी । सपनौ जांण अजेज आंख्यां खोली । वेटा रा उणियारा सूं वेल में उजास व्हियोड़ौ । गळा में हाथ घाल वळै वोल्यौ — मां, मां !

वेमाता रै हाथ-वसू ई अैड़ौ कोई मापौ कोनीं जकौ मा रै उण आणंद री कूंतौ व्है सकै । उणरा तौ हजार जलम सुफळ व्हिया । हिवड़ा में अणगिण कंवळ खिलग्या । उणरै भरम री ठीकरी सेवट मूंडै वोल्यौ । घापनै हांचळ चूंघ्या ।

मां वेटौ दोनूं अकेण सागै रथ सूं वारै निकळिया । सेठ तौ उठीनै ई मीट गडायां ऊभा हा । अेकर झटकौ पड़्यां विस्वास नीं व्हियौ । आंख्यां मसळनै वळै दूजी वार जोयौ । पछै तौ सांम्ही न्हाटा । वेटा सूं गळवत्थां मिळै उण पैला वेटी पगां धोक देय दंडौत करी । वाप रा चरणां में सात वळा माथौ निवायौ । वणी-लुगाई अेक दूजा री आंख्यां में आंख्यां गडाय जोवण लागा, जांणै दोनां री जोत मांहोमांह वदळीजगी व्है । वापड़ी वांणी री कांई तणकौ जकौ अैड़ी वेळा लिक-लिक करै । मूंन जद-कदै वांणी रौ कांम करण लागै तद वांणी रौ नाळवौ चिप जावै । गळा सूं अेक आखर ई वारै नीं निकळै ।

वींद नै देख्यां नागण नै कम हरख नीं व्हियौ । इमरत भरी आंख्यां वा उणनै निरखती इज गी । जांनियां री नीं तौ अकल कह्यौ करचौ अर नीं आंख्यां । अैड़ौ रूप जोवण सारू आंख्यां रै आं नाकुछ डोळां सूं पार नीं पड़ै । सूरज जैड़ी-

जैड़ी सौळै आंख्यां चाहीजै ।

जांन तौ पछै अेक छिण ई नीं ढबी । वेलिया जोत धकै खड़िया । बावड़ी री पाज माथै फुण ऊंचौ करयां नागण टुग-टुग वहीर व्हैती जांन नै देखती गी ! आज़ पैली नाग-नागण रौ कदै ई बिछोव नीं व्हियौ. । अर आज व्हियौ तौ ई अैड़ा सिरै अर पवीत कांम सारू । नागण अंगै ई आंमण-दूमणी नीं व्ही । तीजै दिन ई तौ जांन पाछी वळैला । दो दिनां में अैड़ौ कांई खाटौ मोळौ व्है । पण बावड़ी रौ वासौ उणनै सूनौ-सूनौ अर अळखावणौ लागौ ।

अर उठी जांन रै डेरै अर मांडा में खुसियां री घमरोळ माची ही । जैड़ी वींदणी वैड़ौ ई वींद । दोनूं अेक दूजा सूं सवाया रूपाळा । ब्याव री लाखीणी रात दोनां रै उणियारा री आब सूं पीलजोतां रौ उजास मगसौ पड़ग्यौ हौ । वींदणी रै होठां रौ इमरत पीवतौ वींद सोचण लागौ के नागण रौ आड़ौ तौ जबरौ भरै पड़चौ । लुगाई रै अंग-रस रौ तौ सवाद ई दूजौ ! चेतौ व्हैतां थकां ई कीं चेतौ नीं रैवै ! चेतौ नीं व्हैतां थकां ई आंणद रौ सगळौ चेतौ रैवै । मिनख रै इण सुख रौ तौ भगवांन ई ईसकौ करतौ व्हैला !

जांन पांच दिन सूं पाछी वहीर व्ही । सोना रा रथ में मां री ठौड़ वींदणी बैठी ही । आणंद आणंद में माहौमाह कित्तौ भेद व्है ! मां रै खोळा रौ आणंद दूजौ, वींदणी रै सांढ़ा रौ आणंद दूजौ । दोनां में अंगै ई मेळ नीं ।

इण आणंद रै बिचाळै वींदराजा नै नागण रौ ध्यांन आयौ ! वा मरयां ई राड़ करयां बिना नीं मांनै । बावड़ी

थूं टळनै नीसर जावां तौ सेवट कित्ताक दिन् धकैला ।
इण विनै तौ उणनै सावळ समझायां कदास वातड़ी कीं ठांणै
बैठे तौ बैठे । सेठ-सेठांणी री मन ई बावड़ी माथै ढबण
रौ हौ । बावड़ी री जात दिरावैला । उठै ई तौ वांरी-जमारी
सुफळ व्हियौ हौ ।

अणूंता कोडाया होय सगळा ई बावड़ी रै ठायै जांन
ढाबी । पाज माथै उडीकती नागण जांन रै पाखती आवतां ई
मांय वड़गी । बिछोव रा दो दिन वा कित्ता दोरा बिताया
हा । अेक अेक छिण भाखर सूं ई वत्तौ भारी व्हैगौ हौ । बींदणी
री भलाई सजी जितरी ई मोकळी । खुद री घर वाळ दूजां
सारु चांनणी कीकर व्है !

बींदराजा नागण री सुभाव आछौ तरै जांणतौ के वा है
तौ घणी ई भली, सालरा अर समझणी ! पण पतिवरता अणूंती
वळै । पांच दिनां सूं निरणी-तिरसी छीजती व्हैला ! घणी
रौ बिछोव उणनै अंगै ई नीं सुहावै । नेम-धरम रा घणा
हपला कांई कांम रा । बड़भागण मांनैला के नीं । है तौ
बापड़ी अंगां भोळी । भरमायां भरमीज सकै । भोळी नीं व्हैती
तौ औ सौभाग ई कीकर सजतौ ! बींदराजा आं वातां री
आळोच करतौ बावड़ी रै मांय वड़ग्यौ । धणी नै देखतां ई वा
छवरां छवरां रोवण ढूकी । रोवती रोवती ई कैवण लागी—
म्हारा दुख री थांनै थोड़ी-घणी ई सोय व्हैती तौ थें दो
दिन वत्ता नीं ढबता ।

बींदराजा कह्यौ— बावळी, जांन नै विदा करणी तौ वांरै
हाथ ही । म्हैं कांई जोर करतौ । थूं इज तौ सगळा कवाड़ा

करचा, अबै म्हनै ई भांडै । म्हैं थनै पैला नीं बरजियौ ? पण लिछमी थूं नीं मांनी तौ सेवट म्हनै मांनणौ पड़्यौ । म्हारा जीव री थनै थोड़ी-घणी ई जाच व्हैती तौ म्हनै इण भांत ओळबौ नीं देवती । थारौ बिछोव इण भांत कळपावैला, अैड़ी तौ नीं जांणी ही । अस्टपौर थारौ उणियारौ आंख्यां सांम्ही सुभट घूमतौ !

धणी रै मूंडा सूं अै बोल सुणतां ई भोळी नागण री सगळी दाझ मिटगी । अंतावळ दरसावती पूछ्यौ—साचांणी थांनै म्हारी इत्ती ओळूं आवती ? म्हारा बड़भाग । अबै पाछौ खोळ्यौ छोड़ौ । राज रा दरसण करूं तौ हीयै सांयत वापरै ।

वींदराजा मूंडौ उतार कैवण लागौ—म्हैं तौ पांच दिनां में ई मिनख-जमारै रा सूगलीवाड़ा सूं आंती आयग्यौ । थारी कित्ती हर आवती । पण अेकर सोच तौ खरी के वींदणी नै इण विध छोड़णा सूं तौ सांम्ही वत्तौ पाप लागैला । माईतां री तौ अठै ई ढिगलो व्है जांणी है । वींदणी इणी ठौड़ सती व्हैला । थूं कैड़ा कावळ फंदाया । उण दिन इत्ती दया करी तौ थोड़ा दिनां तांई वळै गाढ़ राख । म्हारौ ई थारै बिना घणौ ई काळजौ बळै, तड़फै, पण जोर कांई करूं । तीन महीनां रै उपरांत, म्हैं दाव-घाव करनै दौड़तौ आवूंला । थूं पालापूलो करी तौ आपरौ माजनौ गमावैला ।

नागण कह्यौ—अेकर भूल व्हैगी तौ अबै घड़ी-घड़ी म्हारै हाथां भूल व्हैला, थें म्हनै इत्ती भोळी जांणौ हौ कांई ?

नागण रै भोळा-पणा में तौ अंगै ई कोर-कसर नीं ही । धणी माथै आंधी होय विसास करती । वळै विसास कर लियौ ।

उणरो मन नीं हो । आं सुखां रा पाछा सपना ही कठै ? नीठ नाग री जूंण सूं लारो छूटो । नागण बोली — म्हारी आंख्यां थांरा काळजा में गडयोड़ी है, क्यूं कूड़ बोलो ? औ ढोल्यौ दर आ बींदणी छोड़ण री तौ थांनै सपनौ ई आहुंजी लागैला । पछै चालण सारू आखता मत व्हौ । म्हारै हुंकारौ भरयां पछै भेळा-भेळा व्हौला । थें आ बात आछी तरै जांणो के म्हनै मारणी थांरै ई बस री बात कोनीं, नींतर इण अकरम सारू ई नीं चूकता । पण म्हारी बात म्हैं ई केवटूंला । थांनै दोसण नीं दूं । औ सेजां री सवाद अैड़ी इज व्हिया करै ! म्हैं ई इण सारू काळपूं अर इण खातर ई थांरा पग पाछा पाछा पड़ै । पण अेक बात पूछूं उणरी साच जवाब दीजौ के कांई साचांणी औ रंगमहल छोड़ थें म्हारै साथै चालण नै त्यार हौ ?

अबकी उणरै मूंडै भूठ नीं निकळियौ । नीची धूण करयां बोल्यौ—हां, आ बात तौ थारी साव साची, अठै म्हारौ मन रमग्यौ ! म्हारा सूं अबै औ सुख नीं छूटै ।

नागण री आंख्यां डब-डब भरीजगी । बोली — आ साची बात सुण्यां म्हनै अंगै ई दुख नीं व्हियौ ! म्हारै हाथां बींदणी नै सुख मिळयौ तौ उणनै पाछौ भपटूंला नीं । म्हारी बस पूगतां थांरौ सुख ई बधाऊंला । इण रंग महल में आयां म्हारा मन में अेक नवौ ई ग्यांन सांचरयौ । फगत तीन दिन री मोलगत चावूं, थें बोला-बोला देखता रैजौ ।

सगळी बात री दारमदार आटा वाळी लौथ माथै । मां नै पूछयां बिना कीं छांण-बीण नीं निकळै । धणी रै रंग-महल सूं बारै निकळतां ई नागण तौ पाधरी सेठांणी रै पाखती

पूगी । नायण अर सेठांणी माहौमाह वंतळ में मगन । दो पुरस लांबी नागण नै देखतां ई हाकौ करण वाळा हा के नागण कह्यौ — म्हारा सूं डरौ मती । कीं हांण नीं पुगावूंळा । फगत अेक बात पूछण नै आई — के थें कदै ई इण बात माथै ध्यांन करचौ के आटा री लोथ वाळा बेटा में अचांणचक जीव कीकर सांचरचौ ?

नागण रै मूंडै आ बात सुणतां ई दोनां नै धीजौ व्हैगौ । सेठांणी कह्यौ — म्हे अबार आ इज बात करता । घणौ ई माथौ लड़ायौ पण कीं सार नीसरचौ नीं ।

नागण मुळकनै बोली — आज म्हैं वौ इज भेद बतावण सारू आई हूं ।

सगळौ भेद सुण्यां दोनां रै हीयै इमरत सांचरग्यौ । नागण नै गळै लगाय सेठांणी घणी ई रोयी । पण वै दुख रा नीं हरख रा आंसू हा । आंसुआं टाळ उण हरख रै परगट होवण री दूजी कीं जुगत ई नीं ही ।

पछै सेठांणी धुरापेड सूं लेय ठेट बावड़ी तक री बात मांडनै बताई । बात सुणती जावती अर नागण रोवती जावती ! आंसुवां रै उण इमरत रै पांण ई तौ हाल आ दुनियां बच्योड़ी, नींतर कदै ई पोखाळौ व्है जातौ ।

पछै सेठांणी नीं तौ सेठां सूं चोज राख्यौ अर नीं वींदणी सूं । सुणतां ई दोनूं आक-वाक ! नीं हरख रौ पार अर नीं इचरज रौ ।

सेठांणी रै खोळा में बैठी नागण ऊंचौ फुण करनै वींदणी रै सांम्ही जोयौ । कैवण लागी — उण दिन तौ फगत सुहाग

री मांग भरी ही, आज मोत्यां टाळ काढ़ूंला ।

सेठांणी नागण रै माथै हाथ फेरती बोली — थूं इज तौ म्हारै घर री खास लिछमी है । इण हवेली रौ वासौ छोड़ण री जे बात ई करी तौ धांन-पांणी नवै दांतां ई खाऊंला, सोगन लीजै ।

नगळा घर वाळा नागण नै वडी बींदणी ज्यूं वधाय घणी ई उच्छब करयौ । वळै अलेखूं रिपियां री निछरावळां व्ही । उण दिन सूं वा नागण उण हवेली री बडी-बहू बणगी । दिन रा धणी रै गळा में लटूम्योड़ी रैवै । रात रा लुगाई री मग धारलै । दोनूं बींदणियां में जबर गाढ़ौ हेत । अथाग प्रीत । अेक दूजा रै सुख री आप सूं सवायौ ध्यांन राखै । चांद रै उणियार दोनूं बींदणियां रै आज दो दो घण रूपाळा गीगला !

जिण नागण री डाढ़ां में विस री ठौड़ इण भांत री इमरत व्है, भलां उण सूं कुण डरै-भिचकै । मौकौ पड़्यां उण सागै टाबर रमै । लुगायां इणनै पूजै । धूंप खेवै । सिंदूर री टीकियां देवै । तद सोना रा कचोळा में केसर रळायोड़ौ दूध पावणा में किसी बड़ी बात । आ नागण तौ अैड़ी सु-लखणी के मरयां मिनख नै डसै तौ पाछौ जीवतौ व्है जावै । इण भांत रौ वंस वधियां ई मानखौ सुख-सांयत री घणी वर्णेला ।

होकौ गुड़गुड़ावतौ बीलियौ-खवास गांव-चौधरी रै मूंडा सांम्ही देख कैवण लागौ — हाट-बाजारां जिण अजोगती बात सूं थांनै इत्तौ इचरज व्हियौ उणरौ औ म्यांनौ है । समझ-परखांण इण में सार लावैला । आखी बात रै विचाळै कुण

ई हुंकारौ नीं दियौ, अबोला बैठा सुणता रह्या, आ घणी आछी बात। इण सूं ई बात रा महातम री परख व्है। अर म्हारी आदत ई खोड़ीली— बात रैं बिचाळै हुंकारौ म्हनै अंगै ई नीं सुहावै ! यूं हुंकारौ बात रौ सिरै बणाव, पण म्हारै रस नीं बैठै। लोगां रौ जीव नीं दुखावूं, इण वास्तै वै देवै सौ ई राजी राजी कबूल कर लूं। पण अै बातां तौ अमौ-लक ! थांनै दीसै सोना रा अै डोरा-फूल ! कोई आखर दीठ मोती भेंट करै तौ ई नीं मांनूं। किणी नवी बात नै सुणायां वीलियौ खवास वौ सागै मिनख नीं रैवै। बदळतौ जावै। थें तौ फगत म्हारौ उणियारौ ओळखौ, म्हारौ अंतस नीं पिछांणौ। अबै धापनै रोट्यां जीमौ। डकारां लौ। चळू करौ। आं झीणी बातां रै मरम री परख, थां लोगां रै बस री बात नीं। जिण गांव नीं जांणौ उणरौ मारग क्यूं पूछणौ ?

देवाळा री बापौती

आ बात बीज जित्ती जूंनी नै हरियाळी अर फळ-फूलां जित्ती नवी । आ बात बादळां जित्ती जूंनी अर बिरखा जित्ती नवी । आ बात चांद जित्ती जूंनो अर चांदणी जित्ती नवी है ! अेक ही बांमण । [illegible]ना सास्तरां रौ पिंडत । ग्यांनी । संतोखी । आपरंगी । नेपट थाकल अर ढोळै बैठ्योड़ी गवाड़ी । पांच जणा री भागीगरी । अेक घरवाळी अर तीन धीवड़ियां । टंकोटंक नीठ धाको धकतौ ! बांमण नितनेमी हो । तड़कै दो घड़ी पूजा-पाठ करतौ । सिझ्या बांचतौ । जूंनो पोथियां बांचतौ । गुजारा सारू भीख मांगतौ । मिनखां री दुनियां में अबग, ओछी, मळीच, कूड़ौ अर कुलालची व्हियां बिना कमाई नीं व्है । मिनख होय जानवरां सूं ई गियौ-बीतौ व्हियां माया री जुगाड़ व्है । मिनखीचारी राख्यां फोड़ा ई पड़ै । उण बांमण रै मरचां ई झूठ नीं बोलण री आखड़ी । तद कमाई री तौ भरतन ई कठै ? बांमणी नित कड़मड़ करती । कमाई सारू घोदावती । बड़का-तड़का करती के यूं ठाली बैठ्यां कीकर पार पड़ैला । धीवड़ियां तौ नित ऊगतै सूरज कीं न कीं डील करै । अर घर री धणी निरंवानिरंव व्हियोड़ी । बांमण कैवतौ के बो ठालौ अर निकमौ तौ अेक छिण ई नीं बैठै । पूजा-

पाठ करै । सिझ्या वांधै । ग्यांन री जूंनी पोथियां बांचै दांणा मांगै । अर धीवड़ियां तौ वगत परवांण वधैला, औ कुदरत रौ धारौ । इण में मिनख री पंचायती नीं चालै ।

बांमणी लिलाड़ में सळ घाळ अर मूंडौ मस्कोरनै कैवती : थांरा इण ग्यांन अर साच सूं कांई माथौ फोड़ां ! सिलाड़ी माथै वांटां तौ किरची लूण री गरज ई नीं सरै । आंरै लारै घोबां धोबां धूड़ वगाय कीं न कीं घर-जोगी कमाई करौ ।

बांमण कैवतौ—बावळी, बांमणी री कूख में जलम लेय थूं इत्ती वात ई नीं जांणै के ग्यांन अर साच तौ बांमणां री बापौती । तद लिछमी रौ पगफेरौ होवण रौ तौ जोग ई कठै ? बापौती नै नीं अंगेजां तौ कीकर सरै ! भूखां मरणा री मेहणी कोनीं । पण जीवता थकां मिनखीचारा री कार लोपां तौ औ मरणा सूं ई माड़ौ । काळ रौ निंवतौ आयां चोर, धाड़वी मायापत-साहूकार अर चकवा राजा नै ई सगळौ वींभौ छोड़ खाली हाथ सिधावणौ पड़ै । कळझळ अर खटपट करचां अमर व्हां तौ आ बात अवस सोचण री है ।

घरवाळी गिरस्ती रा सुख री खातर नित हमेस झाटी कूटती अर बांमण ग्यांन, विद्या, साच अर गुणां रौ थूक विलोवतौ रैवतौ । नीं बांमणी आपरौ खूंटौ छोडचौ अर नीं बांमण । अेकर तीन दिनां रौ निरणौ बांमण बांटचोड़ी मिरचां रै लगावण सूं गुज्जी रौ लूखौ बाट्यौ खावतौ हौ । उणरा मन में किणी भांत रौ गरगिराटौ नीं हौ । पण बांमणी री आंख्यां जळजळी व्हैगी । बोली—थें तौ म्हारै कह्या री फुतरका जित्ती गिनरत नीं करौ, पण म्हारा सूं थांरौ औ दुख नीं देखीजै ।

बंड़ो कसालो तो ढोर-डांगर ई नीं काढ़ै । वै ई अपां बिचै तो सोरा रैवै ।

सूरज मयारै तपतो हो। आंगणै झूमता नींमड़ा री छीयां गोट रै ओळूं-दोळूं लट्टमियोड़ी ही । छिवरा पवन रै झोलां उठी-उठी हिलता हा । चिड़ियां री मीठी चकचक री मिठास घुळियोड़ी हवा मुघरी-मुघरी वाजती ही । ठीमर, भरचा सुर में कबूड़ा गुटरगूं-गुटरगूं करता हा । कुदरत रौ औ अढ़ार-आणंद बांमण री रग-रग में परकमा देवतो हो । मुळकनै बोल्यो— थांनै कित्ती वळा कह्यौ तो ई हाल पतियारौ नीं व्हियौ के दुख तो म्हारै सौ सौ कोस ई नैड़ौ कोनीं। बिरछ-बांटकां री हरियाळी, भांत भांत रा सुरंगा फूल, फूंदियां, उड़ता पंछी, अणगिण जिनावर, चांद, नवलख तारा, ऊगतो आथमतो सूरज, बदळती रितुवां, गाजता बादळा, पळकती बीजळियां अर बिरखा री ओसरती झड़ देख्यां पछै किसौ सुख लारै बचै ! खीर-मालपूआ अर घी-बाट्या खावण वाळां नै ई फगत कुदरत रौ नजारौ दीखतौ व्है तौ बात दूजी । कुदरत रा इण अमोलक खजांना रै पांण कुण तो रंक अर कुण राव । बापड़ा मिनख री कमाई अर माया री इण आगै कांई थाग लागै । बिरखा री अेक छांट साटै के मिमझर री सौरम साटै के फूलां-फूलां भंवती अेक नाकुछ फूंदी साटै ई म्हैं अलेखूं हीरा-मोत्यां री सौदो नीं करूं ।

बांमणो कह्यौ — पण म्हनै तो भूख अर बिखा आगै आखी कुदरत ई निपट बिरंगी लागै ! खाऊं-खाऊं करै। चांद सूरज नो कदी थोड़ो ई तूटै ! पळकती बीजळियां सूं पेट री दाझ

नीं बुझै । म्हारा सुख री खातर कीं न कीं तौ हलीलौ करौ ।

'थूं ईं बता कांईं करूं । मन नीं मांनैला तौ ई थारा सुख री खातर नटूंला नीं ।'

धणी रै मूंडै पैली बार बांमणी अैड़ी बात गुणी ही । सुणनै राजी व्ही । नेठाव सूं समझावण लागी—अै रांती व्है जैड़ा मिड़कल बांणिया कित्ती कमाई करै । बिणज-वौपार जैड़ी बरगत तौ किणी धंधा में कोनीं । थोड़ा दिना तांईं बांणियां वाळी समझ सूं ईं कांम लौ । साच रै पांण किसौ बिणज नीं फळै ?

बांमण घांटी हिलावतौ कैवण लागौ—आं हां, नीं फळै । आ बात तौ थूं अखरै मांन के कम जोख्यां, कम नाप्यां, कूड़ बोल्यां अर जाळ-साजी कर्‌यां बिना बिणज तौ निपट पांगळौ व्है; चुळै ई नीं । कोई सपना में ईं बिणज करै तौ उणनै अै जाळ तौ गूंथणा ई पड़ैला । अर थूं ईं बता, बिणज करूं तौ बेचूं कांईं ?

घरवाळी सूं मिसखरी करण रा भाव सूं बांमण कह्यौ—अपां कनै तौ फगत औ देवाळौ है । भलां रिपिया भांग इणनै मोल कुण लै ।

कुण जांणतौ के मिसखरी री आ बात ई बांमण रै गळै पड़ जावैला ! डूबतौ मिनख तिणका सारू ई झांपळियां भरै । बांमणी रा मन में बिणज री अणूंती लाळसा ही । धणी रै मूंडै देवाळौ बेचण री बात सुणी तौ ई उणरौ मन डुळग्यौ । तुरत अेक अटकळ विचारली । कैवण लागी—जे थांरी साच बोलण री आखड़ी ई निभ जावै अर बिणज री नांव ई व्है

जावै तौ पछै थारै कांई आंट । म्हारा ई हीया गांव गिया जकौ इत्ता दिन आ बात ई नीं सूझी । थांरी गळाई आं मायापत सेठां रै ई अेक आखड़ी के हाट-बजारां जकी चीज नीं विकै वा सिझ्या रा वांनै तौ मोल लेवणी ई पड़ै । अै बावळा सेठ तौ सांप, कुळातरा, गींडोळा, लीकां-जूंवां, जवा-नींचड़ा अर बुगां रा ई मूंडै मांग्या मोल चुकाया । म्हाटौ सेठ तौ नटणौ जांणै ई नीं । भला मिनखां, ऊमर में अेक कणौ तौ म्हारौ ई मांनौ । मरगी तौ मन में रै जावैला ।

सेवट बांमण घरवाळी रै इण पळेटा में झिलग्यौ । घर रा देवाळा नै वेचण सारू राजी व्हैगौ । तठा उपरांत बांमणी ढूकी जकौ इत्ती चीजां नीठ भेळी करी— झीर-झीर व्हियोड़ा पूर, अेक टूटोड़ौ छाजळौ, अेक फूटोड़ी घड़ली, हांडियां रा दो गिड़गा । केलड़ी री पांच-दसेक ठीकरयां । आकतड़ियां री दळयोड़ी वांनी, अेक फूटोड़ौ करवौ, टूटोड़ी खेरणी । बघरयोड़ा बिलिया । दो-अेक फाटोड़ा मसौता ।

बांमण कांकड़ में जाय खींपड़ा री अेक नोड़ियौ वटनै लायौ । पूर में वांनी अर दूजोड़ी चीजां पळेट गांठड़ी नै नोड़िया रा आंटा देय जरू कर दी । पछै देवाळा री वा गांठड़ी माथै उंचाय वहीर व्हियौ ।

बजार रौ नाकौ आतां ई जोर जोर सूं बोलण लागौ : लो देवाळौ, लो देवाळौ !

सुणतौ जकौ ई पैला तौ हंसतौ । पछै बांमण री खिखरां करतौ के बावळा दुनियां में अैड़ौ कुण चितबंगियौ नै कालौ जकौ जांणतौ-बूझतौ देवाळौ वपरावै । कठै ई पिंडत रा मगज

में वादी तौ उथेलौ नीं दियौ । ग्यांन रौ अपचौ व्हैगौ दीसै । बिरथा लोगां वास्तै अपसूंण व्हैला । निरभागी बांमण नै आ कांई कावळ सूझी ।

आखै दिन देवाळा री पोट माथै उखणियां पिंडत बोबाड़ा करतौ रह्यौ — लो देवाळौ, लो देवाळौ । भटकतां भटकतां फींचां तूटण आयगी पण कुण ई देवाळौ नीं मोलायौ । सेवट चकारा देवतां देवतां सिंझ्या रौ मगसौ अंधियारौ घिरण लागौ । सेडळ माता रा छिड़ा-बिछड़्या भण ज्यूं तारा उपड़ण लागग्या हा । बांमण कायौ होय मायापत सेठां री पेढ़ी आयौ । नोड़्या सूं बंध्योड़ी गांठड़ी हेटै धरी । थोड़ी ताळ पाहरौ खाय बही माथै लुळियोड़ा सेठां कांनी मूंडौ करनै कैवण लागौ — आखौ दिन व्हियौ रबड़ता नै । हाका कर करनै गळौ बैठग्यौ । पण आगै होय देवाळौ मोलावणौ तौ अळगौ, सांम्ही लोग म्हारा सूं ई खिलपोड़ां करण लागा । कोई कह्यौ के म्हारौ चित्त उपड़-ग्यौ । कोई कह्यौ के माथा में अकल रौ पोतौ इज फिरग्यौ । पछै दरजै लाचार होय म्हनै आपरी पेढ़ी चढ़णौ पड़्यौ ।

सेठ अर मुनीम दोनूं आंख्यां फाटोड़ा अेक दूजा रै मूंडा सांम्ही टग-टग भाळता रह्या । अैड़ी चीज तौ कदै ई बिकणनै नीं आई । मुनीम अेकर वळै खराय पूछ्यौ — कांई साचांणी, देवाळौ बेचण सारू लाया ? तद तौ पिंडतजी निमौ है थांरी अकल नै ।

बांमण नरमाई सूं कैवण लागौ — इण देवाळा टाळ म्हारै कनै दूजी कीं चीज ई बेचण सारू कठै ! बांमणी घणौ तळियौ तौ सेवट इणनै ई उंचाय लायौ । इण पेढ़ी रौ घणौ नांमून सुण्यौ

के विकण सारू कोई चीज अठै आयोड़ी खटै । सांप, गोईड़ा, कनसळाव, कुळातरां री इणी पेढ़ी घणी ई मोल चुकाइजियौ । मनीनर भगवांन री पूतळी मोल लेय कित्ती विखौ भुगतियौ पछै इण देवाळा री गांठडी री इत्ती कांई सोच करणौ ! सरधा नीं व्है तौ पाछौ वळ जाऊं ।

सेठां रै काळजै आ वात रड़की । कह्यौ—आं नवां मुनीम-जी नै इण पेढ़ी रै धारा री सावळ जाच कोनीं । म्हारै वास्तै तौ औ देवाळौ हीरा-मोत्यां सूं ई इदक अमोलक । अबै इंछा व्है सौ इणरौ मोल वतावौ ।

पिंडत कह्यौ—सेठां, किणी चीज रौ मोल तौ देवणिया री सरधा परवांण । म्हारै कूड़ नीं वोलण री आखड़ी । रावळी इंछा व्है सौ दे दिरावौ ।

पिंडत री आ वात सुणनै सेठ गताघम में पजग्यौ । थोड़ो ताळ सोचनै वोल्यौ—कोई गिंवार वांमण व्हैतौ तौ राजी-राजी सवा लाख रिपिया संभळाय देतौ । पण आप ऊंचा ग्यांनी हौ । अेक हजार सूं वत्ता वांमण री म्हारी हीमत कोनीं ।

उण पिंडत सारू तौ छदांम मोहर जैड़ी ही अर मोहर छदांम सूं ई माड़ी । घरवाळी रौ मन राखण सारू वौ वोलौ वोलौ हजार रिपिया कवूल कर लिया । उणरै अदीठ व्हियां सेठ मुनीम नै आपरै पाखती वुलाय कह्यौ—आज रौ औ सौदौ तौ नांमी भरै पड़तौ व्हियौ । देवाळौ आज सूं ई अपांरै कावू व्हैगौ । परवारौ अजांण में छांनै-ओलै घर में चापळ जातौ तौ कांई ठा पड़तौ । अवै तौ अपां ज्यूं चावां त्यूं इणनै जरू कर सकां । अपांरै कदै ई कीं जोखौ नीं कर सकै । सांप-

सपळोटियौ के बिच्छू-कांटौ अजांण ई में डसै । देख्यां हर कोई जाब्तौ करलै । आज सूं ई देवाळौ तौ अपांरी बखड़ी में झिल-ग्यौ । अपां चावां जठै पांती-परवांण इणरौ बेंचवाड़ौ कर सकां । औ बावळौ पिंडत इणरौ मोल कांई जांणै ! हाथै आयौ सौ ई भाग रौ । आ बांमण जात इणी भांत आपरा भाग नै बेचती फिरैला ।

पछै बही नै सांवटता कैवण लागा — मुनीमजी, हाल थें हिसाब-किताब ई जांणौ, बिणज रा गुर सावळ पिछांण्या कोनीं । जूंना मुनीमजी अणचीता देवलोक नीं व्हैता तौ आज म्हारौ खासौ कांम सार लेता । थें उण दिन नेवळा री खातर ई कित्तौ ना दियौ । पछै थांनै ई सावळ ठा पड़गी के नेवळौ नीं मोलावतौ तौ सेठांणी नै काळौ नाग डस्योड़ौ इज हौ । फगत सौ रिपिया में सेठांणी रा प्राण बचग्या । जे सेठांणी नै उण रात पवन लाग जातौ तौ म्हनै इण ढळती ऊमर में ई ब्याव तौ करणौ इज पड़तौ । गाडियां रै मूंडै रिपिया लाग जाता । बांणिया री आगम दीठ व्है । उण अमावस री रात तिमणिया री जात वौ लांठौ बीछू उण चोर रै डंक नीं मारतौ तौ सगळी माया गियोड़ी इज ही । बोबाड़ौ सुणतां ई अड़ौसी-पड़ौसी सुजाग व्हैगा । चोरां सोकड़ मनाई । अर लागनै ई कांई लागा—फगत पांच रिपिया । साहूकारां री अकल नै कोंई पूग सकै भलां !

आ कैय सेठ हंसण लागा । बोखा मूंडा री हंसी जांणै अबै बारै पड़ी, अबै बारै पड़ी । थोड़ी ताळ ढबनै धकै कैवण लागा — थें किसौ साच मांनौला के कदै ई कदै ई

तौ म्हारै लैड़ी जचै के भगवांन में अवखी पड़ै अर वांरी आड़-तियो इण कुदरत नै वेचण आय जावै तौ वपराय लूं । पछै देखौ कमाई री मजौ । चांद सूरज घुराघुर नै ऊंडै भंवारां तालकै कर दूं । राजा-महाराजा लाखूं मोहरां देवै जद होळी-दियाळी वारै काढूं । बिना रिपिया लियां उजास के चांदणी री तिणग ई कांई वताय दूं । पछै तौ घांनां री ठौड़ खोडां में वादळा भर न्हाकूं । जकौ करसौ पूजता रिपिया देवै, उठै धावू-धप्प विरखा, नींतर छांट रा ई दरसण कठै पड़्या ! पड़ैला, कदै ई न कदै ई इण भगवांन में ई फोड़ा पड़ैला । पछै वांणिया टाळ लाज बचावणियौ कोई दूजौ कोनीं । पण अेकर बखड़ी में भिलै तौ खरी । अर थें तौ उण दिन गोरियावर सरप रा तीन सौ रिपिया देवतां ई पालियौ । जे सता थांरी कैणौ मांन जातौ तौ तिजोरी रै मूंडागै दोनूं चोरां री ढिगली कीकर व्हैतौ । तिजोरी खोलतां ई भिमरियोड़ी सांप दोनां री पापौ काट न्हाकियौ नींतर वै हीरा-मोती वचता भलां । कम-सल चोर तौ पछै पांणी ई नीं मांग्यौ । वांणिया री अकल पूं वाथेड़ी करै जकौ ई धूळ भेळौ ।

आ वात कैय सेठ वळै जोर सूं हंसिया । जांणै इण तोखा मूंडा रै पांण तौ समूळा सूरज नै ई गपाक करता गिट जावैला ।

उण उपरांत वौ सेठ मुनीम नै इदक भुळावण देवतां कह्यौ — इण देवाळा नै वळै सैंठौ जरू करौ । अेक लांठौ मजूर लाय इणरै मांय कावू करौ । मायै लांठा भाटा धर सात ताळा लगावौ । ठेट ऊंडोड़ा भंवारा रै तालकै । पछै

किवाड़ रै लांठौ ताळौ जड़्यां कीं डर नीं । अबै फुरती करौ । कांम तौ करयां निवड़ै । थांनै आज वळै कैवूं सावळ याद राखजौ के औ देवाळौ अपांरी अणगिण माया बचावैला । अलेखूं मण नेपै अपांरै कोठां-कोठां लाय भरैला ।

सेठ तौ इण भांत देवाळा री पूरौ जाब्तौ करनै नेगम रा ढोल घुरावण लागा । पण जका दुखियारा चलायनै आपरै माथै उखणै वांरी सहाय कुण करै ? अेक दिन समाजोग री बात अैड़ी वणी के आधी ढळियां चार बावरी वां इन सेठां री हवेली चोरी करण सारू आया । गुळ व्है जठै माखियां आवै इज, खांड व्है जठै कीड़ियां ढूकै इज अर धन व्है जठै चोर खेरौ करै इज ।

साळ में सूता सेठां नै जद इण बात री सोय व्ही तौ वै सेठांणा नै जगाय माहौमाह वंतळ करण लागा । वरसाळी में ऊभा चोर साळ में सुरपुर सुणी तौ किंवाड़ रै पाखती कांन लगाय ध्यांन सूं सुणण लागा ।

सेठ पूछ्यौ—सुणौ हौ के नीं । हीरा-मोत्यां री वौ मजूस सावळ जाब्ता सूं तौ धरयोड़ौ है ? तीज रै सैं दिन औ मजूस लेय दिसावर जाऊंला । अैड़ी नीं व्है के...... !

सेठांणी बिचाळै ई बोली—जे म्हारै माथै भरोसौ नीं हौ तौ म्हनै आ जोखम क्यूं सूंपी ? म्हनै कांई थें साव ई भोळी गिणौ । सात ताळा जड़्या ऊंडोड़ा भंवारा में मजूस लुकायोड़ौ है । नीं बतावूं तौ थांनै ई नीं लाधै । मजूस रै ई लांठा ताळा जड़्योड़ा । चोरां रा वाभौजी आय जावै तौ ई पतौ नीं पड़ै । अेकर म्हनै कांम सूंप दियौ तौ पछै वेम करण

री जरूरत कोनीं ।

बावरियां री तौ मन-जांणी व्ही । कैड़ाक नांमी सुगन व्हिया । जीवणी वोगी दड़काई ही । इत्ती सोय व्हियां पछै कांई होल । चौखळा रा नांवजद डकरेल बावरी हा । छोटी-मोटी चोरी में हाथ ई नीं घालता । वांनै तौ अंधारा में ई गुमट दीसतौ—जांणै पगथळियां रै मांय आंख्यां व्है । पाधरा ऊंटोड़ै भंवारै पूगा । सेठांणी रो बात तौ साव साची । कमसल माया री कित्ती जाब्तौ करै ! पण म्हे ई आंरै माथै गांधे जेड़ा हां ।

फटाफट सातूं ताळा खोल मांय वड़िया । मजूस ठांणै ई लाधी । अणूंती भारी । सात पीढ़ी री दाळिदर अळगौ व्है जाणौ है । अैड़ी चोरी री तोजी तौ कदैई नीं बैठी । बावरियां रै मूंडा री खुसी अंधारा में ई पळकती ही । ही जिण सूं ई जणा जणा री चौगणी करार बधग्यौ । ज्यूं त्यूं करनै मजूस बारै लाया । च्यारू खुणै खांधा लगावण री जुगत पार नीं पड़ी तौ अेक अेक जणौ बारी बारी वौ लांठौ मजूस माथै उखण होया री हुरड़ाई रै पांण सोरी-दोरी चालण लागौ । ऊंट री कड़ ई लुळै जित्तौ भार उण मजूस में हौ । पण हीरा-मोतियां रै उत्ता भार रै थावस सूं चोरां में उत्तौ ई करार बधग्यौ हौ ।

चालनां रेत माथै खोज नीं उवड़ै, इण जान्ता सारू चोरां रै पगां सिणतरा बाबोड़ा हा । थोड़ी दोरी चालीजै । अेक चोर कह्यौ—कुदरत बणावणिया भगवांन नै ई चोरां री जात ईवै कोनीं । औ ई साहूकारां रै पखै बंध्योड़ौ । अैड़ी

कांई ज़रूरत ही उणनै रेत अर चांद बणावण री। धरती माथै चिमटी ई रेत नीं व्हैती तौ खोज मंडण रौ वास्तौ ई नीं हौ। चांदणी रातां में कित्ती जोखम ओढ़णी पड़ै। पीळिया रै रोगी इण चांद रौ नीं तौ पूरौ उजास। फगत अपांरा हुनर रै आडी देवै जैड़ी चांदणी। नीं व्हैतौ तौ कांई कमी रैवती जे पूनम री भांत अेक रात पूरौ ऊग जावै अर दूजी रात अंगै ई नीं ऊगै तौ ई सावळ। पण बापड़ौ औ सूरज तौ अपांरै घणौ कांम रौ। औ आखै दिन नीं तपै तौ कुण थुड़ै, कुण कमाई करै अर कुण खटपट करै। लोग-बाग कमाई करनै धन भेळौ नीं करै तौ अपां ई कांई वंधा-यलां। औ सूरज नीं व्हियां अपांरा हुनर रै जबरी ठब्बक लागती।

वौ चोर हमेसां कीं न कीं अैड़ी वेळ बातां करतौ ई रैवतौ। उणनै ढाबण सारू दूजोड़ौ चोर अेक समझदारी री बात करी — सात पीढ़ियां लग आ माया तौ अपांरै खायां नीं खूटै। अबै चोरी नीं करनै इज्जत सूं ठायौ अपड़लां तौ सावळ! जीव अस्टपौर सुरक-सुरक करै।

मुखिये कह्यौ — हाल थांमें समझ नीं आई। अै तौ आप आपरा हुनर है। जैड़ौ बिणज वैड़ी ई चोरी। चोरी री मेहणी थोड़ी ई लागै! अै मायापत आपरै जाब्ता सारू चोरी नै अकरम बतावै। चोरी जैड़ौ सखरौ तौ कोई धंधौ ई कोनीं। लोग अपां सारू ई तौ थुड़ै, कमावै, कूड़-साच करै। सगळा मिनख अेक ई धंधौ झाल लै तौ सरै भलां! चोरी नीं करां तौ कांई निकमा बैठां। माया माया रो ठोड़ है,

गंधो गंधा री ठोड़ । समझायां ई समझ नीं बैठै वो मिनख कांई !

पाछी मुखिया री वारी आई । मजूस नै माथै उखणतो बोल्यो — हाल रात खासी है । पाधरा गांव-चौधरी रै कोईठै चाल्लां । अबारूं साव सून्याड़ है उठै । लांठौ जाव । चारूं-मेर ढींगी वाड़ । चौफेर बोरड़ियां री थट लाग्योड़ी । नेहचा सूं वंट कारनै न्यारा न्यारा विछड़ जावांला ।

मुखिया री बात सगळां रै ई दाय आई । कोईठै आय मजूस उतार्‌यो तो च्यारूं चावरियां रै जीव में जीव आयो । हांकरतां मजूस रा ताळा खोल फड़की उघाड़्यौ । झपाझप माया नै बारै काढ़ी । ओटाळ कित्ती जाब्तो कर्‌यौ ! सब सूं पैला भाटा खिड़किया । किणी नै माया री वेम इज नीं व्है । उंचावै तो उंचोजै कोनीं । पण म्हांरा करार रौ निवळा सेठां नै कांई वेरो ! धागड़ अळगा वगाय नोड़िया में जरू कर्‌योड़ी गांठड़ी बारै काढ़ी । वांणिया री जात कित्ती चात्रंग ! कैड़ा पूर में हीरा-मोती लुकाय राखै । कोई वेम करै तो करै इज कीकर !

पण उण अदेवाळा रै मांय नीं तो हीरा-मोती निकळिया अर अर नीं सोनो-चांदी । नीं ही जकी माया कठा सूं लाधै । अर ही जकी सगळी चीजां ठावी ही । लीर लीर व्हियोड़ी पूर, टूटोड़ी छाजळी, हांडियां रा दो गिड़गा, केलड़ी री पांच-सातेक ठीकरियां, फूटोड़ी घड़लो, फूटोड़ी करवी, बधर्‌योड़ा बिलिया, टूटोड़ी मैरणी अर दो अेक मसीता । आकतड़ियां री वांनी फिरोळणा नूं आंख्यां सबाय में बूरीजी ।

च्यारूं बावरियां नै दुख रै सागै रीस ई अणूंती आई। हाथौहाथ वौ अदेवाळौ पाछौ मजूस में भरचौ । च्यारूं खुणा अपड़ उंचायौ तौ नीठ उंचीजियौ । कड़ियां पाधरी व्हैगी । किड़किड़ियां चाबता चाबता मजूस कोईठां में थरकाय दियौ। हम्मम-हम्मम करती रौ हबिंदौ सुणीजियौ !

बावरी माथै उंचाय लाया, तद सूं वौ देवाळौ बावरियां रै हाल तांई माथै । वांरौ कदैई ऊपरलौ पांनौ नीं आवै । बोहरां रौ लेहणौ कदै मिटै ई नीं । बांणियां री हवेली रौ ठायौ छोड़ करसां रै कोईठां रौ ठायौ भेलियौ सौ हाल उणरौ उठै ई नेगम वासौ । अबूझ करसा जांणै के बेरां सूं पांणी सींच वै खेती रै मिस कमाई करै, पण वांरै तौ फगत देवाळौ हाथ लगै । कमाई पाधरी बांणियां री हवेलियां पूगै । भलांई पग-पावटियौ बेरौ व्हौ, भलांई चांचवौ, भलांई झेलवौ, भलांई सूंडियौ अर भलांई अरट । पांणी रा चिळका में वांनै कमाई रौ भरम व्है । पांणी सींचतां सींचतां वांरा हाडका कुळण लागै । ज्यूं पांणी काढ़ै त्यूं देवाळौ धोरै धोरै वैवतौ क्यारां क्यारां रळमिळ जावै । पछै हरियाळी रौ रूप लेय विगसै । क्यारां में लील माच्योड़ी देख करसां रौ जीव हरचौ व्है । पण वांरै तौ फगत देवाळौ पांती आवै अर हाटां बैठौ बैठौ ई बांणियौ वांरी सगळी नेपे डकार जावै।

दुविधा

अेक मालदार सेठ हो । तिणरै अेकाअेक बेटा री जांन गाजा-बाजां परणीजनै धूमधांम सूं पाछी वळती ही के वै कांकड़ में विसाई खावण ढबिया । घेर-घुमेर खेजड़ी री जाडी छीयां । सांम्ही हब्या-होळ हिलोरां भरती नाडो । कमोद री जात निरमळ पांणी । सूरज मथारै चढण वाळो हो । जेठी लूवां रा बळता गैंनाड़ बाजता हा । रोट्यां जीम-जूठ नै धकै हालै तौ सावळ । बींद री बाप घणी मनवार करी तौ सगळा जांनी राजी होय उठै ढबग्या । बींदणी रै सागै पांच डावड़ियां ही । वैं तौ सगळी इण खेजड़ी री छीयां में जाजम ढाळ बैठगी । पागती ई अेक न्यांठी बांवळियौ हो । पीळै लूंगां छायोड़ौ । रूपा रै उनमांन धोळी हिलारियां । दूजोड़ा जांनी उण बांवळिया री छीयां ढाबली । थोड़ी ताळ विसाई खायां पछै रोट्यां जीमण री सराजांम होवण ढूकौ ।

बींदणी अपूठी होय मूंडौ उघाड़ बैठगी । ऊंचौ जोयौ । पतळी-पतळी लीली-चेर लड़ाझूम सांगरियां ई सांगरियां । देखतां ई कोयां में ठाडोळाई वापरगी । सतजोग री बात के उणी इज खेजड़ी में अेक भूत रौ वासौ । अंतर-फूलेल री बसबोळां छायोड़ौ बींदणी रै उघाड़ा मूंडा सांम्ही जोयौ तौ

उणरी आंख्यां चूंधीजगी । कांई लुगाई रौ अैड़ौ रूप अर जोबन व्हिया करै ? गुलाब रै फूलां रौ कंवळास, सौरम अर वांरौ रस-कस ई जांणै सांचै ढळयौ । देख्यां उपरांत ई अैड़ा रूप रौ भरोसौ नीं व्है । बादळां रौ ठायौ छोड कठै ई बीजळी तौ नीं अवतरी । आं डाबर-नैणां रौ तौ कीं मापौ ई नीं । जांणै आखी कुदरत रौ रूप ई इण उणियारै घुळियोड़ौ । हजारूं लुगायां रौ रूप निरख्यौ पण इण उणियारा री तौ रंगत ई न्यारी । खेजड़ी री छींयां घुराघुर पळकण लागी । भूत रौ जमारौ सारथक व्हियौ ! वींदणी नै लागण रौ विचार आतां ई भूत नै पाछौ चेतौ व्हियौ । लाग्यां तौ आ दुख पावैला । अैड़ा रूप नै दुख देवणौ कीकर आवै ! भूत गताघम में अळू-भग्यौ ! आ तौ अबारूं देखतां देखतां वहीर व्है जावैला । पछै ! नीं लाग्यां सरै अर नीं छोड्यां मन पतीजै । अैड़ी तौ कदै ई नीं पजी । तौ कांई वींद नै लाग जावूं ! पण वींद नै लाग्यां ई वींदणी रौ मन तौ कळपैला । औ रूप कळपियां नीं बादळ बरसैला । नीं बीजळियां पळकैला । नीं सूरज ऊगैला अर नीं चांद । कुदरत रौ सगळौ रासौ ई परवार जावैला । भूत रा मन में इण भांत री दया-माया तौ आज पैली कदै ई नीं सांचरी । इण रूप नै दुख देवणा विचै तौ खुद दुख पावणौ घणौ वत्तौ । अैड़ौ दुख ई कठै पड़्यौ ! इण दुख नै परसियां तौ भूत री जूंण सुफळ व्है जावैला ।

सेवट बिसाई रै उपरांत तौ वहीर व्हैणौ इज हौ । वींदणी पगां बाल होय धकै बधी तौ भूत री आंख्यां अंधारौ पाथरग्यौ । रात रा ई सुभट देखण वाळी आंख्यां आडा अै काच कीकर

किरण्यां ! सवारै चढ़्यां सूरज रा उजास मार्थं अणछक ओ भकरा कीकर पुगग्यो !

रिमझिम करती वा वींदणी वींद री वेहल में चढ़ी । ओ वींद कितरो सभागियो ! कितरो सुखी ! भूत रा रूं-रूं में जांणै सूळां सुवण लागी । हीया में जांणै भट्टी चेतन व्हैगी । बिजोग री इण दाभ आगै तो नीं मरणी आवै अर नीं जीवणी । जीवतां आ दाभ कीकर सहीजै अर मरयां तो आ दाभ ई कठै ! भूत रा मन में अैड़ी अळूभाड़ तो कदै ई नीं गूंथी-जी । वेहल अदीठ व्हैतां ई वो तो मूरछागत व्हैगी ।

अर उठी वेहल में बैठा वींद रै ई अळूभाड़ कम नीं ही । दो घड़ी व्हैगी खपतां खपतां पण हाल ब्याव रै खरचा रो पोनो नीं मिळ्यो । भायजी खासा चिड़ैला । खरचो ई कीं बेगो व्हैगो हो । अैड़ी भूल-चूक सूं वै सोरै-सास राजी नीं व्है । हिसाब अर बिणज रो सुख ई तो सबसूं लांठो सुख । बाकी तो सै पंपाळ । खुदोखुद भगवांन ई मोटा हिसाबी । जणा जणा रै सांस रो पूरो हिसाब राखै । बिरखा री छांट छांट रो, हवा रै रेगा-रेगा रो अर धरती रै कण कण रो वांरै पाखती सही पोनो । कुदरत रा हिसाब में ई भूल नीं खटै तद बांणिया री वही में भूल कीकर पोसावै ।

लिलाड़ में सळ घाल्यां वींद आंकड़ां री जोड़-तोड़ बिठा-वतो हो के वींदणी वेहल री चांदणी उघाड़ बारै जोयो । चिळको पड़ै जैड़ो आकरो तावड़ो । हरियल केरां केरां कसूंबल डाळू ई डाळू भळकता हा । कित्ता सुहांणा ! कित्ता रूपाळा ! मुळकता डाळू डाळू में वींदणी री जोत पोईजगी । वींद री बांह

झाल वींदणी अबूझ टाबर री गळाई बोली — अेकर बही सूं निजर हटाय बारै तौ जोवौ — अै ढालू कित्ता फूठरा लागै ! थोड़ा हेटै उतर घोबा दो अेक ढालू तौ लायदौ । देखौ अंडी बळती लाय में ई अै मगसा नीं पड़्या । ज्यूं तावड़ौ तपै त्यूं वत्ता राचै । तावड़ा में कैड़ौ ई रंग के तौ उड़ जावै के सांवळौ पड़ जावै ।

वींद मिनखां जैड़ौ मिनख हौ । नीं घणौ रूपाळौ अर नीं साव कोजौ । भर मोट्यारपणै ई ब्याव व्हियौ पण ब्याव रौ अणूंतौ कोड नीं हौ । पांच बरस नीं व्हैतौ तौ ई धक जातौ अर व्हैगौ तौ घणौ आछौ । कदै न कदै व्हैणौ इज हौ । मोटौ कांम निवड़ियौ । नवलखा हार माथै हाथ फेरतौ बोल्यौ — अै ढालू तौ खास गिंवारां रौ खांण । थांनै आंरी हर कीकर आई ? खावण री इंछा व्है तौ रखी मांय सूं खारक-खोपरा काढ़ूं । भावै जित्ता खावौ ।

वींदणी ई साव गिंवार निकळी । आड़ौ लेती व्है ज्यूं वळै कह्यौ — नीं, म्हनै तौ थोड़ा ढालू लाय दौ । राज रौ अणूंतौ गुण मांनूंला । आप फोड़ा नीं खावणी चावौ तौ म्हनै मया बगसाय दिरावौ, म्हैं तोड़ लावूं ।

वींद तौ वळै आ इज बात करी । कह्यौ — आं कांटां सूं कुण बाथेड़ौ करै ? निपट जंगळी व्है जका ई ढालू तोड़ै अर जंगळी व्है जका ई खावै । मखांणा खावौ । पतासा खावौ । भावै तौ मिसरी अरोगौ । आं गुट्टा ढालुवां री घरै गियां बात ई मत करज्यौ । लोग हंसैला ।

'छो हंसता ।' वींदणी तौ आ बात कैय अजेज वेहल सूं

[illegible] कूदगी । फूंदी व्है ज्यूं केर केर उड़ती फिरी । थोड़ी ताळ [illegible] ताता-चूट्ट ढालुवां सूं खोळौ भरनै पाछी आयगी । बुगती रा पांणी सूं वांनै सावळ धोया । ठारया । होठां अर ढालुवां रौ रंग अेक सरीसौ । पण वींद नै नीं ढालू आछा लागा अर नीं होठां री रंग । वो तौ हिसाब में अळूझियोड़ौ हौ । वींदणी घणा ई थोरा करया, पण वौ ढालू खावण सारू राजी नीं व्हियौ ।

वींदणी कह्यौ — राज री इंछा । आप-आपरी भावड़ है । म्हारौ तौ अेकर मन व्हियौ के आं ढालुवां साटै म्हारै गळा रौ नवलखौ हार केर में टांक दूं तौ ई थोड़ौ !

ढालू खावती वींदणी रै मूंडा सांम्ही देख वींद कैवण लागौ — यैड़ी वेळ बात वळै कदै ई करज्यौ मती । भायजो जांणै जित्तौ खीझ करैला । वै रूप बिचै लुगाई रै गुणां रौ घणौ आदर करै ।

वींदणी मुळकती थकी बोली — अबै सावळ ठा पड़ी । वांरा डर सूं ई आप हिसाब में अळूझियोड़ा हौ । पण सगळी बातां आप आपरी ठौड़ आछी लागै । ब्याव री वेळा हिसाब में रूंधीजणौ आ तौ न्याव री बात कोनीं ।

वींद कह्यौ — ब्याव व्हैणौ हौ जकौ व्हैगौ । पण हिसाब तौ हाल बाकी है । ब्याव रै खरचा रौ सगळौ हिसाब संभळाय म्हनै तीज रै सैं दिन दिसावर विणज सारू सिधावणौ है । अैड़ौ सुभ-मौरत धकला सात बरसां में ई कोनीं ।

पण गिवार वींदणी इण सुभ-मौरत री खुस-खबरी सुणनै अंगै ई राजी नीं व्ही । बात सुणतां ई ढालुवां रौ स्वाद

बिगड़ग्यौ । काळजा में डबकी पड़ग्यौ । आ कांई अजोगतौ वात सुणी ! अेकाअेक विस्वास नीं व्हियौ । पूछ्यौ—कांई कह्यौ के आप बिणज करण सारू दिसावर पधारौला ? सुणी के आपरी हवेली तौ माया रा भंडार भरचा ?

वींद मोद भरचा स्वर में अंजसतौ बोल्यौ—इण में कांई मीन-मेख । थें ख़ुद थांरी आंख्यां देख लीजौ । भ्कालां रै मूंडै हीरा-मोत्यां रा भंवारा भरचा । पण माया तौ दिन दूणी रात चौगणी बध्योड़ी इज घणी आछी । वांणियां री सिरै धरम बिणज-वौपार । हाल तौ माया घणी बधावणी है । अैड़ौ सांतरौ मौरत टाळणौ कीकर पोसावै !

वींदणी धकै कीं बात नीं करी । बात करणा में सार ई कांई हौ ! अेक अेक करनै सगळा ढालू बारै वगाय दिया तद वींद मुळकनै कह्यौ—म्हैं तौ थांनै पैला ई कै दियौ के अै ढालू तौ गिंवारां रौ खांण । अपां बड़भागियां नै आछा नीं लागै । सेवट नीं खावणी आया तौ थांनै ई वगावणा पड़्या । बळती लाय में सिळगिया जकौ सवाय में !

आ बात कैय वींद लाय रौ तूमार जोवण सारू वेहल सूं बारै जोवण लागौ । निजर सिळगै जैड़ौ घूंम तावड़ौ । पीळै फूलां छायोड़ा हींगाणियां रा अणगिण भ्काड़का उणनै अैड़ा लखाया जांणै ठौड़ ठौड़ वासदी री भ्कालां चेतन व्ही । वींद वळै डोढ़ में बोल्यौ — अबै आं हींगाणियां सारू तौ आड़ौ नीं लौ । आं में गुण व्हैता तौ भलां राईका कद छोड़ता ।

वींदणी कीं जवाब नीं दियौ । अबोली बैठी पीहर री बातां सोचण लागी के इण धणी रा जोह रै पांण घर रौ

आंगणो छोड्यो । माईतां री विजोग सह्यो । साथणियां री झूलरो, भाई-भतीजा, नाडी री पाळ, गीत, गट्टा, ढूलियां, झुरणी, लुकमींचणी — अै सगळा सुख छिटकाय इण घणां री हाथ झाल्यो । मां री खोळो छोड़ पराया घर री हर करी । अर अै तीज रै सै दिन सुभ-मौरत री घड़ी विणज सारू दिसावर सिधावणी चावै । पछै आ बध्योड़ी माया किण सुख सारू ! जीवनां कांम आवै नीं । मरियां दाग री गरज सारै नीं । किण सुख री आस में लारै आई ? किण अदीठ हरख अर संतोख रै भरोसै पराई ठौड़ रो वासो कबूल करयो ? कमाई, विणज-वोपार, धन अर माया पछै किण दिन वास्तै ? असली सुख रा इण सौदा साटै तीनूं लोकां री राज हाथ लागै तो ई कांई कांम रो ! दुनियां री सगळी संपत साटै वीत्योड़ो छिण पाछो हाथै नीं लागै सो नीं लागै । मिनख माया सारू है के माया मिनख सारू ? फगत इणी हिसाब नै सावळ समझणी है । इण उपरांत वळै किसो हिसाब बाकी बचै ! वळै किण दूजा हिसाब में अळूझणो घटै ? कंचन वत्तो के काया ? सांस वत्तो के माया ? इण सवाल रा पडूत्तर में मिनख रा सगळा जवाब पोयोड़ा ।

बींद आपरा हिसाब में कळियोड़ो हो । बींदणी आपरा हिसाब में डूबोड़ी ही अर बेलिया आपरी चाल में मगन हा । बहीर व्हियोड़ो परै नीं पूगे [illegible] । सेवट सेठां री हवेली मूंडागै जांन आय ढबी ! गाजां-बाजां ढोल ढमंकां रै डाकै बींदणी नै बधायां वा मेड़ी में पूगी । [illegible] निरख्यो जको ई थुथकी न्हाकी । रूप व्है तो थैड़ो व्है ! रंग व्है तो थैड़ो व्है !

सिझ्या रा मेड़ी में गावा घी रा दीवा झुपिया। घड़ी तीनेक रात ढळियां वींद मेड़ी में आयौ। आतां ईं वींदणी नैं सीख री अमोलक बातां समझावण लागौ के वा घर री इज्जत रौ सावळ जाब्तौ राखै। सासू-सुसरा रा हीड़ा करै। आपरौ ाज आपरा हाथ में। दो दिन सारू चौपड़-पासा रमण री ़र क्यूं लगावणी। दो दिन री अंग-रळियां पांच वरसां तांई ़ोड़ा घालैला। बरस गुड़तां कांई जेज लागै। देखतां- ़खतां पांच बरस उथप जावैला। पछै कांई बात री कमी। ा इज मेड़ी। औ इज दीवा। औ इज रातां। अर आ इज ़ेज। वा किणी बात री चिंता नैं नैड़ी नीं फटकण दे। ़लक झपै इत्ती ताळ में पांच बरस लोप व्है जावैला।

सीख री औ अमोलक बातां वींदणी बोली बोली सुणती री। कीं कैणौ-सुणणौ अर करणौ तौ उणरै हाथ नीं हौ। धणी री इंछा सौ उणरी इंछा। भायजी री इंछा सौ बेटा री इंछा। लिछमी री इंछा सौ भायजी री इंछा। अर लोभ री इंछा सौ लिछमी री इंछा। सीख री आं बातां में सगळी रात ढळगी। रात रै सागै टिम-टिम खिवता नवलख तारा ई ढळग्या।

अर उठी उण खेजड़ी रै वासै मूरछा तूट्यां भूत री आंख्यां खुली। चारूं कांनी भाळयौ। सूनौ कांकड़। सूनी निंदरोही। जाडी खेजड़ी। जाडी छींयां। झूलती सांगरियां। कठै वींदणी? कठै उणरा डावर नैण? कठै उणरौ रूपाळौ उणियारौ? कठै उणरा गुलाबी होठ? कठै ई औ सपनौ तौ नीं हौ? घूंटी रै उपरांत पाछौ चेतौ बावड़ियां उणनै अैड़ौ

जावो जांणै उणरा छळी मन में सेडाऊ दूध घुळग्यो ! अैड़ो सूरज तो आज पैली कदै ई नीं ऊग्यो । गोळ-गट्ट गुलाबी चहरियो । आखी दुनिया में सैचन्नण ई सैचन्नण ! कैड़ी मुधरी-मुधरी हवा चालै ? हवा रो अदीठ तणियां झूलती अढ़ार हरियाळी । उणरो मन विध-विध अणगिण रूप धार कुदरत रा कण कण में सांचरग्यो ।

अरे, आज पैली सूरज तो इण भांत कदै ई नीं आथमियो । आयूंण दिस में जांणै गुलाल ई गुलाल पाथरग्यो । धरती माथै नीं तो पळकतो उजास, नीं गिगन में चांद, नीं सूरज अर नीं अेक ई तारो । नीं सुभट अंधारो । जांणै कुदरत झीणो घूंघटो राळयो । उणियारो ई दीखै । घूंघटो ई दीसै । अबै कुदरत नवी चूंदड़ी बदळी । नवलख तारां जड़ी सांवळी चूंदड़ी ! मगसो मगसो उणियारो दीसै । मगसा रूंख । मगसी हरियाळी । जांणै सपनां रो वेजो वुणीजै । पैला तो कुदरत कदै ई अैड़ी आछी नीं लागती । औ सगळो वींदणी रै उणियारा रो परताप !

अर उठी वींदणी रो धणी उण उणियारा नै पूठ दियां दिसावर रै मारग वहीर व्हैगो । कड़ियां हीरा-मोत्यां री नोळी । सांधै रखी । अर सांम्ही आभै पळकतो विणज रो अखंड सूरज । सुख, लाभ अर कमाई री कांई पार !

हालतां-हालतां वो उणी खेजड़ी रै गळाकर नीसरयो । भूत उणनै तुरत पिछांण लियो । मोट्यार रो रूप धार उणसूं जवारड़ा करया । पूछ्यो — भाया, हाल तो कांकण-डोरड़ा ई नीं खुल्या । इत्तो वेगो सिव जावै ?

सेठ रै वेटै कह्यो — कांकण-डोरड़ा किसा। दिसावर में

नीं खुलै !

भूत खासी भांय साथै चालतौ रह्यौ । सगळी बार्ता जांणली के वौ पांच बरसां तांईं दिसावर में बिणज करैला । जे औ मौरत नीं साजतौ तौ धकलै सात बरसां अैड़ौ नांमी मौरत नीं सजतौ । सेठ रै बेटा री बोली-चाली अर उणरै सुभाव री चाहजती सोय करनै वौ तौ दूजै मारग टळग्यौ । मना-ग्यांना सोचण लागौ के सेठ रै बेटा रौ रूप धार सवारै ई पाछौ हवेली वळ जावै तौ पांच बरसां तांईं कुण ई पूछ-णियौ कोनीं । आ तोजी तौ नांमी जमी । धकै री धकै देखी जावैला । भगवांन वीणती सुणी तौ खरी ! पछै तौ उण सूं अेक छिण री ई ढील नीं व्ही । हूबौहूब इक्कीस आंना सेठ रै बेटा रौ रूप धार गांव कांनी वहीर व्हैगौ ! मन में नीं हरख रौ पार हौ नीं आणंद रौ ।

दो तीन घड़ी दिन बाकी हौ तौ ई खासौ अंधराइजगौ । काळी-पीळी उतरादी आंधी रा गोट माथै गोट अड़वड़ता दीस्या । आंधी तर-तर चढ़ण लागी । तर-तर वत्तौ अंधराइजण लागौ । छतै सूरज अंधारौ ! हाथ नै हाथ नीं सूझै । इण कुदरत नै ई कैड़ा-कैड़ा सपना आवै ! कुदरत रै इण सपना बिना धरती माथै पाथरियोड़ी पगां हेटली रेत नै सूरज ढकण रौ मौकौ कद हाथ लागै ! धरत्यां टिकियोड़ी रेत असमांन में चढ़गी । खेंखाड़ माथै खेंखाड़ बाजण लागा । भाखर रा भाखर उथापै जैड़ी आंधी । थोथी करड़ावण राखण वाळा जंगी रूंख चरड़-चरड़ उथलीजण लागा । लुळताई राखण वाळा कंवळा बांटका अठी-उठी लळा॰ ळळाक लुळै पण वांरौ कीं नीं बिगड़ै । पगां

नींनीजण नाळा घास नै तो अेल ई नीं पूगै । सुख-साता पूछतो, न्याव करती, पंपोळती आंधी मायाकर निकळ जावै । लागी वनराय जांणे पालणै भूलण लागी । पांन-पांन अर कूंपळ-कूंपळ री सावळ संभाळ व्हैगी । मोटा पंछियां रै झपीड़ लागण लागा । छोटा पंछी डाळां सूं चापळनै बैठग्या । उड़णो दूभर व्हैगो । आभा आसमांन माथै आंधी री राज थरपीजगो ! भाखर मेर गेंखाड़ ई गेंखाड़ । सूरज रा तप-तेज नै धरती री झळ मिटगी । अजब है इण आंधी री नाच । अजब है रेत री आ घूमर ! आखी कुदरत ई इण विरोळा में बूरीजगी । सगळो विरमाण्ड अेक-मेक व्हैगो । नीं आभो दीसै, नीं सूरज, नीं भाखर, नीं वनराय अर नीं धरती । निराकार । अगोचर । कुदरत री इण नाकुछ उजासी आगै नीं मिनख रै ग्यांन री कीं जिनात, नीं उणरै आपा री कीं ठरको, नीं उणरै गुमेज री कीं गाढ़ अर नीं उणरी खटपट री कीं विसात ।

कुदरत री कावड़ री दूजी चित्रांम—थोड़ो थोड़ो उजास छितरावण लागो । हाथ नै हाथ सूझण लागो । तर-तर उजास री आपो पसरण लागो । होळै होळै कुदरत री छिब सुभट दीसण लागी । भाखर री ठौड़ भाखर, सोना रा पात जैड़ो गोळ गोळ सूरज । रूंखां री ठौड़ रूंख । बांटकां री ठौड़ बांटका । हवा री ठौड़ हवा । औ कांई दूणो व्हियो । के अणछक तड़-तड़-तड़ मोटी छांटां री मेह बूठो । छांट सूं छांट टकरीजण लागी । परनाळां पांणी ओसरियो । कुदरत सांपड़ै । उणरो रूं रूं धुपग्यो । नाळां-खाळां पांणी वहण लागो । जळबम्ब ई जळबम्ब ! सांपड़ती कुदरत नै निरख्यां

सूरज री उजास सारथक व्हियौ ।

भूत सोचण लागौ के थोड़ी ई ताळ में औ कांईं नजारौ प्रगट व्हियौ ? देख्यां पछै ई विस्वास नीं व्है जैड़ी कुदरत री आ कैड़ी चाळचोळ ! औ कांईं व्हियौ ? कीकर व्हियौ ? कठै ई उणरै मन री आंधी इज तौ इण विध बारै नीं प्रगटी ? कुदरत रौ औ खिलकौ उणरा मन में ई तौ दपटियोड़ौ नीं हौ ? इण भरम री चोळ में वौ खाथौ खाथौ चालण लागौ । मन में जुगत विचारतौ जावतौ अर मारग वैवतौ जावतौ ।

वौ पाधरौ हवेली नीं जाय पैला सेठां री पेढ़ी पूगौ । नांवौ-लेखौ करता सेठ बेटा नै देख्यौ तौ ई अेकाअेक वांरौ मन नीं मांन्यौ । दिसावर सिधायोड़ौ बेटौ पाछौ आयौ तौ आयौ इज कीकर ? आज पैली औ कदै ई कैणौ नीं लोप्यौ । ब्याव व्हियां उपरांत मिनख कांम रौ नीं रैवै । औ आंटौ सेठांणी साज्यौ । व्हा अबै व्हैगी कमाई ! के तौ बिणज री हाजरी साजलौ के लुगाई री ।

बाप रै होठां आयोड़ी बात नै बेटौ बिना कह्यां ई समझ्यौ । हाथ जोड़नै बोल्यौ— पैला आप म्हारी बात तौ सुणौ ! बिणज री सला-सूत करण सारू ई पाछौ आयौ हूं । जे आपरी इंछा नीं व्हैला तौ घरै गियां बिना ई पाछौ वळ जावूंला । मारग में समाध लाग्योड़ा अेक महातमा रा दरसण व्हिया । आखा डील माथै उदाई रा ढेपा थेथड़िजियोड़ा । म्हैं सुथराई सूं उदाई झाड़ी । हाथां सींच संपाड़ौ करायौ । पांणी पायौ । रोट्यां जीमाई । तद महातमा राजी होय म्हनै वरदांन दियौ के तड़कै पिलंग सूं हेटै उतरतां ई म्हनै पांच मोहरां

होठां लागोड़ी बात नै तुरंत पाछी गिटग्यो के जद तो उणरा मन में पगो खोट है। वो भसम व्है जातो तो उणरी सत साचो। पण साचांणी दूजो मिनख व्हैतां थकां ई वो भसम नीं व्हियो तो उणरी सत अंगे ई बुझ्योड़ो। पर दूजै ई छिण बात री दूजी नाकी सोचतां ई उणरी भळकी ठाडी पड़गी। वो सांम्हो अणूंतो राजी व्हियो। सोचण लागो के फगत उणियारा सूं ई कांई व्है। साची घणी व्हैती तो बिणज रा लोभ में लुगाई री आ माया छोड़तो भलां। कांई ओ निजोग देवण सारू ई वो चंवरी में हाथ झाल आपरै लारै लायो। कोई आंधो ई इण रूप रा झबका नै नीं छोड़तो, तद वो सूझतो होय कीकर आंधो वण्यो। फेरा खाया तो कांई व्है, उणरी प्रीत में साच कठै? अर ओ भूत होय इण सूं साची प्रीत करो। छळ करतां जीव कटमटो व्है। इणरी प्रीत साची। इणरी हेत खरो। जद इज तो दोनां री सत बचग्यो। पण तो ई माहीमाह चोज राख्यां प्रीत रै टबक लागैला। असली बात बतायां बिना वो इण मेड़ी में सांस ई नीं ले सकै। पाछो पाखती सिरकनै कैवण लागी — साचांणी दूजो आदमी व्हैतां थकां ई थांरो सत है तो खरो, क्यूंके म्हारी प्रीत साची। चंवरी रै साचैला धणी री प्रीत झूठी, जद इज तो वो अैड़ा रूप नै पूठ देय बिणज सारू दिसावर हालग्यो।

पण बींदणी साच-झूठ री कीकर पिछांण करै। अै बातां उणरै अंगे ई समझ वैठी नीं। घर रा माईत जिणनै आपरी वेटो जांणै, उण हूबोहूब उणियारा वाळा मोट्यार नै आपरी

धणी मांनणा में कांई संकौ । उणियारौ अर रंग-रूप ई तौ सगळा नाता री मोटी पिछांण ।

तठा उपरांत वौ भूत वींदणी नै ही जकी सगळी साची बात बताय दी के उण खेजड़ी रै वासै उणरौ रूप देख्यां उणरी कांई हालत व्ही । वहीर व्हियां कीकर मूरछागत व्हियौ । पाछौ कद चेतौ बावड़ियौ । दिसावर जावता धणी रै सागै वौ कांई कांई बातां करी । पछै उणरौ रूप धार कीकर इण हवेली आवण रौ मतौ कर्यौ । मारग चालतां आंधी-मेह री बात ई पूरी विगत वार बताई । वींदणी काठ री पूतळी रै उनमांन गुमघांम बैठी सगळी बात सुणती री । कांई आ बात सुणण सारू ई वेमाता उणनै कांन दिया !

उणरी कळाई माथै हाथ फेरतौ भूत धकै कैवण लागौ: माईतां नै तौ नित-हमेस पांच मोहरां अर पेढ़ी री कमाई रौ कोड है, साचा भेद सूं वांनै कीं वास्तौ नीं । पण थांनै भेद प्रगट नीं कर्यां तौ प्रीत रै उणियारै काळस फिर जाती । म्हैं भेद नीं बतावतौ तौ पांच बरसां तांई थांनै सपना में ई इण बात रौ खुलासौ नीं व्हैतौ । थें तौ असली धणी जांणनै ई घरवास करता । पण म्हारौ मन नीं मांन्यौ । म्हैं म्हारा मन सूं साची बात कीकर लुकावतौ । इण पैली धणी ई लुगायां रै डील में लाग लाग वांनै घणौ ई दुख दियौ, पण म्हारा मन री अैड़ी गत तौ कदै ई नीं बिगड़ी । रांम-जांणै इत्ती दया-माया म्हारा मन में कठै बूरियोड़ी ही । इण उपरांत ई थांरी इंछा नीं व्हैला तौ म्हैं इणी पलक पाछौ वहीर व्है जावूंला । जीवूं जित्तै इण दिस सांम्ही मूंडौ ई नीं करूं ।

थांनै तकलाफ म्हनै प्रीत री अैड़ी स्वाद नीं लेवणी । तो ई चीवूंना जिसी गुण मांनूंला के थांरो प्रीत रै कारण म्हारै हिवड़ा री विस इमरत में वदळग्यो । लुगाई रै रूप री अर पुरख रै प्रेम री आ इज तो छेहलो मरजादा ।

रूप री पूतळी रा होठ खुल्या । बोली—हाल आ वात म्हारी समझ में नीं आई के ओ भेद परगट नीं व्हियां सावळ रैवतो के परगट व्हियां सावळ रह्यो । कदै ई तो आ वात खांतरी लागै अर कदै ई वा वात आछी लागै ।

बींदणी री आंख्यां में मीट गडाय भूत कैवण लागो : बांझ जच्चा री चसमस पीड़ में कांई समझै ! इण पीड़ ई में कूख री सिरै आणंद वसै । साच अर कूख रै छूटापा री पीड़ अेक सरीसी व्है । इण साच रै छिपावणा में नीं तो पीड़ ही अर नीं आणंद ई हो । वो तो फगत साच री भरम व्हैतो । आणंद री स्वांग व्हैतो । म्हैं केई लुगायां नै लाग्यो तद कठै ई साच रै भरम री सावळ पिछांण व्ही । म्हैं केई अैड़ी सती लुगायां नै जांणूं जकी अंग-रळियां री वेळा धणी रै उणियारै किणी दूजा मिनख नै ध्यावै । यूं कैवण नै तो वै पराया पुरख री छींयां ई नीं भेटै पण धणी रै मिस दूजा उणियारा रा ध्यांन में कित्तोक कांई सत है—इणरी असली पिछांण जित्ती म्हनै है, उत्ती खुद वेमाता नै ई कोनीं । सती लुगायां रै चरित रा चाळा म्हैं घणा घणा दीठा । डर तो सगळी लोकीक री व्है । किणी नै कदै ई ठा नीं पड़ै तो खुदोखुद भगवांन ई पाप करतो नीं संकै । अबै ज्यूं रावळी मरजी व्है मंसा दरसावो, म्हैं तो भूत होय कीं बात अछांनी नीं राखी ।

अैड़ी आडी तौ आज पैली किणी लुगाई रै सांम्ही नीं पजी व्हैला। आपरै मतै रुळपट सुभाव री तौ गत ई न्यारी। पराई लुगाई अर पराया मोट्यार सारू मन ताखड़ा तोड़ै पण लौकीक री मरजादा सारू ढकणौ उघाड़्यां नीं घकै। पण ढकणा रै मांय सीझै सौ सिरै। सोच-विचारनै अैड़ी बात री पड़ूत्तर देवणौ कित्तौ दूभर। वींदणी इण भांत गुमघांम बैठी री— जांणै बोलणौ भूल ई गी व्है। इत्ती बातां सुण्यां पछै ई वा साव गूंगी व्हैगी !

वींदणी री समझ में अचीतौ सेजौ बावड़ियौ। वा सोचण लागी— जलमतां थाळ री ठौड़ घर में छाजळौ बाज्यौ। घर-वाळा घणा राजी नीं व्हिया। बेटौ व्हैतौ तौ वत्ता राजी व्हैता। माईतां री निजर में उखरड़ी वधतां वार लागै तौ बेटी रौ डील वधतां वार लागै। दसमौ बरस उतरतां ई तौ माईत पीळा हाथ करनै पराई करण री चिंता करण लागा। नीं आंगणै मावती अर नीं गिगन में। छाछ अर लाछ मांगण री कैड़ी मेहणी। सगपण माथै सगपण आवण लागा। उणरै रूप री हाकौ चौफेर हवा में घुळग्यौ हौ। सोळै बरस तौ लेणा दूभर व्हैगा। मां री कूख में मायगी पण माईतां रै आंगणै नीं माई। अणछक इण हवेली रौ नाळेर आयौ। म्हारा वड़भाग के माईत सावौ कबूल कर लियौ। आ हवेली नीं होय कोई दूजी ई गवाड़ी व्हैती तौ उणनै तौ उठै ई सिधावणौ पड़तौ। माईतां री मरजी व्हैती उण सूं ई हथळेवौ जुड़तौ ! धणी बिणज अर लेखा-जोखा में ई मगन। उणरी आंख्यां हांडी रौ पींदौ ई वैड़ौ अर लुगाई रौ उणियारौ ई

वैड़ी । तिड़ती जोबन ई वैड़ी अर तिड़ती खड़ियां ई वैड़ी। नीं वेहल में लुगाई रै मन री बात समझ्यौ अर नीं मेड़ी में। मेड़ी सूनी अर सेज अलूणी छोड़ वौ तौ आपरै विणज ढळियौ। पाछौ मुड़नै ई नीं जोयौ । अर आज भूत आळी प्रीत री चांनणौ व्हियां तौ सूरज ई मगसौ पड़ग्यौ । हथळेवा रौ परण्यौ गाडै वहीर व्हियौ तौ इणरौ वस पूगौ नीं । भूत आळी इण प्रीत आगै ई उणरौ वस कठै पूगी ! जावता नै बरज नीं सकी तौ पछै मेडी आया नै कीकर वरजै ! औ प्रीत री बात करै तौ कांनां डूंजा कीकर घालीजै ! घणी होय इण विध अधर लटकाई । भूत होय इण विध प्रीत दरसाई । कीकर नटणी आवै । जे सपना वस में व्है तौ अैड़ी प्रीत ई वस में व्है । वा तौ आपरौ चेतौ विसर भूत रा खोळा में गुड़गी ।

कांई औ उणरै मन री ई भूत नीं ही जकौ साकार रूप धरनै प्रकट व्हियौ । पछै आपरा मन सूं कैड़ौ चोज ! जठै वांणी अड़ै उठै मूंन कांम सारै । तठा उपरांत कीं कैणी-सुणणौ बाकी नीं रह्यौ । मतै ई अेक दूजा रै अंतस री बात समझग्या। पछै दीवां री चांनणौ लोप व्हैगौ अर अंधारौ उजास रौ रूप धार जगमग जगमग करण लागौ । सेजां कुम्हळायोड़ा फूलां री पाछी कळी-कळी खिलगी । मेड़ी री चांनणौ सुफळ व्हियौ । मेड़ी रौ अंधारौ सुफळ व्हियौ । गिगन रै नवलख तारां रौ आपै ई उजास वधग्यौ ।

अैड़ी लाखीणी रातां में दिन जातां कांई वार लागै । चिमट्यां रै समचै दिन बीतण लागा । घणौ ई विणज वध्यौ । घणी ई बोरगत वधी । घणौ ई मांन वध्यौ । माईत तौ राजी

ह' जका हा इज, आखौ चौखळौ ई सेठां रै बेटा सूं अणूंतौ राजी हौ। अड़िये-बड़िये कांम आवतौ। दूजा बांणियां रै उनमांन गळा नीं करतौ। निपट काछदढ़ौ। पेढ़ी आई लुगायां रै सांम्ही ऊंचौ मूंडौ करनै ई नीं जोवतौ। छोटी नै भांण अर मोटी नै मां सरखै जांणतौ। लोग उणरौ नांव लेवता तौ मूंडौ भरीजतौ। उण में फगत अेक बात री खांमी। दिसावर सूं सेठां रै बेटा रौ कागद आवतौ तौ वौ फाड़ वगाय देतौ। पाछौ कीं पड़ूत्तर नीं।

इण आणंद अर जस रै बिचाळै देखतां देखतां तीन बरस बीतग्या। जांणै मीठौ सपनौ बीत्यौ। भूत ई इण हवेली रळमिळग्यौ। जांणै सेठां रौ सगौ बेटौ इज व्है। बींदणी ई मेड़ी रा नसा में गैळीजियोड़ी ही। मेड़ी री उडीक में ऊगतां ई दिन आथम जातौ। मेड़ी चढ़ियां अेक छिण में रात ढळ जाती।

बींदणी रै आसा मंडी। तीजौ महीनौ उतरण वाळौ हौ। आधांन रह्यौ जद खुद सेठजी सवा मण गुळ आपरा हाथ सूं बंट्यौ। लोगां सवा मण सोनौ जांणनै हथाळियां मांडी। सेठजी ऊमर में पैली वार औ दातारपणौ दरसायौ। आज हाथ खुलियौ तौ धकै वळै कीं न कीं चांनणौ व्हैला। बेटौ अर बींदणी छांनै-ओलै घणौ ई दांन करयौ। हरख रै नवलख तारां बिचाळै अबै औ नवौ चांद जुड़ैला। कूख रौ चांद गिगन रै चंदरमा सूं सदा सवायौ।

दोनूं धणी-लुगाई नै बेटी री अणूंती चावना ही। घणा घणा लाड-कोड करैला। बेटौ किसौ सरग लै जावै? राम-जांणै

किणरी ओळ जावैला ? टावर रा जलम विचै टाबर होवण रा कोड में घणौ आणंद व्है। कूख में टाबर रै सागै सपना पळै।

वड़गड़ां वड़गड़ां दिन उड़ण लागा। पांच महीना बीत्या। सात महीना संपूरण व्हिया। औ नवमौ महीनौ उतरण वाळौ। वींदणी आखै दिन मेड़ी में ई सूती रैवै। तीन तीन दायां हाजरी में। अस्टपौर सुजाग रैवै।

घणी रै खोळा में सूती सूती वींदणी ऊंचौ मूंडौ करनै बोली — केई वळा सोचूं — जे उण दिन खेजड़ी रै हेटै विसाई खावण नीं ढवता तौ राम-जांणै म्हारा अै चार बरस कीकर ढळता। म्हनै तौ लागै के ढळता ई नीं।

भूत बोल्यौ — थांरा तौ ज्यूं-त्यूं करनै दिन सिरकता ई। पण म्हारा कांई दीन व्हैता। बांटकै-बांटकै, खेजड़ी-खेजड़ी भूत री जूंण पूरी करतौ। उण दिन सुमत वापरी के म्हैं थांनै लाग्यौ कोनीं। म्हनै तौ हाल विस्वास नीं व्है के साचांणी जीवण रौ आणंद भोगूं के सपनौ जोवूं।

चीकणै कंवळै केसां आंगळियां फेरतां-फेरतां रात पित-ळगी।

उठी अळगै दिसावर वींदणी री परणियौ झांझरकै घड़ी रात थकां बैठौ व्हियौ। आळस मरोड़, उबासी खाय दीवड़ी सूं ठाडौ पांणी पीयौ। चारूं खुणा भाळियौ। अेक सरीसौ अंधारौ। झब-झब करता अेक सरीसा तारा। किणी खुणै चांनणौ कोनीं। सोचण लागौ के आ रात वळै खासी छोटी व्हैती तौ कितरौ सखरौ। कांई जरूरत है इत्ती लांठी रात री। सूवणा सूवणा में आधौ जमारौ विरथा जावै। नींद में तौ विणज-वौपार व्है

कोनीं । नींतर दूणी कमाई व्हैती । तौ ई माया कम भेळी नीं करी । भायजी जांणै जित्ता राजी व्हैला ।

बिचाळै आखती-पाखती रा साहूकार मिळ्या । उणनै उठै देख्यां अणूंतौ इचरज करचौ । पूछ्यौ के वौ गांव छोड पाछौ कद आयौ ? आ बात सुण उणनै ई कम अचूंभौ नीं व्हियौ । कह्यौ के वौ तौ हाल गांव कांनी मूंडौ ई नीं करचौ । वैं काला तौ नीं व्हैगा । लोगां बध बधनै कह्यौ, मांडनै सगळी बात बताई तौ ई उणनै विस्वास नीं व्हियौ । वौ अठै है तौ कोई दूजौ सेठां रौ बेटौ कीकर बण सकै । कमाई ईवै कोनीं जिण सूं खपचा में न्हाकणी चावै । पण वौ अैड़ौ भोळौ कोनीं । वांरा कांन कतरै जैड़ौ है । कमाई अर बिणज में वत्तौ मन लगावण लागौ ।

पण आज तौ सूरज री उगाळी अेक खास पाड़ौसी समं-चार दिया के वींदणी रै तौ जापौ होवण वाळौ है । कदास व्हैगौ व्है ।

सेठां रौ बेटौ बिचाळै ई बोल्यौ—जे अैड़ी बात व्हैती तौ घरवाळा अवस म्हनै समंचार पुगावता । म्हैं तौ पांच-सात कागद भिजवाया । म्हनै तौ पाछौ अेक रौ ई पडूत्तर नीं मिळियौ ।

पाड़ौसी कह्यौ—भला मिनखां, थोड़ौ सोचौ तौ खरी के घरवाळा क्यूं समंचार पुगावै ? किणनै पुगावै ? बेटौ तौ तीजे दिन ई आधेटा सूं पाछौ आयग्यौ । अेक महात्मा रै दियोड़ा मंतर सूं सेठां नै नित पांच मोहरां देवै । हवेली तौ रांम राजी है । तापड़धिन्न उडै । मेड़ी में घी रा दीवा भुपै । हां, अबै सावळ

जाच पड़ी। सेठां रै बेटा री हूबौहूब आप सूं उणियारौ मिळै। बेमाता री कुदरत। खुद सेठ देखता तौ ई ओळख नीं सकता। अबै वातां करयां सावळ ठा पड़गी के उणियारौ तौ अवस मिळै पण आप दूजा हौ।

'भलां, म्हैं दूजौ कीकर व्हियौ ? अबै दीसै के काले-पिरसूं ई सिधावणौ पड़ैला।'

सौ वौ सेठां रौ बेटौ बिणज-वौपार संवेट, मुनीम नै मुळावणां देय आपरै गांव वहीर व्हियौ। वौ ई जेठ रौ महीनौ। लूवां रा खेंखाड़ वाजता हा। अणछक केरां माथै राता-राता ढालू देख उण दिन वाळी वात याद आयगी। सोच्यौ — वींदणी री जे अैड़ी ई भाव्ड़ है तौ अपांरौ कांई लियौ। किसा टका लागै ! पाक्योड़ा ढालू तोड़नै गमछा रै पल्लै बांध्या।

वौ हवेली पूगौ जणा आंगणै लुगायां री मेळौ मच्योड़ौ। सेठ-सेठांणी हाव-गात्र व्हियोड़ा पूज माथै पूज बोलता हा। भूत आळौ धणी मेड़ी रै बारणै ऊभौ हौ। विलखौ-विलखौ। दुमनौ-दुमनौ। वींदणी साळ रै मांय टसकती ही। कस्टिजियोड़ी। अंवळौ आयग्यौ हौ। दायां आपरा हुनर में लाग्योड़ी ही।

के इत्ता में चौक री इण चकचक रै विचाळै चंवरी रौ परण्यौ धूळ में भखभूर व्हियोड़ौ निसंक आंगणै आय उभग्यौ। खांवै ढालुवां रौ गमछौ टिरतौ हौ। माईतां रै चरणां माथौ निवाय दंडौत करी। औ कांई खिलकौ ? हूबौहूब वेटा सूं उणियारौ मिळै। खंग्र सूं भरयोड़ौ व्है तौ कांई व्है ! मायां

रै लोभ कोई छळी छळावौ तौ नीं करै ! अणूंतौ इचरज ई अबोलौ व्हे । माईत बोलणी चायौ तौ ई वांरा सूं बोलीजियौ कोनीं । लुगायां री चकचक रौ राग बदळग्यौ । हे मावड़ी— अेक ई उणियारै रा दो धणी ! कुण साचौ, कुण कूड़ौ ! औ कांई रासौ, औ कांई कोतक ? कोई कठी नै न्हाटी, कोई कठी नै न्हाटी ।

साळ रै मांय लुगाई रौ टसकणौ सुण तुरंत सगळी वात समझग्यौ । सुण्या सौ समंचार साचा । अैड़ौ छळ कुण करचौ ? कीकर व्है इणरी पिछांण ? लोग किणरै कह्या रौ भरोसौ करैला ! अचांणचक मेड़ी रै बारणै ऊभा मोट्यार माथै उणरी निजर पड़ी । औ तौ साचांणी उणरौ हूबौहूब उणियारौ । छळी रा छळ नै कुण पूगै ? नसां रौ लोई ठसग्यौ । भलां आ बात कांई व्ही ?

प्रीत वाळा धणी रै कांनां तौ फगत जच्चा रौ टसकणौ गूंजतौ हौ । उणनै तौ किणी दूजी बात रौ कीं चेतौ ई नीं हौ । हवा थमगी ही । सूरज थमग्यौ हौ ! कद औ टसकणौ बंद व्है अर कद कुदरत रौ पेंखड़ौ छूटै !

बाप रै मूंडा सांम्ही देख बेटै कह्यौ — म्हैं तौ चार बरसां तांई अळगै दिसावर हौ, पछै ठा नीं पड़ी के वींदणी रै आधांन कीकर रह्यौ ? थांनै थोड़ौ घणौ तौ समझ सूं कांम सारणौ हौ ।

सेठ मनाग्यांना सगळौ हिसाब समझ लियौ । बोल्या— थूं है कुण ? म्हारौ बेटौ तौ तीजे दिन ई पाछौ आयग्यौ । अठै नागायां करी तौ पार नीं पड़ैला ।

बाप रै मूंडै आ बात सुणनै बेटा नै अणूंतौ अचूंभौ व्हियौ। ढवणा सूं बातड़ी परबार जावैला। तुरंत बोल्यौ — चार बरस जांणै जित्ती कमाई करनै दिसावर सूं बाप रै घरै आयौ, इण में नागाई री किसी बात! थें इज तौ माडै धोदाय मेल्यौ हौ!

सेठ कह्यौ — नीं चाहीजै म्हारै अैड़ी कमाई। थूं म्हनै कमाई री कांई छिग बतावै। आयौ उणी मारग पाधरौ-पाधरौ ढळ जाजै, नींतर भूंडी बीतैला।

बाप री तौ माथौ ई भंवग्यौ दीसै। वौ मां रै मूंडा सांम्ही देख कैवण लागौ — मां, कांई थूं ई जलम दियोड़ा बेटा नै नीं ओळखै।

मां इण सवाल रौ कांई पड़ूत्तर देवती। उणरी जीभ तौ जांणै ताळवै चेंटगी। वा तौ टुग-टुग धणी रै सांम्ही जोवण लागी। मां की जबाब नीं दियौ तौ बेटौ ई गताघम में अळूभग्यौ। अणछक ढालुवां री बात याद आई। हळफळायौ होय तुरंत गमछौ खोल्यौ। राता-राता ढालू बाप रै मूंडागै करतौ बोल्यौ — बींदणी नै उण दिन रै ढालुवां री बात पूछौ। वा सगळी म्यांनौ बताय देवैला। उण दिन तौ वा खुद ई ढालू तोड़नै लाया हा। आज म्हैं म्हारै हाथां तोड़नै लायौ। अेकर उणनै पूछौ तौ खरी। आप फरमावौ तौ म्हैं बारै ऊभौ ई पूछलूं।

सेठां नै भळकी आयगी। बोल्या — काली कठा री ई! आ वेळा ढालुवां री बात री म्यांनौ पूछण री है? [illegible]दणी रै पीव री पड़ी जर थनै [illegible] री वळी। आ[illegible] बाळ थारा

आं ढालुवां नै । म्हैं तौ आ वेळ बात सुणतां ई सगळी म्यांनी समझग्यौ । मायापत सेठां री वींदणी गिवारां री गळाई हाथां तोड़नै ढालू खावैला ? मानना सूं बोलौ बोलौ उखल जा, नींतर बेभाव रा लिग्तरा पड़ैला ।

बेटै कह्यौ — बाप रै लिग्तरां री तौ कीं सोच कोनीं, पण साचांणी म्हैं ई उण दिन वेहल में आ री आ बात करी ही ।

साळ रै मांय वींदणी रौ उणी भांत टसकणौ चालू हौ । दायां घड़ी घड़ी पूछचौ तौ ई वा अंवळौ वाढ़ण सारू घड़ी घड़ी नटती इज गी । नीठ मरतां मरतां छूटापौ व्हियौ । वींदणी री आंख्यां आडी कदै तौ अंधारी आय जाती, कदै बीजळियां झबूकण लाग जाती ।

चौक सूं न्हाटी लुगायां रै मूंडै आ वात थैड़ी उफणीजी के घर घर में कचकचाटौ माचग्यौ । देखतां देखतां सेठां री हवेली रै ओळूं - दोळूं मिनखां रौ मेळौ मचग्यौ । अैड़ी अजोगती बात रौ स्वाद तौ जीभ नै बरसां सूं नीठ हाथ लागै । जणा जणा री जीभ रै पांखां लागगी ही । अेक ई उणियारा रा दो धणी ! अेक तौ चार बरसां पैली मेड़ी चढ़ग्यौ । अर अेक चार बरसां रै उपरांत घरवास करण सारू आयौ । वींदणी साळ में जापा री पीड़ सूं टसकै । जबर खिलकौ व्हियौ । देखां मायापत सेठ इण बात नै कीकर केवटै । कीकर ढकै ! भलां थैड़ी बातां रै ढकणा कुण ढाकण दे । लोग चिगळ - चिगळनै वळै चिगळता ।

सेठ हवेली रै चारूं कांनी औ गसकौ देख्यौ तौ तरणाटी आयगी । थूक उछाळता कैवण लागा — म्हांरै घर री बात

है, म्हैं ई सलट लेस्यां । वस्ती वाळा क्यूं पंचायती करै ? म्हैं सेठ के फड़े आयो जको मिनख छळो है । म्हैं म्हारै गाडम सूं लगु देय बारै निकाळ देस्यूं । घोळै दोफारां नागायां नीं चालै ।

सेठो कूकियो — भायजी, थें पूं कांई काली वातां करो । सूरज नै तवो अर तवा नै सूरज कीकर बतावो । थें ज्यूं गावो त्यूं म्हारो पतियारो ले लो । ओ तो हळाहळ अन्याव है ।

मायापत सेठां री पंचायती री थैड़ी मोकी फेर कद आवैला । लोग-बाग ई अड़ग्या के खरी पंचायती व्हैणी चाहीजै । दूध रो दूध अर पांणी रो पांणी । कसूरवार नै पूजतो डंड मिळै । नूं दो नणियां रो बारो पड़ग्यो तो कीकर थकैला ? अमीरां रै तो कांई कोनीं, पण गरीबां रो जीवणो हरांम व्हे जावैला । वस्ती सूं टळियां नीं सरै । कित्तो ई माया रो ठरको व्हो, खांधिया भाड़ै नीं आवैला ।

मांमलो तणियो पण तणियो । जबर पजी । कुण ई नीची नीं न्हाकी । नीं सेठजी अर नीं वस्ती रा सगळा लोग । लोगां रै मूंडा हा अर बींदणी रै कांन हा तो उणनै साळ रै मांय सगळा समंचार पूगग्या । लुगाई रै जमारै रांम-जांणै कांई कांई वातां सुणणी पड़ैला । कांई कांई तोख भुगतणा पड़ैला । अर कांई कांई रांमत देखणी पड़ैला । सेवट अेक दिन ओ झगडो तो व्हैणो इज हो । अै चार वरस तो सपना रै उनमांन लोप व्हैगा । भलां सपना रो कित्तोक थावस ! अर कित्तोक दम री जड़ ऊंडी ।

किणी जूंना ढमढेर में चमचेड़ां री गळाई मांनखौ अठी-उठी चकारा देवण लागौ। अर पंचायती निवेड़ियां बिना तौ कवौ ई गळै नीं उतरै।

साळ रौ आडौ उघाड़ दायां समंचार दिया के वींदणी रै गीगली व्ही। मौत री विकट घाटी टळी। जच्चा रै मरणा में तौ कीं खांमी ई नीं ही। बचगी सौ भाग री। साळ रै बारै अड़थड़ती लुगायां नै बाळ-साद सुणीजियौ। मेड़ी रै बारणै ऊभा धणी नै अबै जावतां चेतौ व्हियौ पण चेतौ वावड़तां ई जकी सुरपुर कांनां सुणीजी तौ जांणै काळजा में अणचीती सुरंग छूटी। सुध-बुध माथै जांणै वांण वैगौ। अेक बरस पैला आ बीजळी कीकर पड़ी!

सेठ-सेठांणी बगना व्हियोड़ा आक-बाक ऊभा हा। आखी वस्ती में कळळाटौ कचबचग्यौ। कैड़ौ अचीतौ अड़दू उपजियौ। औ काळ-पूंछियौ, काळ रौ खावौ अचाचूक किण भौ रौ आंटौ साजियौ। बात तौ कराड़ां बारै व्हैगी। अबै कीकर सलटणी आवै। कुण जांणै कुण दाव-घाव करचौ। मेड़ी तौ लारला चार बरसां सूं भिळै? इणनै नीं अंगेजियां तौ हवेली री लाज ई भिळ जावैला। ढालू वाळौ धणी कीकर ई मांन जावै तौ ढाको ढक्योड़ौ रैवै। मांगै सौ ई अलल-हिसाब देवण नै त्यार। पछै कांई चाहीजै।

नीं ढालू वाळौ धणी मांन्यौ अर नीं वस्ती रा लोग ई मांन्या। अदल न्याव होवणौ चाहीजै। आखी न्यात री नाक वढै। चार बरस उपरांत कूख उघड़ियां दूजौ धणी जागियौ। कांई ठा कुण साचैलौ धणी! अेक नै तौ कूड़ौ व्हैणौ ई

पड़ैला । वस्ती तौ भणभणाटै चढ़गी, जांणै टांटियां रौ लांठौ छाती हेटै थरकीजियौ । ढालू वाळा धणी रै पखै नीं वंधै तौ वात रै है जठै ई मूचौ लाग जावै । सगळा आणंद रौ मठ मर जावै । इण आणंद री साव लेवण सारू मतै ई जणौ जणौ ढालू वाळा मोट्यार रै विळू वंवग्यौ ।

सेठ हाथ जोड़ता थका गळगळा सुर में वोल्या — म्हारी पाग उतारयां थांरै कांई हाथ आवैला । भेळा वैठा भाई हां । अड़िये-वड़िये अेक दूजा रै कांम आवां । म्हारै वेटा रा गुण थांरां सूं छांना कोनीं । उणरै हाथां किणरौ भलौ नीं व्हियौ । इत्ता वैगा गुण-चोर मत व्हौ । म्हारी पाग थांरै चरणां, कीकर ई वातड़ी ठांणै विठाय दो । औ ढालू वाळौ मोट्यार जाळी है । इणनै थड्डा देय गांव वारै काढ़ौ ।

वूढ़ा-वडेरा कह्यौ — सेठां दीखती माखी नीं गिटीजै । वगत आयां माथा देवण नै तैयार । पण पांणी रा पोटाळा कीकर वंधै । औ मोट्यार वध वधनै कैवै, वींदणी नै ढालुवां वाळी वात पूछी तौ खरी, इण में कांई हांण ।

अैड़ी वात कीकर पूछणी आवै ? कुण पूछै ? तद कीं भली डोकरियां घकै आई । वगत माथै मिनख इज तौ मिनख रै कांम आवै । साळ रौ आडौ उघाड़ मांय वड़ी । जच्चा रै पेट में सळीका हालता हा । जापा री घाटी रै उपरांत जिण वात री भणकारौ कांनां पड़ची तद वा जच्चा री सगळी पीड़ पांतरगी । आ दूजोड़ी पीड़ घणी घणी लांठी ही । दांत भींचती नीठ वोली — कोई मोट्यार आ वात पूछतौ तौ उणनै हां ना रौ जवाव ई देवती ! थें लुगाई रै जमारै आय आ वात

पूछण री हीमत करी तौ करी इज कीकर ! म्हनै म्हारै मतै मरण-जीवण दो । थांनै छेड़ण री आ वेळा लाधी ? घिन है थांरी छाती नै ।

डोकरियां मूंडा मस्कोरती वारै आई । बोली — अैड़ी बातां में लुगायां कद साच बोली ? म्हांनै तौ दूध में काळस दीसै, पछै थांरी समझ पड़ै ज्यूं करौ ।

अैड़ा टांणा माथै ई तौ समझ रै पांण लागै । सूत तौ अळूझियौ पण अळूझियौ । बूढ़ा-बडेरा वळै समझ सूं काम लियौ । कह्यौ — औ न्याव राजाजी बिना नी निवड़ै । कोई दूजौ इण में पंचायती करी तौ आखी बस्ती नै वै भेळी गांथैला । आपरौ भलौ-भूंडौ तौ सोचणौ ई पड़ै । अेकर आं दोनूं धणियां नै राजाजी रै हवालै कर दां । पछै राजाजी जांणै अर सेठजी जांणै । अपां बीच में क्यूं लिक-लिक करां। पछै बस्ती रांम है, सगळां रै दाय पड़ै ज्यूं करौ ।

तठा उपरांत बस्ती रै जचै ज्यूं ई व्ही । भलां, आपरौ रांम-पद क्यूं छोड़ती दोनूं धणियां नै राहड़ियां सूं बांध काठा जरू करचा । मेड़ी रै बारणै ऊभा धणी नै बांधण लागा तद उणनै चेतौ व्हियौ के सेवट बात कठै जायनै छूटी ! वौ कीं उजर नीं करचौ । नाळ उतरतां काळजौ होठां लाय बोल्यौ: म्हनै अेकर साळ रै मांय जावण दो । मां-बेटी री सुख-साता तौ पूछ लूं ।

पण लोग नीं मांन्या । कह्यौ — न्याव निवड़ियां आखी ऊमर सुख-साता पूछणी इज है । इत्तौ आंचौ क्यूं करौ ।

लोगां रौ वतूळियौ पगां हालियौ । दोनूं धणी गांथै

वंध्योड़ा हा । सेठ ई खुर रगड़ता साथै चालता हा । पागड़ी रा आंटा विखरचोड़ा । लांबा पना री वायरी पांन पांन नै फंफेड़ती खें खें वाजती ही । चालतां चालतां उणी इज खेजड़ी माथै भूत री निजर पड़ी । आखा डील में सरणाटौ माचग्यौ । टणरा पग हा जठै ई रुपग्या । माथा में खणणाटौ कळ-कळियौ । आंख्यां सांम्ही ओळूं री कावड़ घूमण लागी इज ही के राहड़ी री हचीड़ लाग्यां उणनै चेतौ व्हियौ । पग मतै ई टुळकण लागा । डावौ जीमणौ, डावौ जीमणौ । मिनख रै हीये ओळूं री लफड़ी नीं रैवै तौ कित्तौ सावळ । आ ओळूं तौ जांणै अंस ई काढ़ न्हाकैला ।

गांयै चालता विणज वाळा घणी री तौ मन जागतौ ही । पण साच रै आज आ कैड़ी आंच लागी ! वौ तौ खुद भरम में पजग्यौ । आ कांई लीला व्है ? पसवाड़ै चालतौ औ मोट्यार तौ अैड़ौ लागै जांणै वौ आरसी में आपरी ई प्रतम देखै । इणनै पूछ्यां ई भरम मिटै तौ मिटै । उणरै गळा सूं अड़ता अड़ता नीठ अै बोल निकळिया — भाया, न्याव तौ रांम-जांणै कांई व्हैला, पण थूं आछी तरै जांणै के म्हैं ई सेठां रौ डीकरौ हूं । चंवरी रौ साचैलौ परण्यौ हूं । पण थूं कुण है, आ तौ वता । औ कांई मायाजाळ रचीजियौ । सूतां-वैठां म्हारै आ कांई तळतळावण व्ही । वता, म्हनै तौ वता भाया के थूं है कुण ?

हो तौ घणौ ई भूत । न्याव करावण वाळा पंचां री घांटियां अेकण सागै मरोड़ सकतौ, केई चाळा कर सकतौ । लाग्यां उत्तन उठांण सकतौ । पण चार वरसां सूं प्रीत रै

खोळिये उणरी अंतस बदळग्यौ । भूठ बोलणी चायौ तौ ई उण सूं बोलीजियौ कोनीं । सुभट साच ई कैवै तौ कीकर कैवै ? वाहेली री कांण तौ राखणी इज ही । जुजठळ वाळी मरजादा निभाई । बोल्यौ — म्हैं लुगायां री चांम रै मांयलौ सूछम जीव हूं । वांरी प्रीत रौ धणी हूं । बिणज अर कमाई बिचै म्हनै हेत-प्रीत री लाळसा वत्ती है ।

फेरां रौ धणी आखतौ होय विचाळै ई बोल्यौ — दूजी झिकाळ क्यूं करै ? सुभट बता के चंवरी रौ ठौड़ थूं हथळेवौ जोड़्यौ क़ांई ?

'कोरा-मोरा हथळेवा सूं कांई व्है ? चंवरी रौ जोर आखी ऊमर नीं चालै । बिणज चीजां रौ व्हिया करै, प्रीत रौ नीं । थें तौ प्रीत रौ ई बिणज करण लागग्या । इण विणज में अैड़ी इज बरगत व्हिया करै ।

सेठां रै डीकरा रै काळजै जांणै स्यार रा सासता ताबोड़ा लाग्या । अैड़ी बातां तौ वौ कदै सोची ई नीं ही । सोचण रौ मौकौ ई कद मिळ्यौ हौ । आज मौकौ ई मिळ्यौ तौ इण टांणै !

मिनखां री वतूळियौ राजाजी रै पाखती न्याय करावण सारू खाथौ-खाथौ चालतौ हौ के बिचाळै अेवड़ चारतौ अेक राईकौ मिळग्यौ । हाथ में डीगौ तड़ौ । कड़बटीलौ खत । कड़-बटीला पटिया । माथै कसूंबल गोळ पोतियौ । हाथां में चांदी रा कड़ा । भरपूर डीगौ । रींछ री गळाई आखा डील माथै लांठा बाळ । भोपणा, भंवारा अर कनबाळ ई अणूंता लांठा । कोडियाळा दांत । तड़ौ आडौ करनै धवूस री गळाई पूछ्यौ —

इत्ता जणा भेळा होय सिध जावौ ? कदास मौसर गिटण सारू औ भींवगोटी ऊठियौ दीसै ।

दो तीन वळा समझायां उणरै सावळ समझ बैठी के औ खगडौ किण वात रौ । मूंफाड़ रै गळाकर हंसी नै ढोळतौ कैवण लागौ — इण नाकुछ कांम सारू बापड़ा राजा नै क्यूं फोड़ा घालौ । औ न्याव तौ म्हैं ई निवेड़ देस्यूं । थांनै आंख्यां री सौगन वकै अेक पावंडौ ई वधिया तौ । नंदी रौ ठाडौ पांणी पीवौ । धमेक विसाई खावौ । थांरा चौखळा री तौ आछी पाखी परवारी । कोई दुथणी रौ जायौ औ न्याव सलटावणियौ लाधौ ई नीं । हचां हचां पाधरा राजाजी रै गोडै वहीर व्हैगा ।

लोगां ई देख्यौ के हाल राज-दरबार तौ खासौ आंतरै । जे इण मूळ री अकल कांम काढ़ दै तौ कांई आंट । नींतर धकै तौ जावणौ दीसै ई है । वै मांनग्या । तद राईकौ सारी-वारी दोनां रा मूंडा निरख्या । सागै अेक ई उणियारै । हवा जित्तौ ई फरक नीं । अचपळी वेमाता ई कैड़ी कुबद करी !

वां दोनां री राहड़ियां खोलतौ वौ कैवण लागौ — भलां मिनखां, आंनै इण भांत वांध्या क्यूं ? इत्ता मिनखां में कठै दौड़नै जावता ।

पछै खास मुखिया रै सांम्ही देख पूछ्यौ — अै गूंगा-बोळा तौ कोनीं ?

मुखिये जवाव दियौ — आं हां, अै तौ अंगै ई गूंगा-बोळा कोनीं । दाछंट वोलै ।

राईकौ वात सुण जोर सूं हंसियौ । हंसतौ हंसतौ ई

यौ — पंछै इत्ता डाफा क्यूं खाया ? आंनै उठै ई पूछ लेता।
ां में अेक तौ भूठौ है इज ।
पंच मांय रा मांय हंसिया । औ राईकौ तौ साव़ अबूझ
ौ । अै साच बोल जाता तौ पछै घांदौ ई कांई बात रौ
। व्हा, व्हैगौ इणरै हाथां न्याव ? अैड़ी न्याव निवेड़ण जोग
ल व्हैती तौ तड़ौ लियां लरड़ियां रै लारै ढरर-ढरर करतौ
रबड़तौ ।
राहड़ी नै सांवटतौ थकौ राईकौ कैवण लागौ — समझग्यौ,
भ्ग्यौ । अै बोलणौ तौ जांणै । पण सागै री सागै भूठ
ळणौ ई सीखग्या । पण कीं बात नीं । साच नै बारै
ढ़णौ तौ म्हारै डावा हाथ रौ खेल । गळा में तड़ौ घाल
तड़ियां में अळूझियोड़ौ साच अबारूं बारै लाय पटकूं । जेज
ईं । खेजड़ी रा लूंग ई इण तड़ा आगै नीं ढबै, पछै बापड़ा
च री कांई ज़िनात । बोलौ, किणरा गळा में तड़ौ खसोलूं।
ग बाकौ फाड़ैला वौ ई साचौ ।
भूत मन में सोच्यौ के अेकला री इज बात व्हैती तौ
णै जितौ जोखौ अर दुख उठाय लेतौ । पण अबै भेद पर-
ः व्हियां तौ मेड़ी री धणियांणी में फोड़ा पड़ैला । अैड़ी ठा
ती तौ खेजड़ी रै कांटां में ई बिंध्योड़ौ रैतौ । भूतां रा छळ-
ठ में तौ वौ घणौ ई पारंगत हौ, पण मिनखां रै दाव-घाव
उणनै अंगै ई बेरौ नीं हौ । मिनखां री वांणी सूं सुणतौ
की बात ई साच मांन लेतौ । तड़ा सूं उणरै गळा रौ कांई
ागड़ै ! अैड़ा सात तड़ा खसोलै तौ ई कीं काढ़नै देवै नीं ।
ह्ारी प्रीत भूठी भवै ई नीं व्है सकै । इण में इत्ती सोचण

जैड़ी कांई बात ? वौ लप बाकौ फाड़तौ इज निगै आयौ। सेठां री वेटी तौ होठ ई नीं खोल्या। रीस तौ अैड़ी आई के इण गिवार राईका नै सिलाड़ी हेटै बांट न्हाकै। पण विवाद कीं नीं करचौ।

बाकौ गड़ण वाळा मोट्यार रा मोर थापलतौ राईकौ बोल्यौ — छेत्रास रे डारा, थारै जैड़ा सचवाया मिनख रै अै नांढ़ लोग इत्ती छोजत करी। पण तौ ई दो परख वळै करूंला। न्याव तौ अबै व्हैणौ जकौ इज व्हैला। पण मन री घीजौ मोटी बात है। थोड़ौ घणौ ई खरखराटौ क्यूं राखणौ।

उणरी लरड़ियां खासी अळगी भांय लग न्यारी न्यारी चरती ही। वां कांनी हाथ फेरतौ राईकौ कैवण लागौ — म्हैं सात ताळियां वजाऊं उत्ती ताळ में चूकती गाडरां नै टोळ इण खेजड़ी रै ओळूं-दोळूं अेकठ भेळी करदै जकौ ई साचौ।

राईका रै कैतां जेज लागी अर वौ भूत तौ वतूळिया रौ रूप धार पांचवी ताळी वाज्यां पैली पैली सगळा अेवड़ नै अेकठ कर दियौ। सेठां री वेटी मूंडौ ढेरचां ऊभौ रह्यौ। उठा सूं चुळियौ ई नीं। जैड़ी राईकां री नांढ़ जात वैड़ौ ई नांढ़ वांरौ न्याव। मांनणौ अर नी मांनणौ तौ उणरै हाथ री बात।

राईकौ बोल्यौ — घणा रंग है थनै। भलां, साचा धणी रै टाळ इत्ती हूंस अर इत्तौ आपौ किणरौ व्है सकै। अबै अेक मांमूली छांण-बीण वळै कर लूं। थोड़ाक सुस्तावौ।

तड़ौ खाक में घाल दिवड़ो रौ मूंडौ खोल्यौ। अेक ई सांस में डग-डग सगळौ पांणी गरळै खळकाय जोर सूं डकार खाई। पछै पेट माथै हाथ फेरतौ बोल्यौ — सात चिमटचां रै

समचै जकौ मोट्यार इण दीवड़ी रै मांय वड़ जावैला, वौ इजै मेड़ी रौ साचौ धणी। म्हारी पंचायती उथापै उणरौ गळौ तड़ां सूं तच्च करती रौ सूंत न्हाकूं।

लोग तड़ा रै अंकोड़िया सांम्ही जोयौ—धार लाग्योड़ौ। तीखौ तच्च। अेक झटकौ लाग्यां दूजौ तौ उबरतौ पड़्यौ। भोडक तौ पाधरौ पगां आय धूळ भेळौ।

लोगां नै अंकोड़िया री आंट तौ देखतां जेज लागी पण भूत नै दीवड़ी रै मांय वड़तां कीं जेज लागी नीं। अै करतब तौ वौ जलम सूं ई जांणै। बापड़ौ राईकौ तौ लाज राखी। भूत रै मांय वड़तां ई राईकौ तौ अेक छिण री ढील नीं करी। तुरत मूंडौ वाळ कस्सा रा सात-आठेक पळेटा खांच दीवड़ी रौ मूंडौ सैंठौ बांध दियौ। पछै पंचां रै मूंडा सांम्ही देख धंजसतौ बोल्यौ—न्याव करतां आ जेज लागी। दीवड़ी तौ म्हारी ई वैती रै वाळै जावैला, पण न्याव झेलियौ तौ कीं सोच-समझनै ई झेल्यौ हौ। चालौ अबै सगळा भेळा होय इण दीवड़ी नै नंदी रै मांय पधराय दां। आटां-पाटां गैगाट करती नदी इणनै मतै ई मेड़ी रै ढोलिये पुगाय देवैला। बोलौ व्हियौ के नीं अदल न्याव।

सगळा ई अेकण सागै माथा धूणिया। सेठां रै बेटा रै नीं हरख रौ पार हौ अर नीं आंणद रौ। ब्याव सूं ई हजार गुणा वत्तौ कोड उणरै हीये थाबा मारण ढूकौ। अंतस रौ आणंद ओटै होय राफां रै मिस बारै झरण लागौ। आंचाआंच में नग जड़ी बींठी बारै काढ़ राईका नै देवण सारू वकै करी। राईकौ बिना कह्यां ई उणरै मन री वात तौ समझग्यौ, पण

वींठी अंगेजी कोनीं । कड़वटीला खत रै मांय कोड्याळी हंसी हंसतौ बोल्यौ — म्हैं राजा कोनीं जकौ मोल साटै न्याव करूं । म्हैं तौ अड़ियौ कांम सार दियौ । अर आ वींटी म्हारै कीं कांम री कोनीं । नीं आंगळियां में आवै नीं तड़ा में । म्हारी लरड़ियां ई म्हारै जैड़ी अबूझ । लूंग खावै पण सोनौ सूंघै ई नीं । फालतू री चीजां थां अमीरां नै ई छाजै ।

अबै जावतां भूत नै ई राईका रै आडू न्याव रौ पतौ पड़ग्यौ । पण अबै पतौ पड़्यां कांई सांधौ लागै । बात बस वारै उळळगी । तौ ई दीवड़ी रै मांय सूं कूकियौ — देवासी, थारी मींडकी गाय हूं, अेकर वारै काढ़ दे । जीवूं जित्तै थारी अेवड़ चारूंला ।

भलां अबै भूत री वात कुण सुणतौ । हलवलिये चढ़चोड़ा सगळा ई नंदी रै कांठै पूगा । दीवड़ी थालां खावता पांणी रै मांय थरकाय दी । प्रीत रा धणी नै सेवट नंदी री आटां-पाटां वैवती सेज मिळी । उणरौ जीवण सुफळ व्हियौ, उणरी मौत सारथक व्ही ।

पछै बस्ती रा लोग, सेठ अर सेठां री बेटी पाछा दूणै वेग खाथा खाथा वळिया ।

हवेली रै वारणै वड़तां ई बेटी पावरी साळ रै मांय वड़ियौ । अेक दाई वेटी रै लोई करती ही । दूजोड़ी चन्नण री कांघसी जच्चा रा केस सुळझावती ही । राईका रै अदल न्याव री विगत वार मांडनै सगळी वात वतायां हथळेवा रै वींद री आफरौ झड़्यौ । अेक अेक वोल रै समचै जच्चा रै काळजै चरड़ चरड़ अणगिण डांम लागा । जापा री पीड़ सूं ई आ

थोड़ हजार गुणां वत्ती ही । पण वा नीं तौ टसकी अर नीं चुस्कारौ ई करचौ । पाखांण पूतळी ज्यूं बोली बोली सुणती री ।

सगळी गांगरत उधेड़्यां रै उपरांत वौ कैवण लागौ— पण थें इण भांत गुमसुम क्यूं व्हिया ? जलम देवणिया माईत ई जद नीं ओळखियौ तौ भलां थें कीकर ओळखता ! इण में थांरौ कीं कसूर नीं । पण ओटाळ भूत में तौ लखणां परवांण बीतगी । दीवड़ी में वड़्यां पछै घणौ ई डाढ़ियौ, घणौ ई डाढ़ियौ । पण पछै तौ रांम भजौ । म्हे अैड़ा भोळा कद ! सेवट नंदी में पधरायां लारौ छूटौ अर उणरौ डाढ़णौ मिटचौ । कमसल वळै कदै ई छळ करैला ?

तठा उपरांत जच्चा ज्यूं घर वाळा कह्यौ त्यूं ई करचौ । कदै ई किणी बात रौ ओड़ौ नीं दियौ । सासू जित्ती सुवावड़ करी वा बोली-बोली खायली । जद सासू कह्यौ तद माथा न्हावण करी । सूरज पूज्यौ । बांमण आय होम करग्यौ । लुगायां गीत गाया । गुळ री मंगळीक लापसी व्ही । सासू रै कह्यां जळवा पूजो । पीळौ ओढ़्यौ । बेटी नै पीळा में हिंडाई । परींडौ पूज्यौ । कूंकू रा मांडणा मांड्या । मेंहदी लगाई । कह्यौ सौ बणाव करचौ । गैणा-गांठा पैरचा । अैड़ी सुलखणी बींदणी तौ बडभागियां नै ई मिळै ।

जळवा री रात बींदणी पीळौ ओढ़ झम्मर-झम्मर करती मेड़ी चढ़ी । खाक में गीगली । हांचळां पांनौ । आंख्यां सूनी । हिवड़ौ सूनौ । माथा में जांणै अणगिण बुग भणण भणण करै । धणी उडीक में हींगळू ढोलिये बैठौ हौ । इण अेक ई मेड़ी उणनै रांम जांणै कित्ता जमारा भुगतणा पड़ैला । पण हांचळां

चूंघती आ वेटी लांठी व्हियां लुगाई री आ जूंण नीं भुगतै तौ मां रौ सगळौ विखौ सुफळ व्है जावै । यूं तौ ढोर-डांगर ई सोरै-सास वांरै मन परबारा नीं परोटीजै । अेकर तौ माथौ धूणै इज । पण लुगायां रै तौ आपरौ मन व्है इज कठै ? मसांण नीं पूगै जित्तै मेड़ी अर मेड़ी छूट्यां सीधी मसांण !

असमांन जोगी

अेक ही सेठ । तिणरै बेटा सात अर बेटी अेक । वा सब सूं छोटी । पंदरवौ बरस उतरनै सोळवौ लागौ । इदक रूपाळी । सीळ सुभाव । सालस, धीमी अर सुलखणी । हाथ री खांमचण । सात्यूं भाई परण्यां पांत्या । वींदणियां रूपाळी । अेकाअेक नणद रौ अणूंतौ लाड राखै । अेकाअेक बेटी तौ माईतां सारू आंख्यां री जोत ! भायां सारू सात्यूं मोत्यां बिचली लाल । हथाळी रौ छालौ । नैणां रौ काजळ । सांवण री तीज रौ तिवार खास सवाणियां अर सवागणियां सारू । हरियल सुरंगो धरती अर तीजणियां रै बणाव - सिणगार री माहौमाह होड़ माचै । धरती कैवै हूं वत्ती, म्हारी छिब निरखौ । तीजणियां कैवै म्हे वत्ती, म्हांरौ बणाव निरखौ । आभै बीजळियां तौ धरती तीजणियां । उठी कोयल, दादर, मोर सुहांणा बोलै । अठी तीजणियां गीतां रै मिस रस घोळै । उठी चिड़ियां अठी तीजणियां । उठी सूवां केरा ढूल, अठी तीजणियां रा भूलरा । बादळ बादळ बीजां रा सळाव, हींडै हींडै तीजणियां रा उछाव ।

असाढ़ उतरचां सुरंगौ सांवण आयौ । गांव रै हरियल बाग में नींबां रै डाळां डाळां हींडां री धमचोळ माची पण

माची । हींडा रै समचै धरती ऊपर ऊठै अर आभौ नीचौ लुळै । दो दो तीजणियां भेळी हींडती । उण उच्छब रै धकै इंदर-लोक रौ रंग ई फीकौ पड़ग्यौ हौ । सेठां री सातूं बहुवां अर बेटी रा तौ ठाट ई न्यारा हा । अपछरावां नै मात करै जैड़ौ रूप अर वैड़ौ ई सुरंगौ बणाव । हींडतां अैड़ी लागती जांणै किणी मंतर सूं फूंदियां लुगायां रौ रूप धार लियौ व्है ।

हींडतां हींडतां अेक अजोगती बात व्हैगी । छोटकी बहू अर नणद भेळी हींडती ही । मलोळां रै समचै इंदर-धणक तणतौ अर मिटतौ । हींडौ इण भांत ऊंचौ हालियौ के वै छिवरां रै पग लगाय पाछी वळती । पण अबकी हींडौ खाली कीकर आयौ ? अैड़ी तौ कदै ई नीं व्ही । कांई छिवरां रै ओलै चापळनै तौ नीं बैठगी । नींवड़ी हदभांत घेर-घुमेर ही । सूरज री किरणां ई कांई पार व्है जावै । कोतक करण री जचगी दीसै । दो बहुआं वळै हींडौ मलायौ । वळै हींडौ खाली आयौ । यूं करतां करतां आठूं जणियां ई अदीठ व्हैगी । पछै तीजणियां डरपी । कळहळ माची तौ सेठां रा सातूं बेटा बाग में आया । माथै चढ़ छिवरौ छिवरौ फिरोळ न्हाकियौ । उठै तौ चींदी ई को लाधी नीं । अैड़ी चाल तौ मौत ई नीं करै, हंसी गियां लारै माटी तौ बचै । कठै ई मौत रौ धारौ तौ नीं बदळग्यौ । अेकण सागै आठूं री आठूं बिलाय गी ! बिना आंसुवां रौ लूखौ रोज रोय रोयनै सेवट घरवाळा माठ झेली । दूजौ जोर ई कांई हौ ! बैन-बहुवां रै साथै हवेली री सगळी सुख-सांयत ई बिलायगी ।

गांव सूं आध कोस आंतरै अेक लांठी नाडी ही । डीगी

पाळ । च्यारूं-मेर जंगी रूंख । अेक बड़ली तौ बीसां बड़लां जित्तौ जाडौ । अणूंतौ पसराव । सेठां री बेटौ झीलण सारू उण नाडी रै मारग टुळक टुळक वैंवतौ हौ । दसेक पावंडां धकै पिणयारयां रौ झूलरौ । सुरंगौ वेस । सुरंगी ईढ़ाणियां । फूंदाळी लूंबां । अर सुरंगा ई दुघड़िया । झम्मर-झम्मर रिम-झोळां रा रणकारा सुणतौ छोटकियौ बेटौ आळोच में पड़ग्यौ । कदै ई उणरै ई अेक बहू ही । छ भौजायां ही । अेक बैन ही । लाखां में टाळकी । आंरौ तौ रूप ई वांरी छींयां सूं माड़ौ । पण अवै वां बातां रा पाछा सपना ई कठै ?

पण अणछक उणरै कांनां अेक कुम्हारी रै मूंडै अेक अजब ई बात री सुरपुर सुणीजी — देखौ अे मावड़ियां, आं सेठां री हवेली कैड़ी पटकी पड़ी । बाळण-जोगौ असमांन जोगी हौंडै हींडती आठूं ई लुगायां नै आपरै विमांण में बैसांण ले ढळियौ । कांनौकांन ई भणक नीं पड़ी । नाग खाधा रै हजारूं लुगायां है । तौ ई हाल सबर कठै ? आखै दिन विमांण चढ़्यौ अस-मांन में भंवतौ फिरै । रात रा इंछा परवांण मौजां मांणै । नवो लुगायां रै अंग-रस री नवौ स्वाद चाखै । राख-उडिया रै संतोख री माठ ई नीं । ओजायलौ भगवांन अैड़ां रौ पापौ काटणा में क्यूं ओजौ ताकै । रीस तौ अैड़ी आवै, पण लुगाई री जात कांई जोर करूं । सेठां रा सात्यूं बेटा ई आसंग-बायरा । रांम-जांणै कीकर नेहचौ धारयां बैठा ।

छोटकिया बेटा रौ रूं-रूं जांणै कांन बणग्यौ । सगळी बात नै ध्यांन सूं सुणी । सुण्यां ई सबर राखी । सगळी जणियां रै सांम्ही पूछ्यां कदास भेद देवै अर नीं देवै । वौ

होठां उफणता बोलां मायै नीठ नांम देय राखी ।

आ बात सुण्यां पछै बौ तौ संपाड़ा री बात ई भूलग्यौ। अेक लांठा गिड़ा मायै बोलौ बोली जाय बैठग्यौ । बाकी सगळो पिणयारयां तौ दुघड़िया उंचाय पाछी वळी । पण कुम्हारी लारै अेकली ई ढबी । माटी उंचाय लांठोड़ा बड़ला री अेक खोखाळ में बड़ी । दूजौ खाली माटौ लाय पाछी आई। गरणा सूं छांण माटौ भरण लागी तद बौ उणरै पाखती आयौ । चिपतां ई कंवण लागौ — बाल्हा, असमांन जोगी री थारै मूंडै म्हैं सगळी बात सुणली । सातूं भाई आसंग-बायरा तौ घणा ई कोनीं ; पण ठा नीं पड़्यां जोर ई कांईं करता ।

कुम्हारी पांणी छांणती-छांणती ई सेठां रै छोटकिया बेटा सांम्ही जोयौ । बोली — ठा पड़्यां ई किणी रौ कीं जोर नीं चालै । असमांन जोगी रौ गिगन में बासौ । अपां धरती ऊभा उण सूं पड़प नीं सकां । अर बौ तौ मौत रै ई काबू कोनीं। अेक जणा री तौ जिनात ई कांईं , हजार मिनखां नै ई नीं धारै । अणूंतौ अपरबळी । बड़ौ दूठ । जबर अठेल । नित अण-गिण लुगायां नै बिलखती देखूं तौ म्हारौ हीयौ घणौ ई पसीजै, पण इण निजोरी बात मायै जोर चालै जद । ठेलियां भाखर सिरकै तौ इण असमांन-जोगी रौ कीं बाळ बांकौ व्है । अर थें इदकाई में प्रांण गमावौला ।

तद छोटकियै बेटै कह्यौ — पछै अैड़ौ जीवनै करणौ ई कांईं । मरणा सूं बत्ती तौ जोखम कोनीं ।

कुम्हारी माटौ उंचावती बोली — मरणौ तेवड़ लियौ तौ पछै कीं डर नीं । म्हैं तौ खुद अैड़ा मिनख री भाळ में ही।

म्हारै तांई कीं पाछ नीं राखूंला । पण किणी दूजा आगै बात करज्यौ मती । असमांन जोगी लारै रूंगतौ ई नीं छोडैला । माईत अर भाईयां नै ई इण बात री भेद मत दीजौ । आभै बसण वाळा रै कांई सांकड़-भीड़ौ । ठायौ पलट लियौ अर वेम व्हियां म्हनै काढ़ दी तौ पछै तौ वौ भगवांन रै ई सारै कोनीं । जुगती सूं सोच-विचारनै कांम सारणौ है ।

तठा उपरांत कौल-बौल व्हियां कुम्हारी उणनै सगळौ भेद वताय दियौ के वा असमांन जोगी रै पांणी भरै । जित्ती नवी लुगायां लावै उत्ता ई माटा भरणा पड़ै । अबारूं सेठां री बेटी अर बहुवां रै परवांण आठ माटा भरै । नवी लुगाई रै नांव री भलांई अेक ई माटौ व्हौ, आखै दिन ऊंधौ करयां ई पांणी नीं खूटै । वड़ला री खोखाळ में माटा पूरा व्हैतां ई उणरौ विमांण आय जावै । विमांण किणी रै ई निजर नीं आवै । असमांन जोगी रै पाखती सात विमांण । वारौ-वार बदळतौ रैवै । उणरै दियोड़ी कुम्हारी रै पाखती सूवा री अेक पांख ही । पांख माथै सात वळा फूंक देवतां ई मतै ई खाली विमांण उड़तौ आवै । तीन वळा आंख्यां माथै पांख फेरयां उणनै तौ विमांण दीसै । माटा मांय धरतां ई विमांण मतै खोखाळ सूं बारै उड़तौ पाधरौ असमांन जोगी रै ठायै पूग जावै । भाखर रै पड़ैलां उण पार ऊंचौ गिगन में असमांन जोगी रौ नौ खंडियौ बादळ मैल । मांय बीजळियां पळकै । तारा खिवै । फूलां री भींता । केसर री आंगणौ । हीरा मोत्यां सूं घड़ियोड़ौ । कूंकूं री छातां । लालां जड़ियोड़ी । बादळ मैल रै सिरै बारणै सौ मण सोना री किंवाड़ । माथै पांख फेरतां ई

खुल जावै । खंड खंड में अणगिण सोना रा पिलंग । माथै सूती धरती री अणगिण रूपाळी लुगायां आंसूड़ा ढुळकावै । असमांन जोगी ज्यूं आंसू देखै त्यूं वत्तौ राजी व्है । रोवती लुगायां उणनै रूपाळी इज घणी लागै । आंख्यां सूं ढुळकतां ई सगळा आंसू मोती वण जावै । सेठां रै घर री लुगायां रै नैणां तौ जांणै सांवण रा वादळा ई औसरण लागा । असमांन जोगी वांरै आंसुवां री लड़ियां देख डग डग हंसण ढूकै जकौ ढबै ई नीं ।

असमांन जोगी रौ रंग इण भांत दीपै जांणै बीजळियां रौ पळकौ ई उणरी देह रै सांचै ढळियौ । दांतां री बत्तीसी आगै दूध रा झाग ई मगसा लागै । अंगां री कंवळास जांणै फूलां रै सत रौ ई वौ पूतळौ व्है । नख ममोलियां रै उनमांन राता । आंख्यां में मद रौ सरवर थावा मारै । कुम्हारी कैवण लागी के कांमदेव रौ रूप तौ कुण देख्यौ, पण उणरी जांण में असमांन जोगी रै जोड़ै करयां वौ ओपै तौ कोनीं । लुगायां रै तौ रूप री इज भंवरी । जांणै वांरौ अंग-रस लेवण सारू ई उणरौ जलम व्हियौ । अर जलम ई मौत विना रौ ।

केई दिनां सूं कुम्हारी रै होये आं वातां रा ढीम पाक्योड़ा हा । आज सुणायां नेहचौ व्हियौ । आठ माटा पूरा व्हैतां ईं वा सूवा री पांख रै सात वळा फूंक दी । थोड़ी ई ताळ में विमांण आयग्यौ । मांय माटा धरया । दोनां रै मांय वैठतां ईं विमांण पाछौ उड़ियौ । भाखर रै पड़ेलां री परली वाजू विमांण खासौ ऊंचौ चढ्यौ । आंख्यां में सेसनाग री डाढ़ां रौ काजळ सारतां ईं असमांन जोगी री नौ खंडियौ वादळ मैल सुभट दीसण लागौ । ज्यूं कुम्हारी वतायौ वौ रौ वौ ठरकौ निजर आयौ ।

असमांन जोगी नवी लुगायां री भाळ में विमांण लेय बारैं गियोड़ौ हौ। सिरै मोड़ा रौ सोनल किंवाड़ खुलतां ई वौ तौ सीधौ कुम्हारी रै सागै आपरी बैन अर भोजायां रै पाखती गियौ। रोय रोय आंख्यां राती-चोळ व्हैगी ही। उणनै देखतां ई सगळी राजी व्ही। घर रा समंचार पूछ्या। आपरी विखौ दरसायौ। अबै गांव रा रूंख अर घर रौ चांनण-चौक देख्यां जमारौ सुफळ व्है। हुरड़ी करनै छेका चालौ, दुस्टी आयौ क आयौ। आयां पछै उणरा जीव नै ई जोखौ। विमांण में बैठ पाछा अजेज घर कांनी उडिया। हांकरतां गांव रौ सरवर नैड़ौ लियौ। बड़ला री खोखाळ में विमांण ढाब तुरत हेटै उतरचा।

नाडी री पाळ सूं हेटै उतरण वाळा ई हा के असमांन जोगी रौ विमांण माथाकर निकळियौ। तुरत आठूं लुगायां नै ओळखली। है ज्यूं सीधौ ई हेटै उतरचौ। उणनै देखतां ई लुगायां रा पग तौ हा जठै ई रुपग्या। सगळी जणियां नै पाछी विमांण में लाय बिठांणी। सेठ रा छोटकिया बेटा रै मंतर फूंकतां ई वौ पाळ माथै धोळी पूतळी बणग्यौ।

असमांन जोगी रौ डग डग हंसणौ वांनै सांप री फुफ-कारां रै उनमांन लागौ। हंसतौ हंसतौ ई बोल्यौ—रोवती ढबौ क्यूं? थांनै रोवण री तौ पूरी छूट। म्हारै ई दोवड़ौ नफौ। आंसुवां रा मोती वणै अर म्हनै लुगायां रा रोवता उणियारा रूपाळा घणा इज लागै। इत्तौ समझायनै गियौ। तौ ई थें इणरी फाकी में आयगी। म्हारै बादळ मैल सूं वत्तौ उठै कांई सुख है, जिण खातर थें अस्टपौर तरसौ। घणौ ई सोचूं तौ ई हाल तांई आ बात म्हारी समझ में नीं आई।

सेठ री वेटी हीमत करनै बोली — जिण दिन आ बात थांरी समझ में आयगी, उण दिन रावळो बादळ मैल उखरड़ी सूं ई वत्तो सूगलो निजर आवैला। दूजां री मंसा रै आंकस वांरा सुख वास्तै जीवणो औ इज दुख लांठो है। थांरो सुख न्यारो, म्हांरो सुख न्यारो। थांरी जोरावरी आगै म्हांरो बस नीं पूगै, फगत आ इज म्हांरो लाचारी है। पण लाचारी हमेसां लाचारी नीं रैवै अर जोरावरी हमेसां जोरावरी नीं रैवै। इण अखूट विस्वास रो थावस नीं व्हैतो तो कदेई अंतस रै आंसुवां री सेजो खूट जातो। अबै डरयां के संको राख्यां कांम नीं चालै। मन रो साची बात थांरै कांनां पुगावणी ई पड़ैला। आज विमांण में पाछी वैठ्यां पैलो वार म्हारै आ समझ आई के दुख सूं डरयां दुख बधै अर दुख नै अंगेजियां दुख विणसै। आज सूं म्हांनै किणी दुख रो डर कोनीं।

असमांन जोगी कह्यौ — थें डरो तो म्हारै वास्तै वा इज बात अर नीं डरो तो म्हारै वास्तै वा इज बात। म्हारै सुख आगै नीं तो म्हनै दूजा रो दुख दीसै अर नीं सुणीजै। म्हैं तो म्हारा सुख में डूबोड़ो। जोरावरो है तो क्यूं नीं जतावूं। मिनखां री बात तो अळगी, म्हारी जोरावरी खुद भगवांन रै ई सारै कोनीं। जिण दिन इंछा करूंला, म्हैं दुनियां रो भगवांन वण जाऊंला। हाल तो सुख रो घणो साव बाकी। अर लुगायां रै अंग-संग टाळ दूजो कोई सुख है ई कठै? म्हारा सुख री खातर ई लुगायां नै रूप मिळै, जोवन मिळै।

सेठ री वेटी कह्यौ — जे थांरी कह्योड़ी बात ई साच व्हैतो तो दुनियां में दूजा मिनखां रो जलम ई नीं व्हैतो।

वैं थांरा सूं परबारा ई जलमै तौ वांरौ सुख ई थांरा सूं परबारौ ।

असमांन जोगी बिचाळै ई बोल्यौ — पण म्हैं इण बात नै मांनूं जद ! म्हैं तौ सपनै ई नीं मांनूं के म्हारै टाळ दुनियां में दूजा मिनख ई बसै । अर वांनै ई म्हारे सुख री टाळ दूजी कीं लाळसा है ।

अणछक विमांण सूं मूंडौ बारै काढ़ नीचै जोयौ । आखतौ होय बोल्यौ — थें सगळी जणियां ईं देखौ, अेकर लुळनै सावळ नीचै देखौ तौ खरी । सूरज ऊपर सूं देखै ज्यूं म्हैं इण धरती नै ऊपर सूं देखूं ; म्हारी कुण होड़ कर सकै ? आखी धरती म्हारै पगां तळै । लुगायां में अकल रौ थोड़ौ घणौ ई रेसौ व्है तौ वै म्हनै छोड किणी दूजा सूं प्रीत करै ई क्यूं ? ऊंचौ आभै औ बादळ मैल, फूलां री भींता, केसर रौ आंगणौ — हीरा-मोत्यां घड़ियोड़ौ, कूंकूं री छातां — लालां जड़ियोड़ी, सोना रा पिलंग, सोना रा वारणा — ठा नीं पड़ी के पछै वै किसा सुख सारू विलखै ? अर म्हारै ई मूंडै म्हारै रूप रा तौ कांई बखांण करूं ! थांनै दीसै ई है । म्हारो जोड़ रौ कोई दूजौ उणियारौ- जोड़ै करनै तौ बतावौ । गड्डरणिया अर लुगायां रौ अेक सुभाव । सांम्ही बत्तीस तेवड़ पड़्या व्है तौ ई गड्डरणो तौ मूंडौ घालै जिण में ईं घालै । वा समझायां समझै तौ लुगायां ईं समझायां समझै । सेवट कायौ होय म्हनै म्हारौ सुभाव बदळणौ पड़्यौ । हंसनै कोड सूं प्रीत करण री बाट जोवूं तौ आखी ऊमर फोड़ा पड़ै ! इण वास्तै रोवती विलखती, आंमण-दूमणी अर कळपती लुगायां आछी लागै, अैड़ौ सुभाव बणाय

लियौ । थे नीं मांनी तौ म्हैं मांनग्यौ । आखी धरती कांटां कांटां खालड़ी बिछाय वांनै ढकणौ कद पोसावै, इण वास्तै खुद रै पगां पगरखियां पैरणी चोखी । कांटां सूं मतै ई बचणौ व्है जावै । नीं डरवांणा चालां अर नीं कांटा भांगै ।

सेठां री बेटी आकरा सुर में बोली — पण दूजां रै पगां पांनै पगरखियां क्यूं नीं ईवै ! थांमें आ इज तौ मोटी खोड़ के हाथां कांटा बिछावता जावौ अर खलकां री पगरखियां खुला-वता जावौ । आ अन्याव री बात क्यूं ?

'क्यूं के म्हारी वस पूगै ! वस पूगै जित्तै खुद भगवांन ई नीची नीं न्हाकै, औ कुदरत रौ साचौ अर छहलौ न्याव । वस नीं पूग्यां तौ कोई कांई जोरावरी जतावै ! सुसिया मैं सिंह जैड़ी करार अर बळ व्है तौ वौ दूजा जीवां नै मारयां बिना छोडै ? कबूड़ा में बाज वाळी हूंस अर ताकत व्है तौ वौ इण भांत निवळौ बण दांणा चुगै ! सुसिया अर कबूड़ा रै कूक्यां न्याव री आंण-दांण नीं फिरै । न्याव बराबरी रौ आपौ अर बराबरी रौ ठरकौ मांगै । जकौ कुदरत नै कबूल कोनीं । इण कुदरत नै कुण लोप सकै भलां ! कीड़ी अर हाथी, लरड़ी अर छाळीनारिया, ऊंदरा अर मिन्नी, फिड़कला अर बिसांदरा, हिरण अर सिंह न्याव री अेक गेडी सूं भेळा नीं टोळीजै ! न्याव, भेळप, भाई-चारौ अर बराबरी रै उपदेसां कुदरत री धारी नीं बदळीजै, नीं बदळीजै ।

अबकी सेठ रै छोटकिया बेटा री बहू बोली — ऊगै सौ आथमै, जलमै सौ मरै, बिगसै सौ झड़ै अर चांद सूरज नै गैण लागै — औ ई कुदरत रौ सुभाव । तड़कै अठी छींयां तौ

सिझ्या रा उठी ।

असमांन जोगी डोढ़ में हंसतौ बिचाळै ई आखतौ होय बोल्यौ—अै घोखियोड़ा गुर म्हैं घणा ई सुण्या, घणा ई सांभळिया । जीभ रै आयठण नीं पड़ै जित्तै घोख्यां जावौ, घोख्यां जावौ । पण आं थोथी बातां सूं व्हैणी-जांणी कीं नीं । कांई आथमण रा डर सूं सूरज ऊगै ई नीं, मरण रा डर सूं कोई जलमै ई नीं अर कुम्हळावण रा डर सूं कोई विगसै ई नीं । आथमियां रै उपरांत ई सूरज नित वगत परवांण आपरै ठायै ऊगैला । काळ री कीं भरोसौ कोनीं तौ ई हर-छिण अलेखूं जीव जलमैला । झड़तां झड़तां ई नवी कूंपळां फूटै । जलम जलम री ठौड़ है अर मरण मरण री ठौड़ । दोनां नै अेकठ भेळा करण री जुगत करणी ई सब सूं लांठौ अबूझपणौ है । म्हनै अैड़ा अबूझपणा माथै चंडाळी छूटै । कांई आथमण रा डर सूं सूरज ऊगतौ ई काळौ पड़ जावै ! इण अबूझ मिनख रै कह्यां कह्यां कुदरत हाजरी बजावण लागै तौ पछै व्हैगौ आखै दिन उजास !

सेठां री बेटी रौ हीयौ खासौ खुलगौ हौ ! बोली—उजास सारू मिनख फगत सूरज रै ई भरोसै कोनीं । रात रा अंधारा में वौ माटी रा दीया सूं ई आपरौ कांम सार लै ।

असमांन जोगी कह्यौ—लुगायां नै औ इज तौ मोटौ भरम है के गाबड़ माथै माथौ व्हैणा सूं वांरै मांय अक़ल है । म्हारी जांण में अकल अर लुगाई रै वरगां बेर । थनै ई अै बोल काढ़तां गुमेज व्हियौ व्हैला के थूं अकल री बात करी । पण इण सूं लांठौ नांढ़पणौ दूजौ कीं नीं व्है सकै । मिनख में आ

इज तौ मोटी खोड़ के वौ खुदोखुद नै कुदरत सूं मोटौ मांनै। कुदरत रै कांम में अड़ंगा घालै। कांई पंचायती पड़ी उणनै के वौ आपरै हाथां इण भांत चांनणौ भुपाय अंधारा नै बाळै। अंधारा रौ महातम उजास सूं कम थोड़ौ ई है। कुदरत अंधारौ कर दियौ तौ वौ क्यूं चांनणौ करण री खटपट करै। उजास उजास री ठौड़ है अर अंधारौ अंधारा री ठौड़। अंधारा नै बाळियां मिनख कदै ई सुख नीं पावैला। आपरै सुख-स्वारथ री खातर कुदरत नै परोटियां तौ वा राजी-बाजी, पण उणनै जीतण री के उण माथै आंकस री हूंस राख्यां तौ वा मिनख रा भुत्तिया बिखेर देवैला। जगेरै आयां घोड़ी आ नीं सोचै के औ घोड़ौ कुण अर वौ घोड़ौ कुण। घड़बड़ै आयां गाय तौ नीं विचारै के औ सांड कुण अर वौ सांड कुण? औ लफड़ा अर पंपाळ तौ फगत मिनखां रा के आ म्हारी लुगाई आ थारी लुगाई। थूं थारै सेजां अर म्हैं म्हारै सेजां। अठी-उठी भांखणौ अन्याव री बात! पण अैड़ा पांगळा न्याव घणा दिनां तांई चालै कोनीं। मिनख री आंख्यां रै अदीठ कुदरत तौ आपरौ नाच नाचै इज। अर मिनख भरम करै के जठै उणनै कीं नीं दीसै उठै कीं है ई कोनीं। धणी-लुगाई, भाई-बैन, देवर-भौजाई, बाप-बेटी, अर सास-जंवाई औ सगळा गना मिनखां सारू; कुदरत आं गनां री कांण अंगै ई नीं राखै। आंख्यां रौ सिरै गुण है आंख्यां री जोत। आंख्यां रौ संकौ औ तौ फगत मिनख रौ भरम है। आंख्यां मींच अंधारौ करणौ है। समझायां ई समझ नीं आवै वा अकल कांई कांम री। कांकण-डोरड़ां री मोळी रै जोर कुदरत री कळायां नीं बांधीजै।

म्हारी कैणौ मांनौ, म्हैं कुदरत रौ असली रूप हूं। धरती अर असमांन माथै म्हारौ अखंड राज। म्हैं असमांन जोगी हूं। म्हनै राजी-राजी कबूल करौ। थांरौ रूप म्हारा रूं-रूं में लाय सिळगाय दी। म्हारा बादळ मैल नै चंवरी रै धूंआ सूं काळौ मत करौ। हंसती-मुळकती म्हारी सेजां चांनणौ करौ तौ म्हारौ जमारौ सुफळ व्है। रोवती रळियां सूं अबै म्हारौ मन पतीजै कोनीं। थांरा रूप आगै म्हैं निपट बावळौ व्हैगौ हूं। थें ई म्हारौ रूप निरख बावळी व्हौ, औ कुदरत रौ तकादौ है। रळियां री वेळा आंसुवां री ठौड़ उमंग अर उछाव ई छाजै। थांरा आंसू अबै म्हारै हीये पाछा साल्हण लागा। जिण भांत बादळां सूं लांठौ धरती रौ कोई दूजौ भरतार नीं उणी भांत असमांन जोगी सूं वत्तौ लुगायां रौ कोई दूजौ भरतार नीं। बेरा अर बादळां री बराबरी व्है तौ थांरै धणियां सूं म्हारी बराबरी व्है।

सेठ री मोटोड़ी बहू कह्यौ—बादळां रौ कांई भरोसौ, बरसै अर नीं बरसै। रूसणौ करयां साख सुखाय दै, घण बूठां साख गाळ दै। पण बेरा रौ कांम तौ मापा रौ। सागड़ी रै बख रौ।

असमांन जोगी मिसखरी रै भाव सूं बोल्यौ—पण बेरा रा जाव माथै किसा बादळा नीं बरसै। वाकळ क्यारां बिरखा री पांणी रळियां साख सवाई व्है।

अबकी सेठां री बेटी कह्यौ—बोलणौ सीख्यां उपरांत होठा-जीभी रौ तौ कीं छेह ई नीं। किणी रै माथा माथै माथौ वाढ़नै नीं धरीजै। थांरा विचार थांरा है, म्हांरा संस्कार

म्हांरा है । ज्यूं अेक दिन में थांरा विचार नीं बदळीजै, उणी भांत म्हांरा संस्कार ई सोरै-सास नीं बदळीजै । फगत छ महीनां री मोलगत चावां । पछै ज्यूं आपरौ आदेस व्हैला, राजी-खुसी हाजरी साजांला । कुदरत री सुभाव आप सूं वत्तौ कुण जांणै, तद आ वात आप सूं ई अछांनी कोनीं व्हैला के जीव-जिनावर किसा नित हमेस भेळा व्है । केई केई जिनावर तौ मादा रै साथै रह्यां ई बारै बारै महीनां लग लंघण राखै । नित री रळियां, औ कुदरत रौ नेम कोनीं । आप कुदरत रौ इत्तौ ब्रिड़ध वखांणियौ तिण सूं इण बात रौ चेतौ करायौ । तौ ई बात होये नें उतरै तौ रावळी जोरावरी आगै किण रौ जोर चालै ।

आ वात सुण असमांन जोगी थोड़ौ राजी व्हियौ । डग डग जोर सूं हंसतौ बोल्यौ — म्हैं तौ जांणतौ के लुगायां में अकल व्है ई कोनीं, पण आ वात तौ थूं अकल री करी । पण कुदरत री वात म्हारा सूं वत्तौ कुण जांणै । म्हैं तौ कुदरत रौ इज परतख अवतार हूं । लंघण राखण वाळा जिनावर लंघण ई राखै । दिन में दस वळा भेळा होवण वाळा जिनावर दस वळा ई भेळा व्है । इण मिनख री बात सगळां सूं ई न्यारी । केई कांम तौ अैड़ा के वांनै करतां तौ अंगै ई संकौ नीं आवै, पण वांनै दरसातां अवस संकौ आवै । खैर, इण वात नै फिटी करौ । म्है लंघण राखूं तौ म्हारी मरजी अर नीं राखूं तौ म्हारी मरजी । म्हारै वादळ मैल अर दुनियां में लुगायां री कोई तोटौ तौ है कोनीं । अर नीं म्हारी जोरावरी ई खूटी । पछै कांई बात री कमी । औ असमांन जोगी

पैली वार थांरै माथै मया करी, थें वगत आयां गुण-चोर मत व्हैजौ। लुगायां जित्ती सैणी दीसै उत्ती सैणी व्है कोनीं।

विमांण बादळ पैल री बरसाळी में आय उतरचौ। कुम्हारी पाछी जावण सारू विमांण में पग धरचौ ई हौ के असमांन जोगी माथै उणरी निजर पड़ी। अरे, औ काळ रौ खाधौ तौ आठां नै ई पाछौ सागै लेय आयौ। हित्यारौ सेठ रा बेटा नै मारचा बिना नीं छोडचौ व्हैला। आ तौ घणी कावळ बात व्ही। असमांन जोगी कुम्हारी नै देखतां ई उण माथै डाकर करतौ बोल्यौ—अै सगळा थारा कवाड़ा। थारै बिना दूजौ कोई भेद ई तौ नीं जांणै! बता, थूं औ विस्वास-घात क्यूं करचौ?

कुम्हारी सोच्यौ के डरयां तौ कांम बिगड़ जावैला। निसंक बोली—म्हनै काढ़णी है तौ यूं ई काढ़दौ, भूठा ओळावा क्यूं लौ। थांनै नीं पोसावै तौ कालै सूं ई आहळाणूं करूं। म्हैं भली अर म्हांरी माटी भली।

असमांन जोगी कह्यौ—म्हनै पोसावण री वात तौ थूं छोड। चावै तौ हीरा-मोत्यां रौ हमेसां अेक माटौ भरनै ले जा सकै। थारै माथै म्हारौ कम पतियारौ नीं है। इत्ता बरसां सूं जांणूं-पिछांणूं। पण पछै औ भेद परगट कीकर व्हियौ।

कुम्हारी आंमनौ जतळावती बोली—जिणरौ म्हनै कांई वेरौ! अठै सूनी रांडां रौ कांई घाटौ। कोई कागद लिखनै नीचै राळ दियौ दीसै। पण अबै वेम री ठौड़ म्हैं ई चाकरी नीं करणी चावूं।

अैड़ी भरोसा री भली अर नेक लुगाई वळै नीं मिळैला।

इणरै विना तौ अठै अेक दिन ई नीं धकै । असमांन जोगी तुरंत ठाडौ पड़नै वोल्यौ — थूं तौ इण बादळ मैल री खास धणियांणी । थनै भलां चाकर कुण कैवै ।

कुम्हारी अपूठी होय तीखा सुर में बोली— नीं चाहीजै म्हनै अैड़ी धणियाप । हाल तौ हाथ-पग साजा है । नीं दुनियां में माटी रौ ई तुठार है अर नीं म्हैं माटी गूंदणौ भूली । थांरा हीरा-मोती थांरै पाखती राखौ ।

असमांन जोगी घणी लटापोरियां करी तद वा नीठ मांनी । हाल उणरौ वेम तौ पूरौ नीं मिट्यौ हौ, तौ ई बात मन री मन में ओट ली । कुम्हारी रै मूंडा सांम्ही जोयौ । रांम-जांणै रूस्योड़ा उणियारा इत्ता सुहावणा क्यूं लागै ? पण वळै अजांण धोखौ नीं व्है, औ जाव्तौ तौ करणौ ई पड़सी । असमांन जोगी मन ई मन सोचण लागौ के इण कुम्हारी रै सांम्ही नित नवी लुगायां सूं मिळूं, वांरा सूं चाळ-चोळ करूं । आ बात भलां इणनै कीकर ईवै । आ रोजीना मांय री मांय वळ बळनै आवटती व्हैला । इण भांत छोड्योड़ी लुगाई घात कर सकै, पण अेकर सेजां चढ़योड़ी सोरै-सास छळ नीं करै । इत्ता दिन इणनै सावळ ध्यांन सूं देखी ई कठै ? आ ई कम रूपाळी कोनीं । ऊमर अवस थोड़ी-सी आडी आवै । पण ऊमर परवांण साव ई तौ न्यारा न्यारा व्है ।

औ अणचीतौ मौकौ मिळ्यौ तौ ई कुम्हारी कीं उजर नीं कर्यौ । देह रौ मेळौ व्हियां विना औ सोरै-सास धोखौ नीं खावै । लाखूं लुगायां रौ नित कळपणौ कीकर देखीजै । आंरै छुटकारा सारू कीं न कीं तौ उपाव करणौ ई पड़सी ।

कमसल सेठां रै घरै तौ होळियां उठांण दी । देखां कद बदळौ लिरीजै ! वा असमांन जोगी री आंख्यां में आपरी मीट अळूझावती बोली — राज री मरजी आगै किणरौ कांईं जोर चालै, पण इत्ती रूपाळी लुगायां हाथ-बसू व्हैतां थकां आज म्हारी बारी कीकर आई, म्हनै पैला आ बात तौ समझावौ।

असमांन जोगी बोल्यौ — थनै रीसां बाळणी चावतौ तौ अबस कैवतौ के घणौ मीठौ खायां चरका री हर आवै । पण साचांणी आ बात कोनीं । थारै जैड़ौ बंध्योड़ौ डील कित्तीक लुगायां रौ है । कंवळां कंवळा गोरा रंग सूं तौ अबै ओक्या बैठगी । धणी सुथराई अर सौरम हमेसां आछी नीं लागै ।

कुम्हारी नीची धूण करयां ईं पूछ्यौ — आपरै बादळ मैल इत्ती लुगायां रौ मेळौ देख केई दिनां सूं अेक बात पूछणी चावूं के कांईं जणी जणी रौ साव न्यारौ व्है । कांईं आखी ऊमर अेक लुगाई सूं नीं धकै ।

असमांन जोगी कैवण लागौ — म्हैं तौ फगत म्हारी बात जांणूं । पैला म्हैं इण भरम में अळूझियोड़ौ हौ । नवी लुगाई री हर तौ नीं मिटै, पण सगळी लुगायां रौ साव अेक । सेजां रै पैली अवस लागै के अबकी साव न्यारौ व्हैला, पण सेजां रै पछै तौ वा इज बात । सेजां रै विछावणै नीं रूप-कुरूप रौ भेद निगै आवै अर नीं गोरा-काळा रौ । अै सगळा भेद तौ फगत आंख्यां रा । निजर सूं आगै रंग-रूप रौ कीं माजनौ नीं । थूं कांईं साच मांनै के अबै तौ फगत जूनी आदत पोखूं। आदत रौ जोर ई कुदरत रा जोर सूं कम नीं व्है । कदै ई कदै ई तौ अैड़ौ लखावै के लुगायां री बोटी बोटी छूंन वांरौ

मांस तळ तळनै खावूं तौ मन री भूख मिटै । जीवती लुगायां में तौ कीं लांबी-चौड़ी कस कोनीं ! पण थोड़ी ताळ उपरांत वा री वा अमिट तिसणा । ज्यूं ज्यूं रूप रौ पांणी पीवूं आ तिसणा त्यूं त्यूं वत्ती चेतन व्है । देखूं आज कुम्हारी रै घड़ा री पांणी कैड़ी तिसणा बुझावै !

असमांन जोगी री आदत अर तिसणा री करखी इणी भांत वणण-वगण चालती रही ! वादळ मैल री रळियां में किणी वात री कमी नीं पड़ी । अर नीं सेठां रै घर री हाय-त्राय में ई किणी वात री कमी पड़ी ! कुम्हारी रै भेद देणा सूं हमेसां ओक भाई खमखरी खाय असमांन जोगी रै वादळ मैल जावतौ । आठूं लुगायां नै लेय विमांण सूं पाछौ वळतौ । पण लागै उणी ठौड़ नाडी री पाळ सूं वळतां पांण असमांन जोगी वांनै जाण पकड़तौ । भाई नै मंतर सूं भाटा री धोळी पूतळी वणाय देतौ । सेठां रै घर री सात वहुवां अर ओक वेटी नै लेय पाछौ वादळ मैल रै मांय पूग जातौ ।

वां गेड़ां-गेड़ां में नाडी री पाळ माथै सात धोळी पूतळियां थरपीजगी । इण भांत सांमनौ करणा सूं असमांन जोगी री जोस चौगणौ पसरग्यौ । आदमी ओकलौ आपरै सतै अर आपरै पांण कीकर जीवै ! दूजा नै दुख दियां वौ कळपै-छीजै नीं तौ दुख देवणिया रै हीयै सुख कीकर उपजै ? इत्ता वरस तौ किणी नै ठा नीं पड़ी के धरती री वां रूपाळी लुगायां नै कुण लेग्यौ, कठै लेग्यौ ? वै जीवती है के मरगी । लारै वांरी गवाड़ी देण-वाळा रौ कीं पतौ असमांन जोगी नै नीं पड़्यौ तौ उणरौ सुख ही रेजळै पड़ग्यौ । दुख विना सुख री कूंती कीकर

व्है ? इण बार सेठां रा बेटा लारौ कर्‌यौ अर आपरी बैन अर लुगायां पाछी ले जावण रा अफाळा कर्‌या अर वांरै हाथां वौ वां लुगायां नै पाछी खोसनै लायौ तौ असमांन जोगी रै जोस अर आणंद री कीं पार नीं रह्यौ। चीज तौ जित्ती दोरी हाथै लागै उत्ती ई उणरी कीमत व्है। हीरा-मोती कांकरां रै उनमांन पगां रड़वड़ता तौ वांरी कुण पूछ करतौ ! पगां में रड़वड़ियां कीमत अर पूछ व्है तौ धूळ अर कांकरां री व्है। दूजां री निबळाई रै जोड़ै जुखियां ई उणरै बळ रौ सावळ पतौ पड़तौ। पैली बळा रै उपरांत वौ कदै ई नीं तौ कुम्हारी माथै चिड़्यौ अर नीं सेठां री बेटी अर बहुवां माथै। देखतां ई लुगायां गळै लदूमण लाग जावै तौ वांरौ कुण लारौ करै ? असमांन जोगी रै बादळ मैल, उणरै विमांण अर उणरै अठेल करार रौ अवै ई तौ सावळ मजौ आयौ। बिना लड़ियां कोई हार मांन ले तौ जीत रौ मठ मर जावै। अै उडीक रा पांच महीना असमांन जोगी नै जित्ता सुहांणा लागा उत्तौ आणंद किणी लुगाई रै संजोग सूं कदै ई नीं मिळ्यौ। तीन महीनां रै उपरांत तौ वौ अेक अेक दिन गिणण लागौ। छ महीनां रा कौल-वाचा में नीं बंधतौ तौ उणनै सुख री असली पिछांण ई नीं व्हैती। मन करतां ई कोई चीज उणी पलक हाथ लाग जावै तौ उण दुख रौ कांई पार ! किणी चीज नै पावण रौ दुख ई तौ साचैलौ सुख है।

वौ नित विमांण सूं देखतौ के बूढ़ा-खंखर दोनूं सेठ-सेठांणी सवार-सिझ्यां नाडी री पाळ माथै आवै। घड़ां घड़ां पांणी लाय संपाड़ौ करायां पूतळियां नै धूप खेवै। जोत करै।

माळा रा मिणिया फेरता जावै अर ठळाक ठळाक रोवता जावै। मरयोड़ा वेटां री पूतळियां सूं बाथां घाल घाल मिळै। औ खिलको देख देख वो अणूंतौ राजी व्है। आपरै बळ रौ गुमांन व्है। भणण-भणण विमांण भंवावतौ वौ नाडी रै चारूं-मेर चकारा देवै। वौ सगळी दुनियां नै देखै पण उणनै कोई नीं देखै। फगत वादळ मैल रै मांय उणरौ रूप प्रगट व्है।

नाडी री तीर माटा भरतां कुम्हारी औ रासौ देखै तौ उणरौ काळजौ जांणै फाटण लागै। अै निरजीव पूतळियां देख्यां ई डोकरा-डोकरी रांम-जांणै कांई थ्यावस पावै। साचैला वेटां री ठौड़ आं पूतळियां सूं माईतां नै कांई संतोख मिळै। कांई धूंप खेवियां अै कदै ई मूंडै वोलैला? माईतां रा आंसू देख्यां कांई आंरो हीयौ पसीजैला? बेटा नाडी री पाळ पूतळियां वणियोड़ा अर वेटां री वहुवां अर बेटी असमांन जोगी रै वादळ मैलां कैद व्हियोड़ी। वैड़ी हजारूं लुगायां उठै रोहड़ियोड़ी। रांम-जांणै कद मुगत व्हैला! इण मुगती विना तौ धरती माथै पाछौ कदै ई सुख नीं वावड़ै। इण सुख नै टाळ धरती रौ मांनखौ किताक दिनां तांई जीवैला! कीकर जीवैला। जद उणरौ जोवन अर उणरौ सिणगार असमांन जोगी रै वादळ मैलां रोहड़ियोड़ौ है! सोनल किंवाड़ां नै तोड़ औ रूप अर औ सुख कद मुगत व्हैला, कीकर मुगत व्हैला? आ मुगती ई मिनख री सिरै आणंद।

उण कुम्हारी रै अेकाअेक वेटौ हौ। सोळै वरसां रौ मोट्यार। फूठरौ-फररौ। फव्रतौ। गोरौ-निछोर। अंगां भोळौ। थोड़ी मींचरी-मींचरी आंख्यां। हंसै तौ जांणै दांतां

बीजळियां पळकै । कुम्हारी इण डर सूं हाल उणरौ ब्याव नीं करचौ के वींदणी नै कठै ई असमांन जोगी लेयग्यौ तौ कैड़ी भूंडी बीतैळा । थोरा करचां औ दुस्टी कद मांनै ।

अेक दिन वा नाडी माथै हमेसां री गळाई माटा भरण सारू वहीर व्ही तौ बेटौ ई साथै चालण सारू घणौ आड़ौ लियौ । सेवट नीं मांन्यौ तौ साथै लावणौ ई पड़चौ । नाडी री पाळ पूतळियां नै धूंप खेवता सेठ-सेठांणी नै इण भांत छबरां छबरां रोवतां देख्या तौ वौ मां नै इणरौ म्यांनौ पूछचौ । पैला तौ कुम्हारी टाळमटोळ करचा । पण घणौ हठ झेल्यां उणनै सगळी बात मांडनै बताई के अै पूतळियां किणरी है ? कीकर असमांन जोगी आं सेठां री सात्यूं बहुवां अर बेटी नै हींडतां आपरै बादळ मैल लेग्यौ । बेटा लावण सारू खपिया तौ वांरी आ हालत व्ही । वा कद सूं असमांन जोगी रै बादळ मैल पांणी भरै ? कीकर सेठां रै बेटा री सात वळा सहाय करी, पण निरफळ । अबै आं लुगायां री कीकर मुगती व्है ?

कुम्हारी पांणी भरती गळगळा कंठ सूं बोली—बेटा, फगत इणी डर सूं म्हैं इत्ता बरस थारौ ब्याव नीं करचौ ।

बेटै कह्यौ—ब्याव नीं करचौ इणरौ तौ म्हनै कीं सोच कोनीं, पण इत्ता दिन इण असमांन जोगी रौ म्हारा सूं भेद लुकाय थूं आछौ कांम नीं करचौ ।

तठा उपरांत माटा भरतां भरतां कुम्हारीं आपरै बैटा नै बादळ मैल री तमांम बातां बताई । घणी लुगायां रै साथै सेठां री सात्यूं बहुवां अर वांरी बेटी रा विगत वार समंचार सुणाया । सगळी जणियां रै रूप रा न्यारा न्यारा बखांण

करचा । सेठां री वेटी री घणी ई विड़द बखांणियौ के वा कित्ती समझवांन है ! सगळी बातां वौ ध्यांन सूं सुणतौ जावतौ अर मन ई मन कीं न कीं जुगत विचारतौ जावतौ ।

वड़ला री खोखाळ में वड़ती मां नै वळै अेकर भुळावण देवतां कह्यौ — सेठां री वेटी नै समंचार कह्या सौ सावळ सुणाय दीजै । देखौ कैड़ीक जुगती सूं सगळौ कांम सलटावौ । सेवट म्हारै हाथां ई इण असमांन जोगी रौ पापौ कटैला । म्हैं पूछ्यौ उण वात री जवाव कित्तौ वेगौ लावै ! पछै किणी वात री चिंता नीं । म्हैं अठै वैठौ ई थनै उडीकूं ।

वेटा री वात माथै कुम्हारी नै अंगै ई भरोसौ नीं व्हियौ तौ ई वा सेठां री वेटी नै सगळा समंचार तौ विगत वार वताया ई । सुणण नै तौ वा ई वोली चोला सै वातां सुणी । खुद नै विस्वास नीं व्हैतां थकां ई कुम्हारी उणनै तौ खासौ थावस वंधायौ । पण वा ई टावर वाळी अणूंती हूंस जांणनै घणी विस्वास नीं करचौ । औ अपरबळी उण कंवळा टावर नै कांई धारै । पांच महीना वीतग्या । अवै अेक महीनौ वीततां कांई जेज लागैला । जद रांम ई रुखाळौ नीं रह्यौ तौ दूजौ कुण रिछ्या कर सकै । टावर रौ मन राखण सारू वातां सुणणा में कांई हांण । मौकौ मिळतां ई असमांन जोगी सूं कही सौ वातां पूछ समंचार पुगाय देवैला । इण सूं टावर रौ मन विलमै तौ उणरै कांई आंट । राजी व्है जकौ ई चोखौ । अजारै तौ आखी ऊमर रौ विखौ लिख्यौ है जकौ कुण ई टाळ नीं सकै ।

कुम्हारी अर सेठां री वेटी वरविद री वातां करती ही

के अणछक सिरै मोड़ौ खुल्यौ । असमांन जोगी इत्तौ वेगौ कीकर आयौ ? आवतां ई आपरै खास रंग मैल में जाय आडौ व्हैगौ । वौ रंग मैल पांणी सूं बण्योड़ौ । पांणी रौ ढोलियौ अर पांणी रा ई बिछावणा । पांणी री छात अर पांणी रौ ई आंगणौ । पण गोला होवण रौ सवाल ई नीं । इण भांत पांणी रै सत अर उणरी आब सूं सगळी चीजां बण्योड़ी ही । थोड़ा दिनां सूं असमांन जोगी रै दारू पीवण री मावरौ झिल-ग्यौ हौ । कुम्हारी नै सांनी करी तौ वा सोना रौ इमरत-वांण अर मोत्यां जड़्यौ कचोळौ लेयनै लारै री लारै पूगी । मनवार करतां ई असमांन जोगी तौ दो कचोळा भरनै गटागट पीगौ । पीवतां ई नसा री मांमूली तरणाटी आई । तीजौ कचोळौ पीवतौ पीवतौ बोल्यौ — समझ कुम्हारी, सेठां री इण अबूझ बेटी नै सावळ समझा । पांच महीना तौ म्हैं ज्यूं-त्यूं विताय दिया । झूठ नीं बोलूं, उडीक रौ आणंद ई कम नीं आयौ । पण इत्ता आड़ंग री दाझ रै उपरांत अबै बिरखा तौ व्हैणी ई चाहीजै । अबै तीस दिनां तांई वळै म्हारा सूं सबर नीं व्है ।

कुम्हारी मतै ई अेक बात उपजाई । बोली — सेठां री बेटी रौ औ टोटकौ खंज्यां तौ वा आंधी व्है जावैला । राज पांच महीनां उडीक रौ आणंद उठायौ तौ अेक महीनौ वळै सही ।

असमांन जोगी कह्यौ — थारी मरजी । म्हारौ भलौ थारा सूं वत्तौ दूजौ वळै कुण जांणै ।

के इत्ता में सेठां री बेटी मतै ई कुम्हारी रै जोड़ै आय

ऊभगी । कुम्हारी दारू रौ कचोळौ उणनै झिलाय किणो बात रै ओळावै वारै गी परी । असमांन जोगी री जीभ थोड़ी-घणी जाडी पड़गी ही । कैवण लागौ — थनै समझावण सारू म्हैं कुम्हारी नै कह्यौ । वा बतायौ के थूं अेक टोटकौ सारै । अेक महीना पैली उणनै तोड़्यां थारी आंख्यां फूट जावैला । असमांन जोगी रै वादळ मैल धरतो रा टोटका-फोटका नी चालै । म्हारै कह्या रौ विस्वास कर, थारै कीं जोखौ नीं व्है । अवै अै तीस दिन म्हारा सूं नीं बीतै । आंख्यां फूट ई जावै तौ म्हैं हजार आंख्यां नवी लाय दूंला । म्हैं दूजौ भगवांन ई हूं । म्हारै वळ-करार रौ थांनै कीं बेरी नीं । चांद-सूरज री गळाई औ वादळ मैल आभा में अधर लटकै, आ कांई कम वात है । म्हारै वादळ मैल तौ मौत रौ ई बस नीं पूगै ।

पण सेठां री वेटी नीं मांनो । कह्यौ — जे आप भगवांन रै उनमांन अपरवळी हौ तौ दिनां नै साव छोटा कर दौ । इत्ता छोटा के अेक ई घड़ी में तीसूं दिन ढळ जावै ।

आ वात सुण असमांन जोगी रै लिलाड़ में सळ पड़ग्या । दारू री कचोळी होठां सूं आगौ लेय अटकतौ-अटकतौ बोल्यौ: साचांणी, अै दिन तौ म्हारा सूं छोटा नीं व्है । फगत अठै ई म्हारौ वस नीं पूगै ।

सेठां री वेटी कह्यौ — फगत अठै ई कांई, केई बातां में थांरौ वस नीं पूगै, पण थांनै इणरौ वेरौ कोनीं । आपरी करामातां रौ आपनै अणूंतौ वेम है । तीस दिनां तांई वळे उडीक रौ आणंद लिरावौ । पछै ज्यूं रावळी इंछा व्हैला त्यूं व्है जावैला ।

असमांन जोगी कह्यौ—हां, औ ई आणंद कम तौ नीं है। पण अेक अचूंभा री बात तौ सुण के थारै रूप रौ नसौ दारू रा नसा नै ई दबाय दै। थनै देखतां ई नसौ उतर जावै। दारू पीवौ, भलां ई पांणी पीवौ। कीं फरक नीं।

पण असमांन जोगी री आ बात ई नसा रै टिल्लै चढ़योड़ी ही। आंख्यां हींगळू री गळाई राती-लाल व्हैगी ही। जीभ तर-तर वत्ती पळेटा खावण लागगी ही। मूंडौ उड़तौ-उड़तौ सौ दीखै हौ। इण बात री साची परख करण सारू सेठां री बेटी उणनै लगता ई तीन चार कचोळा भिलाय दिया। असमांन जोगी कैवण लागौ—आज थनै ई पैली वार म्हारै मन री खास बात बतावूं। अबै इण बादळ मैल म्हैं धरती री किणी लुगाई नै नीं लावूंला। है जकी लुगायां तौ छौ बैठी। आंनै काढ़चां तौ बादळ मैल सूनौ-सूनौ व्है जावैला। थांरै वंतळ ई रैवैला। पण अबै म्हैं धरती री लुगायां सूं ठेट गळा तांई धापग्यौ। अबै तौ विमांण लेय इंदरलोक री अपछरावां के चांद री परियां सारू उडांण भरूंला। हांडी भलांई सोना री ई व्हौ, ढकणौ उघाड़चां पछै कीं आणंद नीं। ढकणा रौ तौ आणंद ई दूजौ। जे कुम्हारी अर थूं हूंकारौ भर लेती तौ सगळौ आणंद ई खूट जातौ। घड़ी-घड़ी इणी वास्तै पूछूं के थें नटौ। बस परबारी चीज नै पावण री हूंस अर लाळसा रौ तौ साव ई न्यारौ। थूं म्हारौ साथ दियौ तौ इंदर-लोक री अपछरावां के चंदर-लोक री परियां रौ सहवास कीं मोटी बात नीं।

इण बार आपरा हाथ सूं दारू पावती सेठां री बेटी

कैवण लागी — साचांणी आपरी लाळसावां री तौ कीं पार ई नीं । पण रांम - जांणै म्हनै क्यूं धीजौ नीं व्है । भगवांन नोज करै आपरै जीव रै कीं जोखौ व्हैगौ तौ इण वादळ मैल रा कांई दीन व्हैला । पछै इत्ती लुगायां इण अधर - सून्याड़ में कीकर आपरौ दिखौ काढ़ैला । सासरौ अर पीयर तौ छूटौ जकौ छूटौ पण अैड़ौ जोखौ व्हियां म्हांरी कांई दुरगत व्हैला, आ बात सोचतां ई रूं रूं कांपै ।

अबै असमांन जोगी रै मन - परबारा हाथ हिलण ढूका हा । थावस देवतौ कैवण लागौ — सुभट क्यूं नीं कैवै के थनै म्हारी मौत रौ डर लागै । इणरी तौ थूं सपनै ई चिंता मत कर । म्हनै कोई नीं मार सकै । म्हारी मौत म्हारा बख में है । अर म्हैं म्हारी इंछा सूं क्यूं मरूं ? विस्वास राख म्हनै मारचां तौ खुद मौत ई मर जावैला । थारा मन सूं औ डर मुळगौ ई काढ़ दै । बावळी व्ही । असमांन जोगी नै कोई नीं मार सकै ।

सेठां री बेटी कह्यौ — इत्तौ विस्वास दिरायां ई म्हारौ डर तौ नीं मिट्यौ । कोई अैड़ी ई चोज वाळी बात व्है तौ आप जांणौ । अबै तौ आप सिवाय म्हांरै दूजौ आसरौ ई किसौ है ?

असमांन जोगी कह्यौ — बावळी, थारा सूं कैड़ी चोज ? आज पैली वार थनै औ भेद बताऊं । पछै तौ थनै ई पूरौ विस्वास व्है जावैला के म्हैं अमर हूं ।

अर तठा उपरांत असमांन जोगी सेठां री बेटी नै आपरी मौत री भेद बतायौ । [illegible] अटकतौ नीठ बोल्यौ — सा[illegible]

समंदरां पार अेक मिंदर है । मिंदर री चारूं दिस फगत समंदर ई समंदर । मिंदर रै च्यारूं बारणां दो दो सिंघ भूखा बैठा हौकारां भरै । उण मिंदर रै मांय अेक ऊंडौ भंवारौ । उण भंवारा रै मांय सोना रौ अेक पींजरौ । उण पींजरा रै मांय अेक सूवौ । अर उण सूवा रै मांय म्हारौ जीव । अबै तौ थनै विस्वास व्हियौ । उठै मौत पूग सकै भलां ? समंदर में ठौड़ ठौड़ म्हारै मंतरियोड़ा मगरमच्छ । मौत नै अेक गपळका में गिट जावै । जे कीकर ई हुंस्यारी करनै मिंदर लग पूगै तौ भूखा सिंघ अेक छिण में फाड़ न्हाकै । म्हैं तौ बध बधनै कैवूं के बापड़ी मौत उठै जावै तौ खरी । पछै तौ इण दुनियां सूं ई मौत रौ विणास व्है जावै । जे आखी दुनियां ई अमर व्है जावै तौ म्हारी कांई इदकाई । इणी वास्तै म्हैं मौत नै ई औ भेद नीं बतावूं । बोल, अबै तौ थनै नेहचौ व्हियौ ।

सेठां री बेटी ऊपरला मन सूं मुळकती थकी बोली — अैड़ी बात सुण्यां नेहचौ क्यूं नीं व्है !

असमांन जोगी नै दारू रौ नसौ हद-बारै व्हैगौ हौ । दारू खटनै कित्तौक खटतौ । सेवट ढोल्या माथै गुड़ग्यां सेठां री बेटी जळ-मैल सूं बारै आई । कुम्हारी नै सगळौ भेद बताय दियौ । पछै कुम्हारी तौ अेक पलक री ई ढील नीं करी । विमांण में बैठ पाधरी खोखाळ आई । साचांणी बेटौ उठै ई बैठौ उडीकतौ हौ । टाबर रौ मन राखण सारू असमांन जोगी री मौत रौ भेद बताय दियौ । पण उणनै इण बात री तौ सपना में ई वेम नीं हौ के वौ भेद सुण्यां सात

समंदरां पार उण सूवटा नैं लावण सारू त्यार व्है जावैला। धैड़ी ठा व्हैती तौ भेद बतावती ई नीं। अेकाअेक बेटा नै आपरै हाथां कीकर मौत रै मूंडै धकेलै। कीकर पाळ-पोसनै इत्तौ मोटौ करचौ — वा जांणै के उणरौ रांम जांणै। बादळ-मेल री कळपती लुगायां सारू घणौ ई मन पसीजै, पण इण खातर बेटा नै मरण रै मारग वहीर करचां भलां मां रौ मन कीकर धीजै! उणरा मूंडा माथै हाथ फेरतां गळगळा सुर में बोली — बेटा, दो बरसां रौ भोळौ बाळ सांप नै देख्यां उणनै ई अपड़ण सारू झांपळियां भरै। सांप नै फुण करचां देख कोडायौ मुळकै। पण औ तौ बाळक रौ निपट अबूझपणौ! इण सूवटा नै लावण री थारी कोड ई बाळक रै उण अबूझपणा जैड़ी ई है। थारै इण आड़ा री जोखौ थूं नीं जांणै, म्हैं जांणू।

बेटौ मुळकनै कैवण लागौ — कांईं मां रै खोळै सूतां सूतां मौत नीं आवै? मावां रै पाल्यां जे मौत ढबती व्है तौ आज दिन तांई कोई बेटौ मरतौ ई नीं। मां रै हाथै व्है तौ हांचळ चूंखता बेटा नै वा मरण दे भलां? थारै कह्यां सात समंदरां पार सूवा नै लेवण नीं जावूं तौ थूं म्हनै कदै ई नीं मरण दे। आ बात तौ फगत मौत ई जांणै के तड़कै ऊगता सूरज नै देखण रौ म्हनै सोभाग मिळैला के नीं मिळैला। जे थूं जांणती व्है तौ म्हनै बता। पछै थारौ कैणौ कदै ई नीं टाळूं।

बेटा रै मूंडै अै बातां सुण कुम्हारी नै ई अणूंतौ इचरज व्हियौ। हाथां जलमियोड़ौ बेटौ उणरी अकल नै ई लोप-

ग्यौ । आं बातां नै अबूझ समझै सौ ई अबूझ । थुथकी न्हाकती बेटा रौ लाड करती बोली — घोळी जावूं रे कान्हूड़ा, थारी इण अकल रौ तौ म्हनै ई बेरौ नीं हौ । थारी अै बातां सुण म्हनै अैड़ौ लागै के म्हैं थनै जलम नीं दियौ, थूं म्हनै जलम दियौ । अबै थनै वहीर करचां ई म्हनै नेहचौ व्हैला ।

मां रै जच्यां उपरांत वहीर करणा में ढील ई कांई ही । मूंडा में गुळ देय, माथै हाथ फेर आसीस दीवी । अर बेटौ मां रै देखतां देखतां वहीर व्हैगौ । मां री आंख्यां में हरख रा मोती पळकण लागा ।

अगाढ़ ऊंघ में सूतां नींद रै सपनै चालै ज्यूं बेटौ धकै बधण लागौ । देखतां-देखतां समंदर रै कांठै जा पूगौ । अेक नारेळ री छींयां रै झूमकै भाता रौ गरणौ खोल रोटी खावण रौ मन करचौ ई हौ के बळती वेकळू रेत रै मांय लटपट करती अेक सोनल मछळी माथै उणरी निजर पड़ी । वौ तुरंत उण कांनी न्हाटौ । मछळी नै उठाय पांणी में छोडी । छोडतां ई मछळी रा जीव में जीव आयग्यौ । पांणी में छोळां करण लागी । कुम्हारी रौ बेटौ अणूंतौ राजी व्हियौ । गरणै सात मीठी पुड़ियां बाधी ही । अेक अेक टुकड़ौ तोड़ सातूं पुड़ियां मछळी नै चुगाय दी । सोनल मछळी पांणी में पळापळ नाचती नाचती अेक अेक टुकड़ौ निगळती गी । गरणौ झाटकतां झाटकतां वौ टाबर री गळाई बोल्यौ — व्हा, अबै तौ सातूं ई पुड़ियां निठगी । म्हारी सोनल मंछी थनै वळै कांई खवाड़ूं ?

सोनल मंछी बोली — म्हारै तौ अबै कीं नीं चाहीजै पण अै रोट्यां कांई थूं म्हारै वास्तै ई लायौ ।

छोरी ही जकी साची बात बताय दी । कह्यौ— नीं, म्हैं लायी तो म्हारै वास्तै ई हो । पण थनै नाचतां देख म्हारा सूं पुड़ियां चुगायां बिना नीं ढबीजियो । म्हैं भूख रै घणो सारै कोनीं ।

तद सोनल मंछी पांणी सूं मूंडो बारै काढ़ बोली— म्हारा बीरा, आज थूं म्हारा प्रांण बचाया । खुद भूखो रैय म्हनै मीठी पुड़ियां चुगाई । म्हैं मंछियां री रांणी हूं । कदै ई अबखी पड़ै तो म्हनै चितारजै ।

छोरा री अकल मौका माथै कांम काढ़्यौ । बोल्यौ— अबखी बळै कद पड़ै, अबखी पड़ी जद इज तो इण समंदर रै कांठै आयो ।

पछै वो सोनल मंछी नै बादळ मैल, असमांन जोगी अर भूवा वाळी सगळी बात बताय दी । तद सोनल मंछी कह्यौ— आ तो म्हारै वास्तै साव सैल बात । म्हारी पूठ माथै बैठ । म्हैं हांकरतां मिंदर रै बारणै पुगाय देवूंला । समंदर री कोई जीव-जिनावर थनै अेल ई नीं पुगाय सकै । मिंदर पूग्यां सिधां री ई कीं न कीं जाब्तो करूंला ।

तठा उपरांत कान्हूड़ो लप सोनल मंछी री पूठ माथै बैठ- ग्यौ । सोनल मंछी सरर-सरर पांणी नै फाड़तो धकै वधण लागी । पवन रै वेग सूं ई उणरी वेग वत्तौ हौ । आधेटै आय कान्हूड़ो चारूं कांनी भाळ ऊंचौ आभा सांम्ही जोयौ । इण समंदर री तो लीला ई न्यारी । धरती माथै तो निजर ठोड़ ठोड़ अटकै । कठै ई ढळांत, कठै ई उंचात, कठै ई रूंख, कठै ई धोरा, कठै ई माखर, कठै ई झूंपड़ियां अर कठै ई

ह्वेलियां । पण अठै तौ कीं न कांई ! चिमटी धूळ, कांकरौ अर कोपरियौ ई कोनीं । भाटा वगावण री तौ मन में ई रैवै । कठै गुट्टा, कठै खिरणियां अर कठै खोखा ! अठै भुरणी खेलण री तौ कीं वास्तौ ई नीं । नीं कोई हेटै थरकीजै अर नीं हाथ-पग तूटै । हाथ-पग नीं भागै तौ पछै माईत क्यूं चिड़ै ! ऊंचौ गुळी-वरणौ आभौ । चारूं कांनी गुळी-वरणौ पांणी । पांणी ई पांणी । इण पांणी री तौ नीं कोई थाग अर नीं कोई पार । कीकर भेळौ व्हियौ इत्तौ पांणी ? कैड़ौ ई अंधारौ व्हौ ठोकर खावण री तौ वास्तौ ई नीं ।

के इत्ता में अलंघां रौ खड़चोड़ौ तूफांन आयौ । हौ हौ हौकारां भरतौ । विकराळ । अणूंतौ भिमरचोड़ौ । जांणै हवा किणी रै लारै वार चढ़ी व्है । भाखरां नै ई थाल खवाड़ै जैड़ौ भयंकर तूफांन । सोनल मंछी वोली—डरण री अंगै ई जरूरत नीं । औ तूफांन आयौ ज्यूं ई माथाकर निकळ जावैला । दोनूं हाथां में म्हारी पूठ सावळ अपड़ लै ।

कांन्हूड़ौ तौ सोनल मंछी कह्यौ ज्यूं ई करचौ । औ तूफांन तौ समंदर नै ई ठौड़ छुडावै जैड़ो । छोळां रा भाखर गुड़कता आवै । वां गुड़कती छोळां माथै डोलर-हींदा ज्यूं ऊंचौ नीचौ व्हैतौ कांन्हूड़ौ धकै बधतौ ई गियौ ।

थोड़ी ताळ उपरांत तूफांन थमियौ । जांणै हजारूं-लाखूं ढोल-नगारा बाजता बंद व्हिया व्है । निजर री मार लांबी ई लांबी बधगी । कित्ती भांय तक सुभट दीसै । अर अठै तौ बाड़-कांटा री जात ई नीं । दाछंट उरबांणा दौड़ौ । भुरंट ई नीं खुबै । नीं कांकरौ रड़कै ।

तर-तर सूरज ढळण लागी ! तपतां-तपतां सेवट अबै आयमण री जचगी दीसै । हे हे, आ कोर पांणी में गीली व्ही । कठै ई वासदी री गोळी बुझ नीं जावै । अबै गुलाल रौ औ गोळ-गट्ट थाळ आधौ खांडौ व्हैगौ । औ डूबौ ! औ डूबौ ! अबै ठा पड़ी के सिझ्या रा नित हमेस सूरज इण समंदर में छिमक्यां मारै । जद इज तौ परभात रो वेळा ठाडौ ठाडौ ऊगै । तर-तर सिझ्या रौ अंधारौ असमांन माथै छायग्यौ । समंदर रौ पांणो ई सांवळौ पड़ण लागौ । आखै दिन लुक-मींचणी रमता तारा अबै जावतां छिड़ा-बिछड़्यां प्रगट होवण लागा । फूंक दियां वासदी चेतन व्है ज्यूं चांद री उजास होळै होळै चेतन होवण लागौ । समंदर री इण चांदणी रौ तौ वारा-पार ई नीं । पांणी रा परस सूं कित्ती ठाडी व्हैगी । ठा नीं पड़ी के चांदणी समंदर नै सिनांन करावै के समंदर चांदणी नै संपाड़ी करावै । सांपड़ियोड़ी चांदणी छोळां रै पालणै भूलण लागी । उणरा परस सूं सांवळौ पांणी जगामग जगामग पळकण लागौ ।

कांन्हूड़ा रै हिवड़ा री तौ जांणै कळी-कळी खिलगी । हजार वरसां तांई साव साजी निरोगी जूंण जीवै जित्तौं लांठौ जमारौ आं तीन दिन अर तीन रातां में ई भरपायौ । औ नजारौ देख्यां विना मर जातौ तौ मन री मन में रै जाती । कैड़ी विकट अवखी अजायदी ठौड़ औ मिंदर ठायौ ।

सोनल मंछी तौ मिंदर रै पाखती पूगतां ई पींजरौ उड़ा-वण री जुगत विचार ली । रात आधी ढळियां वा मिंदर रै पाखती पूगी । पूनम री चांद समंदर नै हिलोळां चढ़ाय दियौ

हौ । भूखा सिंघ लातरचोड़ा सूता हा । अठै मौत रै मूंडै चलायनै कुण आवै ? समंदर रौ पांणी चढ़तां चढ़तां इत्तौ ऊंचौ चढ़चौ के वौ मिंदर रा भंवारा रै मांय खळकीजण लागौ। सोनल मंछी पांणी पांणी कांन्हूड़ा नै लेय मांय वड़गी । वौ निरांत सूं कड़ा में टिरतौ पींजरौ उतार लियौ । सोनल-मंछी सांम्ही-पांणी ऊंची चढ़गी । पींजरा रै सूवटा री बोली सुण्यां सिंघ भिभकनै बैठा व्हिया । मौत नै ई डरावै जैड़ी हौकारां माथै हौकारां भरी । पण पांणी में कूदण री हीमत नीं व्ही । मौत तौ सिंघां नै ई वाल्ही नीं लागै ।

अठी सूवा रै पींजरा रौ मिंदर सूं बारै निकळणौ व्हियौ अर उठी जळ मैल में सूता असमांन जोगी रौ जीव अणूंतौ अमूझण लागौ । भचकै पिलंग सूं बैठौ व्हियौ । पाखती ऊभी कुम्हारी बाव ढोळती ही । असमांन जोगी रौ जीव फड़फड़ी खावण लागौ । लिलाड़ माथै हाथ फेरतौ बोल्यौ — कुम्हारी, अणछक आ कांई बात व्ही ? म्हारौ जीव भूंडै ढाळै गोटीजै ।

कुम्हारी कह्यौ — मिनखा सरीर है । कीं न कीं कुथाल पड़गी दीसै । म्हैं माथौ चांपूं, अबारूं जीव सोरौ व्है जावैला । कठै ई सेठां री बेटी सारूं तौ मन आकळ-वाकळ नीं व्हियौ । आप फरमावौ तौ उणनै बुलाय लावूं । म्हैं इण अमूझणी रौ म्यांनौ समझूं । पण अबै तौ फगत तीन दिन ई बाकी रह्या । पछै जीव गोटीजणा सै बंद व्है जावैला ।

असमांन जोगी रा सुर में निबळाई वापरगी ही । माथौ धूणतौ बोल्यौ — नीं कुम्हारी, आ अमूझणी वा कोनीं, दूजी है । कठै ई कीं छळ के जाळ-साजी तौ नीं व्ही ।

कुम्हारी इचरज करती व्है ज्यूं बोली—आज आपरै मूंडै आ कांई वात सुणूं । आपरै साथै अर छळ ? जाळ-साजी ! खुद भगवांन रौ ई जद आपरै आगै पसवाड़ौ नीं फिरै तद वापड़ा मिनख री तौ विसात ई कांई ।

कुम्हारी समचौ भेज्यौ तौ सेठां री बेटी जळ-मैल में आई । अबै तौ फगत तीन दिन बाकी रह्या । रांम-जांणै उण दिन किण अजांण आस रै भरोसै छ महीनां री मोलगत मांगी ही । अबै तौ वा ई संपूरण होवण वाळी । उणरै पगां जांणै भाखर री भार लद्‌मग्यौ व्है । नोठ जळ-मैल तांई पूगी । बोली-बोली कुम्हारी रै जोड़ै आय ऊभगी । कुम्हारी रै पाखती व्हियां उणनै मां वाळी थावस मिळतौ ।

कुम्हारी कह्यौ सौ बात साची व्ही । सेठां री बेटी नै देख्यां असमांन जोगी रौ जीव सोरौ व्हियौ । थोड़ी ताळ में अमूभणी अंगै ई मिटगी । असमांन जोगी मुळकतौ बोल्यौ—तीन दिनां तांई थें दोनूं जणियां औ जळ-मैल छोडनै कठै ई मत जावौ । रांम-जांणै क्यूं अबै दूजी लुगायां रै बिचाळै म्हारौ मन पतीजै कोनीं ।

छ महीनां री मोलगत री छेहली रात ही । असमांन जोगी वास्तै सोना रौ सूरज ऊगैला । सेठां री बेटी वास्तै काळस रौ सूरज ऊगैला । इण वादळ मैल तौ मरचां ई जिद नीं छूटै । इमी रै कूंपला रा छांटा देय असमांन जोगी पाछी जीवाड़ दे । नीं जीवियां सुख अर नीं मरचां सुख । इण सूं मोटौ दुख तौ वळै कांई व्है ! इण रात री काळी ओढ़णी कुण भालै ? आ तौ वैरण वगत माथै ढळैला इज ।

औ निरलज्ज असमांन जोगी तौ सूरज रै उजास रौ ई संकौ नीं मांनै । तड़कै तौ औ आपरी मनजांणी करैला इज । नीठ गिण गिणनै तौ बै छ महीना धकाया :

घड़ी रात थकां ई असमांन जोगी री नींद उड़गी । पण वौ आंख्यां नीं उघाड़ी । देख्यां पछै कदास सबर नीं व्है । अबै तौ घड़ी-पलकां री जेज । सूरज रै सायै उणरा जीवण में अेक नवौ चांनणौ जुड़्यौ ।

कुम्हारी अर सेठां री बेटी नै तौ आखी रात ई नींद नीं आई । अबोली बैठी दोनूं जणियां अेक दूजा रै उणियारा सांम्ही देखती री । बिना बोल्यां बंतळ करती ही । इण अथाग अंधेरा रै पार वांनै दुख रौ सुभट उजास दीखतौ हौ । कान्हूड़ा रा तौ पाछा कीं समंचार ई नीं ।

के अणछक अेक विकट चिराळी करनै असमांन जोगी पिलंग सूं भचकै बैठौ व्हियौ । मौत रै आंटा भिल्योड़ा जांणै हजार सिंघ अेकण सागै डाढ़िया व्है, अैड़ौ ई दरद हौ असमांन जोगी री उण कांज में । उणरी गूंज सूं बादळ मैल हिलोळां चढ़ग्यौ । छिबवंगियौ व्है ज्यूं अठी-उठी न्हाटण लागौ । डाढ़तौ बोल्यौ—कुम्हारी म्हारै सायै घात व्हियौ, पण म्हैं मरतां मरतां ई उण हित्यारा नै जीवतौ नीं छोडूं । म्हारौ विमांण कठै । चालौ थे ई म्हारै सायै चालौ ।

दोनां रा बाहूड़ा झाल वांनै तगतगावतौ बादळ मैल रै सिरै बारणै लायौ । दोनां नै झाल्यां झाल्यां ई कूद नै विमांण में चढ़्यौ । विमांण सणण सणण उडण लागौ । सूरज ऊग्यां रै पैली रौ मुधरौ ठाडौ उजास आखी धरती माथै फैलग्यौ हौ ।

असमांन जोगी रै रूं रूं में जांणै खीरा चेंटग्या व्है । कैवण लागौ — आज तौ औ सूरज आखी दुनियां में लाय सिळगाय मांनैला । धू धू करती धरती बळैला अर औ नुगरौ सूरज आपरी उजास - आंख्यां आ लाय सिळगती देखनै हंसैला, घणौ ई हंसैला ।

नाडी री पाळ माथै विमांण सूं उतरतां असमांन जोगी सेठां री बेटी रै मूंडा सांम्ही देखतौ बोल्यौ — म्हैं थारै माथै कित्तौ भरोसौ करचौ हौ । पण आ लुगाई री जात भरोसौ करण जोगी व्है ई कोनीं । म्हैं धापनै भूल करी तिणरौ डंड तौ भुगतणौ ई पड़ैला ।

सातूं पूतळियां रै बिचाळै अेक कंवळौ टाबर ऊभौ मुळकतौ हौ । उणरा हाथ में सोना रौ पींजरौ । पींजरा में सूवा रै खोळिये असमांन जोगी री मौत । पींजरौ खोलनै वौ सूवौ बारै काढ़ण वाळौ ई हौ के असमांन जोगी वतूळिया रै उनमांन ताचकियौ । जोर सूं डाकर करतौ बोल्यौ — छोड दे छोरा, इण सूवा नै छोड दे । थनै तौ म्हैं मरतौ मरतौ ई मार न्हाकूंला । जा थनै वादळ मैल वगसीस में दियौ — अबै तौ इण सूवटा नै छोड दे ।

मूंडा सूं अगन री झाळां काढ़तौ असमांन जोगी उण छोरा रै पाखती पूगण वाळौ ई हौ के वौ सूवटा री दोनूं टांगा तोड़ अळगी वगाय दी । असमांन जोगी उणी पलक चौरंगौ होय पाळ सूं हेटै गुड़तौ निगै आयौ । हीया री हुरड़ाई अर जोस रै पांण वौ पाळ चढ़ण सारू घणौ ई खपियौ पण आधेटै आय पाछौ गुड़ जातौ । उणरौ चौरंगी देह लोई में रगावग

व्हैगी ही ।

के इत्ता में कुम्हारी उठै ऊभी ऊभी ई जोर सूं बोली—बेटा, इण असमांन जोगी रै बळ रौ भगवांन ई पार नीं पायौ। अबै ढील मत कर। सूवटा री घांटी मरोड़ न्हाक।

कान्हूड़ौ मुळकतौ थकौ बोल्यौ—इणरै बळ रौ तौ गसकौ दीसै ई है। आखी ऊमर सुख रौ साव लियौ, थोड़ी ताळ दुख रौ ई तौ साव लेवण दे। बिना दुख रै सुख री सावळ पिछांण नीं व्है।

चौरंगौ व्हियोड़ौ असमांन जोगी घणौ ई कूकियौ, घणौ ई डाढ़ियौ पण कुम्हारी रौ बेटौ सूवटा नै नीं छोड्यौ। लोई में रगाबग असमांन जोगी अठी-उठी थालां खावतौ रह्यौ।

सेठां री बेटी री टुकियां में इमी रौ कूंपलौ हौ। बारै काढ़ पूतळियां माथै छिड़कतां ई उंणरा सातूं भाई जीवता व्हैगा। उबासी खाय आळस मरोड़ता बोल्या—आज तौ नींद जबरी आई।

तद कुम्हारी बोली—थूकौ थांरा मूंडा सूं। अैड़ी नींद तौ थांरै बैरी दुस्मियां नै ई नीं आवै।

लोई में रगाबग असमांन जोगी री दुरगत देख्यां वांनै लारली सगळी बात याद आयगी। पाखती ऊभी बैन रै सांम्ही देख छोटकियौ भाई पूछ्यौ—थारी सातूं भौजायां कठै?

तद कुम्हारी जबाब दियौ—नेठाव राखौ, अबारूं सांम्ही आय हाजर व्है जावैला।

आ कैय आपरी टुकियां सूं सूवा री पांख नै बारै काढ़ सात वळा फूंक दी। खासी ताळ उडीक्यां रै उपरांत अठी

उठी जोयो पण कठै ई विमांण आवतौ नीं दीस्यौ। पण
अेक इचरज री वात के वादळ मैल खासौ नीचै आय ढवग्यौ
हौ। तद वा आपरा वेटा रै सांम्ही देख वोली — कान्हूड़ा,
अवै ढील मत कर। असमांन जोगी रै मरयां बिना वादळ
मैळ धरती माथै नीं उतरै।

तद कान्हूड़ौ जोर सूं मठोठी देय सूवटा री गावड़ मरोड़
न्हाकी। मरोड़तां ई जांणै हजार बीजळियां साथै किड़की।
असमांन जोगी छेहली चिराळी करनै उठै ई गांठड़ी व्हैगौ।
उणरै मरतां ई वादळ मैल मिनखां री धरती माथै आय उत-
रियौ। सोना रा वारणा खुलग्या। अेकोअेक लुगायां मुगत
व्हैगी। लुगायां रै मुगत व्हैतां ई वादळ मैल री खळिदौ
व्हैगौ। तद सूं धरती माथै केसर अर सुरंगा फूल ऊगण
लाग्या। हीरा-मोती, लालां अर गुलाल रौ ढिग व्हैगौ।

डोकरा-डोकरी पूतळियां नै धूंप खेवण सारू आया तौ
नाडी री पाळ माथै औ अनोखौ नजारौ देख चकन-वकन
व्हैगा। वांरी पूजा अैळी नीं गी। अणगिण लुगायां रै मेळा
विचाळै सातूं वींदणियां, वेटी अर सात्यूं वेटां रै उणियारै
धरती जांणै दीप-दीप करण लागी।

सांवण री तीज सूं ई पैला आ लांठी तीज किसी आई?

सेठां री वेटी रै साथै कान्हूड़ा रौ अणूंतै लाड-कोड
गाजां-वाजां ढोल नगारां रै डाकै धड़िग-धड़िग धूंमधांम सूं
व्याव व्हियौ। मुगत व्हियोड़ी अणगिण लुगायां घूमर घाल
घाल घणी ई नाची। घणा ई गीत गाया।

समचौ मिळतां ई लुगायां रै घर वाळा न्हाटा आया।

कुम्हारी जणी जणी नै हीरा-मोत्यां री खोळ भराय आपरी बेटी रै उनमांन सीख दीवी।

असमांन जोगी रै मरतां ईं उणरी धड़ री ठौड़ आकड़ा रौ अर भोडक री ठौड़ धतूरा रौ लांठौ भाड़ ऊग्यौ। उण दिन संजोग सूं म्हैं ई उठै हौ। म्हारी निजरां औ सगळौ ई नजारौ जोयौ। साच मांनणिया कुम्हारी रै बेटा री गळाई सुखी व्हैला। गाजां-बाजां मन चायौ ब्याव व्हैला। अर अभरोसा करणिया मर्‌यां उपरांत ठौड़-ठौड़ आक धतूरौ बणनै ऊगैला।

खांतीलौ चोर

मिनख रै गुणां री कद पिछांण व्है ? कीकर पिछांण व्है ? कुण पिछांण करै ? इण खातर अपांरै देस में भेख री पूजा व्है । लोग भेख नै निंवै । दंडौत करै । भेख सूं मिनख रा सगळा दुरगुण दटै । भेख मिनख रै गुणां री अैड़ौ परवांनौ के जिणनै अणभणियौ ई देखतां पांण पिछांण ले । कदै ई तौ केई आसंग-हीण, अैदी अर निपोच्या भेख धारण करै । जिणसूं बस्ती में मांग्यां सोरा टुकड़ा हाथ आवै । कदै ई केई भेख रै मिस ठगाई री ठागौ रचै । इण सूं सोरी कमाई कीं कोनीं । अैड़ा ठगां सारू भेख, विना नांणा री विणज । भेख री पूजा करणिया मिळै जित्तै औ विणज दाछंट चालै । घणकरा अकछ रुळियार भेख रै ओलै इंछां परवांण मौजां मांणै । घणकरा दुख अर विखा सूं आंती आय भेख री सरणौ लै । अैड़ा दुखियारां वास्तै भेख सुख-सांयत रौ झबकौ । घणकरा पंथां रै झीणै जाळां अळूझियोड़ा भेख रै मिस धरम री जूंनी झाटी कूटै । इणी वास्तै वांट्या ओखद अर मूंड्या माथा रौ कीं पतियारौ नीं । साचै ग्यांनियां री मन भेख सूं नीं धीजै ।

अेकर अेक गांव में अेक अैड़ौ ई भेखधारी महात्मा चतर-मासा री धूणी जगाई । साथै सुंड-मुस्तंड चेलां री टोळी ।

अणपढ़, अबूझ अर अग्यांनी लोग अर पछै धरम, भगवांन, आतमा, परमातमा अर मुगती में अमिट आस्था ! ठगण सारू अैड़ौ ठोट मांनखौ दुनियां में वळै कठै मिळै ! बिना पतवांणियां पगां माथौ निंवावणिया मिळ जावै तौ वांनै मूंडणा में घणी कीं अटकळ री जरूरत कोनीं । दीवौ तौ आपरी ठौड़ सूं हिलै ई कठै, पण फिड़कला हुळस हुळसनै मरण री होड़ मचावै तौ वै किण रै पाल्यां ढबै । दीवौ माथौ धूण वांनै घणा ई पालै पण वै नीं मांनै । उण भेखधारी महात्मा नै लारलै खासा बरसां सूं भेख अर धरम रौ अैड़ौ ई साव आयोड़ौ हौ । ज्यूं ज्यूं लोगां नै आपरौ कांम-हलीलौ खोटौ करण सारू बरजतौ त्यूं त्यूं लोग वत्ता अड़वड़ता । चेला मूंडण सारू वौ जणा जणा नै अस्टपौर ना देवतौ तौ ई उणरै आसण चेला बणण सारू लोगां रौ थट लाग्योड़ौ रैवतौ ।

महात्मा घड़ी घड़ी कैवतौ — भला मिनखां, म्हारै हाथ में कीं सिद्धाई कोनीं । इण भेख रौ रंग म्हारै रस बैठग्यौ इणसूं अै गाभा पैर लिया । साच मांनौ, दूजी कीं इदकाई नीं । म्हैं तौ रमतौ रांम हूं । म्हारै पगां भंवरौ है । इण खातर ठौड़ ठौड़ विचरणौ पड़ै । थें थांरौ कांम करौ अर म्हैं म्हारौ कांम करूं । म्हैं थांरा कांम में घांदौ नीं घालूं तौ थें म्हारा कांम में में घांदा क्यूं घालौ ?

अैड़ी बातां सुण्यां पछै लोग मांन जावै वा भगती ई कांई ! चेला बणण सारू तीण बांध दी । अेक जावै नै इक्कीस आवै । अैड़ा पूजवांण महात्मा रा दरसण वळै कद व्हैला । उण महात्मा री अेक दूजी हठोठी वळै के वौ चेलौ मूंड्यां पैली कीं

न कीं चीज अवस छुडावतौ । कोई रींगणा छोड्या । कोई जमीकंद छोड्या । कोई कोळौ, कोई पेठौ तौ कोई मतीरौ खावणौ छोड्यौ । कोई दूध, कोई दही अर कोई अमचूर छोडी । कोई कह्यौ के रात पड़्यां व्याळू नीं करूं । कोई किणी रै साथै भेळौ बैठ जीमण री आखड़ी ली । कोई मीठौ छोड्यौ तौ कोई चरकौ छोड्यौ । पण चिलम, गांजौ, भांग अर अमल छोडणिया घणा कम लाधा ।

उण गांव में अेक डकरेल चोर रैवतौ । चेला मूंडण रौ इत्तौ हाकौ सुण्यां तौ उणरै ई पगां ई कीड़ियां चेंटी । वौ रात रा तौ आपरौ कांम करतौ अर दिन रा सूवतौ । अेक दिन सूतां सूतां उणनै महात्मा सूं कोगत करण री जची । मञ्झ बेपारां आंल्यां मसळतौ बैठौ व्हियौ अर पाधरौ महात्मा रै आसण आयौ । उण वेळा चेलां री भीड़ कम ही । महात्मा रै चरणां माथौ निवाय धोक देय कह्यौ — म्हनै ई आपरौ चेलौ मूंडौ ।

महात्मा कह्यौ — म्हारा प्रण री तौ जाच ई व्हैला के कीं चीज छोडण रो आखड़ी लियां बिना म्हैं किणी नै चेलौ नीं मूंडूं ।

चोर तुरंत बोल्यौ — किणी नै ई आपरौ गरू नीं बणा-वण री आखड़ो लूं तौ कांई आप म्हनै चेलौ मूंडौला ?

हजारूं चेला मूंड्या पण अैड़ी आखड़ी लेवणियौ तौ अेक ई नीं आयौ, महात्मा नै आ वात सुणतां ई अैड़ौ लखायौ के जांणै वांरा मूंडा माथै सूखा खाहरड़ा री जंतराई । पण वौ ई चात्रंग कम नीं हौ । दूजै ई छिण आपौ संभाळ माडै मुळकतौ बोल्यौ—बच्चा, आ आखड़ी लियां तौ थनै चेलौ बणण री ई

कांई जरूरत । थूं आ बात तौ जांणतौ ई व्हैला के आखड़ी लियां पछै वा चीज तौ छोडणी ई पड़ै ।

तद चोर बोल्यौ— आ बात व्है तौ पछै म्हैं आपरै सांम्ही चार बातां छोड़ूं । घणकरा लोग तौ अेक सूं दूजी बात ई नीं छोडी । सबसूं पैली बात — जीवूं जित्तै रांणी रै मांचै नीं चढ़ण री आखड़ी । सोना रा थाळ में रोटी नीं जीमण री आखड़ी । सोना री अम्बाड़ी हाथी रै हौदै नीं चढ़ण री आखड़ी । अर आ चौथी बात सब सूं सिरै के जीवूं जित्तै किणी राज रौ राजा नीं बणण री आखड़ी । अबै तौ चेलौ मूंडण री मया फरमावौ ।

चोर री अै बातां सुण संतां रै ऊभी आडी नीं माई । पण जोर कांई करतौ । कैड़ी ई अळी भेंस पेंखड़ोजियां खूंटै बाधी रैवै । पछै वौ महात्मा भेख री पेंखड़ौ छोड आगौ-पाछौ कीकर व्हैतौ । पण इण में तौ लखणां-परवांण पाछी वितावणी इज । रीस करयां तौ सांम्ही महात्मा रौ इज अकज व्हैला । वळै माडै मुळकतौ बोल्यौ— थारी जोड़ रौ तौ कोई चेलौ आज पैली बण्यौ ई नीं । थारौ गरू बणण रौ तौ म्हनै ई मोद व्हैला । अै चार बातां तौ थूं थारा मन सूं छोडी, अेक बात तौ म्हारै कह्यां ई छोड ।

चोर रै इत्तौ खटाव कटै । बिचाळै ई आखतौ होय बोल्यौ— क्यूं नीं छोड़ूं । आप फरमावौला तौ जरूर छोडूंला । आपरौ आदेस व्है तौ सांस लेवणौ छोड दूं अर पछै ई मरूं कोनीं ।

औ चेलौ तौ जबरौ । महात्मा रा लिलाड़ में सळ

पड़्या । रीस तौ अैड़ी आई के चंडाळ नै आ री आ आखड़ी दिरावै । पण सुण्यां लोग-बाग कांई जांणैला । हाल तौ घणा वरसां तांई औ ठागौ चलावणौ है । हाल अैड़ौ लांबौ-चौड़ौ सुख ई कांई पायौ । फगत धूणी धूणी तापी है । वौ सोचण लागौ के इणनै अैड़ी कांई आखड़ी दिरावै के थोड़ा ई दिनां में औ पाधरौ व्है जावै । इत्ता वरस व्हैगा भेख लियां नै । घणा घणा पूजवांन महात्मा दीठा । पण भूठ बोल्यां बिना संतां रै ई नीं सरै । तद वापड़ा गिरस्ती भूठ नीं बोलण री आखड़ी कीकर निभा सकै । के तौ आ आखड़ी झेलै ई नीं अर झेल्यां पछै तौ अेक दिन में ई आंती आय जावैला । कैवण लागा— आं चार आखड़ियां रै भेळी, मरचां ई भूठ नीं बोलण री आखड़ी ले ले तौ सोना में जांणै सौरम भिळी ।

म्हाटौ औ चोर तौ जवरौ । सुणतां पांण लप हूंकारौ भर लियौ । बोल्यौ — सोना में सौरम तौ भिळै के नीं भिळै आ बात तौ आप जांणौ, पण आज सूं म्हनै भूठ बोलण री तलाक ।

महात्मा घड़ी घड़ी खराय कह्यौ — देख आखड़ी नीं निभायां थारै साथै म्हारौ ई माजनौ जावैला, सोच-विचारनै वचनां बंधजै । भूठ नीं बोलणौ, थूं जांणै जित्ती सैल बात नीं है ।

चोर बध-बधनै कह्यौ — इण बात री तौ आप चिंता ई मत करौ । किणी दूजी बात सूं आपरौ माजनौ जावै, औ जिम्मौ तौ आपरौ । पण म्हैं मरचां ई आपरौ माजनौ नीं गमावूं । अर म्हां चोरां रै कैड़ा माजना । म्हे तौ मां री कूख में ई माजनौ लारै छोड आया । बोलणौ सीख्यौ

तद सूं आज दिन तांई घणौ ई झूठ बोल्यौ, घणौ ई झूठ बोल्यौ । हजार मिनखां जित्तौ अेकलौ ई अलल-हिसाब झूठ बोल्यौ तौ ई कीं सुख पायौ नीं । म्हैं बोलूं जकौ ई झूठ अर नीं बोलूं जकौ ई साच । बात तौ फगत इत्ती इज बद-ळणी है के आज सूं म्हैं बोलूं सौ साच अर नीं बोलूं सौ झूठ । आप तौ म्हनै मूंडा सूं झूठ नीं बोलण री ई आखड़ी दिरावौ । म्हनै कबूल ।

तद महात्मा नै माडै उण चोर नै आपरौ चेलौ मूंडणौ पड़्यौ । महात्मा डावै हाथ रै मोळी बांधी अर चोर लूंमड़ौ नारेळ झिलायौ । अेक नारेळ साटै चेलौ बणणौ तौ घणौ मूंघौ कोनीं ।

झूठ नीं बोल्यां तौ बांणिया बिणज ई नीं कर सकै पछै उणरै तौ चोरी रौ धंधौ हौ । धंधौ तौ करणौ ई पड़ैला । साहूकार ई धंधा सारू दिसावर जावै तौ वौ ई धंधा सारू दिसावर जावैला । फाटोड़ा गाभा अर फाटोड़ा लिग्तर पैर वौ लिप्तर लिप्तर दिसावर रै मारग वहीर व्हियौ । हालतां हालतां अेक नवा राज में पूगौ । सिंझ्या पड़गी ही । अेक मिंदर रै बारणै झालरां री झणकारां सुण वौ ई भगतां भेळौ ऊभग्यौ । भगती में मन तौ अंगै ई नीं लागौ पण वौ उठै ई ऊभौ रह्यौ । आरती व्हियां रै थोड़ी ताळ उपरांत भगत तौ आप आपरै ठायै-ठिकांणै गिया । पण चोर उठै ई भग-वांन री मूरत रै सांम्ही ऊभौ रह्यौ । मिंदर रौ अैड़ौ रम-णीक ठायौ छोड चोर वळै कठै रातवासौ लेवतौ । भगवांन री मूरत बिचै उण में जड़्योड़ा हीरा-मोती घणा सुहांणा

लागा । भगवांन सारू तौ कांकरा ई वैड़ा अर हीरा-मोर्त
ई वैड़ा । अै तौ फगत मिनखां रै मन रा पंपाळ !
पुजारी इण नवा भगत रै सांम्ही जोयौ । फाटोड़ा गाभा
फाटोड़ा ई लिग्तरा । मगन होय टुग-टुग भगवांन री मूरत
रै सांम्ही जोवै । पूछ्यौ — थूं कुण है भाया ? इत्ता दि
तौ कदै ई नीं देख्यौ ।
चोर चिमकनै पुजारी रै सांम्ही जोयौ । बोल्यौ — म
तौ चोर हूं । फगत आज ई इण गांव आयौ ।
पुजारी मुळकनै वळै पूछ्यौ — चोर है तौ पछै मिंदर
क्यूं आयौ ?
'क्यूं कांई, चोरी करण सारू । चोर रै चोरी कर
सिवाय दूजौ कांम ई कांई ?'
पुजारी मुळकनै कैवण लागौ — बावळा, थूं म्हारै सांम्
क्यूं झूठ बोलै ? म्हैं पचास बरसां सूं इण मिंदर रौ पुजा
हूं । घट घट री बात तौ फगत भगवांन जांणै, पण म्हैं
मिनखां रा उणियारा ओळखूं । चोर तौ कूट्यां ई नीठ सा
बोलै । थूं निस्चै अघोरी भगत है, म्हारी परख करण सा
आयौ । म्हनै परख रौ कीं डर नीं । खरौ ई उतरूंला । देख
धारी आ बात सुण घट घट री वासी मुळकै ।
भगवांन री मूरत सूं निजर हटाय, चोर पुजारी रै मूं
सांम्ही जोयौ । धोळी जटा । ऊजळौ खत । बोखौ मूंडौ
चंदण रौ तिलक । गळै रुदराछ री माळा । वौ वळै कह्यौ-
म्हैं हूं तौ चोर, नीं मांनौ तौ आपरी मरजी । म्हारी बा
सुण भगवांन मुळकै तौ भगवांन री मरजी । अठै इणी ठौ

रातवासौ लेवणी चावूं । आपनै कीं उजर तौ कोनीं ।

चोर री आ बात सुण वावळौ पुजारी तौ भूंडी सोची नीं कोई भली । पाधरौ उण सूं गळ-बाथां इज मिळतौ निगै आयौ । हरख रा आंसू ढुळकावतौ गळगळा सुर में बोल्यौ — अन्तरजांमी आज म्हारी भगती सुफळ व्ही । थें इण रूप में परतख दरसण दिया ! लिलाड़ री निजर भलांईं मोळी व्हौ, म्हारैं हिवड़ा रो आंख्यां खुल्योड़ी । कांईं म्हनै इत्तौ आंधौ जांणौ के आपनै पिछांण ई नीं सकूं !

चोर तौ नीठ आपरी हंसी ढाबी । पछै तौ पुजारो परतख अवतरिया भगवांन रैं भरोसै मिंदर छोड, खुद लारली कोटड़ी में जाय सूयग्यौ । भगत भगती सूं अमोलक हीरा-मोती चाढ़्या तौ आज भगवांन वांनै कबूल कर्‌या । देखां भगवांन रैं कबूल कर्‌यां भगत लोग चढ़ावौ के परसाद कित्ताक दिनां तांईं चाढ़ैला ।

वौ चोर तौ अैड़ौ डकरेल हौ के सूतां मिनखां रा गाभा उतार ले तौ ई आंख नीं खुलण दे । पछै वौ कांईं पाछ राखतौ । चोरी करण रौ मजौ तौ घणौ नीं आयौ, पण अणचींती माया घणी ई हाथ लागी । अमोलक हीरा-मोती, निगोट सोना रौ छतर । साच बोलणौ तौ जबरौ गुण आयौ । आखी ऊमर झूठ बोल्यां तौ जांणै जित्ता फोड़ा पड़्या । नेठाव सूं रोटी ई गळै नीं उतरी । लोगां जंतराय जंतराय हाडका खोळा कर न्हाकिया । पण अेकर नटियां साच नीं बोल्यौ सौ नीं इज बोल्यौ ।

दिसावर में इण भांत बरगत व्है जद इज तौ साहूकार

पीढ़ियां री ठायौ छोड़ता हिचकै कोनीं । वौ तौ चार घड़ी रात थकां मिंदर, भगवांन अर पुजारी नै लारै आपरै मतै छोड़, आयौ उणी मारग पाछौ ढळ्यौ ।

आपरै गांव आय हाथां सोना रौ छतर गाळ लांठौ ढेपौ वणायौ । खेतां जाय हीरा-मोत्यां रौ कळस ऊंडौ खाडा-वूच करनै वांटका रौ निसांण सावळ पिछांण, पाधरौ सुनार रै घरै पूगौ । सोना रैं डेपा सूं उणनै धंधा परवांण पांती देय आपरै वास्तै सांकळियां, तुगलां, लांठौ डोरौ, मोटौ फूल, जाडी माठियां अर सतलड़ी सांकळ वणवाई । तठा उपरांत दरजी रै पाखती जाय अमीर-उमरावां वाळा उम्दा गाभा वणवाया । पांच हजार रिपिया देय ठिकांणा सूं टाळकौ घोड़ौ वपरायौ ।

माया री तौ लीला ई न्यारी । पैला तौ थोड़ा-घणा ई वेम में लोग पूछता के वौ धन कठा सूं लायौ ? लोग आछी तरै जांणता के वौ मरयां ई साच नीं वोलै तौ ई साच वोलावण सारू धरेळ धरेळ हाडका भांग्यां विना नीं मांनता । अर आज जद पूछतां पांण साच वोलण सारू त्यार है तौ उणनै कोई आ वात नीं पूछी के वौ इत्तौ सोनौ कठा सूं लायौ । सोना जैड़ौ पळकौ तौ सूरज रौ ई कोनीं । इत्ती माया चोरी सूं कद भेळी व्है ? अवस कोई लांठौ विणज के फाटकौ करयौ दीसै ।

थोड़ा दिन सुस्ताय वौ तौ पवनगत घोड़ा माथै रांगां भींच, हाथ में सोना री कांमड़ी लेय वळै दिसावर रै मारग ढळ्यौ । वड़गड़ां वड़गड़ां घोड़ा री इण सवारी माथै भांय पार

व्हैतां कांई जेज लागै। दूजै दिन ई लांठो नगर में आय डेरा दीन्हा। बाग में घोड़ौ बांध थोड़ी ताळ बिसाई खाई। ढळती छींयां पाधरौ मायापत सेठ री हवेली पूगौ। फोरी-पतळी ठौड़ कांई हाथ घालणौ। लांठौ धड़बौ तौ लांठां रै घरै ई हाथ लागै।

सेठ तौ सदिये-सदिये जीम-जूठ पाछा नोहरै आयग्या। दम ऊठणा सूं थोड़ाक आडा व्हिया ई हा के किणी रौ असेंधौ खेंखारौ सुण पूछ्यौ — कुण व्है ई ?

'औ तौ म्हैं चोर हूं।'

सेठ तौ चोर रौ नांव सुणतां ई झिझकनै बैठा व्हिया। दम रै उठाव सूं हाकौ ई नीं कर सक्या। पण चोर रौ गसकौ देखतां ई वांरौ जीव तुरंत ठांणै आयग्यौ। पैरण सारू इत्तौ गैणौ तौ वांरै ई पाखती कोनीं। सोना रीं आ कांमड़ी तौ वळै इदकाई में। मुळकता थका बोल्या — भला आदमियां, चोर रौ नांव लेय म्हनै बिरथा क्यूं डरायौ ? चोरां रीः तौ छींयां ई छांनी नीं रैवै। म्हनै कांई थें इत्तौ भोळौ जांण्यौ ? सांस रै समचै पिछांण लूं के कुण चोर अर कुण साहूकार ?

चोर मुळकनै बोल्यौ — जद तौ सेठां थांरी परख साव खोटी। म्हैं तौ बध बधनै कैवूं के म्हैं चोर हूं अर थांरी हवेली चोरी करण सारू आयौ। नीं मांनौ तौ आपरी मरजी। अबै थें बतावौ, थांरी जांण में म्हैं कुण हूं ?

सेठ उणरौ हाथ खांचता कैवण लागा — अठै म्हारै जोड़ै बिराजौ। देखण रौ कांम तौ पैली वार ई पड़्यौ। पण नांव इत्तौ सुण्योड़ौ है के देखतां ई पिछांण लिया। निजर कीं मोळी

पड़ी, इण सूं इत्ती जेज लागी । आप किणी वात रौ ख्याल मत करज्यो ।

पछै सेठ उणरौ सावळ उणियारौ जोयौ । अैड़ा निगोट नोना रै हाथ लगावण री कांई जरूरत, देख्यां ई सुभट पतौ पड़ै । मुळकता थका बोल्या — आप हौ उजीण रा खांतीला जंवरी । भलां म्हारै माथै अैड़ी कांई खीझ के इण पेढ़ी मूंडौ ई नीं करचौ । पण आज मया करी सौ ई मोकळी । वैड़ा वेड़ा अमोलक हीरा-मोती, मांणक-पन्ना अर लालां बतावूंला के आप ई याद राखोला । सेसनाग री असली पांच मणियां म्हारै टाळ आखा मुलक में कठै ई नीं लाधै ।

पछै वौ मायापत सेठ उजीण रा उण खांतीला जंवरी नै उणरै ना देतां देतां माडै हाथ खांचतौ खांचतौ निसंक आपरी हवेली लेयग्यौ । तीनूं तिजोरचां खोल पीळजोत रै चांनणै नीं नीं व्है जैड़ा अमोलक जवाहरात बताय कैवण लागौ — अबारूं तौ फगत निजर वारै काढ़ लिरावौ, तड़कै सूरज रै चांनणै सावळ पिछांण व्है जावैला । म्हनै मोल बतावण री ई जरूरत कोनीं । आप अंगोछा में बांध, जकौ नांणौ भिलाय दिरावौला म्हनै वौ ई कबूल । म्हारा सूं वत्ती तौ 'आप आंरी कीमत पिछांणौ । सूरज नै दीवा रै चांनणा री कांई छिग बतावूं ! म्हनै लागै के पूजती नांणौ पाखती नीं होवणा सूं आप संकौ राखौ । म्हैं अैड़ौ मळीच कोनीं । पण जैड़ौ मिनख व्है उण साथै वैड़ौ वरताव तौ करणौ ई पड़ै । छ महीना सूं रकम पूगती कर दिरावसी । आपरी दाय पड़ै जित्ता नगीना ले पधारौ ।

चोर कह्यौ — नगीना तौ दाय पड़ै जका ई ले जावूंला

अर दाय नीं पड़ै जका ई ले जावूंला । लारै अेक ई नीं छोडूं । इण खातर आपनै इत्ती भुळावण देवण री जरूरत कोनीं । म्हनै सोध्यां दोरा लाधता, सौ आप चलायनै बताय दिया । इण खातर अवस आपरौ गुण मांनूंला ।

सेठ मुळकनै कह्यौ — इत्ता बरस फगत कांनां ई कांनां सुणतौ हौ के आपरौ थोड़ौ-घणौ कोगतियौ सुभाव । पण आज परतख देख्यां सावळ ठा पड़ी के सुणी सौ बात झूठी कोनीं ।

सेठ घणा थोरा करचा तौ वौ उजीण रौ जंवरी उठै ई सूयग्यौ । बत्तीस तेवड़ करनै चांदी रै थाळ में हाथां जीमाया । अर जंवरी आपरै हिसाब सूं चांदी रै बाजोट, सोना री बाटकियां रै ठाया रौ पतौ लगावतौ गियौ । खुद सेठ घणा ई वैगा ऊठता, पण जंवरी वांरा सूं दो घड़ी पैला ऊठ बाग में वंधिया घोड़ा माथै वैठ रांग दाबी । सेठ हेलौ पाड़ ढोलिया रै पाखती जाय देखै तौ ढोल्यौ खाली । दो तोन हेला वळै पाड़चा, पण जबाब में फगत घोड़ा री टापां सुणीजी । सेठ आ सोचनै जंवरी री बाट जोवता रह्या के जंगळ गियां अवारूं पाछा आय जावैला । अर जंवरी तौ पाछौ आयौ न कोई गियौ । तड़कै सूरज री उगाळी सेठां रा करम फूटणा हा जकौ फूटग्या । अध-बावळौ सेठ राज-दरबार जाय भूंडै ढाळै कूक्यौ । पण सगळी बात सुण्यां राजा वार चढ़ण सारू सुभट नटग्या । सांम्ही सेठ रौ माजनौ पाड़चौ के बापड़ौ चोर घड़ी घड़ी साची बात कही तौ ई वांनै भरोसौ क्यूं नीं व्हियौ । अैड़ा सचवाया चोर नै तौ कीं न कीं बग-सीस मिळणी चाहीजै । आ बात सुण सेठ रौ तौ जीव उप-

ड्यो । ओटाळ चोर तौ सोना रा नांव माथै लारै तुस ई नीं छोड्यो ।

उठी माया गियां सेठां रा भूंडा हवाल हा अर अठी माया हाथै लाग्यां चोर रा भूंडा हवाल हा । सगळी माया नै अेकठ कर घड़ी घड़ी सोचतौ के इत्ती माया रौ 'वौ कांई करै ? धोबां धोबां रात दिन खरचै तौ ई आ कद खूटै ! अर मिनख रौ अैड़ौ खरचौ ई कांई ? रैवण सारू ठावकी तिमंजली हवेली भुकाय ली । जरूरत परवांण खासौ धीणौ-वापौ ई वपराय लियौ । तबेला में पांच-सातेक टाळकी घोड़ियां ई बाधी ही । घर में गाभा-लत्ता, बरतन-बासण अर बिछावणा ई उवरता पड़्या हा । आंणै-टांणै सुख-दुख में गरीब-गुरवां री मदत ई खासी करतौ । हवेली आयौ जिण नै हाथ सूं उत्तर दियौ, मूंडा सूं नीं । धरमसाळ अर प्याऊ रा नांव माथै खासौ-भलौ धरमादौ ई काढ़्यौ । पण आपरौ कदीमी धंधौ छोड दूजा धंधा सारू अंगै ई मन नीं डुळायौ । भलां इण धंधा री होड़ व्है ! पैला तौ सावळ लकब ई नीं आई । जद तौ फगत हाडका ई हाडका भंगाया । दोनूं टंक पेट भरणौ ई दूभर हौ । रोट्यां रा ई जांदा पड़ता । अवै ई धंधौ तौ वौ ई सागै, पण लोग कित्तौ कुरब-कायदौ राखै । अछन-अछन करै । कोई पूछणियौ कोनीं के इत्ती माया कीकर भेळी व्ही ? कठा सूं लायौ ? अवै सावळ ठा पड़ी के चोरी-धाड़ा में कीं जुलम नीं । आं नै कुण भूंडा कवै ? फगत गरीबी सबसूं लांठौ अकरम ! फगत गरीबी सब सूं लांठौ जुलम ! इण माया री तौ लीला ई न्यारी । इणरा

छतर तळै सै अकरम, सै पाप अर सै अन्याव दटै ।

अबै तौ राज रै खजांनै चोरी करै तौ मन में थोड़ौ-घणौ संतोख व्है । माया तौ घणी उबरती पड़ी । पण ठाली-निकमौ बैठ्यां कीकर सरै । हाथ रौ हुनर कीकर छोडीजै । पछै तौ वौ इज घोड़ौ, वौ इज बणाव अर वा इज सोना री कांमड़ी । राज-दरबार रै परकोटा रै मांय चड़तां ई सवार घोड़ौ ढाब पूछ्यौ — आप कुण हौ ? थकै कांई कांम पधारौ ?

तद वौ घोड़ा रै माथै बैठौ बैठौ ई जबाब दियौ — म्हैं चोर हूं अर थकै राज रै खजांनै चोरी करण सारू जावूं । थांरी जोरावरी व्है जकी करलौ ।

सवार तौ उणरौ चास-वास देखतां ई पिछांण करली । इण वास्तै आव-आदर सूं बतळाया । चोर रौ अैड़ौ गसकौ तौ सुण्यौ ई नीं । चोर व्हैतौ तौ लुकतौ लुकतौ नीं आवतौ । अै तौ घोड़ा सूं ई हेटै नीं उतर्‌या । अैड़ौ राजसी भेख ! इत्तौ अमोलक गैणौ-गांठौ ! अैड़ौ टाळकौ घोड़ौ ! अवस किणी राज रा राजाजी है । हाथ जोड़ अरज कीवी — अंदाता, आपरै सांम्ही म्हांरो कांई जोरावरी चालै । कीं हुकम व्है तौ फरमावौ ।

परकोटा रै मांय गियां सिरै पोळ आई । सवार लुळनै खम्मा घणी करी । वौ थकै बधग्यौ । सातवीं पोळ आकरौ पोरौ हौ । हाथ जोड़ कह्यौ — राजाजी नै अरज कर्‌यां बिना अठा सूं थकै पधारणौ नीं व्है सकै । आप स्री मुख सूं कीं फरमावौ तौ म्है जाय अरज करां । आप कुण हौ ? अर अठै कांई कांम पधार्‌या ?

चोर उणी भांत घोड़ा माथै बैठौ बैठौ ई जोर सूं कह्यौ— म्हैं चोर हूं अर राज रै खजांनै चोरी करण सारू जावूं । थांरी अर राजाजी री जोरावरी व्है जकौ करलौ । मन में मत राखजौ ।

आ वात सुणतां ई सवार मनाग्यांना डरचा के वांरै पूछणा सूं ई कदास इण भांत खीझ करी । नवा दीवांणजी री सुणता, जका अै इज व्हैला । वाकी अैड़ा ठाट किणरा व्है सकै ! खुणियां सूदा हाथ जोड़ बोल्या — भूल व्हैगी, अंदाता माफी वगसावै । भलां, किणरी मां अजमौ खायौ सौ आपनै पालै ।

चोर मुळकनै धकै वधग्यौ । सवार ई समझग्या के नवा दीवांणजी माफी वगसाय दी ।

पछै तौ वौ सीधौ खजांना रै पाखती जायनै ई घोड़ौ ढाव्यौ । खजांची घोड़ा री टापां सुण वारै आयौ । हाथ जोड़ वोल्यौ— अंदाता नै सावळ ओळखिया कोनीं ।

चोर कह्यौ — विना देख्यां ओळखण री रीत ई कठै ! म्हैं चोर हूं अर खजांना री चोरी करण सारू आयौ ।

आ वात सुणतां ई खजांची तुरंत समझग्यौ के अै तौ नवा दीवांणजी । म्हारी अर खजांना री जाच करण सारू पधारचा । नीं ओळखण री वात करणा सूं रीस आयगी । इण खातर डोढ़ में वोलै । अवै आ चाकरी तौ जांणी । धूजतौ-धूजतौ वोल्यौ — अंदाता, आंधौ अर अजांण विरौवर व्है । अर म्हारा ढळता दिन है, निजर ई कीं मोळी पड़गी ।

आ वात कैय खजांची कड़ियां वाधी कूंची खोल नवा-दीवांणजी रै धकै करी । चोर री तौ मनजांणी व्ही । कूंची

लेय मांय वड़ग्यौ । खजांची हाब-गाब व्हियोड़ौ बारै ई ऊभौ रह्यौ । चोर रै पाखतो अबै माया री तौ कमी ही कोनीं। फगत राज रै खजांनै चोरी रौ नांमून करणौ हौ; जकौ टाळनै पांच मोती खूंजिया तालकै करया अर कूंची पाछी खजांची नै संभळाय दी ।

पाछौ जावतां उणनै कुण ई नीं वकारियौ । परकोटा रै बारै निकळतां ई हत्थाछूट घोड़ौ बड़गड़ायौ । राज रा सवार घोड़ां री उड़ती खेह देखता रह्या ।

चेतौ लगायां पैली खजांची अेकर वळै खजांनौ संभाळियौ। पांच मोती कम निकळ्या । गिणणा में भूल व्हैगी दीसै। वळै दूजी वळा गिणिया । तीजी वळा गिणिया । पांच मोती कम हा सौः कीकर भूल सुधरती। अरे, वौ तौ साचांणी चोर हौ। रांम-जांणै राजाजी कांई डंड देवैला । हाकौ करण रौ मतौ करयौ ई हौ के मन में अेक अकल री बात उपजी । सोच्यौ चोरी रौ नांव तौ व्हैगौ। बजौ आंणौ है तौ सगळौ चोर माथै ई आवैला । चोरां रौ कुण विस्वास करै ? वैड़ा रा वैड़ा टाळका पांच मोती आपरी अंटी में खसोल लिया । मोत्यां रौ सावळ जाब्तौ व्हियां जोर सूं कूक्यौ—चोर...चोर...चोर...!

राज दरबार री परघै तौ अैड़ी बातां री उडीक में ई व्है । सुणतां ई दड़बड़ दड़बड़ कांनी कांनी सूं न्हाटी । खजांना रै पाखती हाकाहाक माची पण माची । सगळा भेळा होय राजाजी रै पाखती गिया । खजांची सगळी बात सुणाय रोवतौ रोवतौ बोल्यौ—अंदाता, जे चोर अैड़ौ अमीरी भेख ठसाय राज रै खजांनै धौळै बेफार घोड़ा माथै इण भांत अड़ीखंभ आवण लागै

तौ खुद भगवांन ई रुखाळी नीं कर सकै । म्हांरी तौ जिनांत ई कांई ।

सगळा सवार खजांची री साख भरी । पछै हाथ जोड़ अरज कीवी — अंदाता, अबै आ चाकरी म्हांरा सूं नीं व्है । अैड़ा मोटा मानवी चोरी करण लागग्या तौ रुखाळी रौ जिम्मौ कुण ले । अर वळै दाछंट कैवतां धकै वधै के चोर हां, राज रै खजांना री चोरी करण सारू जावां । जोरावरी व्है सौ कर लीजौ । अंदाता, चोरी रौ औ तौ साव नवौ ई धारौ । अैड़ा धींग नै कुण पकड़ै । अर पकड़ियां वौ कद धारै ! चोर तौ फगत गरीब व्है । अैड़ा धींग नै चोरी करियां ई कुण चोर कैवै । अंदाता, मोटा धाड़ा करै जका तौ राजाजी बाजै, वांनै धाड़वी कुण कैवै ? धाड़वी कैवै जिण रौ माथौ नीं वाढ़लां !

वे राजाजी तौ फगत गादी रा धणी हा । राज-काज अर न्याव-अन्याव रै अफाळां में घणा समझता कोनीं । गोघू री गळाई, बोलतौ जिणरी बात ई बोला बोला सुणता रैवता पण पाछौ सोरै-सास कीं जबाव उकलतौ कोनीं । राज-काज रौ सगळौ कांम रांणी ई संभाळती । रांणी अणूंती चात्रंग । ध्यांन सूं आखी बात सुण्यां बोली — म्हैं थां लोगां रौ अंगै ई कसूर नीं मांनूं । थांरी ठौड़ दीवांणजी व्हैता तौ ई उण चोर माथै अभरोसौ नीं करता । पण व्हैगी जकौ तौ व्हैगी । औ चोर नीं पकड़ीजियौ तौ पछै राज रौ आंकस कुण मांनैला ? चोर रौ वडापणौ के सगळौ खजांनौ हाथ लाग्यां ई फगत दस मोती लेग्यौ । दस लेग्यौ ज्यूं ई सगळा ले जावतौ । उण वेळा उणनै पालणियौ हौ ई कुण ! पण अबै तौ सात पंयाळां ई

उणनै पकड़णी पड़सी । औ राज रै खजांना री इज्जत रौ सवाल है ।

रांणी रौ इत्तौ कैवणौ व्हियौ अर कांनी - कांनी सवार न्हाटा । घोड़ा रा खोज दाबणिया सवार तौ खोजां - खोजां पाधरा उणरी हवेली पूगा । राज रै खजांना री चोरी करनै नेगम आपरी मेड़ी में सूतौ हौ । सवारां नै देखतां ईं आडौ खोल्यौ । देखतां ईं पिछांण लियौ के औ तौ कालै वाळौ ई सवार । पण मूंडा माथै डर री जात नीं । आ कांई बात ! पूछतां ईं लप चोरी रौ हूंकारौ भर लियौ । कह्यौ : भला मिनखां, इत्ता गोता क्यूं खाया ? म्हैं तौ पैला ई थांनै सुभट नीं कै दियौ के म्हैं चोर हूं अर राज रै खजांनै चो करण सारू जावूं ।

साथै चालण रौ कैतां ईं वौ निसंक उणी घोड़ा माथै सवार होय वहीर व्हैगौ । अैड़ौ चोर तौ सुण्यौ नीं कोई सांभळियौ !

राज - दरबार में पूगतां ईं हाकौ फूटग्यौ के चोर पकड़ीजग्यौ, चोर पकड़ीजग्यौ । रांणीजी रौ आदेस व्हैतां ईं दरबार लागौ । अैड़ा खांतीला चोर नै देखण सारू घणौ ई मांनखौ भेळौ व्हियौ । सब सूं आखीर में भोळा राजाजी आया । बोला बोला रांणी रै जोड़ै सिंघासण माथै विराजग्या । दरबार में थट लाग्योड़ा अणगिण मांनखा माथै निजर पड़ी तौ अेका-अेक वांनै अणूंतौ इचरज व्हियौ । रांणी रै मूंडा सांम्ही देख बोल्या — अेक चोर नै जोवण सारू इत्ता मिनख भेळा व्हिया ! म्हारै दरसणां सारू तौ कदै ई इण सूं चौथी पांती रा ई

मिनख भेळा नीं व्है । औ चोर तौ राजा वणै जैड़ौ है !

रांणी आंख री सांनी करी तौ राजाजी होठां आयोड़ा वोल पाछा गिटग्या । कदै ई चोर रै सांम्ही देख मुळकता अर कदै ई परधै रै सांम्ही देख मुळकता ।

रांणी पूरौ ध्यांन लगाय जोयौ के आखा दरबार में चोर री जोड़ री दूजौ रूपाळौ उणियारौ कोनीं । पकड़ीजियां पछै ई डर री जात नीं । रांणी नै हाल विस्वास नीं व्हियौ । वा अेकर वळै पूछ्यौ— साच वता, थनै सौ ई गुना माफ, थूं है कुण ?

घड़ी घड़ी अेक ई वात रौ जबाव देतां देतां चोर नै थोड़ी-सी भळकी आयगी । सोना री कांमड़ी नै हिलावतौ जोर सूं वाल्यौ—कित्ती वार वतावूं के म्हैं चोर हूं, चोर । सगळां नै सुभट वकार राज रै खजांनै चोरी करण सारू गियौ ।

रांणी पूछ्यौ — कित्ता मोती चोरया ?

चोर कह्यौ — पांच ।

रांणी खजांची रै सांम्ही देख पूछ्यौ—क्यूं , थें तौ वतावता के दस मोती चोरीजिया । पछै औ फरक क्यूं ?

खजांची हाथ जोड़ अरज कीवी— अंदाता , चोरां री कांई पत ! औ हळाहळ भूठ वोलै ।

चोर कह्यौ — म्हैं तौ ही जकी वात साच वताय दी । चोरी भलांई करूं पण म्हारै भूठ नीं वोलण री आखड़ी । थांरै साच-भूठ री थें जांणौ । म्हैं तौ छठा मोती रै हाथ ई नीं लगायौ ।

रांणी नै चोर री वात मायं पूरौ पतियारौ हौ । खजांची रौ उणियारौ देख उणरै मन री वात समभगी । आकरा सुर

में बोली — औ खजांची साव झूठ बोलै । दीवांणजी, चार सवार लेय पाधरा खजांची रै घरै जावौ। म्हैं बतावूं उण ठौड़ मोती संभाळौ ।

चोर रै पगां कित्तौक गाढ़ ! खजांची तुरंत हूंकारौ भर लियौ । घर सूं मोती लाय धूजतै हाथां दीवांणजी नै संभळाय दिया ।

दरबारियां रै इचरज रौ पार नीं रह्यौ । औ चोर तौ मोटा मोटा साहूकारां नै ई मात करै जैड़ौ। चोर रौ गरू वण्यौ जकौ महात्मा ई परधै रै बिचाळै बैठौ चेला री टणकाई देखी तौ उणनै गरू बणण रौ मोद व्हियौ । ऊभौ होय अंजसतौ अरज कीवी — अंदाता, औ म्हारौ चेलौ अर म्हैं इणरौ गरू । म्हैं ई इणनै झूठ नीं बोलण री आखड़ी दिराई । साचांणी, उण दिन म्हनै औ विस्वास नीं हौ के औ इण भांत आखड़ी री मरजादा निभावैला । चेला व्है तौ अैड़ा व्है !

गरू री आ बात सुण रांणी वत्ती राजी व्ही । दीवांणजी रै सांम्ही देख कह्यौ — इण सचवाया चोर माथै वत्तौ म्हैं जांणूं जित्ती राजो व्ही । अै पांचूं मोती इणनै बगसीस में दे दौ ।

पण चोर रांणी री आ बगसीस कबूल नीं करी । बोल्यौ: म्हैं बांमण कोनीं जकौ इण भांत बगसीस सारू हाथ पसारूं ।

थटाथट भरया राज-दरबार में औ नाकुछ चोर रांणी री बात नै इण भांत उथापैला, औ किणी नै सपना में ई वेरौ नीं हौ। सगळा जणा सुट्ट व्हियोड़ा ऊभा हा। रीस आयां रांणी री आंख्यां में सिध ई मीट गडाय नीं देख सकै। उणरी खीझ व्हियां बगसीस री ठौड़ सूळी रौ डंड मिळणा में कीं

ढोल नीं । अबूझ चोर नैं रांणी रै सुभाव री सावळ जाच कोनीं । थोड़ी ताळ वास्तै रांणी नैं रीस तौ अैड़ी आई के इणी पलक हुयमारां नै आदेस देय चोर रौ माथौ कलम करवाय दै । पण दूजै ई छिण मन री इण उफणती रीस नै दवाय माडै थोड़ी-सी मुळकी । बोली — म्हैं तौ पैला ई जांणती के इण ऊंधा माथा रा चोर रै मूंडै औ ई जवाब निकळैला ।

पछै दीवांण रै सांम्ही देख कैवण लागी — चोरी-जियोड़ा अै द ूं मोती चेली नीं लेवै तौ इणरा गरूजी नै दे दौ । अै ई तौ इणनै झूठ नीं बोलण री आखड़ी दिराई ।

साचांणी वौ चोर तौ साव इज ऊंधा माथा रौ । निसंक भाव सूं बोल्यौ — वै पांच मोती तौ म्हारी कमाई रा है । किण नै दूं अर किण नैं नीं दूं, वा म्हारी मरजी ।

अबकी दीवांणजी आपरी रीस माथै अंगै ई काबू नीं राख सक्या । दांत पीसता बोल्या — चंडाळ री जीभ घणी लांबी वधगी दीसै । रांणीजी री मया रौ बेजा फायदौ उठाय कणा-कलौ लिक लिक करै । चोरी अर सीनाजोरी तौ फगत इण में ई देखी । राज रै खजांना सूं चौड़ै-धाड़े चोरी करनै लेयग्यौ अर लाज वायरौ वध वधनै कैवै के वै मोती इणरी कमाई रा ।

चोर मुळकनै कह्यौ — दीवांणजी, विरथा खीझ क्यूं करौ । मिनख खाली मूठी लेय जलमै अर मरती वेळा खाली मूठी ई सिधावै । खुद रौ कैवण सारू तौ उणरौ डील ई उणरौ कोनीं । जिणरी जित्ती वस लागै वौ धरती री संपत नैं आपरै हाथ-वस् करै । कोई छोटौ चोर तौ कोई लांठौ चोर । लांठौ

चोर हमेसां आप सूं निबळा चोरां नै डंडै । म्हैं पूछूं के राज रै खजांनै अै मोती कठा सूं आया ? थूक्यां राजाजी रै गळा में ई थूक अर गरीब रै गळा में ई थूक । जिणरी जित्ती झड़प सजै उणरै उत्ती ई माया हाथ लागै । खाली हाथ झड़प कद व्है । धन, धरती अर तरवार री जोर व्है तौ झड़प वत्ती व्है ! बस, छोटा चोर अर लांठा चोर में इत्तौ इज फरक । म्हैं म्हारी बात ई ब्रतावूं । पैला म्हैं झूठ रै टाळ कीं नीं बोलतौ अर दुनियां ई उणनै झूठ मांनती । तद पेट भरण रा ई म्हारै फोड़ा पड़ता । अबै म्हैं निकेवळौ साच बोलूं, तौ ई दुनियां उणनै झूठ मांनै । साच मांनण री हीमत नीं व्है । पण दुनियां रा इण अडब धारा सूं म्हारै अणचीती माया हाथ लागी ।

चोर री बातां सुण आखौ मांनखौ ई अचूंभौ करयौ । रांणी रा मन माथै तौ जांणै कांमण इज व्हैगौ । अर राजाजी आपरै मन मतै उणी भांत हंसता-मुळकता रह्या ।

खजांची नै चौड़ै-आंम सौ जरवां री सजा मिळी । चोर रा गरू नै पांच मोती बगसीस में मिळ्या अर वौ राजी-राजी माथौ निंवाय वांनै कबूल करया । जे उण दिन रीस रै आपै इणनै चेलौ नीं मूंडतौ अर वौ इण भांत आखड़ी री मरजादा नीं निभावतौ तौ आज बगसीस री मया कीकर व्हैती ।

ऊंडोड़ी भाखसी सांकळां बंध्योड़ौ चोर आळोच में पड़्यौ हौ । इण अलायदी ठौड़ तौ छतै सूरज ई निपट अंधियारौ ! आं धींग अड़बियां रौ आज इत्तौ सारौ-बारौ के अै सूरज

रा उजास अर हवा में ई निवळां री पांती नीं राखै, जद संपत अर धरती री तौ आंरै खपतां छींयां कद भेटण दे ।

तरतर वत्तौ अंधराइजण लागौ । कदास सिझ्या रै उपरांत रात व्हैगी दीसै । अंधारौ, चारूं-मेर अगाढ़ अंधारौ । आज तौ अेक तारा री मुधरौ उजास ई उणरै पांती नीं आयौ । अणछक उण चोर री आंख्यां उण मसांण वाळी पींपळी रा पांन झत्राझत्र पळकण लागा । पूनम रौ चांद मथारै चढ़चोड़ौ हौ । जगमग जगमग करती अछेही चांदणी । सूंसाड़ करतौ बायरौ । पांन पांन रौ फर-फर संगीत । अर पांन पांन माथै नाचती छम-छम चांदणी । उण नजारा साटै दुनियां री समूळी संपत हाथ लागै तौ ई कांई कांम रौ । सांप्रत आंख्यां साम्ही परतख नाचता थकां ई वौ नजारौ कित्तौ अगम अर अगोचर हौ । दीसता थकां ई कीं नीं दीसणौ ! पांन पांन माथै झूम-झूम निरत करती चांदणी ! बायरा रै अलगोझा रा वै झीणा-झीणा सुर । आज इण अंधारा में उण नजारा रौ महातम सावळ समझ में आयौ ।

के अचांणचक आडौ खड़खड़ीजियौ । कीं मुधरौ चांनणौ निगै आयौ । अेक डावड़ी हाथ में दीवौ लियां पाखती आई । वा रांणी रै खास भरोसा री डावड़ी ही । बोली — आपनै रांणीजी बुलावै ।

चोर रै मूंडै मतै ई सवाल निकळियौ — क्यूं ?

डावड़ी मुळक नै दबावती बोली — मोत्यां री चोरी रौ न्याव निवेड़णौ है ज्यूं !

आ बात कैय वा दीवौ आंगणै धरयौ । चोर री सांकळां

खोळी न भाखसी में खणखणाटौ माचग्यौ । चोर बोलौ बोलौ डावड़ी रै साथै वहीर व्हैगौ । भंवारा सूं बारै निकळतां ई वौ ऊंचौ जोयौ । पछै अठी-उठी चारूं-मेर भाळचौ । तेरस रा चांद री धवळ चांदणी च्यारूं दिस अेक सरीसी छायोड़ी । उणरै भीणै घूंघटै ऊंघ में गरकाब अणगिण तारा । आधी पलकां उघड़ियोड़ी । मुधरौ मुधरौ ठाडौ बायरौ । जांणै ऊंघीजता तारां नै होठां ई होठां हालरियौ गावै । जे अंधारा री आ सजा नीं मिळती तौ कुदरत री आ अथाग, अछेही अमोलक संपत कीकर उणरै हाथै लागती । दुनियां में कुण अैड़ौ मायापत जंवरी जकौ गिगन रै आं अलेखूं हीरा-मोत्यां री परख कर सकै अर अेक ई हीरा रौ मोल चुका सकै ! पण वौ तौ आज कुदरत री इण समूळी माया रौ धणी बणग्यौ । कठै ई सांतौ लगावण री जरूरत नीं ।

डावड़ी रै लारै लारै धम-धम नाळ चढ़तौ वौ रांणी रा रंग-मैल में आयौ । च्यारूं खुणां सोना री पीलजोतां भुप्योड़ी । रांणी सिणगार में लड़ाभूम । अंतर-फुलेल री वभरोळां फूटै । चांदी रा बाजोट माथै सोना रौ थाळ । मांय सोना रै कचोळां बत्तीस तेवड़ । रंग-मैल रै मांय वड़तां ई डावड़ी सोना रै थाळ चंवर ढोळण लागी ।

रांणी कह्यौ—आज आपरी बातां सुण इत्ती राजी व्ही के किणी नै उणरौ लेखौ बतायां ई समझ में नीं आवै । आप जैड़ा सचवाया मिनख नै सजा देवणा सूं वत्तौ कीं अन्याव नीं । म्हारै थकां म्हैं इण राज में अैड़ौ अन्याव होवण दूं भलां ! पण आप तौ म्हारै दियोड़ी बगसीस ई कबूल नीं करी । जे

उण वेळा आपरा गरूजी वैं मोती नीं अंगेजता तौ म्हारौ पांणी उतर जातौ । आपरा गरूजी म्हारी लाज राख दी । चेला अेड़ा है तौ पछै गरूजो वेड़ा क्यूं नीं व्है ! म्हैं नीठ रीस नै दावी । पण अवै म्हारी किणी वात नै मत लोपज्यौ ? आप जैड़ौ सचवायी, समझवान अर नेक दीवांण मिळ जावै तौ राज करण री थोड़ौ-घणौ आणंद आवै ।

चोर कह्यौ—अेड़ा निरापेखी राजाजी थकां आप राज-काज रै कादा में कळौ ई क्यूं ? म्हैं तौ वांरी मुळक देखतौ ई समझग्यौ के वैड़ौ ऊजळौ मन तौ दुनियां रै किणी राजा रौ नीं व्है सकै। राजा रै अेड़ौ ऊजळौ निरापेखी मन व्हियां पोसावै ई कठै ? वांरी मुळक तौ म्हनै राज रै खजांना सूं ई वत्ती अमोलक लागी

रांणी मुळकनै कह्यौ—जद तौ थें दोनूं ई अेक माजना रा । वै आपरौ विड़द वखांणै अर आप वांरौ । किणी नै ई ठा कोनीं के सिंघासण माथै विराज्या राजाजी आपरै सांम्ही देख म्हारै कांन में कांई मंतर सुणायौ । सुणनै आप ई हंसौला । म्हैं सांनी सूं अबोला नीं राखती तौ रांम-जांणै वळै कांई अपळ-गपळ वोल काढ़ता । वै तौ आपनै ई राजा वणावणौ तेवड़ लियौ । वांरै वस री वात व्है तौ वै आपनै राजा थरपियां ई मांनै । म्हैं ई मांनूं के राज थपियां पछै ई राज-दरवार में इत्तौ मांनखौ भेळौ नीं व्हियौ । पण कोरी-मोरी भीड़ सूं कांई व्है । पण राजाजी तौ भीड़ देखतां ई अबूझ टावर री गळाई आपरौ ऊजळौ मन वारै दरसायौ ई । होळै सीक म्हारै कांन में कह्यौ के जद राजा सारू उण सूं चौथी पांती

री इत्ती भीड़ अेकठ नीं व्है तौ उणनैं सिंघासण कीकर छाजै । जिण खांतोला चोर नै देखण सारू इत्ता लोग अड़वड़ै तौ उणनैं ई राजा होवणौ चाहीजै । गाडी धांन री मूठी बांनगी । देख लियौ थांरै राजाजी रौ डोळ । अै तौ टाबर रै उनमांन ई भोळा अर निपट अबूझ ।

चोर कह्यौ — म्हैं आपरी आ बात अंगै ई नीं मांनूं । लांठा सूं लांठा चकवा राज रौ सिंघासण घणौ दूभर कोनीं, पण अैड़ा राजाजी तौ बिरळा ई लाधै । आपरा बड़भाग के आप आं राजाजी री रांणी हौ !

पछै सोना रा थाळ सांम्ही देख वौ इचरज करतौ पूछ्यौ : रात आधी ढळण आई अर हाल राजाजी थाळ नीं अरोग्यौ ।

तद डावड़ी मुळकती थकी बोली — औ थाळ तौ आपरै वास्तै सजायोड़ौ ।

चोर आखतौ होय इचरज भरया सुर में बोल्यौ — म्हारै तौ सोना रा थाळ में जीमण री तलाक लियोड़ी । पण तौ ई म्हारै वास्तै इण सरबरा री जरूरत कांई । देख्यां पछै ई विस्वास नीं व्है के अेक नाकुछ चोर रौ इत्तौ भाव-आदर ! म्हैं तौ हथाळी में लूखा टुकड़ा खायोड़ौ हूं, अैड़ौ जीमण म्हनैं पचै कोनीं । अर नीं आखी ऊमर धुरकारियोड़ा चोर रौ औ कुरब ई उणरै गळै उतरै । किणी चाकर रै हाथां भाखसी में दो टुकड़ा ई भेज दिरावता तौ म्हैं बत्तीस तेवड़ करनै मांनतौ ।

रांणी अणूंती चात्रंग ही । बिगड़तां बिगड़तां ई बात केवटली । बोली — हीरा रौ मोल तौ उणरी परख करणियौ जंवरी ई जांणै । बापड़ा सिलावटां वास्तै वौ कांकरा समांन । सुलखणा

मिनख री जाच व्हियां उणरौ गुणां परवांण आव-आदर नीं करणौ कित्ता अन्याय री वात । आप जैड़ौ नेक उणियारी म्हनै आखा राज में ई नीं मिळ्यौ । म्हैं इण राज री रांणी होय गुणी मिनख रै गुणां रौ जथाजोग आदर नीं करूं तौ म्हनै छाजै भलां ! इण डावड़ी नै पूछ लिरावौ म्हैं तौ अठा लग नेवड़ी हूं के देवझूलणी इग्यारस रै टांणै ठाकुरजी री झांकी काढ़ै ज्यूं म्हैं आपरी तड़कै ई झांकी निकाळूं ! सोनै री अंबाड़ी हाथी रै हौदै चंवरां रै फटकारां आपरो सवारी गळियां गळियां फेरूं ।

आ वात सुणतां ई चोर नै हंसी आयगी । चोर नै इण भांत हंसतौ देख रांणी विचाळै ई ढवगी ! हंसी ढवियां चोर कैवण लागौ—कदास म्हारी वात रौ आपनै पतियारौ व्है के नीं इण वास्तै गरूजी नै पूछ लिरावौ । सोनै री अंबाड़ी हाथी रै हौदै नीं चढ़ण री म्हारै तौ आखड़ी । म्हारा अंवळा भाग ! उण दिन कांई सोचनै अै चीजां तलाकी अर आज वांरौ ई संजोग सजियौ अर म्हैं नाकुछ चोर मूंडै-मूंड नटूं । फगत गरूजी सूं कोगत करण सारू नीं व्हैती वातां री वध वधनै आखड़ी ली । जे उण दिन सपनै ई म्हनै इण संजोग री थोड़ी-घणी जाच व्हैती तौ म्हैं मरयां ई आं आखड़ियां में नीं फंसतौ । पण अबै पिछतायां ई कांई सांधौ लागै । अबै तौ मरयां ई आखड़ी नीं खंडीजै । म्हैं माफी चावूं । गुणी मिनखां रै गुणां रौ जथाजोग आदर करण वाळौ औ गुण तौ फगत आप में ई देख्यौ । औ तौ इत्तौ मोटौ गुण के देवतावां में ई नीं लाधै । म्हारै सचवाया सुभाव रौ आप इत्तौ कुरब

करचौ, नुगरौ नीं हूं तौ मरचां उपरांत ई आपरौ औ गुण नीं भूलूं । चोरी तौ म्हारौ हुनर है पण म्हैं गुण-चोर नीं हूं ।

चोर री अै बातां सुण रांणी मन ई मन घणी राजी व्ही । रांणी डावड़ी रै मूंडा सांम्ही देख्यौ अर डावड़ी रांणी रै मूंडा सांम्ही ! रांणी री आंख्यां में हिवड़ा रौ हरख झवळतौ देख्यौ तौ वा रंग-मैल सूं रांणी रै बिना कह्यां मतै ई वहीर व्हैगी । अर रांणी आडौ ओडाळ चोर रै पाखती आय ऊभगी । उणरी आंख्यां में मीट गडाय बोली — चोर तौ इत्ता चात्रंग व्है के सूता मिनखां रै सपनां री ई छांण-वीण करलै अर थें अैड़ा अबूझ के म्हारै मन री वात तौ समझणी अळगी, होठां दरसायां पछै ई नीं समझ्या । म्हैं इत्ता वांना क्यूं करया, थांनै हाल उणरी थोड़ी-घणी सोय नीं व्ही । थें अबारूं आपरै मूंडै कबूल करचौ के राज गुण-चोर नीं हौ । इण सूं सिरै संजोग वळै कद आवैला । इण पिलंग नै अबै घणौ मत कळपावौ । कणाकलौ अपांरी वाट जोवै ।

मूंडा री आ बात संपूरण व्हियां पैली पैली रांणी चोर रौ हाथ झालियौ । अर सोना रा पिलंग सांम्ही वधण रौ मतौ करचौ । पण चोर नै अैड़ौ लखायौ जांणै कोई नागण कळाई रै पळेटौ दियौ । रूं रूं में सरणाटौ माचग्यौ । तणकारौ देय हाथ छुडायौ । बोल्यौ — हंसियां आप अणूंती खीझ करौला, इण वास्तै होठां आयोड़ी हंसी नै माडै ढावूं । पण साची वात कह्यां बिना आपनै, धीजौ नीं व्हैला । साचांणी, रांणी रै मांचै नीं चढ़ण री म्हारै आखड़ी ।

भिमरचोड़ी नागण आकरा सुर में बोली--मूरख, रांणियां

रै मांचा नीं व्है, सोना रा पिलंग व्है !

चोर पाछौ वेंड़ौ ई पडूत्तर दियौ — पण दोनां रौ मरम अेक ई है ।

रांणी रै काळजै जांणै तीर पार व्हैगौ । अबै इण भाटा नै कीकर समझावै । साचैलौ भाटौ व्हैतौ तौ ई समझ जातौ । अर औ मिनख होय भाटौ वणग्यौ । वळै कांई उपाव करै ? रांणी री देह रौ तौ जांणै अंस ई निकळग्यौ ।

रांणी में अेक गुण सबसूं मोटौ हौ के मिनख री अेक ई कमजोरी उण सूं अछांनी नीं ही । इण वास्तै कमजोरी नै वींधण सारू छेहलौ तीर छोडचौ । बोली — आपरै कह्या मुजब राजाजी मिनख नीं देवता है । तद अैड़ा देवां रौ धरती माथै राज नीं होय देवलोक में राज व्है तौ घणौ आछौ । वांनै देवलोक पुगावण रौ अर आपनै इण राज रै सिंघासण बिठावण री जिम्मौ म्हारौ । आपनै सिंघासण माथै बिराजण री तकलीफ तौ करणी ई पड़ैला, इण उपरांत दूजी कीं जोखम उठावण री जरूरत कोनीं । रांणी होय थारै पगां पडूं, म्हनै अबै तौ मत कळपाजौ ।

परतख सुणियां ई चोर नै अंगै ई इण बात माथै विस्वास नीं व्हियौ । भाखसी रै अंधारै नींद में सूतौ कठै ई सपनौ तौ नीं देखै : हथाळियां रै गुद्दां सूं आंख्यां मसळणा रै उपरांत अठी-उठी देख्यौ । साचांणी रांणी रौ रंग-मैल । च्यारूं खुणां सोना री पीलजोतां झुपै । सोना रौ पिलंग । अर रांणी दोनूं हाथां पग झाल्यां बैठी । चोर हळफळायौ होय झिझकनै पग छुडाया । रांणी री बांह झाल पिलंग माथै बैसांणी ।

बोल्यौ — देस री धणियांणी होय आप यूं कांई कालायां करौ। म्हैं मरचां ई झूठ नीं बोलूं। म्हारै तौ इण बात री ई आखड़ी के जीवूं जित्तै किणी राज री राजा नीं बणूं। करम-हीण रा करम इज अैड़ा व्है। खुद वेमाता ई कारी नीं लगा सकै।

देस री धणियांणी तौ आज दर दर री मंगती व्हैगी। डुसक्या भरती बोली — म्हारै हाथां नीं आपरै करमां कारी लागी अर नीं म्हारै करमां। म्हैं तौ म्हारै बस पूगां कीं खांमी नीं राखी। आप नीं मांन्या सौ म्हैं ई कांई करूं। आप मांन जाता तौ किणी री कीं भूल नीं ही। पण राज रै नीं मांन्यां तौ सगळौ कसूर म्हारौ। पण कोई पूछै तौ मरयां ई आज री रात रौ भेद परगट मत करज्यौ। म्हारी लाज फगत आपरै होठां।

चोर कह्यौ — पण म्हारा गरूजी ई तौ म्हनै झूठ नीं बोलण री आखड़ी दिराई। म्हैं तौ मरचां ई झूठ नीं बोलूं।

आ बात सुणतां ई भिमरचोड़ी रांणी भचकै बैठी व्ही। जांणै नागण रा फुण माथै पग पड़्यौ। डसण सारू अजेज पलटौ खायौ। औ साच परगट व्हियां तौ उणरा चरित माथै काळस पुत जावैला। जणा जणा री आंख्यां चांनणौ व्है जावैला। सिंघासण रै पायां तप लागै, अैड़ौ साच भलां कुण सहै, कीकर सहै! जोर सूं हाकौ करनै बोली — चोर... चोर...चोर... !

राज री परधै तौ अैड़ा हाकां-री ई उडीक में व्है। अर हाकौ ई रंग-मैल सूं। खुदोखुद रांणी रै मूंडै। हथमार

कांनी कांनी सूं नागी तरवारियां लेय ताचकिया । सेवट वाढ़ाळी रै झटकां कूड़ नीं बोलण री आखड़ी री इण विध चुकारौ व्हियौ ! सत्ता रा जोर आगै साच रौ जोर टिकनै कित्तीक टिकतौ ! रांणी रै देखतां देखतां वै सचवाया चोर रा टुकड़ा टुकड़ा कर न्हाकिया । साच - भूठ कीं बोलण रौ मौकौ ई नीं मिळ्यौ ।

आ बात तौ अठै ई संपूरण व्है जांणी ही, पण रांणी री तिरिया - चरित कीकर संपूरण होवण दै । वौ पग - पग माथै आडी आय बात नै तांणै । दूजै ई सूरज, दिन ढळ्यां पाछौ रात आई । लारली चांदणी रात सूं ई सवाई । वौ ई रंग - मैल । वौ ई सोना रौ थाळ । वा इज डावड़ी आधी ढळियां चेला रै गरू नै दीवा रै चांनणै उणी भांत रंग - मैल में लाई । गरू रै तौ अैड़ी आखड़ियां रौ कीं लफड़ौ ही कोनीं । वौ तौ रांणी कह्यौ ज्यूं ई लप मांनग्यौ । चेला विचै तौ चेला रौ गरू सदा ई वत्तौ व्है । रंग - मैल री वा लाखीणी रात ढळ्यां तड़कै वळै दिन ऊग्यौ । अर सुभ मौरत री मंगळीक घड़ी उण भेखधारी पूजवांण महातमा रौ राजगरू वास्तै खुद राजा रै हाथां तिलक व्हियौ । अर अठै ई बात नै हरख रै नगारां अर ढोल - ढमंकां रै डाकै घड़िग - घड़िग संपूरण होवणी चाहीजै । रगत में रळथळियोड़ी बात रूपाळी नीं लागै ।

जोग री बात

मोटी रातां रा मोटा ई तड़का । जूंनी बातां रा नवा ई खटका । अेक हौ करसौ । उणरै बेटा दो । मोवी रौ नांव दौलत अर छोटकिया रौ दाळद । तीन बरसां री लोड़-वडाई । पण अकल में छेती मोकळी । दौलत सियाळ अर कागला री गळाई चात्रंग अर डोढ़-हुंस्यार । दाळद कमेड़ी अर कबूड़ा रै उनमांन भोळौ-डाळौ अर निपट स्यांणौ । दौलत ठिगणौ अर धुगधुगौ । गवूं वरणौ । कायरी आंख्यां । फींडौ नाक । रूं-रूं सूं अकल चवै । दाळद पतळौ अर डीगौ । तांबा-वरणौ रंग । तीखौ नाक । भोळौ उणियारौ । भोळी आंख्यां । ऊजळौ निरापेखी अंतस । वडा भाई रौ अणूंतौ कुरब-कायदौ राखै । दोनां रै न्यारा न्यारा सुभावां रा न्यारा न्यारा ई फळ पाका । बावौ देवलोक व्हयौ जणा जमीं-जायदाद, वित्त-मवेसी अर थाळां-वाड़ां रा छुरी-छेक बंट करनै गियौ हौ । पण पांच बरस उपरांत ई दौलत सगळौ वींभौ अर जमीं-जायदाद होळै-होळै आपरै काबू करली । दाळद सगौ मां-जायौ भाई व्हैतां थकां ई वडा भाई रौ हाळीपौ करण लागौ । दाळद रै भूंपै तर-तर हलीलौ घटतौ गियौ तौ उणरै व्याव-सनमन सारू कोई राजी नीं व्हियौ । दौलत रौ गाजां-बाजां व्याव व्हियौ ।

जोग री बात के भौजाई भाई सूं ई डंयाळ। देवर सूं खोड़ी-लायां करणा में पाछ नीं राखती। उणरौ पगफेरौ व्हैतां ईं फोटा धुराधुर थेपणा ई उणरै गळै पड़ग्या। आधौआध पळावण रा दूध रै वदळै फगत खाटी छाछ ई दाळद रै पांती आवण लागी। आधी ढळियां सूवतौ। दो घड़ी रात थकां ऊठतौ। कांम री करीत। अणूंतौ खांमचौ। पण छळ-प्रपंच री बातां समझायां ई समझ नीं वैठती। दाळद में तर-तर फोड़ा पड़ता इज गिया। पण तौ ई वौ आपरा हाल में मस्त। किणी रै सिखायै नीं लागतौ।

अेकर तावड़ा री बळती लाय में दाळद दौलत रै खेतां भूळ काढ़तौ हौ। दिन ढळण आयौ तौ ई भौजाई भातौ लेयनै नीं आई। विसाई खावणी तौ अळगी दाळद तौ गांव रै मारग ऊंचौ मूंडौ करनै ई नीं भाळचौ। जोग री बात के उणी वेळा लिछमी अर भाग माहौमाह खसता मारग वेवै हा। लिछमी कैवै म्हैं वडी। अर भाग बध-बध भाखै के हूं बडौ। के अणछक खेत रै गळाकर नीसरतां दोनां री निजर भूळ काढ़ता दाळद माथै पड़ी। कड़ियां लुळियोड़ौ कस्सी रा झपीड़ उडावै। खंख अर परसेवा में तरबम्ब। लिछमी दाळद रै सांम्ही हाथ री सांनी करती बोली—देख लियौ म्हारौ परचौ। म्हारी कुमया व्हियां आ दुरगत व्है! अर म्हारी मया रै परताप इणरी वडौ भाई दौलत मौजां मांणै। मछरां करै। औ तौ घवूस री गळाई थुड़ै, आफळै। अर वौ मेड़ी में टांग माथै टांग देय सूतौ। घोर खांचै। सुहांणा सपना जोवै। पसवाड़ै वेटौ ऊंघै अर वेयर ऊभी वाव ढोळै।

तद भाग मुळकतौ थकौ बोल्यौ — बावळी, इण में थारौ कांईं परचौ । आ तौ म्हारी बडाई । बाबा रै मरयां थूं तौ आधौ-आध पांती आई । पण म्हारा आंक मोळा । इण खातर ई दाळद फोड़ा भुगतै । थारी कांईं बिसात के फूटा भाग रै कारी लगावै । जे अबै ई मन में व्है तौ पाछ मत राखजै ।

लिछमी रै काळजै जांणै स्यार रौ तबोड़ौ लागौ । बोली— घणौ गरब गळियां सरै ! उफणियां नीचै ढुळणौ पड़ै । म्हारी थारी कांईं होड़ । म्हारै तूठ्यां थारा सूं कीं खांगा नीं व्है अर रूठ्यां थूं कित्तौ ई खपै तौ कीं सांधौ नीं लागै । थूं ईं व्है जकी जोरावरी कर लीजै । म्हैं इणी कातीसरै दाळद रै झूंपै तूठूं । देखूं पछै औ किताक फोड़ा भुगतै ।

भाग पाछौ कीं विवाद नीं करयौ । मुळकनै माठ झाली । लिछमी नै उणरी आ मुळक आकरा बोलां सूं ई आंट लागी । दोनूं ई मनाग्यांना पाळौ अंगेज लियौ ।

उण कातीसरै घरवाळी रै सिखायां सिखायां दौलत वळै हुंस्यारी करी । दाळद रै हाळीपा पेटै बाजरी नीं देय फगत खेतां रा मतीरा अर काकड़ियां देवण रौ कौल करयौ । बेलां वळै के पसरै सौ उणरै भाग री । दाळद तौ कह्यौ ज्यूं ई मांन-ग्यौ । अर लिछमी नै तूठणौ हौ जकौ क्यूं पाछ राखती । मतीरा मतीरा अर काकड़ी काकड़ी में बीजां री ठौड़ हीरा-मोती ई भर न्होकिया । दाळद तीन झालां भरनै पाकोड़ा मतीरा अर उळियोड़ी काकड़ियां आपरै झूंपै लाय राळी । सोच्यौ के अेक ई बीज अैळौ नीं गमावणौ । बीजां रै पांण ई आखौ बरस काढ़णौ । मतीरा ई जाब्ता सूं बूरनै राखणा । काकड़ियां

सूं धकै जित्तै मतीरां नै अंगै ई नीं छेड़णा । काकड़ियां घणी टिकै कोनीं ।

कड़कड़ाट करती भूख लाग्योड़ी ही । दातळा सूं अेक काकड़ी चीरी । उणरै अभाग री रांम-जांणै कठै माठ छूटैला ! बीजां री ठौड़ पळकता गिळगिचिया । अेक ई सांचै ढळयोड़ा । अैड़ी ऊंधी वातां तौ सुणी नीं कोई सांभळी । उणनै दुख बिचै ई अचूंभी वत्तौ व्हियौ । अेक मतीरौ फोड़यौ । उण में वैड़ा रा वैड़ा गिळगिचिया । वळै दो अेक मतीरा फोड़्या, तीनेक काकड़ियां चीरी । सगळां में वा इज वात । वत्तौ पोखाळौ करणा में कीं सार नीं । गिर सूं पेट भरनै गिळगिचिया भखारी में फेंक दिया । भाई-भौजाई सूं डरतौ वौ तौ इण अजोगती वात री चरचा ई नीं करी । वत्तौ खिखरां करैला ।

दौलत उणी भांत मछरां करतौ रह्यौ । अर दाळद लिछमी रै तूठ्यां उपरांत उणी भांत थुड़तौ रह्यौ । फोड़ा भुगततौ रह्यौ । वा ई टूटोड़ी छांन । वौ ई टूटोड़ौ आंगणौ । लेवड़ा उतरयोड़ी वा ई भखारी । भाग लिछमी रै उणियारा सांम्ही देखै अर मुळकै ई मुळकै । उणरी मुळक रै समचै लिछमी रै काळजै धपळका ऊठता । उणरै तूठ्यां तौ वौ मूरख वत्तौ दुखी व्हैगौ । बीजां री ई सोच करै, हीरा-मोत्यां री तौ अंगै ई पिछांण नीं । वांनै गिळगिचिया मांनण वाळो समझ रौ तौ कुण कांई करै ! हीरा-मोत्यां रौ मोल कूंतण री समझ ई सब सूं मोटी वात वणगी ।

आधी-दूधी भूख काढ़ दाळद नीठ आपरा दिन तोड़तौ हो । मतीरां री गिर रौ कित्तौक गाढ़ । पांणी सस्तै पांणी ।

बीजां नै सावळ अंवेर सेकनै खावण री तौ मन में ई रैगी ।
अेक दिन जोग री बात अैड़ी बणी के लक्खी विणजारौ दाळद
री छांन रै पाखती डेरौ दियौ । र ई बाळद ढावी । व्याळू
करनै रात रा वंतळ करण सारू दाळद रै झूंपै आयौ । काळी-
बोळी अंधारी रात । निरभागी दाळद री छांन में दीवौ ई
नीं । लक्खी विणजारौ अठी-उठी जोयौ तौ उणनै भखारी रै
मांय चांनणौ ज्यूं लखायौ । अणछक पूछयौ—उठै कीं न कीं
सिळगै दीसै ! औ कैड़ौ चांनणौ ?

दाळद कह्यौ—अठै सिळगण नै है ई कांई ? औ तौ
गिळगिचियां रौ चांनणौ ! रात रा इणी भांत दीप-दीप करै।

लक्खो विणजारौ इचरज भरया सुर में बोल्यौ—अै कैड़ा
गिळगिचिया, ज्यांरौ अैड़ौ चांनणौ व्है ?

इण बात रै समचै ई भखारी कांनो ताचकियौ । चांनणा
माथै निजर पड़तां ई समझग्यौ के औ मूरख हीरा-मोत्यां नै
गिळगिचिया ई जांणै । हथाळी में लिया तौ हथाळी ममोल्यां रै
उनमांन लाल-बंब व्हैगी । अैड़ा अमोलक मोती इणरै हाथ
लागा तौ लागा ई कीकर ? लक्खो बिणजारा री आंख्यां अर
अकल दोनूं चूंवीजगी । अैड़ौ अेक ई मोती सात-पीढ़ी रौ
दाळिद्दर बुहार दे ? इणरी भखारी में कांकरां सस्तै पड़्या !
साचांणी, आंरौ मोल नीं जांण्यां तौ कांकरां सस्तै कांकरां ई है ।

दाळद नै बात पूछी तौ कीं चोज नीं राख्यौ । आपरै
करमां नै भांडतौ मतीरा अर काकड़ियां चीरनै बताया । कैवण
लागौ—देखौ म्हारा माड़ा भाग ! बीज निकळता तौ खावण
रा ई लावा लेवतौ । अै गिळगिचिया नीं तौ खाईजै अर नीं

गिटीजै ।

लक्खी विणजारौ तौ वां गिळगिचियां रौ साचौ मोल जांणतौ हौ । दाळद नै पोटावणा में कीं जोर पड़्यौ नीं । जवार री सौ गूंणतियां साटै काढ़्योड़ा सगळा गिळगिचिया, वच्योड़ा मतीरा अर सगळी काकड़ियां लक्खी विणजारा नै राजो-राजी संभळाय दी । आ जवार तौ दो वरस ई खाई नीं खूटै । कवूड़ां रै ई निसैवार धापा व्है जावैला । भाग संवळा व्है जद यूं व्है । वौ तौ सांम्ही विणजारा रौ जांणै जित्तौ गुण मांन्यौ अर उण सूं ई वत्तौ राजी व्हियौ ।

विणजारौ तौ पछै उठै ढवियौ ई नीं । दो घड़ी रात थकां वाळद लेय आपरै मारग ढळ्यौ । उणरै हीयै खुसी मावती नीं ही । पण थोड़ौ सौ किरकिराटौ हौ । उण देस रौ राजा अदल न्यायी हौ । इण सौदा री सुंरपुर ई सुणली तौ पीढ़ियां री कमाई तक खोस लेवैला । माफी वगसणा में तौ समझै ई नीं । राजा रै न्याव री घल लक्खी विणजारा रै हीयै नीं माई सौ नीं माई । पांणी पैला पाळ बांधै सौ मिनख सम-वांन । वौ तौ वाळद लेय पाधरौ राजाजी रै पाखती पूगौ । चांदी रौ थाळ मोत्यां सूं भरनै निजरांणै कर्‌यौ ।

मिनख री इंछा परवांण ई सगळा मंसोवा पार पड़ जावै तौ आज पैली कदै ई सुरग रै पावड़िया लाग जाता । राजाजी रै पाखती ई राजकंवरी वैठी ही । राजाजी पैला तौ अमोलक निजरांणौ देख जांणै जित्ता राजी व्हिया, पण राजकंवरी रै लिलाड़ में सळ देखतां ई वांनै तुरंत भळकी आयगी । राज-कंवरी कीं वोलणौ चावती ही, उण सूं ई पैला राजाजी खीझ

परगट करता बोल्या — साच वता, इण अणचींता निजरांणा रौ म्यांनौ कांई ? म्हनै कांई साव ई भोळौ समझ राख्यौ ? इण निजरांणा रै पळकै थूं किसौ काळस ढकणी चावै ? अंवस कीं न कीं लांठो अकरम करयौ दीसै । अबै ई पूछ्यां साची वात वताय दी तौ सौ ई गुना माफ है, नींतर जीवता नै आली पायां में सिळगावूंला, सोच लीजै ।

विणजारौ धग-धग धूजण लागौ । सगळा मोती खिंड-ग्या । झगण करती रौ थाळ हाथां सूं छूटग्यौ । चलायनै सिर री थै आयौ । औ नतीजौ तौ व्हैणौ ई हौ । माडै साच उलाकणौ पड़्यौ ।

सगळी वात सुण्यां राजकंवरी तौ आक-वाक व्हैगी । कांई अैड़ा अमोलक हीरा-मोत्यां नै ई गिळगिचियां रै उनमांन नाकुछ समझणिया मिनख ई इण धरती माथै वसै ! सुण्यां ई विस्वास नीं व्है जैड़ी वात । राजाजी रै पाखती आय बोली : आप खीझ करी सो ई मोकळो । अबै विणजारा नै माफी वगसावौ । निजरांणा रौ औ संजोग नीं सजतौ तौ म्हैं भलां परणीजण री वात कद मांनती ! म्हारौ औ इज खण के परणी-जूंला तौ इण दाळद नांव रा मोत्यार ई नै, नींतर अकन-कंवारी जूंण पूरी करूंला ।

वेटी रा वाद आगै वाप रौ कीं पसवाड़ौ ई नीं फिरयौ । विणजारा रै हाथां ई सावौ भेज्यौ । दाळद वाळा सगळा गिळ-गिचिया राजाजी आपरै हांनै करया । अेक ई लारै नीं छोड्यौ ।

लक्खी विणजारौ दाळद सारू राजकंवरी रौ सावौ लायौ तौ गांव रौ सगळौ मांनखौ चकन-वकन व्हैगौ । दौलत अर

उणरी घरवाळी घणी ई आडी दी, उणरी कुरा कीवी अर जांणै जित्तौ भांड्यौ, पण राजाजी रै आदेस उपरांत लक्खी बिण-जारौ आपरै मतै मांनतौ इज कीकर । तद दौलत नै ई माठ झेलणी पड़ी । पण दाळद घणौ दोरौ मांन्यौ । कैवण लागौ— कीं न कीं कावळ कांम करयां राजाजी चावै तौ मन माडै डंड दे सकै, पण व्याव माडांणी कीकर करा सकै ! म्हैं पर-णीजूं के नीं परणीजूं, आ तौ म्हारी इंछा री बात । राजकंवरी है तौ सेवट लुगाई । भौजाई री गळाई निवड़गी तौ म्हारै अेक घड़ी ई नीं थकै । म्हनै तौ आ जोखम नीं झेलणी ।

आज पैली दाळद रै बोलणा रौ कांम ई नीं पड़्यौ हौ । बोलौ-बोलौ गुमधांम बडा भाई री हाजरी साजतौ रह्यौ । सुख-दुख री लिगार ई नीं करतौ । भाटा रै जीव री ठा पड़ै तौ दाळद रै मन री ई ठा पड़ती । आज मौकौ मिळयां उणरी जीभ तौ राजाजी री ई आंकस नीं मांनै ।

लक्खी बिणजारौ सेवट कायौ होय कह्यौ— औ सावौ कबूल नीं करयां राजाजी भींत में चुणाय दिरावैला ! अबै आपरौ भली-भूंडी आप जांणौ ।

लक्खी बिणजारा रै मूंडै जीकारा रा बोल सुण दाळद नै थोड़ी हंसी आयगी । बोल्यौ— आज पैली तौ म्हनै सगळा ई रेकारौ देय बतळावता । राजाजी रौ सावौ आतां ई मतै ई लळाक लळाक जीकारा चालू व्हैगा । राजाजी रौ पखौ है तौ लांठौ । पण जायौ-जलमियौ मौत सूं किताक दिन डरैला ? भींत में चुणावणिया राजाजी तौ कदास मरैला ई नीं ! पछै खलकां नै मौत रौ कांई डर बतावै ।

दाळद री अै बातां सुण दौलत अणूंती डरचौ । औ जांण-मूळ तौ सगळी बस्ती नै बूडांणै मैल देवैला । अवै इण माथै ठौर ई कीकर जतावणी आवै । राजाजी रौ जंवाई वण्यां तौ औ मनजांणी करैला ई । सोनार री सौ ठक ठक अर लवार रौ अेक धमीड़ । दाळद नै हाथा-जोड़ी करी तौ सेवट वौ बडा भाई री वात मांनग्यौ । पण सोनै री अम्बाड़ी हाथी रै होदै वैठण सारू तौ वौ किणी भाव नीं मान्यौ । कैवण लागौ— हाथी माथै वैठौ आदमी तौ मींडका जित्तौक लागै । म्हारी जांण में इणरै माथै बैठतां ई तरवर, भाखर अर आभा री ऊंचाई घणी-घणी वध जाती व्हैला । धरती माथै पाळौ हालतौ मांनखौ कित्तौ जोरावर अर ऊंचौ लागै । भाटा री गळाई माथै वैठां-वैठां पैंडौ कटै, इण सूं वत्तो जूंजण वळै कांई व्है । पावंडै पावंडै धकै वधणा रौ तौ आणंद ई बीजौ । कोई राजी व्हौ चाहै बेराजी म्हैं चालूंला तौ पाळौ ई ।

अवै तौ रांम वेली है । इणरै जचै ज्यूं ई करण दौ । लक्खी विणजारा नै उणरै साथै माडै पाळौ वहीर व्हैणौ पड़चौ । चाल्यां तौ कीड़ी ई आपरी मजलां पूगै, पछै वै तौ मिनख रा डग हा । सेवट राज-दरबार पूगा ई । राजकंवरी, राजाजी अर आखी परघै अेक अेक छिण री उडीक में उतावळा वैठा हा । लक्खी-विणजारा रै साथै दाळद नै आतां देख्यौ तौ सगळां रै जीव में जीव आयौ ।

लक्खी विणजारी हाथी रै होदै नीं चढ़ण री अर पाळा हालण री वात बताई तौ राजकंवरी अणूंती राजी व्ही ।

खंख में भखभूर व्हिया दाळद नै डावड़ियां संपड़ावण

लागी तद वी वांनै पालतां कह्यौ — म्हैं आसंग - वायरौ अर मांदौ कोनीं, हाथां सींचनै सिनांन करूंला । डील सूं थुड़ियां विना म्हनै रंजत नीं व्है । डावड़ियां मूंडै - मूंड तौ कीं नीं कह्यौ, पण मन ई मन सोच्यौ के गिवार सौ गिवार ई ।

वींद रौ रेसमी वागौ पैरावण लागी तद डावड़ियां नै कह्यौ के वौ तौ हमेसां वाळा सादा वेस में ई व्याव करैला । जे वागा नूं ई व्याव रचाणौ हौ तौ उणनै क्यूं तेड़ायौ ? देह नै सिणगारियां मिनख रा गुण नीं सिणगारीजै ।

दूजी सगळी परधै तौ दाळद री बातां सुण - सुणनै मन ई मन भांडती, पण राजकंवरी बातां सुण - सुण अणूंती राजी व्हैती । राजकंवरी नै राजी देख राजा मतै ई राजी व्है जातौ ।

फेरां रै पैली डावड़ियां उणनै हीरा - मोती जड़्या सोना रै माळिये लेगी । अंतर - फुलेल री वभरोळ नाक में वड़तां ई दाळद री तौ माथौ चढ़ग्यौ । नाक में सळ घालनै बोल्यौ: अठै मरचोड़ी मिन्नी व्है ज्यूं कांई विधकै ?

डावड़ियां मुळक नै दबावती होळै - सीक बोली — वींदराजा सारू उजीण रै अन्तर रा ठौड़ - ठौड़ दीवा भुपाया । आज तौ अंतर री केई सीसियां खाली व्ही । आज री घड़ी सौरम नीं बरसैला तौ कद वरसैला !

दाळद कह्यौ — मिनख रै आचरण री सौरम च्यारूं कूंटां फूटै तौ वा साची सौरम । अंतर - फुलेल खळकायां मिनख रै आचरण री दुरगंध नीं दटै । म्हनै तौ अठै परवै रै आचरण री सूगली वो आवै । जे इणी सायत नींवड़ा री छींयां तळै नीं पूगौ तौ म्हारौ सांस घुट जावैला ।

च्यारूं-मेर घेरौ घालती डावड़ियां बोली — राज रा चरण तौ हीरा-मोत्यां रै आंगणै ई छाजै । आप धूळ-आंगणै पधा-रचा तौ राजाजी म्हांरै माथै खीझ करैला । म्हे वांरौ आदेस नीं लोप सकां ।

दाळद कह्यौ — म्हारौ तौ माथौ फाटै अर थांनै राजाजी रै आदेस री वळी लागी । काली बायां, आ छोटी बात ई थांरी समझ में नीं आवै के फोटा में हीरा-मोती जड़्यां फोटा रौ मोल नीं वधै । मिनख री चांनणौ फगत मिनख रै गुणां में इज है । नीं सोना में, नीं हीरा-मोत्यां में, नीं सिंघासण में अर नीं माळा में ।

दाळद री आं गूढ़ वातां री म्यांनौ राजकंवरी राजा नै सावळ समझायौ तौ राजा रै हरख रौ पार नीं रह्यौ । उण अथाह हरख री छौळ-छौळ में वौ दाळद नै आधौ राज सूंप दियौ । दाळद घणौ ई नट्यौ पण राजा नीं मांन्यौ सौ नीं मांन्यौ । कह्यौ के अैड़ी राजकंवरी रै हथळेवै समूळौ राज सूंपै तौ ई थोड़ौ ।

दाळद री देखादेख राजकंवरी ई निपट सादौ वणाव करनै चंवरी माथै आई । दोनां रा फेरा होवण वाळा इज हा के लिछमी अर भाग माहौमाह खसता उठै हाजर व्हिया । लिछमी कैवै हूं वडी अर भाग वध-वध भाखै के हूं वडौ ।

लिछमी सोना-वरणी अर भाग कूंकूं वरणी । दोनूं जणा खसता खसता धुरापेड सूं मांडनै सगळी वात बताय कह्यौ — म्हे दोनूं दाळद नै आपरौ पंच थरपां । म्हांरी पंचायती निव-ड़्यां उपरांत ई फेरा व्हैला ।

दाळद सगळी वात व्यांन सूं सुणी । पछै ठीमर सुर में बोल्यौ — अै फेरां व्हियां थांरौ न्याव मतै ई निवड़ जावैला । म्हारी जांण में नीं तौ लिछमी वडी अर नीं भाग वडौ । वडी है तौ फगत राजकंवरी । आ राजकंवरी किणी नै वरण नीं करै जित्तै नीं लिछमी आडी आवै अर नीं भाग । राज-कंवरी रै वरण करयां, नीं लक्खी-विणजारा रौ ठागौ चालै, नीं किणी रौ भाग सिड़ै अर नीं दौलत रा छळ-प्रपंच फळै । भलां, राजकंवरी सूं फेरा व्हियां विना दाळद नै सिंघासण कुण सूंपै ?

आ वात सुणतां ई लिछमी रौ रंग काळौ पड़ग्यौ । अर भाग रौ रंग ई काळौ पड़ग्यौ ।

भूंडौ अर भलौ

बरसां जूंनी वात के भाखर री अेक टेकरी माथै अेक गांव वस्योड़ौ । उण गांव रै उगूणै फळसै दो मित वसै । दोनां रा अड़ौअड़ घर । अेक री नांव भूंडौ अर दूजा री नांव भलौ । भूंडौ दीखतं उणियारै फूठरौ । मीठी बोली । हंसनै वात करै । लुळताई खासी । भलौ अंगां भोळौ । रंग सांवळौ । बोल्यां विना अंगै ई नीं सरै, जद होठ खोलै । विना वेसवार पाधरी वात करै । जोर सूं हंसण री वात व्है जद थोड़ौ-सौ मुळकै । खुद री हीयौ ऊजळौ, तिण सूं सगळै ई धोळौ-धोळौ दूध जांणै । किणी माथै ई आंधौ होय विस्वास कर लै । करै तौ किणो री भली इज करै । सपना में ई भूंडी नीं चीतै । भूंडौ बोलै कीं, हालै कीं । वातां में किणी नै कीं काढ़नै नीं देवै । मिठाय-मिठाय अैड़ी वातां छमकै जांणै उण जैड़ौ भलौ तौ कोई मिनख ई नीं । आपरै खपतां भलौ किणी री ई अड़ी-वड़ी में कांम आवै । तौ ई लोग-वाग भला विचै भूंडा रौ ठसकौ-ठरकौ वत्तौ मांनता । भलौ घर रौ आसूदौ हौ अर भूंडौ थाकल । कमाई सारू कळाप-पड़पंच घणा ई करतौ पण थाल नीं फिरतौ ।

अेक दिन वौ तड़कै-तड़कै भला रै पाखती गियौ । उणनै

समझावण लागी — संधौ सांम्ही सूंठ रौ गांठियौ । वडेरां रै इण जूंनै लेड़ै अपांरी कदर नीं व्है । दिसावर चालां तौ कीं करनै बतावां । फिरै सो चरै । रूंख री गळाई अेक ठौड़ रुप्योड़ा आछा थोड़ा ई लागां । छतै पगां पांगळा व्हियोड़ा । थारै विना म्हनै अेक घड़ी ई नीं आसंगै, नींतर म्हारौ रांम तौ कदै ई रम जातौ । इण गांव री उखरड़ी देखतां-देखतां म्हारी आंख्यां तौ काई व्हैगी । आंख्यां मिळी है तौ कीं नवी लीला जोवां, कीं नवौ खिलकौ देखां । केई दिनां सूं म्हारा मन में दिसावर जावण री खदवद मच्योड़ी । थारौ सांढ़ौ व्हियां म्हैं तौ ऊभौ ज्यूं ई वहीर व्है जावूं ।

भलौ वोलौ-वोलौ सुणतौ रह्यौ । भूंडौ निरी-ताळ दिसावर चालण री झाटी कूटतौ ई गियौ तौ ई कीं नीं वोल्यौ । तद भूंडा नै जूंजळ आयगी । भला रौ हाथ तांणतौ वोल्यौ : आ जीभ फगत थूक रा स्वाद वास्तै ई नीं मिळी । यूं अबोलौ रह्यौ तौ थोड़ा दिनां में वोलणौ ई भूल जावैला । थारै नीं जचै तौ ना दे दै, पण वोलनै कीं दरसा तौ खरौ । मिनख जमारै आय भाटा रौ गुण पाळै । वोलै नीं कोई चालै ।

नीठ भला रा होठ खुल्या । वोल्यौ — थारै अैड़ी जचगी है तौ म्हारौ ना कोनीं । पण जठै-तठै ई जावांला माथै धूंवावरणौ आभौ अर पगां तळै धूळ ई धूळ लाधैला !

भूंडौ तौ फगत आपरै भरै पड़ती ई वात सुणी । आखतौ होय वोल्यौ — थारौ अैड़ौ ई भरोसौ हौ जद इज तौ म्हैं वात करी । आज करड़ौ वार । सांम्ही दिसा-सूळ । कालै सांतरौ मौरत । म्हैं तौ पैला ई पूछ-ताछ करली ।

भूंडौ तौ बातां बातां में ई खरी करली । जांणतौ के बिना हिलायां ओझै । भला नै हाकां-धाकां हूंकारौ भरवाय लियौ । तठा उपरांत वळै अेक भुळावण देवतां कह्यौ — रांम जांणै पाछा कद आवां । थूं भोळौ घणौ । समझायां बिना समझै कोनीं । गैणौ-गांठौ साथै ले लीजै । नांणौ-गूंजी ई कड़ियां वांध लीजै । सूनै घर जोखम क्यूं राखणी ।

पैला तौ भलौ आळिया-टोळिया करचा । कह्यौ के घर सूनौ व्हियौ तौ कांई, गांव तौ सूनौ कोनीं । पराई पूंजी में कुण हाथ घालै । कुत्ता ई नीं खावै । पण भूंडौ समझायौ तौ वौ मांनग्यौ ।

सौ दूजै ई दिन दोनूं बेली दिसावर सारू वहीर व्हैगा । घर री सगळी जोखम भला रै माथै पोटळी में वाधी ही । अर भूंडा रा हाथ में फगत कांन तणी गेडी । खांधै गमछौ । बच्योड़ी पूंजी लाली में । मारग वैवतौ मिठाय-मिठाय वातां करतौ जावतौ । भलौ वोलौ-वोलौ सुणतौ जावतौ । विचाळै कदै ई कदै ई हूंकारा देवतौ जावतौ ।

भूंडौ मंसोबां रा भाखर खिड़कतौ-खिड़कतौ कैवण लागौ: दिसावर गियां बांणियां रै इत्ती बरगत क्यूं व्है ? क्यूं के वै विणज करै । अपां ई पूजतौ बिणज करांला । नांणौ थारौ । अकल म्हारी । नफौ आधौ-आध । वांणियां नै लारै नीं राख दूं तौ मां रौ दूध ई नीं चूंघ्यौ । थूं तौ फगत म्हारा करतव देखतौ रैजै ।

भलौ हां-हूं करतौ रह्यौ अर साथै साथै चालतौ रह्यौ । चालतां-चालतां मारग में अेक वेरौ आयौ । ठावकौ । पक्का

सेळी-कोठा। माथै घेर-घुमेर बांवळिया री जाडी छीयां। भूंडौ उण रमणीक ठायै विसाई खावण री बात करी तौ भलौ तुरंत मांनग्यौ।

मूंडौ धोय, आंख्यां छांट अर पांणी पीय भलौ तौ पाज मायै आडौ व्हैगौ। अर भूंडौ बिना पूछ्यां ईं कैवण लागौ: म्हारै काळजै कोडी वध्योड़ी। दो तीन वळा आकड़ा रौ दूध लगावणौ पड़ैला।

आ कैय वौ तौ मतै ई आकड़ा रौ दूध लावण सारू वहीर व्हैगौ। थोड़ी ताळ में दूनौ भरनै लायौ। भला रै पाखती वैठ उणरै देखतां कोडी माथै दूध मसळण लागौ।

भगवांन जीभ दी अर बोलणौ आवै तद अबोलौ वैठणा में कांई सार। भूंडा री फिकाळ चालू ही। उणरी बातां सुणतां-सुणतां भला नै ऊंघ आयगी। पण ऊंघ में उणरी आंख्यां आधी खुल्योड़ी। पछै भूंडा रै कांई ढील। लप उणरी आंख्यां में आकड़ा रौ दूध ऊंधाय; नांणा री पोटळी अळगी सिरकाय, कड़ियां/वाधी नोळी खोल भला नै वेरा रै मांय थरकाय दियौ। हबिदौ सुण्यां पैली-पैली पाज सूं हेटै कूद, वौ तौ आपरौ मारग लियौ। मन नै समभावण लागौ के कोई पूंजी साथै लेय तौ जलमै कोनीं। पूंजी भेळी करण सारू न्यारा न्यारा करतव करणा पड़ै। कोई भलाई करनै भेळी करै, कोई साच-भूठ करनै माया वधावै तौ कोई चोरी-धाड़ा करनै। मिनखां रा उणियारा मिळै तौ वांरा करतव ई मिळै। अर भला रै पूंजी री कांम ई कांई! रुखाळै सौ पूंजी रौ चाकर। खरचै सौ पूंजी रौ धणी।

भला में लखणां परवांण बीतणो ही जकौ बीतगी। आंख्यां में लाय-लाय ऊठगी। डोळा गिलबिलग्या। पांणी माथै पड़तां ईं बेरा में हबिंदौ गूंज्यौ। हाब-गाब होय व्यौ तौ चेतौ ई भूलग्यौ। थोड़ी ताळ उपरांत उणनै सुध बावड़ी के वौ हाल मर्‌यौ तौ नीं, जीवतौ है। आंख्यां में बळत अर हाडका जरकी-जियोड़ा। तौ ई मरतौ-खपतौ तिरण सारू झांपळियां भरण लागौ। आंगळियां रै परस-परस ऊंचौ चढ़्‌यौ। संजोग सूं लांठी वाल ई धकै आई। मांय बैठग्यौ।

उण बेरै दो भूतां रौ वासौ। दोनूं ई गाढ़ा मित हा। तीन महीनां उपरांत पाछा आपरै ठायै भेळा व्हिया। हबिंदौ सुणतां ई चिमक्या। मिनख रौ टसकणौ सुण्यौ तौ पूछ्‌यौ—कुण व्है ई?

टसकणा रै साथै किणी मिनख री बोली सुणीजी—औ तौ म्हैं भलौ।

दोनूं ई अेकण सागै बोल्या—तौ पछै इण बेरै कांई वांधण नै आयौ?

भलौ टसकतौ टसकतौ ई ही जकी साची बात बताय दी। उणरौ विखौ सुणतां ई भूतां रै मन में दया सांचरी। अेक जणौ बारै जाय बांवळिया रा लूंग लायौ। वेरा रा पांणी सूं मंया मसळ उणरी आंख्यां रै लेप कर्‌यौ। मंतर फूंक झाड़ी दियौ। भला री आंख्यां खुलगी। कोयां में ठाडोळाई वापरगी। डील चांप्यौ तौ हाडकां रौ कुळणौ बंद व्हैगौ। भूतां रौ अणूंतौ गुण मांन्यौ।

तठा उपरांत दोनूं मित माहीमाह वंतळ करण लागा।

अेक दूजा नैं पूछ्यौ के वै तीन महीनां में कांई इदकी बात करी। अेक भूत कह्यौ के वौ इण राज री राजकंवरी साथै मछरां करै। केई झाड़ागर मर मरनै खपग्या पण म्हैं उणरौ रंग-मैल नीं छोड्यौ। राज मैल में हाय-त्राय मच्योड़ी। राजकंवरी अस्टपौर कूकै, पण उणरी प्रीत म्हारा सूं अबै छोडणी नीं आवै। कोई झाड़ागर असलो उपाव तौ जांणै ई नीं। इण बांवळिया माथै म्हारौ कांमण करयोड़ौ। इणरी हिलारियां अर लूंग भेळा बांट, मंथा कपड़छांण करनै तंबाखू री ठौड़ चिलम में भरै। अर वा चिलम पीयां म्हनै राजकंवरी रौ मैल छोडणौ ई पड़ै। पण कोई झाड़ागर औ मरम जांणै तौ!

पूछ्यां दूजोड़ौ भूत कैवण लागौ के वौ तीन महीनां सूं भाखर री अेक ऊंडी गुफा में डेरा-डंडा जमाया। मोटा मोटा धनवंतियां नै मार लाखां रिपियां री माया-मत्ता भेळी करली। राजाजी रौ खजांनौ तौ म्हारी माया रै धड़ै-पागड़ै ई नीं लागै। मिनख माया सारू मरै अर म्हैं वांनै मार-मार अथाह माया भेळी करली। इण वेरा रै पांणी में इणी बांवळिया री छाल मई बांट, मांय मिसरी रळाय कोई वौ घोळ म्हारै माथै छिड़कै तौ म्है उण माया री ठायौ छोडूं।

बाल में बैठौ भलौ वां दोनां री वंतळ बोली बोली सुणतौ रह्यौ। थोड़ी ताळ उपरांत बारै काढ़ण री कह्यौ तौ भूत उणनै बारै काढ़ दिवी। भूंड़ा रै कह्यां दिसावर री हर लाग्यां तौ उण में भूंडी बीती। अबै करै तौ कांई करै! वौ तौ आपरै गांव रौ मारग ई नीं जांणै। अर धकै जाय तौ कठै

जाय ! मुड़नै च्यारूं कांनी भाळ्यौ । उतराद में अेक धूंम मारग निगै आयौ । वौ तौ मतै ई उण मारग री सोय धकै वहीर व्हैगौ ।

हालतां हालतां वौ अेक नवा राज में पूगौ । राजाजी रा दरसण करण सारू राज-दरबार में गियौ तौ उणरौ मित भूंडौ उण राज रौ नवौ दीवांण वण्योड़ौ । ठाट सूं हुकम चलावै अर हाजरिया तुरंत उणरौ हुकम वजावै । भला नै देखतां ई उणरौ माथौ ठणकियौ । औ साजौ-सूरौ व्हियौ तौ व्हियौ ई कीकर ? राजाजी नै भेद परगट कर दियौ तौ सगळा माळीपन्ना उतर जावैला । नीठ तौ औ ठागौ रचायौ । इणनै मारयां विना तौ चैन नीं मिळै । पण तौ ई मन री बात नै वौ होठां नीं दरसाई । अणूंतौ राजी होय धकै बध्यौ । गळै मिळ्यौ । सांम्ही पूछ्यौ के वौ जंगळ जाय पाछौ आयौ जित्तै कठै वहीर व्हैगौ । घणौ ई सोध्यौ, घणौ ई सोध्यौ । नीं तौ वौ बटाऊ लाधौ अर नीं थूं ई लाधौ ।

घणौ वाद करयौ तौ भलौ साची वात वताय दी । तद भूंडौ आंख्यां जळजळी कर घणौ ई दुख करयौ । ऊंडौ निस्कारौ न्हाकतौ बोल्यौ— तौ वौ बटाऊ घात करग्यौ । ओटाळ कित्तौ स्यांणौ दीखतौ हौ !

भलौ तौ सुणी जकी बात माथै ई पूरौ विस्वास कर लियौ । भूंडा माथै बिरथा वजौ धरण रै हाथ जोड़ माफी मांगी ।

पछै वौ भला नै आपरी हवेली लेयग्यौ । उणरी पूजती सरबरा करी ।

सिञ्या रा राजकंवरी रा मैल में पाछी वा ई हाय-त्राय मचगी । भूंडी राजाजी रै पाखती जाय कह्यौ के उणरौ मित भलौ ऊंचौ झाड़ागर । भूत रा बाभौजी नै ई सौ सौ कोसां नैड़ौ नीं ढवण दे ! राजकंवरी री भूत सूं पिंड नीं छुडावै तौ सूळी री सजा अंगेजण नै त्यार । इत्तौ कह्यां राजा रै खटाव कठै । हाजरिया भेज तुरंत भला नै दरबार में बुलायौ ! पण वात सुणतां ई सुभट नटग्यौ के वौ तौ झाड़ौ-वाड़ौ कीं नीं जांणै ।

राजीजी रै मूंडै-मूंड कोई इण भांत सुभट नट सकै भलां ! खीझ रै जांणै आवण लागौ । हथमारां नै माथौ वाढ़ण री आदेस दियौ । तद उण वेळा उणनै भूतां वाळी वंतळ याद आई । वौ तीन दिन री मोलगत मांगी । राज-कंवरी री कळपणौ देख राजा उणनै मोलगत दे दी ।

तीजै दिन उण इज बांवळिया री हिलारियां अर लूंग लेय पाछौ आयौ । मंया वंटाय कपड़छांण करनै चिलम भरी । चिलम सिळगाय पाधरौ राजकंवरी रै मैल गियौ । वा भूंडै-ढाळै वरका करती ही । भूत रै सांम्ही चिलम करतां ई वौ तौ मैल छोड न्हाटौ । पाछौ सपनै ई नीं आवण रा कौल-वाचा करग्यौ ।

राजकंवरी अजेज साजी-सूरी व्हैगी । पछै राजा री खुसी री कांई पार । गळ-बाथां भर मिळचौ । दूजै ई दिन भला नै सिरै दीवांण थरपियौ । भूंडा रै काळजियै वळत ऊठी पण ऊठी । पण राजाजी रै आगै उणरी कांई जोर चालतौ ! मांय री मांय जाळ गूंथण लागौ ।

थोड़ा दिन उपरांत भूंडा नै अेक वैड़ौ ई मौकौ वळै मिळग्यौ । भाखर री गुफा में माया भेळी करण वाळौ भूत आखा राज में हाय-त्राय मचाय राखी ही । नित हमेस केई धनवंतियां रौ पापौ काट न्हाकतौ । जे राजाजो कीं बंदोबस्त नीं करचौ तौ सगळा मोतबिर उछाळौ करनै दूजा राज में बस जावैला । भलौ तौ किणी रै बतळायां बिना बात ई नीं करतौ पण भूंडौ तौ नीं बोलतौ जित्तै आंतां कुळबुळ-कुळबुळ करती । भलौ सिरै दीवांण व्हैतां थकां ई इण लाली रै परताप भूंडा री राजाजी मूंडागै वत्ती चालती । वौ वळै भला नै पजाय दियौ । लाली री जाळ अैड़ौ इज नीं व्है ! भलौ नटियौ तौ वळै वौ इज माथौ वाढ़ण रौ आदेस । राज-दरबार री तौ हवा ई न्यारी । सालस नेक मिनख रौ तौ जीवणौ ई दूभर । उठै तौ ओटाळ मिनखां रा फाफड़ा ई उफसै ।

वौ वळै तीन दिन री मोलगत मांगी । उण इज बेरूं जाय बांवळिया री छाल अर पांणी रौ घड़ौ भरनै लायौ । मिसरी रळाय छाल बांटी । घोळ करचौ । पछै अेकलौ ई उण भाखर सांम्ही वहीर व्हियौ । गुफा में वड़तां ई पैला तौ भूत हौकारां भरतौ भला नै मारण सारू ताचकियौ । पण घोळ रा छांटा पड़तां ई वौ साव लातरग्यौ । पग झाल माफी मांगी । राज री सींव में पग ई नीं धरण रा कौल-वाचा करचा ।

राज रै खजांनै अथाह माया जुड़गी । इत्ती माया तौ राज थरपियां पछै ई भेळी नीं व्ही । राजाजी तौ हरख रै पांण बावळा व्हैगा । भला रै ना देतां देतां माडांणी राज-

कंवरी रै सागै उणरौ व्याव कर दियौ । आखा राज में निछरावळां व्ही । सात दिनां तांई उच्छव रा नगारा वाजता रह्या । पण भूंडा रै काळजै तौ जांणै डांम लागा । ज्यूं नारण रा वात रचिया त्यूं त्यूं भला रै सुफळ पड़ती गी । उणरौ तर-तर वधापौ व्हैतौ गियौ । अबै कांई छेहली चाल करै, जिण सूं भला रौ समूळौ पापौ कटै ।

लुगाया कांनां री काची व्है । अस्टपौर राजकंवरी री हाजरी भाजण लागी । राजकंवरी बात बात में उण सूं सला-सूत विचारती । भलौ तौ होळी-दियाळी नीठ होठ खोलतौ । विना वात किणी सूं कांई वात करै !

जद राजकंवरी आंध्यां मींच उण माथै विस्वास करण लागी तौ अेक दिन रा भेद प्रगट करचौ के भलौ तौ खुद अेक मोटौ भूत । भूतां रौ मुखियौ । जद इज तौ वै भूत उणरौ कह्यौ नीं टाळचा । कदै ई न कदै ई गळी रोस न्हाकैला । वौ इत्ता दिन डरतां वात नीं करी । पण राज-कंवरी सूं अैड़ी वात रौ चोज राखणा विचै तौ मरणौ मिरै ।

वात सुणतां ई राजकंवरी रौ काळजौ कंठां आयग्यौ । कैड़ी कावळ पजी । भूत सूं हथळेवौ जोड़चौ । जद इज छळ-गारौ घणी वात नीं करै । वा डरतां डरतां बोली— जद वां दो भूतां आगै ई आखा राज रौ जोर कांम नीं दियौ तौ अबै भूतां रा मुखिया सूं कीकर पड़पणी आवै ।

भूंडौ नीची धूण करचां जवाव दियौ— औ जिम्मौ म्हारौ । फगत आपरी दवायती चाहीजै ।

अर राजकंवरी दवायती दे दी । पण रात रा नींद रै

सपनै सगळौ पासौ ई उलटग्यौ । भलौ अगाढ़ ऊंघ में सूतौ हो । राजकंवरी यूं ईं पलकां मूंदयां सूती ही । भूत रै जोड़ै कीकर नींद आवै !

के अणछक धणी नै वेलतां सुण वा झिझकत्ती बैठी व्ही। मूंडै बोलनै तौ वौ कदै ई कीं भेद नीं दरसायौ, पण सपनां री वांणी उणरै ई बस में नीं ही ! आंख्यां में आकड़ा रौ दूध घाल मांय थरकावण री बात नींद में वेलतां वेलतां सुभट परगट व्हैगी । राजकंवरी री आंख्यां खासी-भली धुंध छंटगी। जे इण अकरमी दीवांण रौ कह्यौ मांन जाती तौ अभाग व्है जाता ।

तड़कै ऊठतां पांण हाजरिया नै भेज दीवांण नै तेड़ायौ। चंडी री गळाई हाथ में नागी तरवार लेय डाकर करतां सगळी बात पूछी तौ वौ धूजतां धूजतां साची बात बताय दी । सुणनै भला नै ई अणूंतौ इचरज व्हियौ ।

राजकंवरी नै तौ रीस रै आपै कीं चेतौ ई नीं हौ। हथ-मारां नै आदेस नीं देय वा अेक ई झटका में भूंडा रौ माथौ वाढ़ न्हाकियौ । भलौ बरजै-बरजै जित्तै तौ भोडक तच्च-करतौ रौ पगां आय पड़्यौ ।

करणी जैड़ी भरणी

घणा वरसां पैली री आ जूंनी वात — के अेक हौ राजा। दया-माया री पूतळी। रया री आंख्यां जळजळी देख खुद रोवण लाग जातौ। रया नै मुळकतां देख खुद हंसण लाग जातौ। प्रजा रा दुख सूं दुखी अर प्रजा रा सुख सूं सुखी। प्रजा नै सुख देवण सारू खुद दुख उठाय लेतौ। उणरौ खजांनौ रया रा खरच सारू अर खुद उणरौ रुखाळौ। टावर री गळाई निरापेखौ आंगौ। साव भोळौ। भरपूर दांन-पुन्न करयां बिना अंजळ ई मूंडै नीं घालतौ। बांमणां नै पेटिया अर गउवां नै चारौ। लूला-पांगळां सारू अस्टपौर राज-रसोड़ौ जगतौ। ज्यूं धरम-पुन्न करतौ त्यूं खजांना रौ बधापौ व्हैतौ। उण राज रै खजांनै कदै ई तोटौ नीं आयौ। राजा बाप री ठौड़ अर रया बेटा री ठौड़।

अेक बूढ़ौ बांमण सब सूं पैला दांन लेवण सारू आवतौ। राजा आपरा हाथ सूं उणनै अेक सोना री मोहर देवतौ। बूढ़ौ बांमण हाथ ऊंचौ करनै आसीर-वचन देवतौ — राजा, इण अेक मोहर री थारै अलेखूं मोहरां होसी।

राजा नै बांमण री आसीस रा अै बोल घणा सुहांणा लागता। उणरी आसीस सुणतां ई राजा रै होठां मुळक सांच-

रतो । सूरज ऊगण सूं टळयौ तौ उण बांमण नै अेक मोहर रै दांन री नेम करै ई टळयौ । औ नेम बरसां लग चालतौ रह्यौ । नित अेक मोहर रै बदळै आसीरवचन रा वै रा वै सागी बोल — राजा, इण अेक मोहर री थारै अलेखूं मोहरां होसी । राजा रा कांन इण आसीस रै हेवा व्हैगा ।

पण दूजा बांमणां रै हीये औ अतूट नेम भरयौ कोनीं । वांनै अैड़ौ लखावतौ जांणै वांरै नित-हमेस अेक मोहर री घाटौ व्है । कुबदी लाड़ी राजा नै कैड़ा भंवर-जाळ में अळूझाया । आसीस री थूक उछाळणा साटै सूरज री उगाळी अेक मोहर री चपट साजलै । मांय रा मांय छीजण लागा । अेक दिन सगळा भेळा होय दीवांण रा कांन भरया । दीवांण नै ई औ नेम खासौ अखरतौ हौ । पण राजाजी नै कैवण री हीमत नीं व्ही । जणा-जणा रै घड़ी घड़ी घोदावणा सूं अेक दिन वौ राजाजी नै हाथ जोड़ अरज कीवी — अंदाता, राज रौ खजांनौ, राज जचै ज्यूं दांन-पुन्न करै, म्हैं बिरथा पंचायती क्यूं करूं। पण दांन रै मिस कोई ठागौ रचै तौ अवस आ बात म्हारै काळजै साल्है । वौ बूढ़ौ बांमण तौ भूल सूं ई नागा नीं करी । अंदाता, औ दांन कठै, आ तौ लाग व्हैगी । तौ ई बोलौ-बोलौ हाथ मांड दांन ले जावै तौ कीं बात नीं, पण आसीरवचन रौ ठागौ क्यूं करै ? उणनै कोई पूछणियौ कोनीं के थारी आसीसां अेक मोहर री अलेखूं मोहरां कद होसी, कठै होसी ? अंदाता, इत्ता बरसां रै उपरांत तौ वां मोहरां रौ लेखौ व्हैणौ चाहीजै । आ तौ न्याव री बात !

दीवांण री आ बात तौ सुणतां ई राजा रै हीये ढूकी ।

बोल्या — हां, क्यूं नीं लेखौ व्है ? अबै तौ इणरौ जरूर लेखौ व्हैणौ चाहीजै । म्हैं तौ दांन-पुन्न में रूधोड़ौ, थें इत्ता दिन म्हनै क्यूं नीं कह्यौ । औ छळी बांमण तौ म्हनै नित ठगै । वरसां लग छळतौ रह्यौ । झूठी आसीस देवण री जरूरत कांई ! म्हैं तौ दांन करूं, कोई सौदौ तौ नीं करूं । म्हारै जैड़ा राजा नै ई रया ठगण रौ जाळ रचै, तौ पछै कांई बाकी रह्यौ ? बुलावौ उण बांमण नै । आज वां अलेखूं मोहरां रौ लेखौ तौ पूछूं ।

राजाजी रै जच्यां पछै कांई ढील ! राज रा हाजरिया दौड़ता गिया जकौ तुरत बांमण नै बुलाय लाया । राजाजी रै उत्तौ नेठाव कठै ! देखतां ई डाकर करता बोल्या: क्यूं पिडतां, थें म्हारै साथै ई छळ करग्या ! अेक मोहर री वे अलेखूं मोहरां कठै पड़ी ? आज तौ बतायां ई लार छूटैला, नींतर थें थांरी सोच लौ ।

राजाजी री आ खीझ देखतां ई डोकरा रै हीयै तौ धूजणी वड़गी । जे वौ अैड़ौ लेखौ बतावण जोग व्हैतौ तौ अेक मोहर सारू नित हाथ क्यूं पसारतौ । धूजता सुर में बोल्यौ — अंदाता, आसीस देवणी तौ बांमण रौ धरम । वांरौ लेखौ तौ भगवांन जांणै । म्हैं तौ कैवूं के म्हारी आसीस अैळी नीं जावै । तौ ई आपरै जचगी है तौ सगळी मोहरां पाछी लाय हाजर कर दूं । राज रै खजांनै मोहरां ही सौ आप मोहरां बगसीस करी । म्हारै खजांनै आसीस ही सौ म्हैं आसीस दीवी ।

राजाजी कह्यौ — पण म्हैं तौ मोहरां साचैली दी, पण

थांरी आसीस साचैली कठै ? थें तौ ठागौ करचौ । अर सेवट ठागौ चौड़ै व्हियां आ कैवतां ई लाज नीं आई के म्हैं दांन दियोड़ी मोहरां पाछी लेलूं । म्हनै कांई मंगतौ समझ राख्यौ ? जे थांरी आसीस साची नीं ही तौ थें दीवी क्यूं ?

बांमण हाथ जोड़ कह्यौ — अंदाता, जे अेक मोहर रै बदळै अलेखूं मोहरां रौ लेखौ समझावण जोग म्हारौ ठरकौ व्हैतौ तौ म्हैं इत्तौ बूढ़ौ होय आपरै सांम्ही हाथ पसारतौ भलां ! आसीस री मोहरां रौ लेखौ कीकर बताइजै ? कुण बतावै ?

राजा री खीझ अंगै ई ठाडी नीं पड़ी । बोल्यौ — झूठी आसीसां इत्ता बरस पार पड़गी सौ ई मोकळी, पण अबै थांरा अै आळिया-टोळिया पार नीं पड़ैला । जांणूं के इत्ता बरसां रौ लेखौ अेक घड़ी में नीं बताइजै । थांरै विना मांग्यां ई तीन दिनां री मोलगत देवूं । जे आज सूं चोथै दिन आसीस री अलेखूं मोहरां रौ लेखौ नीं समझायौ तौ घांणी में पीलायां विना नीं छोडूं । थें जांणौ जित्तौ भोळौ नीं हूं ।

अेक भोळापणा में तौ कीं घाटौ नीं हौ । पण राजाजी नै भोळा कह्यां तौ तीन दिन पैला ई मरणौ पड़ैला । बापड़ौ बांमण कांई जोर करतौ । मूंडौ ढेर ढुळकतौ ढुळकतौ आपरै घरै आयौ ।

उण बांमण रै इकलौती डावड़ी । रूप री खांन । सोळवौ बरस । जांणै सोना में सौरम सांचरी । टाबर थकां ई ब्याव व्हियोड़ौ । पण हाल मुकलावौ नीं करचौ । आखा राज में उण जोड़ री रूपाळी डावड़ी नीं ही । देख्यां ई उण रूप माथै भरोसौ नीं व्हैतौ । बांमणी रै पेट इंदरलोक री कोई अपछरा

ती नीं अवतरी ! दांत जांणै बीजळियां रा इज टुकड़ा । रंग जांणै गुलाब रै फूलां री वासौ छोड उणरी देह में रळमिळग्यौ। गुलाबी रूंवाळी । सोनल केस । उणरी बोली आगै कोयल री कंठ ई अलूणौ लागतौ । अेडियां, जांणै ममोल्या अेकठ व्हिया ।

बाप नै बांमण-दूमणौ देख्यौ तौ उणरौ मूंडौ उतरग्यौ। घणौ आड़ौ लियां नीठ साची बात बताई । पण बड़ा इचरज री बात के सगळो बात सुण्यां वा अंगै ई दुखी नीं व्ही । बोली—औ लेखौ समझावण सारू तौ अेक घड़ी री ई मोल-गत नीं चाहीजै । म्हैं इणी सायत राज-दरबार में जावूंला । जे राजा आसीस री मोहरां रो लेखौ जांणणी चावै तौ अपांनै कांई आंट । धेला री ई चूक कोनीं, पछै किण बात री डर । आप क्यूं कळपौ, इण म्यांना सारू तौ म्हारी अकल ई उब-रती पड़ी ।

बात तौ घणी ई अजोगती ही । पण बाप नै बेटी री अकल अर हूंस माथै पूरौ पतियारौ हौ। कैतां ई धीजौ व्हैगी ।

बांमण री बेटी तौ पछै अेक छिण ई उठै नीं ढबी । हंसा-हाली पाधरी दरबार में पूगी । राजाजी सिंघासण माथै बिराज्या न्याव निवेड़ता हा। बांमण री बेटी रै रूप री झवकौ पड़तां ई जीभ तौ जांणै ताळवै ई चेंटगी । धरमी राजा नीठ आपरा मन माथै काबू राख्यौ ।

वा डावड़ी इण विध अणचीती राज-दरबार में हाजर क्यूं व्ही, इणरौ सावळ म्यांनौ बताय धकै कैवण लागी—म्हारै बूढ़ा बाप री आसीस अंगै ई निपग्गी कोनीं, आप जांणणी

चावौ तौ अेक अेक मोहर रौ लेखौ हाजर है । हाल ई म्हारौ औ कैणौ है के आप औ लेखौ जोवण सारू वाद मत करौ । पछै पिछतांणौ पड़ैला । हाथां करचोड़ा दांन रै फळ री लाळसा आछी कोनीं । फळ देख्यां दांन-पुन्न रौ महातम घटै । मन में भूठौ मोद व्है । मोद सूं अहंकार वधै । अर अहंकार अधरम री जड़ । आप भलां ईं खीभ करनै डंड रौ आदेस दिरावौ, पण तौ ई म्हैं निसंक पूछूंला के थांरौ कांईं हौ जकौ थें दांन करचौ । ममता रौ औ भरम ई तौ सब सूं खोटौ के कुदरत री संपत नै आपरी मांनणी । दांन देवण रै मिस दया-माया री फगत भावना आपरी ही । साचांणी, उणरै लेखा रौ कीं पार नीं । अणगिण अलेखूं मोहरां रै मापै समभणी चावौ तौ त्यार अर अमोलक हीरा-मोत्यां रै मापै समभणी चावौ तौ त्यार ।

उणरा रूप सूं राजा रौ मन चळविचळ तौ अवस व्हैगौ हौ, पण वैड़ी अकछ कुबांण नीं व्हैणा सूं संकौ आडौ आयग्यौ । संका री धस माई कोनीं । आज पैली राजापणौ जतायौ ई कद हौ । बांण तौ ढळती ढळती ढळै । डावड़ी री वात रौ कीं न कीं तौ जवाब देणौ ई हौ । बोल्यौ— म्हैं तौ मोहरां रै मापै ई आसीस रौ लेखौ जांणणौ चावूं ।

बांमण री बेटी निसंक बोली — राज री इंछा । धणी रौ धोरी कुण ?

पछै वा नेठाव सूं कैवण लागी— आज सिंझ्या रा ई आपनै धुराबू कूंट रै मारग पाळौ ई वहीर व्हैणौ है । सात दिन अर सात रात आपनै कठै ई नीं ढबणौ । कठै ई नीं टळणौ । फगत

घुराव़ू कूंट रै मारग हालणौ ई हालणौ । सातवी सिझ्या रै बधांण पैला तौ दो लीला वाग आवैला । पछै अेक सूखौ बाग आवेला । उण सूखै वाग अेक सूखी - खणक वावड़ी । आपरी छीयां री परस व्हैतां ई सूखौ वाग हरचौ - चकन व्है जावैला। ठालो खरणाट करती वावड़ो में मीठौ निरमळ नीर उमगण लाग जावैला । उण वाग रै परलै नाकै सतखंडियौ राजमैल । उठै रांणी रै तीन बरसां रौ आधांन । छूटापौ व्है ई नीं । रांणी रा भूंडा हवाल । अस्टपौर टसकै । चसमस चीसां हालै । पण टावर पांखां वारै नीं आवै । उण वावड़ी री सात चळू पांणी पायां रांणी छूटैला । तीन बरस रै आधांन परवांण लांठौ कंवर जलमैला । घकै वौ राजकंवर कैवै त्यूं ई आपनै करणौ ।

टावर ई आपरी घत नीं छोडै, पछै वौ तौ देस रौ राजा हौ । झिल्योड़ी वत कीकर छोडतौ । बांमण री बेटी कह्यौ उणी घुराव़ू कूंट रै मारग पाळौ वहीर व्हैगौ । साचांणी सातवी सिझ्या रै बधांण पैला तौ दो लीला वाग आया । सूखौ वाग देखतां देखतां लीलौ व्हैगौ । सुरंगै फूलां छायग्यौ । अणगिण फूलां री सौरम सूं हवा तर व्हैगी । वावड़ी री पाज माथै पग देय मांय झांक्यौ तौ खळळाट करतौ पांणी उमगण लागौ । सतखंडिया मैल रै गळाकर नीसरयौ तौ कस्टीजियोड़ी रांणी रौ टसकणौ सुण्यौ । सात चुळा वावड़ी री पांणी पायौ तौ रांणी छूटी । जलमतौ राजकंवर ऊभौ होय राजा सूं जवारड़ा करचा । कह्यौ— धरमी राजा, अवै ई मांनजा । घकै जावण री वाद मत कर । 'आसीस री अलेखूं मोहरां री लेखौ अवस परतख दीसैला । पण उणनै देखण री लाळसा मंत कर । पिछतावैला ।

राजा कह्यौ—आघेटै आय पाछौ मुड़णौ तौ अबै म्हारै ई हाथ कोनीं। राजा रै जमारै आय घणौ ई सुख पायौ। अेकर पिछतावण रौ ई साव ले लूं। धकै गियां बिना मन नीं मांनै।

'तौ राज री मरजी। अबेळौ क्यूं करौ! राजमैल सूं बारै निकळतां ई दिखण-कूंट रै मारग मुड़णौ। कठै ई नीं ढबणौ। कठै ई नीं टळणौ। सात दिन अर सात रातां तांई इणी मारग चालणौ। सातवी सिंझ्या रै बधांण अेक सूखी नंदी आवैला। नंदी पार करतां ई वा आटां-पाटां भंवरा पाड़ती वहण लागैला। सांम्ही अेक टाटियौ भाखर दीसैला। थांरै पगां रौ परस व्हैतां ई भाखर अद्वार हरियाळी सूं झूम-झूम ऊठैला। भांत-भांत री अणगिण बूंटियां। भांत भांत रा घेर-घुमेर तरवर। उण भाखर री अेक गुफा में चार महात्मा तापै। समाध लगायोड़ी। आपरै जावतां ई वांरी समाध तूटैला। धकै ज्यूं वै महात्मा कैवै त्यूं करज्यौ।

राजमैल सूं बारै निकलतां ई राजा दिखण कूंट रै मारग मुड़ग्यौ। सात दिन अर सात रातां चालतौ रह्यौ। नीं कठै ई ढब्यौ अर नीं कठै ई टळियौ। सातवी सिंझ्या रै बधांण अेक लांठी नंदी आई। नंदी रै परलै ढावै पग धरतां ई कळळ नाद सुणीजियौ। राजकंवर री बात तौ साव साची। सांम्ही टाटियौ भाखर। उणरै खुड़कै पग धरतां ई वौ लीलांणौ। जांणै आंख्यां सांम्ही कोई सपनौ लूंब्यौ।

सोधतां सोधतां सेवट वा गुफा ई लाधी। गुफा में पग धरतां ई समाध लाग्योड़ा साधुवां री पलकां उघड़ी। कह्यौ—

राजा, वर्के जावणा री बाद मत कर। पिछतावैला।

राजा कह्यौ— अबै ठेट आय पग पाछा नीं मुड़ै। मिनख-जमारै आय अेकर पिछतावण री ई साव तौ ले लूं।

चारूं महात्मा अेकण साग बोल्या— थारी मरजी।

इत्तौ कैतां ई सुरग लोक सूं विमांण आयौ। महात्मा कह्यौ तौ राजा उण में चढ़ग्यौ। राजा रै बैठतां ई सणण-सणण विमांण ऊंचौ हालियौ। उजास रै वेग ऊंचौ चढ़ण लागौ। हांकरतां सुरग-लोक पूगौ।

राजा विमांण सूं हेटै उतरयौ तौ उठै मार हाका-हाक मच्योड़ी। अेक लांबी-चौड़ौ सोना रौ मैल चुणीजै। सोना री ईंटां। सोना रौ गारौ। सोना रा राच-पीच। सोना री तगारियां। अणगिण मजूर। दनादन चुणाई व्है। राजा पूछ्यौ— भाइयां, औ कांई खिलकौ। इत्तौ लांठौ सोना री मैल किण सारू चुणीजै?

कारीगर कह्यौ— म्रितलोक में अेक धरमी राजा राज करै। वौ नित हमेस अेक बूढ़ा बांमण नै सोना री मोहर दांन में देवै। बांमण ई नित-हमेस राजा नै आसीस देवै के उण सारू मोहर री अलेखूं मोहरां होसी। वां अलेखूं मोहरां रौ औ मैल चुणीजै। उण धरमी राजा रै रैवास सारू।

आपरी निजरां परतख सोना रौ वौ मैल देख्यां नीं राजा रै हरख रौ कोई पार हौ अर नीं राजा रै मोद-गुमांन रौ। अर पाछौ राज-दरबार पूगौ जित्तै अहंकार में गरकाब व्हियोड़ौ।

उणरौ आदेस व्हैतां ई थटाथट दरबार जम्यौ। पालकी

भेज उण पिंडत नै तेड़ायौ । अेकण सागै हजार मोहरां देय कह्यौ—पिंडतजी, अबै आसीरवचन में खांमी मत राखजौ । म्हैं मोहरां में खांमी नीं राखूंला ।

पण वौ बावळौ पिंडत नीं तौ मोहरां कबूल करी अर नीं राजा नै आसीस ई दी । कैवण लागौ—माडै दिरायोड़ी आसीसां नीं फळै । अर मुफत रौ दांन नीं लेवण री म्हारै आखड़ी । पैला मोहर लेय आसीस देवतौ । अबै आसीस नीं दूं तौ भलां औ दांन म्हनै पचै ! अपांरै इत्तौ ई सीर-संस्कार हौ ।

राजा घणौ ई पग-पीटौ करचौ पण पिंडत नीं मांन्यौ । राजा नै अणूंती रीस आई । रीस रीस में बांमण री बेटी नै बुलावण रौ आदेस करचौ । राजा रै बुलायां तौ उणनै राज-दरबार में आवणौ इज हौ । पैला तौ राजा सोना रै मैल री विगतवार मांडनै सगळी बात बताई । बांमण री बेटी रौ जांणै जित्तौ गुण मांन्यौ । पछै अहंकार री निजर उणरै उणियारा सांम्ही जोयौ । रूप रै नसा री तरणाटी चढ़ी । अहंकार आपरौ आपौ ई बिसरग्यौ । मरजादा री कार लांघतौ राजा कैवण लागौ—थारा रूप सूं म्हैं बावळौ व्हैगौ । थनै रांणी नीं बणावूं जित्तै नीं जागतां चैन अर नीं सूतां चैन ।

आ बात सुणतां ई बांमण री रूपाळी धीवड़ी रौ उणियारौ मगसौ पड़ग्यौ । बोली—पण राजाजी, म्हैं तौ परणीजियोड़ी हूं । म्हारौ तौ बाळपणै ई ब्याव व्हैगौ । आ बात तौ आप खुद ई जांणौ के बांमणां रै घर री डावड़ी दूजी वळा नीं परणीजै ।

राजा कह्यौ — अै वातां राजा रै जांणण सारू नीं व्है। आखी दुनिया में उजास छितरावै तौ ई सूरज रौ उजास सूरज रै कांम नीं आवै। सूरज गिगन में तपै तौ राजा धरती माथै। जे म्हारी ई मनजांणी नीं व्है तौ म्हैं इण राज रौ राजा ई क्यूं वण्यौ? थारौ औ रूप तौ फगत राजा सारू! कोई दूजौ भंवरौ इण फूल रौ रस नीं ले सकै।

सूरज रै आगै दीवा रौ जोर चालै तौ राजा रै आगै प्रजा रौ जोर चाले। आ वात मन में विचार बांमण री बेटी माठ झेली। मन ई मन अेक दूजौ उपाव सोच कैवण लागी: राजा री इंछा सौ भगवांन री इंछा। म्हैं नाकुछ डावड़ी कांई विवाद करूं! पण अेकर आप दिखण कूंट रै मारग पधारौ। पाछा पधारयां ज्यूं आदेस फरमावौला, म्हैं मांनण सारू त्यार।

अवै तौ खुद रै जल्दी करयां ई जल्दी व्हैला। राजा तुरंत दिखण कूंट रै धूंम मारग वहीर व्हैगौ। नीं कठै ई ढब्यौ अर नीं कठै ई टळ्यौ। तीजी सिंझ्या रै वधांण दो लीला वाग आया। पण राजा रौ पग-फेरौ व्हेतां ई सूखग्या। हालतां हालतां उण राजा रै पगफेरा रौ अैड़ौ परताप व्हियौ के हिवोळा खावतौ सरवर राजा री छींयां पड़तां ई सूखौ-खणक व्हैगौ। नंदी सूखगी। भाखर री अढ़ार हरियाळी सूखगी।

विमांण में वैठ सीधौ नरक पूगौ। मांय वड़तां ई मिनखां री हाका-हाक सुणीजी। अेक लांठौ खीरां रौ मैल चुणीजै। अेक अणगिण सांपां रौ कुंड। अेक चमचेड़ां रौ कुंड। अेक लांठा कुंड में लाय लगै। अेक कुंड में तेल उकळै। राजा आखतौ होय पूछ्यौ — भायां, औ मैल किण सारू चुणीजै?

तद काळा विडरूप कारीगर कह्यौ — म्रितलोक में अेक अधरमी राजा बसै । वौ अेक बांमण री परण्योड़ी बेटी रा रूप माथै निजर बिगाड़ी । उण साथै अकरम करण री तेवड़ी । वैड़ा राजा सारू अैड़ौ मैल नीं व्हैला तौ कैड़ौ व्हैला !

राजा रौ माथौ पगां आयग्यौ । उणरै अहंकार माथै काळस पुतग्यौ । अकल ठांणै आई जद ई सांतरी ! धूळखांणी व्हैगी सौ व्हैगी । उठा सूं पाधरौ बांमण रै घरै आयौ । घड़ी-घड़ी हाथ जोड़ माफी मांगी । बांमण री बेटी नै लाख मोहरां री चूंदड़ी ओढ़ाय आखी ऊमर धरम-बैन रौ पवीत नातौ पाळियौ । किणी लुगाई रै उणियारा सांम्ही मैली निजर सूं नीं जोयौ । वरसां लग सुख सूं राज करयौ । ज्यूं ज्यूं दांन-पुन्न करतौ, राज रौ खजांनौ त्यूं त्यूं चौगणौ वधण लागौ । परार तौ म्हैं खुद उणनै अलेखूं मोहरां दांन करतां देख्यौ । अेस री म्हनै ठा नीं । थें कोई जावौ तौ म्हनै ई समंचार पूगता करज्यौ ।

घर रै पाखती घर

अेक हो सेठ । भोळौ - डाळौ । निरापेखो । झूठ अर छळ बिना कद विणज फळै ! पण सेठांणी ही डंयाळ । वा नित सेठां नै विणज रा गुर अर आंटियां घोखावती । पण सेठां रै तौ हीयै कीं वात नीं ढूकती । छळछंद अर कपट रा गुर हाथ नीं लागा तौ देखतां देखतां वडेरां री संच्योड़ी पूंजी रौ ई पोखाळौ व्हैगौ । जिण धंधा में हाथ घालै उण में ई तोटौ ।

सेवट रोट्यां रा ई जांदा पड़ण लागा । सेठांणी घणी ई तजवीजां विचारी, पण कीं जुगत हाथ नीं लागी । भगवांन री मया सूं उण वरस चौमासौ जबर फळियौ । जांणै विरखा रै पेटै खेतां धांन ई धांन ओलरग्यौ व्है । उळियोड़ा काचरा, पीळी - जरद काकड़ियां, मीठा खरबूजा अर मिसरी रै उनमांन मतीरा । धांन री विणज करै उत्ती सेठां री सरधा नीं ही ! काचरा, काकड़ियां, खरबूजा अर मतीरां में दूणा - डोढ़ा व्है । कीणा रौ धांन ई खासौ - भलौ भेळौ व्है जावैला । सोरौ अर सखरौ कांम । पण सेठांणी इण धंधा री वात चलाई तौ अेकर सेठ तौ सुभट नटग्या । कह्यौ — औ तौ कूंजड़ां रौ अफाळौ, वांणियां नै नीं सोहै ।

तद सेठांणी कह्यौ — धंधा री कैड़ी मेहणी ! विणज

रा सगळा कळाप करनै तूमार जोय लियौ, कीं बरगत नीं व्ही। ठाली बैठ्यां नीं सरै !

सेठांणी घणी समझाई तौ भोळा सेठ मांनग्या। खरबूजा काक़ड़ियां री हाट मांडी। केसरिया पाग नै ई मात करै जैड़ा उळियोड़ा काचरा अर काकड़ियां बेचण बैठा। लांठी ताकड़ी अर भाटा रा बाट पाखती धर लीना। मीठी, उळियोड़ी अर पाकी सौरम सूं बजार महक उठ्यौ। मथारै दिन चढ़्यौ जित्तै-जित्तै कीणा री खासी ढिगली व्हैगी।

दिन ढळतां चार लुगायां आई। च्यारां रै ई छाती तणा घूंघटा। मजीठ राच्योड़ा सुरंगा चूड़ा अर सुरंगौ ई बणाव ! बच्योड़ा सगळा काचरा, खरबूजा, काकड़ियां अर मतीरा सरीखा जुखाय लिया। खेसला री गांठां बांध च्यारूं जणियां माथै उंचावण रौ मतौ कर्यौ तद सेठ हळफळाया होय पूछ्यौ— यूं कीक जावौ ? दांम-कीणौ तौ निजरां ई नीं बतायौ अर गांठड़ियां उंचाय वहीर व्हैगी। लिछमियां, थें तौ औ ई धंधौ पैड़ाय दोला !

च्यारूं जणियां घूंघटा रै मांय मुळकी। बोली— नीं औ सेठां, थांरौ धंधौ नोज पैड़ावां। सगळी भला घरां री हां। तड़कै घरै आयनै दांम ले जाजौ। दांमां री ना थोड़ी ई है।

सेठ कह्यौ— पण थें तौ सगळी बहू-बवारियां हौ, मूंडौ देख्यां बिना कीकर ओळखूं। थांरा ठाया-पताया तौ बतावौ। पछै म्हैं कठै भंवतौ फिरूंला।

पछै सेठ अेक जणी रै सांम्ही फुरनै पूछ्यौ— वाल्हा,

थारौ घर कठै ?

वा तुरत पडूत्तर दियौ — हाथ में घर है जकौ घर म्हारौ ।

दूजोड़ी नै पूछ्यौ तौ वा कह्यौ — घर में घर है जकौ घर म्हारौ ।

तीजोड़ी बोली — मूंडा में घर है जकौ घर म्हारौ ।

अर चौथोड़ी कह्यौ — घर रै पाखती घर है जकौ घर म्हारौ ।

सेठ तौ अै पता-ठिकांणा सुणनै गताधम में पजग्या । सोचण लागा जित्तै जित्तै च्यारूं जणियां आप आपरी गांठां उंचाय वहीर व्हैगी । सेठां रै तौ कीं समझ बैठी नीं के तड़कै कठै जावै अर कठै नीं जावै ! आ तौ भूंडी पजी । इण धंधा में ई बरगत नीं व्ही । सेठांणी जबरौ माजनौ पाड़ैला ।

सिझ्या रा हाट वढ़ी करनै सेठ दुमना-दुमना हवेली आया । माथै कोणा री पोट उखणियोड़ी । सेठांणी पोट नै उतारती बोली — के तौ सगळौ वाखर विक्यौ कोनीं अर के सगळौ कीणौ अेकण सागै उखणीज्यौ कोनीं ।

सेठ कोडायौ कोडायौ नवा विणज री सगळी वात बताई के मथारै दिन चढ्यौ जित्तै नांमी बरगत व्ही । पण सिझ्या रा चार ववारियां वच्योड़ौ आखौ वाखर तौ लेयगी, दियौ कीं नीं । अर जका पता-ठिकांणा बतायनै गी, वै वांरै तौ कीं पल्लै नीं पड़्या !

घड़ी घड़ी घोखतां घोखतां सेठां नै है ज्यूं रा ज्यूं च्यारूं ठाया याद व्हैगा हा । सेठांणी नै यूं रा यूं बताय दिया ।

सगळा ठाया सुणनै पैला तौ सेठांणी मुळकी । पछै कह्यौ—
कीं डर री बात कोनीं । साव सुभट ठाया है । हांकरता
पाघरा पूग जावौला । पैला निरांत सूं रोटी जीमलौ, पछै म्हैं
थांनै आं ठिकांणा री म्यांनौ बताय दूंला ! मोट्यार लुगाई
री अकल नं पूग नीं सकै, जद इज तौ मिनख घर रै बारै
अस्टपौर कळाप करै अर लुगाई घर में बैठी घर री सोभा
वधावै ।

ब्याळू करयां पछै सेठांणी वां ठाया रौ म्यांनौ समभावण
लागी । मगसा पड़ता दीवा री बाट काढ़तां बोली — हथाळी
में मेंहदी कुरीजै । इण वास्तै 'हाथ में घरवाळी' रै बारणै मेंहदी
रुप्योड़ी है । लूंबड़ा नाळेर री टोपसी रै मांय काचौ गोटौ
व्है, इण वास्तै 'घर में घरवाळो' रै बारणै नाळेर रौ रूंख है ।
मूंडा में दांत व्हिया करै । इणरौ औ म्यांनौ के 'मूंडा में घर-
वाळी' रै हाथी-दांत रै चूड़ा री हाट है ।

पछै सेठ रै उणियारा सांम्ही देखती सेठांणी पूछ्यौ —
अबै चौथोड़ै ठिकांणा रौ म्यांनौ तौ थें ईं समभ्या व्हौला ।

सेठ गाबड़ हिलावता बोल्या — म्हारै तौ कीं समभ बैठी
नीं ।

तद सेठांणी बोली — इत्ती बात ई समभ नीं बैठै, इण
कारण ई तौ थांनै मोट्यार री जूंण मिळी ।

पछै मुळकती थकी कैवण लागी — गांधी रै अंतर री
सौरम पाखती रा घर में ईं पूगै । इण वास्तै गांधी रै अड़ो-
अड़ पाखती रौ घर चौथोड़ी लुगाई रौ है । आं च्यारूं
जणियां रा दांम खरा । धंधा में बरगत चोखी व्ही ।

तड़कै सेट वां च्यारूं ठिकांणै गियौ । जातां ईं अजेज उगराई व्हैगी । किणी री ई घर सोधण में नीं तौ फोड़ा पड़्या अर नीं गोता ई खाया । मांगतां पांण दांम संभळाय दिया । भोळौ सेठ राजी-राजी हाट कांनी वहीर व्हियौ । सोचण लागौ के साचांणी लुगायां री अकल रौ तौ पार ई नीं !

बेटौ सीझै

अेक नायण रै घरै पांवणा आया । मां-बाप बारै गियोड़ा हा, फगत छोरी घरै ही । रसोई में बैठी सीदी करती । हेलौ सुण बारणै आई । पांवणा पूछ्यौ—ब्याईजी अर ब्यांणजी घरै कोनीं कांई ?

छोरी माथौ हिलाय होठां ई होठां में बोली—ऊं, हूं !

'सिध गिया ?'

छोरी ठीमर सुर में बोली—मां तौ गी है, अेक रा दो करण नै अर जीसा गिया समंदर रा झाग ढावण नै । बाप बळै अर बेटौ सीझै । आप थोड़ी ताळ सुस्तावौ, जित्तै रोट्यां व्है जासी । जीमनै पधारज्यौ ।

छोरी री गूढ़ बातां सुणनै पांवणा रै लिलाड़ में सळ पड़ग्या । घणौ ई माथौ खपायौ, कीं समझ बैठी नीं । कह्यौ : आं बातां रौ सुभट म्यांनौ बतावै तौ इण गवाड़ी पांणी पीवां, नींतर म्हैं तौ निरणा ई वळ जास्यां ।

छोरी दूधिया सुर में बोली—म्हारी मां तौ गी है जापौ जिणावण नै अर जीसा गिया छांन छावण नै; सावळ छायां बिरखा रौ पांणी मांय चवै कोनीं । केर सीझै अर केरड़ा रौ ईंधण बळै । अबै तौ जीमनै पधारौला ।

नीं रौ म्यांनौ हां

पाड़ौसण, नायण रै घरै आय उणरी छोरी नै पूछ्यौ के उणरी मां कठै गी अर कणाक पाछी आवैला ।

तद छोरी कह्यौ—म्हारी मां तौ गी वेमाता री खोड़ खुड़ावण नै । आसी जणा तौ कोनीं आवै अर नीं आसी जणा आ जावैला ।

पाड़ौसण छोरी रा बोल तौ सुभट सुण्या, पण उणरी समझ में अेक ई बात नीं आई । गुद्दी लारै खाज खिणती पूछ्यौ—बाया, व्है जकी बात म्हनै सुभट बता, आडियां मत बूझ, जरूरी कांम आई हूं ।

तद छोरी होठां माथै मुळक नचावती बोली—म्हारी मां तौ गी है सांम्हलै गांव जापौ सुधारण नै । आवेटै नंदी आडी आवै । जे नंदी आयगी तौ कोनीं आवै अर नीं आसी तौ आ जावैला !

बेटौ किणरौ ?

अेक बांणिया रौ बेटौ परणीज्यां रै तेरह दिन पछै ई मंगळीक मौरत कढ़ाय बिणज रै बधावा सारू अळगै दिसावर सिधावण री मतौ करचौ तौ उणरी बींदणी लाज रौ घूंघटौ अळगौ क्रेय दाभता सुर में बोली — घर में नीं सास, सुसरा, नीं नणद अर नीं देवर-जेठ। पछै म्हनै किणरै भरोसै निपट अकेली छोडनै जावौ।

धणी इचरज करतौ बोल्यौ — भरोसै फेर किण रै ? अबूझ टाबर तौ हौ कोनीं जकौ हवेली में डर लागै।

बींदणी बिचाळै ई बोली — अबूझ टाबर व्हैती तौ किणी बात रौ डर नीं हौ ! भलां अै न्यारा रैय कळाप करण रा दिन है ! यूं अधर-बंब में छिटकाय सिधावौ तौ पैला हथ-ळेवौ ई क्यूं जोड़चौ ?

धणी कह्यौ — पण थांरै तोटौ कांई बात रौ ? तिमंजली हवेली, धांन सूं भखारचां भरी, तिजोरी में अमोलक हीरा-मोती, अणगिण गैणौ-गांठौ ! हींगळू ढोलिये सुख सूं नेगम सूवौ अर मछरां करौ !

धणी सूं कैड़ौ चोज ! सेवट बींदणी दरजै लाचार होय नीं कैवण जोग बातां ई सुभट कैय दरसाई, पण वौ किणी

भाव नीं मांन्यौ । वांणियौ विणज सूं मूंडौ फेरलै तौ सात पीढ़ियां रै दाग लागै । सोना-चांदी री माया आगै वापड़ा ढोल्या री माया री कांई ठरकी ।

वींदणी साज-मांद री वात करी तद वौ कह्यौ के हवेली री पूठ लारै ई अड़ोअड़ उणरै वाळगोठिया सुनार रौ घर है । पुख्ता भुळावण दियोड़ी के वौ सेठांणी रै कह्या नै लोपै नीं । अड़ियै-वड़ियै कैड़ौ ई अवखौ कांम पड़ैला तौ वौ सार देवैला । वैड़ा साचा मित विरळा लाधै ।

सेठांणी घणी वाद करची तौ वौ सेमूंडै दो तीन वळा सोनार नै घरवाळी री भुळावण दे दी ।

धणी रै सिधावतां ई वींदणी रौ रूं रूं काळिदर रै उनमांन फुफकारा भरण लागौ । कीकर सांयत वापरै । आटौ ओसणतां उणनै कांई भूंडी सूभी के कळकळती दाळ री देगची वेवणी में उंधाय दी । चूल्हा में पांणी खळकावतां ई उणरै हिवड़ा रा खीरा चेतन व्हैगा । माळिया रौ आडौ खोल ढोल्या माथै पसवाड़ा पळटण लागी तौ चारूं पागां अर च्यारूं ईसां-ऊपळा भिमरचोड़ा काळिदर री गळाई फुण मारण लागा । नसा में गैळीज्योड़ी, चितवावळी होय वा सोनार रै डागळै उतरी । निसंक माळिया रौ आडौ भचेड़ियौ ।

सोनार नींद सूं भिभकनै हळफळायौ होय पूछचौ—कुण व्है ई ?

आवाज सुणीजी—आधी रात रा दूजौ कुण व्है सकै !

वौ तौ सुणतां ई वोली पिछांण ली । माथौ ठणक्यौ ! अटकतौ अटकतौ नीठ वोल्यौ—रात रा आडौ नीं खोलूं । औ

तौ मित साथै घात व्हैला ।

'अै आडा सूरज नै उडीक्या नीं करै ! पछै थांरा मित तौ म्हारै सेंमूंडै भुळावण देय गिया हा के थें म्हारै कह्या नै टाळौला नीं !'

तठा उपरांत रात रौ अंधारौ आपरै तारां जड़िया हाथ सूं मतै ई आगळ खोली, मेड़ी में आपरै मतै ई घी रा दीवा भुपग्या । मुधरौ अंधारौ, मुधरौ चांनणौ ! ढोल्या रै च्यारूं पागां चार चांद इमरत बरसावण लागा !

उण रात पछै तौ मेड़ी री उण आगळ नै सूरज रौ ई संकौ मिटग्यौ । दिन रा ई मतै खुल जाती । मेड़ी में मतै ई अंधारौ भुप जातौ !

पैलड़ी रात ई ढोल्या री मंसा पूरीज्यां सेठांणी रै आसा मंडी ! नवमै महीनै उणरी कूख सूं जांणै चांद रौ ई जलम व्हियौ ! बीज रौ चांद बधै ज्यूं औ कूख रौ चांद ई बधण लागौ । गुडाळयां चालनै थड़ी करण लागौ । रमण लागौ । बोलण लागौ अर दौड़ण लागौ !

सेठां नै सिधायां चार वरस बीतग्या । उठी वै दिसावर में सोना री माया घणी ई बधाई अर अठी सेठांणी ढोल्या री माया बधावण में ई कीं खांमी राखी नीं ।

अणचीत्या सिधाया, उणी भांत अेक दिन सेठ अणचीत्या ई आपरी हवेली रै बारणै ऊंट भेकायौ । सूरज मथारै चढ़ि-योड़ौ हौ । सेठांणी खुद री हवेली रै तिपड़ै चांद री इमरत पीवती ही । अणछक कांनां ऊंट रौ अरड़ावणौ सुण्यौ । जांणै तोप दागी ।

सेठांणी री बेटौ चौक में रमतौ हौ। असेंधा मिनख नैं हवेली रो आडो भचेड़तां देख्यो तौ दौड़नै पाखती आयौ। पूछयो — किणनै बूझो ? कांई कांम है ?

सेठ जबाब नीं देयनै पाछो उणनै ई सवाल बूझ्यौ — थूं कुण है ?

छोरौ इचरज करतौ बोल्यौ — आ म्हारी इज तौ हवेली है ! पण थें किणनै बूझो, आ बात तौ बताई कोनीं।

सेठ सवाल बूझणिया छोरा रै उणियारा सांम्ही टुग-टुग जोवण लागा। चार बरसां पैली री अेक रूपाळौ उणियारौ वांरी आंख्यां सांम्ही झब झब पळकण लागौ ! मां सूं बेटा रौ उणियारौ हूबौहूब मिळै। पण सेठांणी कोई समंचार क्यूं नीं दिया ? अैड़ा हरख री बात वा लुकाई क्यूं ?

सेठ उणनै खोळा में लेवता बोल्या — म्हैं इण हवेली रौ धणी अर थारौ बाप। दिसावर विणज करण सारू गियौ जकौ चार बरसां सूं पाछौ आयौ।

आ कैय वै उणरी लाड करण लागा, पण छोरौ आड़ौ लेय वांरै खोळा सूं हेटै उतरनै न्हाटग्यौ। के इत्ता में सेठांणी सिरै मोड़ा रौ आडौ खोल्यौ। उणरै सांम्ही परतख सेठ ऊभा। सेठां रै सांम्ही साख्यात सेठांणी ऊभी। अेक छिण वास्तै तौ मथारै पळकतौ सूरज उणनै काळौ लखायौ, पण दूजै ई छिण वा आपौ संभाळ लियौ। देह रौ समूळौ करार अेकठ कर मुळकण री चेस्टा करी। लखायौ के अैड़ी मुळक तौ रोवणा विचै ई दुखदाई व्हैं। हंसी रौ ओटी छिळकावती बोली — डावी आंख फरूकण रा सुगन कदै ई कूड़ा नीं व्है ! पण थें तौ म्हनै

समचौ ई नीं दियौ !

सेठ कह्यौ—सतवंती लुगायां नै धणी रै आवण री आपै ई ठा पड़ जावै, पछै समचौ देवण री जरूरत ।

सेठांणी रै काळजै जांणै तीर खुब्यौ । अपूठी फुरनै नीठ मूंडा रै भावां नै ओटचा । हवेली रै धणी अर हथळेवा रै परण्या रै आयां पछै सेठांणी नै रोत री लींगटी तौ कूटणी इज पड़ी, पण उणरौ मन पूठ वाळा घर रै मांय भंवरा री गळाई चकारा देवतौ हौ । मन परवारी हाथां रसोई बणाई । गुळ रौ मंगळीक सीरौ बणायौ । पसवाड़ै बैठ बाव ढोळनै धणी री अणूंती सरबरा कीवी । सेठां नै घी गुळ सूं ई सवायौ सीरौ मीठौ लागौ । बरसां उपरांत भोजन रौ अैड़ौ स्वाद आयौ ।

ब्याळू सूं निवड़ियां रै उपरांत सेठांणी ढोल्या सारू कीकर आपरै मन परवारी कोडाई व्ही, उणरी माया वा इज जांणै ! उण दिन माडै वहीर व्हिया धणी रै सांम्ही आज नीं तौ वा कीं आंमनौ ई जतळायौ अर नीं कीं रूसणौ ई करचौ । सोळै सिणगार करनै ढोल्या री रीत साजण में ई कीं खांमी नीं राखी, पण सेठां नै ढोल्या री तेवड़ सीरा जैड़ी मीठी लागणी तौ अळगी, सांम्ही खारी लागी । माटी री लोथ सूं कीकर रळी रौ आणंद पूरीजै ।

ढोल्या सूं हेटै उतर अेक अैड़ौ सवाल पूछ्यौ के जिणरौ पड़ूत्तर बिरळी लुगायां आपरा धणी नै दे सकै ! सेठांणी नै आळिया-टोळिया करतां देख सेठ कह्यौ—थूं डर मत । अपां महाजन हां । ऊंचा लोग हां । गिंवारां री गळाई अैड़ी-वैड़ी बातां माथै कजिया नीं करां । रीस नै ओटणी जांणां ।

गनै सोनार री सौगन म्हनैं व्ही जकी साची बात बताय दी ।

सेठांणी रै रूं रूं में जांणै खीरा चेतन व्हैगा ! गोठिया री कांण राखै के धणी री । धणी व्हैतौ तौ जीवता कंचन नै छोड माटी रै सोना री लोभ क्यूं करतौ ? आज सोगन दिरावै उणनै उण दिन दिसावर सिधावतां आ बात सोचणी ही ! सोगन री मरजादा राखण सारू धणी नै ई साची बात बतावणी पड़ैला !

सायण नै सुणावै ज्यूं आपरा धणी नै साची बात बताय दी । कीं न्नोज नीं राख्यौ । वड़ा इचरज री वात के सेठ ई सगळी वात इण भांत सुणी, जांणै किणी दूजी लुगाई रै मूंडा सूं आ वारता सुणै । माया रौ लोभ अर विणज री समझ अैड़ी इज व्हिया करै, इण में अजोगती कीं बात नीं !

उणीज ठीमर अर ठाडा सुर में सेठ आपरा मित सोनार नै कह्यौ — थूं म्हारौ बाळ-गोठियौ । थनै भाई सूं वत्तौ जांण्यौ ! थूं औ घात कीकर करचौ ?

सोनार ई सोच्यौ के मांडणा उघड़णा हा जकौ उघड़ग्या, अवै छिपला खावण में कीं सार नीं । निसंक जवाब दियौ — लुगाई सूं वत्तौ मित नीं व्हिया करै । जद वा घात करणा में नीं चूकी पछै म्हारी कांई जिनात ! अर थें तौ संमूंडै मुळावण देयनै गिया हा के म्हैं सेठांणी रै कह्या नै नीं टाळूं । म्हैं तौ वरजणा में पाछ नीं राखी, पण वा नीं मांनी जिणरौ तौ म्हैं ई कांई करूं ? म्हनै दोसण देवणी विरथा है ।

सेठ अैड़ी समझदारी री वात करैला, सोनार नै सपना

में ईं इणरौ बेरौ नीं हौ । बोल्या — दोसण किणी में नीं काढ़ूं । नीं सेठांणी में अर नीं थामें । म्हैं तौ म्हामें ईं दोसण नीं मांनूं ! व्ही जकौ तौ व्ही, पण अबै अपां में रांभौ नीं पड़ै तौ सावळ । थारै अंस रौ व्हैतां थकां ईं बेटा रौ बाप म्हैं बाजूंला । म्हारौ बेटौ म्हनै सूंप दै । चार बरसां रौ बेटौ चार बरसां पैली बिणज करणौ सीखैला ।

सोनार देख्यौ के जद सगळी बात चौड़ै व्हैगी तौ पछै असली बात सारू क्यूं संकौ राखूं । कह्यौ — जद बेटौ म्हारौ है तौ कोई दूजौ इणरौ बाप क्यूं बाजै ? म्हैं जीवतौ वैठौ, अबै तौ मरयां ईं इण टाबर नै नीं सूंपूं । मां बिचै ईं बेटा माथै बाप रौ हक वत्तौ व्है । सगळी बातां में लोभ करणौ आछौ कोनीं ।

पण सेठ किणी भाव आपरौ लोभ नीं छोड्यौ । नीं सोनार ई नीची न्हाकी । रांभौ अळूझियौ पण अळूझियौ । सेवट सोनार अेक बात सारू हांमळ भरी के सेठांणी न्याव करै सौ कबूल । दोनूं जणा उणरै पाखती गिया । आप आपरौ हक जतायौ । सगळी बातां सुणनै सेठांणी री तौ अकल ई चकरीजगी । कदास दुनियां थपियां पछै ई किणी लुगाई नै अैड़ौ न्याव निवेड़ण रौ मौकौ नीं आयौ व्हैला ।

आरण में सिळगायां कैड़ा ई जूंना लोह रौ काट भसम व्है जावै, उणी भांत औ न्याव झेल्यां सेठांणी रै जूंना संस्कारां रौ काट बळनै भसम व्हैगौ । कूड़ी लाज-सरम अळगी वगाय कैवण लागी — सेठ तौ म्हारा धणी है । सोनार म्हारौ वाहेलौ है । जद दोनां नै ई म्हारै हाथां औ न्याव निवेड़णा री

वात कैवतां, आप आपरौ हक्क जतळावतां थोड़ी घणी ई लाज नीं आई तौ पछै म्हैं ई लाज रौ दिखावटी वेवलौ क्यूं राखं अवै म्हनै किणरौ आंकस ।

पछै धणी रै सांम्ही देखनै कैवण लागी — थें माया रा लोभी लुगाई री देह साथै ई फाटकौ करणा में चूकौ नीं । पछै थांनै किणी लुगाई सूं परणीजण रौ ई हक कांई ! वेटा माथै हक जतावणिया इण भांत दिसावर नीं सिधाया करै । म्हैं मांनती तौ थांरौ ढाकौ ढक जातौ । नीं व्हैतां थकां ई थें इणरा वाप वाजता । पण अवै तौ कीं वात छांनै नीं री तौ पछै म्हैं थांनै म्हारा धणी ई क्यूं मांनूं ? जद म्हैं धणी ई नीं मांनू तौ पछै वेटा रा बाप वाजण में कीं आंणी-जांणी नीं ।

तठा उपरांत उणी निसंक भाव सूं वा सोनार रै सांम्ही देखनै कैवण लागी — अपां तीनूं ई जाणां के वेटौ थारा अंस री है । म्हनै खुद भगवांन ई पूछै तौ म्हैं सपना में ई इण साची वात सारू नीं नटूं । पण म्हारै वेटा माथै वाप री हक जतावणियौ उणरी मां नै घर री धणियांणी मांनै तौ म्हैं इण रांभा री साचौ न्याव कर सकूं ।

आ वात सुणतां ई सोनार री मूंडौ तौ थाप खायग्यौ । जांणै कोई कंवळो उणरै गळा सूं अमोलक हार झपटनै उडगी व्है । पगां री आंगळियां रै सांम्ही नीचै भाळतौ कैवण लागी — वेटौ तौ म्हारा अंस री है जकौ म्हारी इज रैवैला । मरचां ई किणी नै नीं सूंपूं । पण उणरी मां नै घर री धणियांणी वणाऊं अैड़ौ वावळौ म्हैं कोनीं । जकौ आपरै धणी री ई

नेम नीं पाळचौ, वा म्हारा सूं कद प्रीत निभावैला । ढोल्या रौ अैड़ी डेळीचूक लुगाई रौ डींगरौ म्हैं गळै नीं वांधूं । अै तौ वगत वगत रा दाव है ।

सांम्ही ऊभा वाहेला रै मूंडा सूं आखी बात सुण्यां ई सेठांणी नै औ विस्वास नीं व्हियौ के कोई जीवतौ मिनख अैड़ा बोल उलाक सकै । विस्वास करै जैड़ी बात नीं व्हैतां थकां ई उणनै माडै विस्वास करणौ पड़्यौ । अैड़ा विस्वास सूं माड़ौ दुनिया में दूजौ कीं दुख नीं व्है ।

दोनूं जणा न्याव करावण सारू सेठांणी रै पाखती आया हा, पण वौ रांभौ तौ वत्तौ अळूझग्यौ । सेठांणी कह्यौ — कूख सूं जलमियोड़ौ टाबर जीवै जित्तै मां रौ खोळौ नीं छोड सकै । बेटौ म्हारौ है अर म्हारौ इज रैवैला ।

लाज-बायरी लुगाई रै मूंडा सूं अै नोमण वोल सुणनै दोनूं मोट्यारां रै करार रै जांणै स्यार लागी । इणरौ साचौ न्याव नीं व्है जित्तै माठ नीं झेलैला ।

देस रा धणी राजा रै सिवाय औ न्याव कुण निवेड़ सकै ! तीनूं जणा दरबार में जाय फरियाद करी । राजाजी न्याव रा सिंघासण माथै विराज्या । दीवांण कह्यौ — व्हो जकी साची बात बंतावौ, राजाजी दूध रौ दूध अर पांणी रौ पांणी कर देवैला । इण राज रै न्याव रौ देवता ई ईसकौ करै ।

सेठ नै पूछ्यौ तौ वौ कैवण लागौ — अंदाता, आपनै मुद्दा री बात बतावूं । कुठौड़ पीड़ अर सुसरौजी वेद ! कांई फरियाद करूं ! म्हारै आंगणा रै थांणै रुप्योड़ी बेलड़ी बधतां बधतां इत्ती बधी के उणरौ तांतौ पाड़ौसी सुनार रा घर में

पसरग्यौ । संजोग री बात के सुनार रै घर वाळा तांता में फळ लाग्यौ । वौ तोड़नै फळ खायग्यौ । इण बात रौ म्हैं कीं उजर नीं करूं, पण फळ रा बीज तौ पाछा म्हारै हाथ लागणा चाहीजै । बीजां री हकदार तो म्हैं हूं । अंदाता इण में कीं कूड़ व्है तौ फरमावौ सौ डंड भरूं ।

सुभट वारता नै धणी सांनी में समझाई तौ सेठांणी उणी लहजा में कैवण लागी — निव-निवायौ दूध जावणी में उथामियौ जद म्हनै ठा पड़ी के घरै जावण कोनीं । म्हैं जावण लेवण सारू सोनार रै घरै गी । जावण लायनै दूध जमायौ । म्हैं नीं घालूं जित्तै उणरौ हक तौ छाछ में ई कोनीं, पण वौ तौ दहो अर माखण में हक जतावै । औ कठा रौ न्याव !

पछै सोनार रो वारी आई । कैवण लागौ — अंदाता, म्हारै पाखती अेक अमोलक मोती हौ । पण संजोग री बात के उण जोग रखण नै म्हारै पाखती डाबी नीं ही । म्हैं मांनूं के सेठांणी म्हनै मोती रखण सारू डाबी दी । पण डाबी साटै वा मोती री हक जतावै, औ कठारौ न्याव !

तीनां री अनोखी फरियाद सुणनै राजाजी धुराधुर सगळी परधै री अक़ल चकरीजगी । वातां तौ तीनूं ई साची दीसै, पछै कांई न्याव निवेड़ै ! सगळा दरबारी हार थाक्या पण कीं बात समझ में नीं आई । औ न्याव नीं निवेड़चौ तौ सगळा राज री सेखी निकळ जावैला ।

राजकंवरी झिरोखा में वैठी तीनां री फरियाद सुणी ही । राजाजी नै गताघम में अळूझिया देख वांरै पाखती आई । अर वा साचौ न्याव निवेड़ियौ । बोली — थें तीनूं जणा सांनी

सांनी में ई आपै आपरी फरियाद करी । सांनीं रै तमचै म्हैं साची बात रौ मरम समझगी । मोट्यार इणरौ न्याव नीं निवेड़ सकै । साची वात नीं फळ री है, नीं मोती री अर नीं जावण री । पछै आं सांनियां रै ओळूं - दोळूं मांथौ पचावण में कीं सार नीं । साचांणी किणी दिन वेलड़ी रै तांता री अर अमोलक मोती री बात पजै जद पाछा इण दरबार में हाजर व्हैजौ — म्हैं सेठां नै बीज री ठौड़ आखौ फळ ई दिराय दूंला अर सोनार नै उणरौ मोती । डावी साटै मोती कदै ई नीं दिरीजैला । पण रांभा रा बेटा मांथै फगत सेठांणी रौ हक है, जे इण में कीं चीं - चपड़ करी तौ खालड़ी में लूंण भरायां बिना नीं छोडूंला । थां दोनां रा लखण ओळख लिया, माजना सूं घरै जाय मां नै उणरौ बेटौ सूंप दौ ।

इति । बातां री फुलवाड़ी दसमौ भाग संपूरण